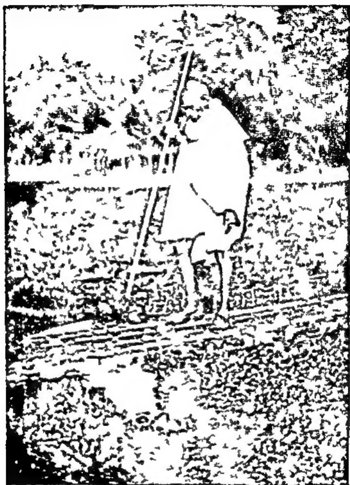


'एकला चलो रे

अेकला चलो रे

[गांधीजीकी नोआखालीकी धर्मयात्राकी डायरी]

मनुबहन गांधी

अनुवादक

रामनारायण चौधरी



नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद–१४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

पहली आवृत्ति ३०००, १९५७
पुनर्मुद्रण ५०००, १९६१

रु० २ ००

फरवरी १९६१

प्रस्तावना

सारा मानव-समाज अेक और अखण्ड होते हुअे भी अनेक आधारों पर अुसके अलग अलग समूह सगठित होते ह। ये सगठित समूह विशाल मानव-समाजके अग होते हैं फिर भी बहुत बार अुनके बीच परस्पर सघर्ष हुअे बिना नही रहता। मानव-समाजके दो समूहोंके बीच जब कभी न्याय अन्यायका प्रश्न खडा हुआ है तब अन्यायके निवारणके लिअे दोनोंके बीच अुग्रसे अुग्र सघर्ष हुअे हैं।

मानव-जातिके अलग अलग समूह अन्यायके निवारणके लिअे हिंसाके अुपाय आजमाते आये हैं। परन्तु अनुभव यह हुआ कि हिंसासे कोअी अन्याय दूर नही होता, दूर होनेका भासमात्र कुछ समयके लिअे होता है और अन्तमें दूसरे अनेक रूपोंमें अन्याय जारी रहता है या नये रूपमें फूट पडता है।

मनुष्यकी रचना ही कुछ असी है कि मानव-समाजके विभिन्न समूहोंके बीच मतभेद श्रद्धाभेद और विरोधका रहना अनिवार्य-सा है। अिन भेदों या विरोधोंको शान्त किये बिना मानव-समाजका जीवन सुख-चैनसे बीत नही सकता। बल्कि यह कहना चाहिये कि भेदों या विरोधोंको शान्त करना भी मनुष्यका स्वभाव है। परन्तु अन्यायको दूर करने या भेदों अथवा विरोधोंको शान्त करनेके लिअे यदि हिंसाका ही अुपाय काममें लिया जाय, तो अुससे भेद या विरोध शान्त नही होते और न अन्यायका ही निवारण होता है।

अिसलिअे मानव-जातिके सामने प्रश्न यह अुपस्थित हुआ है कि भेद या विरोधके शमनके लिअे और अन्यायके निवारणके लिअे हिंसाके अुपायके बदलेमें सचमुच काम दे सके असा कोअी दूसरा अुपाय है या नही?

अिसमें शका नही कि व्यक्ति और व्यक्तिके बीच अथवा मानवोंके छोटे-छोटे समूहोंके बीच विरोधों या भेदोंके कारण अुत्पन्न होनेवाले सघर्षोंको शान्त करनेके लिअे हिंसाके बदले अहिंसा या प्रेमका अुपाय सफलता

पूर्वक आजमानके प्रयाग दुनियामें होते आय ह। परन्तु मानव-जातिके अग-रूप बड-बड समूहाके बीचका विरोध शान्त करनके लिअे असे प्रयोग बहुत अधिक नही हुअ ह। गाधीजीन भदा या विरोधाको शात करन और अयायका निवारण करनके खातिर अहिसा अथवा प्रमके अुपायको व्याव-हारिक रूप दनके लिअे जीवनभर अखड साधना की। हिन्दू समाजके अन्तगत विराधाका शमन करनके लिअे और अग्रज जनता तथा भारतीय जनताके बीचके अन्यायमूलक सबधमें निहित भदाको शान्त करनके लिअे गाधीजीन अपन जीवन द्वारा अिस अुपायका सफल प्रयोग कर दिखाया। असा कहा जा सकता है कि मानव-जातिकी मूल अकता सिद्ध करनके लिअ जो प्रम आवश्यक है अुस प्रमके द्वारा विरोध शान्त करन अथवा अयाय दूर करनका माग मानव-समाजको बताना ही अुनके जीवनका मुख्य काय था।

यह काय करते करते अुनके जीवनके अतिम भागमें भारतीय प्रजाके दो अगा — हिन्दू और मुस्लिम समाज — के बीच दीघकालसे चले आय विरोधन अुग्र रूप धारण किया और अुसका भयकर परिचय सब प्रथम बगालमें और अुसके पूर्वी कोनमें मिला।

गाधीजीने अपन जीवन-कायके प्रति वफादार रहकर अिस विरोधसे अुत्पन्न हुआ भयकर परिस्थितिको दूर करनके लिअ अहिसक अर्थात प्रमका अुपाय आजमानका बीडा अुठाया।

अुनके जीवनका यह अतिम प्रयाग कितना और कसा सफल हुआ, अिसकी चर्चा यहा जरूरी नही है। परन्तु अहिसाकी कायपद्धतिके भावी विकासकी दृष्टिसे अिस प्रयागका बहुत बडा महत्त्व है। अत अिस प्रयागके दिनामें गाधीजी जसा जीवन बिताते थ और जो महान पुरुषाथ करते थ अुसकी प्रतिदिनकी डायरी भावी पीढ़ियाके लिअे सुरक्षित रहे अिस बातको स्वय गाधीजी भी महत्त्वपूर्ण मानते थ।

अिस कारणसे अुन्हान आरम्भसे ही अपनी सेवाके लिअ और अपन भारी कामकाजमें मदद पहुचानके लिअ श्री मनुबहन गाधीको अपन साथ रखा था। गाधीजीन नोआखाली और अय स्थानाकी अपनी दिनचर्याकी डायरी श्री मनुबहनसे आग्रहपूर्वक रखवाअी थी। अिस पुस्तकमें नोआखालीकी अनकी पदल यात्राका विवरण श्री मनुबहनकी डायरीके रूपमें स्पष्ट किया गया है।

अिस डायरीमें गांधीजीकी दिनचर्या, लोगोंसे और व्यक्तियोंसे काम लेनेका अनका तरीका और सबसे बढ़कर तो अपने कामके लिअे आवश्यक मनुष्योंको तालीम देनेकी अनकी वज्रके समान कठोर होते हुअे भी फूलके समान कोमल पद्धति — जैसे अनेक रोचक अंग हैं। परन्तु जीवनके अंतिम भागमें गांधीजीने अपने स्वीकृत मिशनको सफल बनानेके लिअे अकेले हाथों जो प्रयोग किया था अुसके विस्तृत विवरणका मानव-जातिके भावी विकासकी दृष्टिसे बहुत बड़ा महत्त्व है। अहिंसाकी कार्य-पद्धतिको सफल बनानेका प्रयोग करनेके अिच्छुक सब लोग अिस विवरणको अितनी सावधानी और अितनी चिन्तासे सुरक्षित रखनेवाली श्री मनुबहन गांधीके सदा ऋणी रहेंगे।*

बम्बअी ४-१-'५४ **मोरारजी देसाअी**

---

* मूल गुजराती संस्करणकी प्रस्तावना।

अेकला चलो रे

[गाधीजीकी नोआखालीकी धमयात्राकी डायरी]

१

वह धन्य दिवस

अक्तूबर १९४६ में मुझे पारिवारिक कामसे अुदयपुर जाना पडा। अुतने समयमें देशमें नये-नये परिवर्तन हो गये। बगालमें भयकर दगे छिड गये। जिसकी प्रतिक्रिया बिहारमें हुअी और बापूजीको बगाल जाना पडा। जिस बीच अुन्होने मुझे अुदयपुर यह पत्र लिखा

२३-१०-'४६

चि० मनुडी

तुम्हारा अुदयपुरका पत्र कल मिला। अब तो मानता हू कि म अेक-दो दिनमें बगाल जाअूगा। जिससे पहले तुम आ गअी होती तो मुझे अच्छा लगता। परन्तु अब तुम्हे जैसा ठीक लगे वैसा करना, जिससे तुम सुखी होओ और सेवा करते लगा अुसीमें मुझे सतोष है।

अुर्मियाको सन्तोष हो तब तक वहीं रहना। तुम्हारा स्वास्थ्य वहा अच्छा हो जाना चाहिये। वहाके जलवायुकी तारीफ की जाती है।

बापूके आशीर्वाद

कलकत्ता चले जानेके बाद मैं कहा हू जिसका ठीक पता न होनेसे बापूजीने मेरे पिताजीको पत्र लिखा

कलकत्ता
४-११-'४६

चि० जयसुखलाल,

चि० मनुका पत्र मिला है। अुसीके साथ तुम्हारा अुमे लिखा हुआ पत्र भी मिला। अुसकी माग पर ये दोनो लौटा रहा हू। मनुडी वहा पहुची होगी या नही, जिसका यकीन न होनेसे तुम्हीको लिख रहा हू। अुसे अलग लिखनेका समय नही है। यह पत्र लिखनेका भी नही है असा कह सकता हू। परन्तु लिखना पड रहा है।

मेरा यह पत्र तीन बारमें लिखा गया है। मुझे डर है कि यह अंतिम पत्र होगा। बिहारके किस्सेसे मनमें यह निश्चय हो गया है कि लोगोंका मानस न सुधरे तो मैं अुसका साक्षी नहीं रह सकूंगा। अभी भी मैं अर्ध-अुपवास जैसा ही कर रहा हूं। अिसका मुख्य कारण शरीर है। परन्तु बिहार मुझे अनशनकी ओर ले जायगा। परसों नोआखाली जाअूंगा। पत्र आजकल कम ही लिखता हूं। लंबा तो आज यहां आनेके बाद ही लिखा है। अिसलिअे अिस समय मनुका स्थान मेरे पास ही हो सकता है। लेकिन अब तो अिसे असंभव मानता हूं। भगवान करे वह व्याधिमुक्त हो और सुखी रहे। और तो जो कुछ होगा वह अखबारोंमें देखोगे।

बापूके आशीर्वाद

१ दिसम्बरको मैं महुवा पहुंची तब अपने पिताजीके नाम लिखा बापूजीका यह पत्र मैंने पढ़ा और अुसी रात रेडियो द्वारा खबर मिली कि बापूजीने अपने सभी साथियोंको अलग अलग गांवोंमें रख दिया है। गांधीजीके पत्रमें यह पढ़कर कि 'अिस समय मनुका स्थान मेरे पास ही हो सकता है' मेरा हृदय घड़ी भरके लिअे भर आया। विचार आया कि बापूजी मुझे अपनी निजी सेवाके लिअे रखें तो? परन्तु शायद अब यह असंभव है। अगर पासके साथियोंको भी अलग कर दिया है तो अितनी दूरसे मुझे भला क्या बुलायेंगे?

अिस विचारमें नींद नहीं आअी। पिताजीको जगाया। अुनसे पूछा। वे बोले, "तुमने लिखा तो सही सेवा करनेकी तुम्हारी सच्ची भावना होगी तो जरूर सफल होगी।" अुनके शब्दोंसे सुख और प्रोत्साहन मिला और रातके ढाई बजे मैंने बापूको पत्र लिखा। अुसमें स्पष्ट लिखा कि "यदि मुझे किसी समयमें अनशनका अिरादा हो तो मुझे वहां नहीं आना है, ऐसा ही अिरादा हो तब तो यहां बैठकर जितना बनता है अुतना काम करती ही हूं। परन्तु और अपनी व्यक्तिगत सेवा करने देनेकी शर्त पर आने दें तो हां मेरी अिच्छा वहां आनेकी है। मेरा प्रस्ताव आपको मंजूर हो तो मुझे तारसे खबर दें ताकि आपकी पैदल यात्रा शुरू होनेसे पहले मैं वहां पहुंच सकूं। मैं वचन देती हूं कि अिसमें बड़ेसे बड़ा खतरा अुठानेके लिअे भी मैं तैयार रहूंगी।
रा।

कौन जाने रातके डेढ बजे किस शुभ मुहूर्तमें मेरा पत्र लिखा गया कि मेरा प्रयत्न सफल हुआ। ता० ११–१२–४६ की शामको दूसरे तारवालेको आता देखकर मनमें अत्यंत हर्षकी भावना दौड गओी। तार खोलने पर बापूजीका ही निकला। तार अिस प्रकार था

Ramganj,

Jaysukhlal Gandhi

Care/Shepherd Mahuva,

If you and Manu sincerely anxious for her to be with me at your risk you can bring her to be with me Wire arrival Khadi Pratisthan, College Square, Calcutta

Bapu

यह तार पढते ही मुझे खयाल हुआ कि पूज्य बा और मेरे माता पिताके आशीर्वादका ही यह फल है। सर्वथा असंभव बातके संभव हो जाने पर जैसी भावनाका अनुभव होता है वैसी ही भावना मने अनुभव की और अीश्वरके अहर्निश अुपकारसे हृदय धन्यता अनुभव करने लगा।

पिताजीने भावनगर तार देकर अपनी छुट्टी मंजूर कराओी। अिस बीच मने बापूजीको जो पत्र लिखा था, अुसे मेरे नोआखाली पहुचने पर अुन्होने 'जीवनभर संभाल रखने' का आदेश देकर मुझे वापस दे दिया। अुस पत्रमें मेरा लिखित निश्चय था, अिसीलिअे शायद संभालकर रखनेको कहा होगा। बापूजीके लिखे गये मेरे किसी अन्य पत्रको अिस तरह संभालकर रखनेको अुन्होने कभी नहीं कहा। मेरा वह लिखित निश्चय अिस प्रकार था

महुवा,
१२–१२–'४६

परमपूज्य बापूकी सेवामें

आपका तार कल शामको मिला। मुझे आपने अपनी निजी सेवा करनेका अमूल्य अवसर दिया, यह जानकर बहुत ही आनन्द हुआ। पू० भाओी (मेरे पिताजी) ने भावनगरमें तार द्वारा १५ दिनकी छुट्टी मांगी है। वह मिल जायगी और जल्दीसे जल्दी २२–२३ तारीख

मेरा यह पत्र तीन बारमें लिखा गया है। मुझे डर है कि यह अंतिम पत्र होगा। बिहारके किस्सोंसे मनमें यह निश्चय हो गया है कि लोगोंका मानस न सुधरे तो मैं अुसका साक्षी नहीं रह सकूंगा। अभी भी मैं अर्ध-अुपवास जैसा ही कर रहा हूं। अिसका मुख्य कारण शरीर है। परन्तु बिहार मुझे अनशनकी ओर ले जायगा। परसों नोआखाली जाअूंगा। पत्र आजकल कम ही लिखता हूं। लंबा तो आज यहां आनेके बाद ही लिखा है। अिसलिअे अिस समय मनुका स्थान मेरे पास ही हो सकता है। लेकिन अब तो अिसे असंभव मानता हूं। भगवान करे वह व्याधिमुक्त हो और सुखी रहे। और तो जो कुछ होगा वह अखबारोंमें देखोगे।

बापूके आशीर्वाद

१ दिसम्बरको मैं महुवा पहुंची तब अपने पिताजीके नाम लिखा बापूजीका यह पत्र मैंने पढ़ा और अुसी रात रेडियो द्वारा खबर मिली कि बापूजीने अपने सभी साथियोंको अलग अलग गांवोंमें रख दिया है। गांधीजीके पत्रमें यह पढ़कर कि 'अिस समय मनुका स्थान मेरे पास ही हो सकता है' मेरा हृदय घड़ी भरके लिअे भर आया। विचार आया कि बापूजी मुझे अपनी निजी सेवाके लिअे रखें तो? परन्तु शायद अब यह असंभव है। अगर पासके साथियोंको भी अलग कर दिया है तो अितनी दूरसे मुझे भला क्या बुलायेंगे?

अिन विचारोंमें नींद नहीं आअी। पिताजीको जगाया। अुनसे पूछा। वे बोले, 'तुम लिखो तो सही। सेवा करनेकी तुम्हारी सच्ची भावना होगी तो जरूर सफल होगी।' अुनके शब्दोंसे मुझे और प्रोत्साहन मिला और रातके दो बजे मैंने बापूको पत्र लिखा। अुसमें स्पष्ट लिखा कि 'यदि मुझे किसी गांवमें अलग रखनेका अिरादा हो तो मुझे वहां नहीं आना है। असा ही अिरादा हो तब तो यहां ठहरकर जितना बनता है अुतना काम करती ही हूं। परन्तु आप अपनी व्यक्तिगत सेवा करने देनेकी शर्त पर आने दें तो ही मेरी अिच्छा वहां आनेकी है। मेरा प्रस्ताव आपको मंजूर हो तो मुझे तारसे खबर दें ताकि आपकी पैदल यात्रा शुरू होनेसे पहले मैं वहां पहुंच सकूं। मैं वचन देती हूं कि अिसमें बड़ेसे बड़ा खतरा अुठानेके लिअे भी मैं तैयार रहूंगी।' वगैरा।

कौन जाने रातके डेढ़ बजे किस शुभ मुहूर्तमें मेरा पत्र लिखा गया कि मेरा प्रयत्न सफल हुआ। ता० ११-१२-'४६ की शामको दूरसे तारवालेको आता देखकर मनमें अत्यंत हर्षकी भावना दौड़ गयी। तार खोलने पर बापूजीका ही निकला। तार अिस प्रकार था

Ramganj,

Jaysukhlal Gandhi

Care/Shepherd Mahuva,

If you and Manu sincerely anxious for her to be with me at your risk you can bring her to be with me Wire arrival Khadi Pratisthan, College Square, Calcutta

Bapu

यह तार पढ़ते ही मुझे खयाल हुआ कि पूज्य बा और मेरे माता पिताके आशीर्वादका ही यह फल है। सर्वथा असंभव बातके संभव हो जाने पर जैसी भावनाका अनुभव होता है वैसी ही भावना मैंने अनुभव की, और औीश्वरके अहर्निश अुपकारसे हृदय धन्यता अनुभव करने लगा।

पिताजीने भावनगर तार देकर अपनी छुट्टी मंजूर कराओी। अिस बीच मैंने बापूजीको जो पत्र लिखा था, अुसे मेरे नोआखाली पहुंचने पर अुन्होंने जीवनभर संभाल रखने का आदेश देकर मुझे वापस दे दिया। अुस पत्रमें मेरा लिखित निश्चय था अिसीलिअे शायद संभालकर रखनेको कहा होगा। बापूजीको लिखे गये मेरे किसी अन्य पत्रको अिस तरह संभालकर रखनेको अुन्होंने कभी नहीं कहा। मेरा वह लिखित निश्चय अिस प्रकार था

महुवा,
१२-१२-'४६

परमपूज्य बापूजी सेवामें

आपका तार कल शामको मिला। मुझे आपने अपनी निजी सेवा करनेका अमूल्य अवसर दिया, यह जानकर बहुत ही आनन्द हुआ। पू० भाओी (मेरे पिताजी) ने भावनगरसे तार द्वारा १५ दिनकी छुट्टी मांगी है। वह मिल जायगी और जल्दीसे जल्दी २२-२३ तारीख

तब वे मुझे वहां छोड़ जायंगे। वहां पहुंचनेसे पहले खादी प्रतिष्ठानको तारसे सूचना कर देंगे।

आपको अितना लम्बा तार देनेकी जरूरत तो नहीं थी। क्योंकि आपके अिस प्रवासमें अकेले रहना पसन्द करने पर भी मनु और पू० भाअीन श्रीमानन्दाओंसे और वहां आनेके खतरेका पूरी तरह विचार करके ही अिस शर्त पर वहां आनेका निर्णय किया था कि आप मुझे अपनी निजी सेवा करने देना पसन्द करेंगे। यह ब्यौरा अुस पत्रमें लिखा ही था। अिसलिअे सिर्फ आनेकी ही अनुमति दे दी होती तो काम चल जाता।

आज मुझे आपका अेक वाक्य याद आता है। अेक बार जाहेता बातावहन आदि मेरी सभी सहेलियां जानेवाली थीं तब मैंने कहा था बापू अब तो मैं अकेली हो गअी। तब आपने मुझसे कहा था तुम और मैं अकेले ही रहेंगे। मैं जीता हूं तब तक तुम अकेली कैसी हो? और फिर आपने गीताके आपूर्यमाणम् श्लोकका अर्थ समझाया था। वह दिन सचमुच आ गया। मैं तो अीश्वरसे प्रार्थना करती हूं कि वह मुझे अन्त तक प्रामाणिकतासे आपकी सेवा करनेकी शक्ति दे।

आपका अेक पत्र (पूज्य भाअीके नामका) मिला है। मैं तो मूर्ख हूं ही। अिसमें शंका कहां है? समझदार होती तो अैसा होता ही क्या? परन्तु मुझे लगता है कि अीश्वर मूर्खोंका भी बली होता है। अिस तरह मेरे लाडभरे नाम तो पड़े! परन्तु जो हुआ सो हुआ। आपको मुझे समझदार बनाना होगा। अब तो आपकी सेवाका लाभ मिलेगा अिस आशामें सब कुछ भूल गअी हूं। सेवा करते करते कोअी डरा भी मारें देगा तो खुशीसे वह दुःख सह लूंगी। मेरा सद्भाग्य है कि मेरे मानसे पहले आपकी पैदल यात्रा शुरू नहीं होगी। अुससे पहले पहुंच जानेकी मैं आशा रखती हूं। अधिक तो क्या लिखूं? आपकी तबीयत अच्छी होगी।

आपकी पुत्री मनुडीके
दण्डवत् प्रणाम

हम ता० १५–१२–'४६ के दिन कलकत्तेके लिअे रवाना हुअे। कलकत्तेसे नोआखाली जानेके लिअे हमारे साथ खादी प्रतिष्ठानसे अेक मार्गदर्शक आये। कलकत्तेसे काजीरखिल, जहां गांधी छावनीका मुख्य केन्द्र था, पहुंचनेमें २४ घंटे लगे। और सफर भी बहुत ही कठिन था। अन्तमें ता० १९–१२–'४६ को दोपहरके करीब तीन बजे हम श्रीरामपुर पहुंचे, जहां बापूजी ठहरे हुअे थे। यह धन्य दिवस जीवनके अेक सुनहले दिनके रूपमें हृदयमें अंकित हो गया।

२

आत्म-समर्पणकी दीक्षा

श्रीरामपुर,
१९–१२–'४६, गुरुवार

हम जब दोपहरके तीन बजेके करीब बापूजीके पास पहुंचे, तब बापूजी अेक तख्त पर बैठे अकेले ही चरखा चला रहे थे और आसपास आअी० अेन० अे० (आजाद हिन्द फौज) के कुछ लोग तथा कर्नल जीवनसिंहजी वगैरा बातें करते हुअे बापूजीसे प्रश्न पूछ रहे थे। वे सब बापूजीके साथ अिस काममें शरीक होना चाहते थे। सब बातोंमें तल्लीन थे।

हमने अुस झोंपड़ीमें प्रवेश किया। झोंपड़ीकी देहलीसे बापूजीकी बैठक काअी चार फुट दूर थी। मैं वहांसे सीधी बापूजीको प्रणाम करने दौड़ी। बापूजीने अेक जोरकी थप लगाअी, कान पकड़ा अुनकी प्रेमपूर्ण थपत गाल पर पड़ी और गाल खींचकर बोले, "आखिर आ पहुंची!" कर्नल साहबसे कहने लगे, "यह लड़की यहां मरनेकी तैयारी करके आअी है अिसलिअे आप लोगोंके दो मिनट ले लिये। अब आप बात कहिये।"

पांच-सात मिनटमें वे सब चले गये। बादमें बापूजीने मेरे स्वास्थ्यके समाचार पूछे। मैंने पूछा, "आपको कैसा लगता है?" "जैसीकी तैसी है, परन्तु लगता है वजन बढ़ा होगा।"

अिसके बाद मेरे पिताजीसे बोले, "कब चले थे? रास्तेमें भीड़ तो नहीं थी? मनुडीका पत्र मिला था। यह दिल्ली आअी थी तब भी अपने

पास रहनका मन खूब समझाया था। मगर अिसकी अिच्छा अुमियाके पा जानेकी हुअी। मेरे नाम अेक पत्र लिखकर छोड गअी। वह मुझे बहुत अच्छा लगा था। मने बहुत कुछ अिस बारेमें मनुको लिखा भी था। बाम्भ तो बगाल आना हो गया। यहा तो करना या मरना है। अिसके लिअ मनुकी तयारी होगी अिसका मुझे विश्वास नही था। परन्तु अितनमें मनुका पत्र मुझे मिला। अुस पत्रका तारसे जवाब मागा था अिसलिअे तार दिया। यहा अिसकी परीक्षा होगी। मन अिस हिंदू मुस्लिम-अेकताको यज्ञ कहा है। जिस यज्ञमें जरा भी मल हो तो काम नही चल सकता। अिसलिअ मनुके मनमें जरा भी मल होगा तो अिसका बुरा हाल होगा। यह सब तुम समझ लो जिससे अब भी वापस जाना हो तो यह तुम्हारे साथ चली जाय। बादमें बुरा हाल होन पर जाय अुसके बजाय अभी लौट जाना ज्यादा अच्छा है।

अूपरकी बात कहनके बाद मेरे सामन देखकर बापूजीन कहा जयसुखलालको मन जो कहा वह अच्छी तरह समझमें न आया हो तो अिनसे समझ लेना। यहा तुम्हारी कडी कसौटी होगी।

यह बात यही रुक गअी। अितनमें कुलरजनबाबू लौट आय। अधे हो रहा था अिसलिअ बापूजीने भाअीको (अर्थात् मेरे पिताजीको) जानके लि कहा। मेरा बिस्तर आया नही था। मुझ तो बापूजीन यही रहनेको कहा क्योकि म अुनके पास रहनके लिअ ही आअी थी। भाअीसे बोले यहा तो यज्ञ चल रहा है। म तुम्हे यहा सोने या खानेकी अिजाजत नही दे सकता। अिसलिअे तुम काजीरखिल लौट जाओ। मनुका बिछौना भेज देना।

मेरा बिस्तर नही आया था अिसलिअ बापूजीन अेक शतरजी निकाल दी। साडे नौ बजे वे सोये।

रातको ठीक १२॥ बजे मेरे सिर पर हाथ फेरकर बापूजीने मुझे जगाया। मनुडी जागती हो क्या? मुझे तुम्हारे साथ बातें करनी है। तुम अपना धर्म अच्छी तरह समझ लो और जयसुखलालसे बातें करके जो फैसला करना हो झट कर लो क्योकि अुसे भी ज्यादा छुट्टी नही है। *

---

* यह बात विस्तारसे नवजीवन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित बापू — मेरी मा के दूसरे प्रकरणमें मिलेगी।

कल शामको मैं यहां आयी हूं। तबसे बापूजीकी जो बातें मैंने सुनी
उन परसे यह वर्णन करना सर्वथा असंभव है कि यहां अुनकी क्या स्थिति है,
ऐसा अद्भुत कार्य अुन्होंने उठाया है और किस प्रकारकी कठिनाअियोंका
सामना वे कर रहे हैं। बापूजीकी स्थिति पर लागू होनेवाला अखा भगतका
यह भजन बड़ा मार्मिक है

अकल कला खेलत नर ज्ञानी।
जैसे हि नाव हिरे फिरे दसों दिश
ध्रुवतारे पर रहत निशानी। अकल०
चलन वलन अवनी पर वाकी,
मनकी सुरत अकाश ठहरानी,
तत्त्व-समास भया है स्वततर,
जैसे हिम होवत है पानी। अकल०
छूपी आदि अंत नहीं पाया
आओ न सकत जहां मन बानी,
ता घर स्थिति भअी है जिनकी
कहि न जात असी अकथ कहानी। अकल०
अजब खेल अद्भुत अनुपम है,
जाकूं है पहिचान पुरानी,
गगन हि गेब भया नर बोले,
अेहि अखा जानत कोअी ज्ञानी। अकल०

श्रीरामपुर
२०–१२–४६ शुक्रवार

फिर बापूजीने साढ़े तीन बजे मुझे प्रार्थनाके लिये अुठाया। अुससे पहले बापूजी जाग गये थे। अुस दिनकी अपनी डायरीमें बापूजीने लिखा

'आज रातको १२–३० बजे अुठा मनुको १२–४५ को जगाया। अुसके धर्मके बारेमें सब समझाया। जयसुखलालसे बातें करनेका भी कहा। अुसे निश्चय बदलना हो तो अभी बदल सकती है, परन्तु यज्ञमें कूद पड़नेके बाद सभी खतरे अुठाने होंगे। वह टससे मस नहीं हुअी। जयसुखलालसे मेरी खातिर बात करेगी। परन्तु जयसुखलालने

तो सब कुछ खुशी पर छाप लिया है और छोड़ेगा। अिस प्रकार बातोंमें सवा बज गया और फिर कुछ देर सोकर तीन बजे प्रार्थनाके लिये अुठा।'

अितनी बात बापूजीने अपने हाथसे अपनी डायरीमें लिखी और मेरे लिये जो कुछ लिखा गया हो अुसकी नकल करके मेरे पिताजीको भेज देनेको कहा। अिसमें साढ़े तीन बज गये। प्रार्थना हुआी। प्रार्थनामें आजसे दोनों समय भजन और गीतापाठ करनेका मुझे आदेश दिया। प्रार्थनामें निर्मलबाबू और परशुरामजी थे।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने मुझे फिर रातको बातों पर विचार करनेको कहा। मैंने अपना निश्चय वह सुनाया जहां आप वहां मैं मेरी यह अर्ज भी आपको मंजूर हो तो फिर मैं किसी भी परीक्षाका और आपकी जिम्मेदारीका स्वागत करूंगी। भाओी तो मुझे बचपनसे ही संपूर्ण स्वतंत्रता दे रखी है। मुझ पर कभी दबावकी नजर नहीं रखी। अिसलिअे आपको अुनकी अिच्छाकी अपेक्षा मेरी अिच्छा अधिक समझनी होगी।

मैं बापूजीके लिये गरम पानी करने गयी अुस बीच अुन्होंने मेरे नाम चिट्ठी लिखी

चि० मनुडी

अपना वचन पालन करना। मुझसे अेक भी विचार छिपाना मत। जो बात पूछूं अुसका बिलकुल सच्चा अुत्तर देना। आज मैंने जो कदम अुठाया वह खूब विचारपूर्वक अुठाया था। अुसका तुम्हारे मन पर जो असर हुआ हो वह मुझे लिख देना। मैं तो अपने सब विचार तुम्हें बताअूंगा ही परन्तु जितना वचन मुझे अभी तुम्हारी ओरसे चाहिये। यह हृदयमें अंकित करके रख लेना कि मैं जो कुछ कहूंगा या चाहूंगा अुसमें तुम्हारा भला ही मेरे सामने होगा।

बापू

(मैंने कहा मुझे जो भी कठिनाअी या कष्ट सहन करने पड़ेंगे वे मरते दम तक सहूंगी। मुझे आप पर संपूर्ण श्रद्धा और विश्वास है। आप जैसे-जैसे नोआखालीका भयंकर चित्र मेरे सामने रखते जाते हैं वैसे वैसे मेरा मन दृढ़ होता जा रहा है। अिसलिअे आपको

लिखा) यदि असा ही हो तो मुझे कुछ पूछनेको नहीं रह जायगा, केवल समझनेका ही रहेगा। तुम्हारी श्रद्धा सचमुच ही यहां तक पहुंच गअी हो तो तुम सुरक्षित हो। तुम अिस महायज्ञमें पूरा भाग अदा करोगी — मूक हो तो भी। अिसे संभालकर रखना। समझमें न आये सो पूछ लेना।

बापू

साढ़े सात बजे बापूजी घूमने निकले। घूमते घूमते बोले 'यह न समझना कि मैंने तुम्हें यहां केवल अपनी सेवाके लिअे ही बुलाया है। मेरी सेवा तो तुम करोगी ही। परन्तु जहां छोटीसी लड़की या वृद्ध स्त्री भी सुरक्षित नहीं, वहां तुम्हें, १६–१७ वर्षकी जवान लड़कीको मैंने अपने पास रखा है। यदि कोअी गुण्डा तुम्हें तंग करे और तुम असका सामना बहादुरीके साथ कर सको अथवा सामना करते करते मर जाओ तो मैं खुशीसे नाचूंगा। तुम्हें बुलानेमें मेरा यह अेक प्रयोग भी है।"

नाआखालीमें कहीं-कहीं बांसके पुल पार करना पड़ते हैं। बापूजी जिस प्रदेशकी यात्रा करने जा रहे हैं, वहां असे पुल पार करना पड़ेंगे। अिस लिअे वे अन पर चलनेकी आदत डाल रहे हैं। असे पुलों पर वहांके बालक तो आसानीसे चल सकते हैं, परन्तु अनजान आदमी अगर चल न सके तो नीचे खाअीमें ही गिरता है।

घूमकर आनेके बाद मने बापूके पैर धोये। मालिश की। मालिशमें बापूजी आधा घंटा सो गये थे। नहा लेनेके बाद दस बजे जब बापूजी भोजन कर रहे थे अुस समय मेरे पिताजी अंतिम बिदा लेने आये। बापूने कहा "मनुडी तो टससे मस नहीं होती। मने अुससे बहुत बातें कीं। अब तुम निश्चिन्त होकर जाओ। अिसकी चिन्ता न करना।"

पिताजीने कहा 'अब तो आप अिसे जब तक चाहें रख सकते हैं। और आपके पास रहे तो फिर मुझे चिन्ता ही क्या हो सकती है?'

बापू — मेरी धारणा है कि जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक अुसे जानेको नहीं कहूंगा। यह तंग आ जाय तो भले जा सकती है। परन्तु मेरा तो अभयदान है कि यह चाहे तो मुझे छोड़ सकती है, पर मैं अिसे नहीं छोड़ूंगा, सिवाय अिसके कि दोनोंमें से कोअी मर जाय। मरे तो भी क्या? शरीर अलग

हागे आत्मा तो अमर है। मेरी यह प्रबल अिच्छा है कि अिस लड़की जो छिपे हुअे गुण मैंने देखे हैं अुन्हें प्रकाशमें लाअूं।

मेरे पिताजी साढ़े ग्यारह बजे महुवा जानेके लिअे रवाना हुअे। मेरे सायका तमाम फालतू सामान अुनके साथ वापस भेज देनेकी सूचना बापूजीने की। तीन बजे कातते हुअे अुन्होंने मेरी डायरी सुनानेको कहा। मैंने कहा अपनी ही डायरी मैं नहीं सुनाअूंगी।

बापूने कहा — हमेशा अपनी भूल स्वयं ही स्वीकार करनेमें जितनी श्रेष्ठता है अुतनी कागज पर लिखकर स्वीकार करनेमें या किसी औरके मार्फत स्वीकार करनेमें नहीं। अिसलिअे तुम पढ़ो। अुससे मुझे पता लगेगा कि तुम मेरी बातोंको कितना समझी हो। बादमें मैं अुस पर अपनी सही कर दूंगा। अिससे पढ़नेमें मेरा समय नहीं बिगड़ेगा। आंखोंकी शक्ति भी बच जायगी। और तुम्हें तो अब मेरी जो भी सेवा हो सो करनी ही है। अिसलिअे यह भी अेक सेवा ही है अैसा मानकर मेरे सामने पढ़ जाओ।

मैंने अपनी कलकी डायरी सुनाअी। बापूजीने कातकर अुसके नीचे सही की।

चार बजे कुछ पत्र लिखाये और कहा — महादेव और प्यारेसे मैंने जो काम लिया है वही तुमसे लेना है।

शामकी प्रार्थनाके बाद मैं अकेली बैठकर बापूजीने दिन भर जो गंभीर बातें कही थीं अुन पर शान्तिसे विचार कर रही थी और सोच रही थी कि मैं अिस बड़ी जिम्मेदारीको पूरा कर सकूंगी या नहीं?

बापू कहने लगे — तुम अितनी गंभीर क्यों हो? अपनी मांसे कुछ भी छिपाओगी तो पाप लगेगा। भले अच्छा विचार आये या बुरा, सब मुझे कह देना।

मैंने कहा — आज आपने [illegible] को जो पत्र लिखाये अुनमें अिस बात पर प्रकाश डाला है कि आप मुझसे किस प्रकार काम लेनेकी आशा रखते हैं और मुझ पर कैसी जिम्मेदारियां हैं। वे सब आशायें मैं पूरी कर सकूंगी और अिन जिम्मेदारियोंको निबाह सकूंगी या नहीं, अिसी पर अेकान्तमें बैठी विचार कर रही हूं।

बापू — अिसकी चिन्ता हम किसलिअे करें? चिन्ता करनेसे काम नहीं चलेगा। हां, हमारी भावना शुद्ध हो तो सफलता जरूर मिलेगी। हम सब

काम ओीश्वरको ही सौंपकर क्या न करे? अुससे हार्दिक प्रार्थना कर तो अपने-आप वह शक्ति हममें आ ही जायगी। रामनाम रटें। राम पर पूरा भरोसा करके यह काम अुसे सौंप दो। छोटा बच्चा भूख लगने पर रो देता है तब मां अुसे दूध पिलाती है। परन्तु अपनी भूख मिटानेकी चिन्ता अुस बालकको नहीं होती, मांको होती है। वसे ही तुम कामकी चिन्ताका भार मन पर रखोगी तो निभ ही नहीं सकोगी। यह भार मुझ पर और ओीश्वर पर छोड़कर वह जो भी नकित दे अुसके अनुसार काम करती रहो।

शामकी सार्वजनिक प्रार्थनामें सबके सामने भजन गानेका पहला ही अवसर होनेसे मैं गाते समय कुछ कांप रही थी। अिसका भी बापूजीने अच्छी तरह खयाल रखा और मुझसे कहा 'प्रार्थना केवल मुंहसे बोल जाने या गानेके लिअे नहीं है। प्रार्थनामें सच्ची भावना अुत्पन्न हो तो ही सुननेवालों पर अुसका भव्य प्रभाव पड़ता है। दो-चार दिन करोगी तो संकोच जाता रहेगा।'

रातको साढ़े आठ बजे बापूजीने बंगला वर्णमाला लिखी। मैंने डाकमें आये पत्र और अखबार पढ़कर सुनाये। आजसे बापूजीका सभी काम मैंने संभाल लिया है।

ओीश्वरकी मुझ पर कितनी कृपा है? पूज्य बाकी भी अिस प्रकार अेकान्तमें सेवा करनेका मुझे अवसर मिला था। और आज दुनियाके अिस महापुरुषकी घोर तपश्चर्यामें साथ रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सत्यकी ही जय है यह मैं प्रत्यक्ष अनुभव कर रही हूं। ओीश्वरसे प्रार्थना करती हूं कि हे ओीश्वर, तुझ पर मेरी असी श्रद्धा बनी रहने दे और मुझे मिल रही प्रसादीको पचाने योग्य बना।

(बापू श्रीरामपुर २०-१२-'४६)

(बापूजीने रातको साढ़े नौ बजे मेरी आजकी डायरी पढ़कर तुरंत ही अूपर लिखे अनुसार हस्ताक्षर कर दिये।)

३

काम सभाल लिया

श्रीरामपुर,
२१-१२-'४६ शनिवार

साढ तीन बजे प्रार्थनासे कुछ समय पहले अुठ। दातुन करते समय बापूजीने कुछ पत्र जो मुझसे कल लिखवाय थ सुन और मेरी डायरीमें हस्ताक्षर किये। अितनमें प्रार्थनाका समय हो गया।

प्रार्थनाके बाद बापूजीन गरम पानी और "शहद" लेकर निर्मलदाने प्रार्थना प्रवचनकी जो रिपोट तयार की थी अुस सुधारा। सारा समय अिसमें चला गया। सात बज मोसबीका रस पीकर घूमन निकले। आज बहुत दूर तक घूमने गय थे। बापूजीके साथ म तथा प्रेस रिपोटर थ। लगभग ४० मिनट तक घूमे। बीचमें अुन्होन मेरी गीताकी पन्नाओंके बारेमें पूछा। मन कहा जल्स छूटनेके बाद ठीक तरहसे मने गीताका अध्ययन नहा किया। अपने आप मूठे सच्चे अथ जरूर करती रही। दूसरासे गीताका अथ न करानेमें मेरी यह अिच्छा थी कि दूसरे लोग अन्य किसी विषयमें भले मेरे गुरु बनें परन्तु मेरे गीताके अध्ययनके गुरु तो आप ही रहे। बापूजीको मरी अिस बातसे दु ख हुआ। अुन्हान मुझ समझाया

अिस अिच्छामें तुम्हारा मूठा मोह है। अच्छी बात सीखनम हजारा क्या लाखा गुरु भी हम क्यो न बनायें? और जब छोटा बच्चा हो तो अुससे भी सीखें। अच्छी बात किसीसे सीखनमें शम काहे की? परन्तु जब जाग तभी सवेरा मानना चाहिय। अब हम आजसे ही गीताका अध्ययन शुरु कर दें। अुच्चारणमें अधिक कुछ करनकी जरूरत नही है। परन्तु गीताके अथ नहीं साल यह मुझ बहुत खटकता है। तुम्हें हमेशा पाच श्लोकोंका अथ लिखना चाहिय। तुम जानती हो कि तीसरा अध्याय यज्ञका है। भगवान कहते ह कि जो मनुष्य यज्ञ किय बिना खाता है वह चोरीका अन खाता है। यह तो बडा महत्त्वपूण वचन हुआ क्योंकि चोरीका अन्न खाना कच्चा पारा खान-जसा है। कच्चा पारा हजम नही होता। वह

खा लिया जाय तो फूट निकलता है। अिसी तरह चोरीका अन्न खाया जाय तो वह फूट निकलेगा। यज्ञके बिना मनुष्य घडीभर भी रहे तो वह चोर ठहरता है। अिसलिअे यज्ञ हम सबको करना चाहिये। सद्भाग्यसे जिसका हृदय स्वस्थ है शुद्ध है अुसके लिअे यज्ञ सरल वस्तु है। और यज्ञके लिअे न धनकी आवश्यकता है न बुद्धिकी और न पढाअीकी। यज्ञका अर्थ है कोअी भी परोपकारी कार्य। जिसका जीवन पूरी तरह यज्ञमय हो अुसके लिअे कहा जा सकता है कि वह चोरीका अन्न नहीं खाता। अत यह कह सकते हैं कि जो थोडासा यज्ञ करता है वह कम चोर है। अिस प्रकार सूक्ष्मतासे देखा जाय तो थोडी-बहुत चोरी हम सब करते हैं। जब स्वार्थमात्रका त्याग कर दें तभी कहा जायगा कि पूरा यज्ञ किया है। स्वार्थका त्याग करनेका अर्थ है अहंता, मेरापन, छोडना। यह मेरा भाअी है और वह पराया है यह मेरी बहन है और वह पराअी है, अैसा भाव मनमें रहना ही नहीं चाहिये। अैसा वही कर सकता है जो अपना सब कुछ कृष्णार्पण कर दे। अैसा व्यक्ति जो भी सेवा करता है वह सब अीश्वरको बीचमें रखकर अुसके सेवककी हैसियतसे करता है। अैसे मनुष्य नित्य सुखी रहते है। अुनके लिअे सुख-दुःख अेकसे ही हैं। वे अपने शरीर मन, बुद्धि सबका परमार्थके लिअे ही अुपयोग करते हैं। अैसा अुत्तम यज्ञ सब नहीं कर सकते। जब हमारे मनमें यह भावना हो कि समर्थ हो तो सारे जगतकी सेवा करें, तभी अैसा यज्ञ हो सकता है। तो अैसा कौनसा कार्य है जिससे यह भावना सिद्ध हो सकती है? अिस प्रश्नका विचार कर तो मालूम होगा कि कातना ही वह मुख्य कार्य है और यह अेक ही सेवा अैसी है जिसे परमार्थकी दृष्टिसे असंख्य मनुष्य अेकसाथ अथवा चाहे जब कर सकते हैं। यह मेहनत जगतके लिअे देशके लिअे भी की जा सकती है। और अिससे असंख्य गरीबोंका पेट भरता है। अंधे गूंगे बहरे गरीब अमीर बच्चे बूढे सब आसानीसे यह सेवा कर सकते हैं। और प्रत्येक तारके साथ रामनाम लिया जा सकता है। मैंने तो जबसे चरखेकी खोज हुअी तबसे यह अेक बात रट रखी है। तुम भी गीताके अैसे अर्थोंको कंठस्थ करके आचरणमें अुतारो अिसलिअे मैं तुम्हें गीताके अर्थ अिस तरह समझाना चाहता हू केवल व्याकरणकी दृष्टिसे नहीं। यह तो मैं तुम्हें गीताके श्लोकोंका अर्थ कम समझाअूगा अिस बातका अेक अुदाहरण दिया। और यज्ञका सच्चा अर्थ भी समझाया। यज्ञमें चरखा है और चरखेमें यज्ञ है।'

यह सारी बात घर आये तब तक बापूजीने बहुत गंभीरतापूर्वक समझाओी। घर आकर कीचड़के पर धोये और बापूजीने बंगाली वर्णमाला लिखी। अिस बीच मैंने बापूजीकी मालिश करनेकी और अुनके स्नानके लिये पानी गरम करनेकी तैयारी की।

आठ बजे मालिश कराते समय बापूजी २० मिनट सो लिये। अुन्हें थकावट बहुत मालूम होती है। मालिश और स्नानके बाद भोजन करते हुअे मुन्शीजीके साहबके लिअे पत्र तैयार कराया। भोजनमें आठ औंस दूध, शाक तथा बाजरे (जौ) के बहुत आटे जानसे बाटकर रोटी बनानेको कहा था। परन्तु रानी जैसी चाहिये वैसी बनती नहीं थी। अिसलिअे कलसे बाजरेको शाकके साथ ही कूकरमें रख देनेकी सूचना की।

यहां बापूजी जिस दुनियाके मेहमान बने हैं वह बहुत ही ममतालु और प्रेमल है परन्तु मैं अुसकी भाषा नहीं समझती और वह मेरी नहीं समझती। अिशारेसे आग्रहपूर्वक मुझे खिलाती है।

आजसे मैंने भी बंगला सीखना शुरू किया। बापूजी कहते हैं देखें हम दोनोंमें से कौन पहला नम्बर लाता है।

बापूजी अब बजे आरामके लिअे लेटे। मैंने पैरोंमें घी मला। आराम करते करते गुरुदेवके साहबका पत्र जांच लिया। फिर मेरी डायरी देखी। वह अूपर पसन्द आओी। परन्तु अधिक समयके अभावमें बादमें लिखनेकी सूचना करके कहा मुख्य बात दर्ज कर ली जाय तो मैं रूपमें सब लिखना आ जाता है। मेरे लिखनेका अध्ययन करना। यनकी बात समझने साथ लिखी गयी है।

दो बजे बापू अुठ बैठे। कुछ पन्द्रह मिनट बाद। तीन बजे निडगाजीकी पढ़ाओ शुरू हुआ। दर्जी भी आया। मेरे लिअे पजामा पाजामा मानना दी। गया मैं बजे देर और सिर पर मिट्टीकी पट्टी रखवाओी और अुसी समय डॉ॰ गिरहा (बिहार) के नाम मुझसे पत्र लिखवाया। अिस बीच काओी पास निकट बापूजी अूपर रहे। अिसके बाद मुलाकातें शुरू हुओी। जमान — अिलिका जिला मजिस्ट्रेट मजर स्टाअिकर डॉ॰ दासगुप्ता और तीन स्थानीक अफसर आये। अनके साथ बापूजीने यह चर्चा की कि यात्रामें किस स्थान तक जायें। मजिस्ट्रेट जमानके साथ निराश्रितोंमें किस प्रकार काम किया जाय अिनको कैसे करने हुअे बापूजीने कहा सरकार काम करनेका

लिअे अुन्हे मजबूर नहा कर सकती। वे खुद अपनी मरजीसे कर ता दूसरी बात है। असलमें यह काम अलग-अलग सस्थाओ द्वारा होना चाहिये।"

मुलाकात पाच बजे तक चली। पाच बजे प्रार्थनामें गये। बरसातके कारण आनेवालोकी सख्या बहुत नही थी। फिर भी ५०–६० भाअी-बहन ता जरूर हागे। अभी लोगाके मनसे डर गया नही है। मुसलमानाको यह खबर लग जाय कि हिंदू बापूजीका आसरा लेने गये ह तो शायद वे मारेगे, यह डर हिंदुआमें गहरा पठ गया है।

प्रार्थनाके बाद सुशीलाबहन अपने गावसे आअी थी। अिसलिअे सारा समय अुनके साथ बातें करनेमें बिताया।

घूमकर लौटने पर बापूजीने दूध और अगूर लिये। यहा खाखरा बनानेका काअी साधन न होनेसे आज खाखरे नही बनाये। नारियलका मदन बूढी मा बापूजीको जबरदस्ती दे गअी अिसलिअे अुसका अेक टुकडा खाया।

बापूजीका कातना पूरा नही हुआ था अिसलिअे रातको साढे आठसे नौ बजे तक काता। कुल तार १६० (दोहरे ८०) हुअे। बापूजीने अपनी डायरी लिखी मेरी डायरी सातें-सातें सुनी। हस्ताक्षर सुबह करनेके लिअे गद्दीके पास रखनेकी सूचना की।

म अकेली बापूजीका बिस्तर कर रही थी। अितनमें बाथरूमसे हाथ मुह धाकर व आये और मुझे चादर बिछानेमें मदद की। मने बहुत मना किया ता बाले 'अिसमें म सूक्ष्म गवका भाव देखता हू। तुम मना करती हो सो प्रेमके कारण या यह सोचकर कि बापूको तकलीफ होगी। परन्तु तुम्हे और मुझे य सब काम अेक-दूसरेकी मदत्से पूरे करने ह। अिसमें यदि तुम यह आग्रह रखो कि म अकेली ही सब करूगी तो तुम जल्दी बीमार पड जाओगी और मेरी सेवा नही कर सकोगी। यह चादर बिछानेमें मुझ पर क्या जार पड जायगा? अिसलिअे अब जो तुम्ह सूझे सो तुम करना और मुझे सूझे सा म किया करूगा।

बापूजीका चादर बिछानेका दृश्य अितना करुण था कि देखा नही जाता था। मुझे अेकदम विचार आया कि अिस समय यदि पूज्य बा होती ता? परन्तु बापूजीको चादर बिछानेसे रोकनेका मुझे साहस नही हुआ।

साढे नौ बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे। आधा घटा असवार सुने। फिर मुझसे कहा कि सारा काम निबटाकर अनके सोनके समय म भी सो जाअू। काम पूरा न हो तो अधूरा रखकर भी तुम्हे सो ही जाना चाहिय। नही तो जब तक तुम जागती रहोगी तब तक मुझे चिन्ता बनी रहेगी। और म भी सो नही सकूगा। अिस बातमें दो चिन्तायें थी। अक तो यह कि अधिक जागरण करके शरीर पर जोर डालकर काम करनेसे मेरे स्वास्थ्यको हानि पहुचेगी और दूसरी तथा बडी चिन्ता यह थी कि यह प्रदेश दूसरी ही तरहका है और खास करके जवान हिन्दू लडकियोके लिअे तो खतरनाक ही माना जाता है। अिसलिअे सावधान नर सदा सुखी कहावतके अनुसार म भी बापूजी बिस्तर पर लेट कि तुरन्त अुनके सिरमें तेल मलकर और पर दबाकर प्रणाम करके सो गआ। यहा आये आज तीसरा दिन हुआ। आजसे सारा काम मन सभाल लिया अिससे मनमें सतोष हुआ।

श्रीरामपुर
२२-१२-४६ रविवार

रातको बापूजी ढढ बज जाग। मुझ जगाया। बापूजीने मुझे दीया और लिखनेका सामान देकर सो जानको कहा। म सब सामग्री देकर सो गआी। अ्साअी बज फिर जगाया। अुन्होने कुछ पत्र लिखवाय थे व अु्हे पढ कर सुनाय। बापूजीने अुन पर हस्ताक्षर किय। आजकी डाकमें बापूजीने जो कुछ लिखवाया वह बड महत्त्वका और हृदयद्रावक है। अक पत्रमें लिखवाया

तुम्हारे दो पत्र मिल। भाअी पर मेरी नजर जमी हुअी है। यदि मुझ असा लगा कि यहा म थोडा भी स्थिर हू तब तो भाअी जस बहुतोकी सेवाका अुपयोग कर सकूगा। और मुझ वह अच्छा लगगा। निभय बननके बारमें तुम जो लिखते हो वह वास्तविक है फिर भी तुम्हारे मुहमें शोभा नही दता। अिस प्रकार जब हमारे जान हुअे अपराधी आजाद घूमते हो तब लोगोको निभय बनना और रहना आना चाहिय। यह शिक्षा जब तक हम पचा नही लेते तब तक पग ही बन रहग। यहा हिंसा-अहिंसाका भेद भूल जाओ। हिंसावादी भले बहादुरीसे हिंसा करके मरना सीख। परन्तु अहिंसावादीको तो असे समय ही अहिंसाका प्रभाव जानना है। निबलकी अहिंसाको अहिंसाका

नाम देकर हम जिस शक्तिकी निदा करते है। अैसी अहिंसाको हम डरपोककी युक्ति कह सकते है। वह युक्ति हमने सीख ली। और अिसीलिअे मुझे अपने बारेमें यह भय पदा हुआ कि मैंने भी — भले अनजानमें — अहिंसाके बहाने या नाम पर कहा डरपोककी यह युक्ति ही चलाना तो नही सीखा है और दूसराको सिखाया है। अत म अपनी जाच करने और सच्ची परीक्षा देनेके लिअे यहा आया हू। मेरे पास पुलिस वगरा मौजूद है। और अब सिक्ख भाअी भी आ गये हु। परशुराम और निर्मलबाबू तो ह ही। परसा मनुडी आअी है। यह पत्र अुसीसे लिखवा रहा हू। अिसीलिअे तो कही म बेफिक्र बनकर नही घूम रहा हू? 'सुज्ञेषु किं बहुना।'

बापूके आशीर्वाद

दूसरा पत्र भी अैसा ही है, अुसमें नोआखालीका करुण चित्र आ जाता है।

चि०

तुम्हारा प्यारेलालके नाम भेजा हुआ पत्र मेरे पास सीधा आ गया। प्यारेलाल वगरा तो अपने काममें लगे हुअे ह। मौतके साथ खेल रहे ह। जिसलिअे हम सब अेक जगह थे तब वे जो कुछ कर सकते और भेज सकते थे वह अब नहीं कर सकते। तुम्हारा पत्र काजीरखिल गया तो सतीशबाबूने मेरे पास भेज दिया। प्यारेलालको जिस पत्रका पता नही है। वे मेरे पास आते-आते रहते ह।

यह पत्र म सुबह तीन बजे लिखवा रहा हू। दातुन-पानी तो चार बजे होगा। फिर प्रार्थना। अीश्वर निभायेगा तो निभ जाअूगा। अितना करते हुअे भी मेरे स्वास्थ्यके बारेमें जरा भी चिन्ताका कारण नही है। शरीर काम देता है। फिर भी मेरी परीक्षा हो रही है। मेरी अहिंसा और सत्य दोनो मोनी तौलनेके काटेसे भी कही अूचे काटे पर चढ़े हुअे ह, जो बालके सौवें भागके वजनकी भी परीक्षा कर सकता है। अहिंसा और सत्य तो अपूर्ण हो ही नही सकते। परन्तु मेरी जो अिनका प्रतिनिधि बना हू अपूर्णता सिद्ध होनी होगी तो हो जायगी। और अगर वह सिद्ध हुअी तो अितनी आशा

अहिंसाकी परीक्षा तो अिसके बीचमें ही हो सकती है न? म यह समझता हू जानता हू अिसीलिअे यहा पडा हू। यहासे मुझे बुलाना मत। कायर बनकर भागू तो मेरा दुर्भाग्य। हिंदुस्तानके अभी तक अैसे लक्षण म नही देखता। अिसलिअे तो मुझे यहा करना है या यहा मरना है। कल रेडियाके समाचार आये कि मेरे साथ बातचीत करने आ रहे ह। सभीको मिलकर क्या करना है? तुममें से जिसे कुछ पूछना हो वह पूछ सकता है।

*

म तो भटठीमें पडा हू, अिसलिअे अुसम क्या होता है और क्या सत्य है अिसका सबूत अच्छी तरह दे सकता हू। बिहार लीगकी रिपोर्ट देखी होगी। अुसके बारेमें मन का लिखा है। और तुम सबको मेरी राय बता देनेके लिअे का भी लिखा है। यदि अिसमें आधा भी सत्य हो तो भयकर है। मुझे जरा भी शका नही कि असी निष्पक्ष जाच तुरन्त होनी चाहिये जिसके विरुद्ध कोअी अगुली न अुठा सके। अेक दिनका भी विलम्ब नही होना चाहिये। अिसमें जो सत्य हो अुसे स्वीकार करना चाहिये। बाकी जो स्वीकार न किया जा सके वह जाच करनेवाले न्यायाधीशके पास जाय। मुस्लिम लीगके मन्त्रियोंसे भी बात करो। सुहरावर्दी साहबके साथ म जो पत्रव्यवहार कर रहा हू वह पूरा नही हुआ है।

तुम्हारी कठिनाअी यहा बठे हुअे भी जानता हू और समझता हू। परन्तु कठिनाअी होते हुअे भी कुछ काम तो करने ही पडते ह। तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा यह तो कसे कहू? काम करने लायक है असा मान लेता हू। आशा करता हू अच्छा हो जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

अिस प्रकार अभी नीरव शातिमें पत्रोमें लिखाअी गअी बातोंसे बापूजीकी हृदय-व्यथा आसानीसे समझी जा सकती है।

ठेठ चार बजे प्रार्थना हुअी।

बापूजीने कहा, "कदाचित मैं मर जाऊँ तो अससे मेरी विरासत जरूर सुरक्षित रहेगी। महादेवने असा ही किया था। असकी अिच्छा तो मेरी गोदमें मरनेकी थी और मेरी बातें लिखनेकी भी थी। असकी अेक तीव्र अिच्छा अीश्वरने पूरी कर दी। तुम भी मेरी जीवनकथा लिखनेकी अुधेड़बुनमें तो नहीं हो न?" *

मैंने कहा — मैं असी लेखिका बन जाअूँ तो फिर क्या चाहिये?

बापू — तो मैं जिनसे बातें करूँ, अुन सबके साथकी बातचीतकी नोंध लेना तुम्हें सीखना चाहिये। तुम्हारी लिखनेकी रफ्तार तो तेज है ही। परन्तु सभी जगह तुम कैसे सभाल सकती हो? बस यह मुझे अच्छी लगनेवाली चीज है। अिसमें तुम्हें बहुत बहुत सीखनेको मिलेगा।

मेरी तंदुरुस्तीकी बात करते हुअे बापूजीने कहा, 'मैं अिस समय तुम्हारी माके रूपमें हूँ। अिसलिअे तुम्हारी जो भी शिकायत हो वह खुले दिलसे तुम्हें मुझसे कह देनी चाहिये। मैं तुम्हारे जरिये अिस बातका साक्षी बनना चाहता हूँ कि अेक पुरुष भी मा बनकर बेटीकी हर तरहकी गुत्थीको सुलझा सकता है।

बापूजीने ठीक अेक घटा कातते-कातते डायरी परसे मुझे बहुत कुछ समझाया। सवा तीन बजे सतीशबाबू और अुनकी पत्नी हेमप्रभादेवी (मा) आअीं।

अुनके साथ जो कुछ चल रहा है अुसके सम्बन्धमें बातें कीं। सात बजे मौन लिया। पौने पाँच बजे बापूजीने शाक दूध और फलोंमें दो सतरे लिये। प्रार्थनाके बाद घूमे। घूमते घूमते मि० अिंग्लाडके साथ बातें कीं, और स्नान किया। साढ़े छह बजे लौटकर गरम पानी और शहद लिया। फिर अखबारोंके लिअे भेजा जानेवाला प्रार्थना प्रवचन सुधारने बैठे। अिस बीच मैंने बापूजीका सूत दुबटा किया। दुबटा करने पर ८० तार हुअे अर्थात आज बापूजीने अेक घंटेमें १६० तार काते। मैंने बिस्तर किया। साढ़े आठ बजे बापूजी बिस्तरमें लेटे। बिस्तर पर पड़े-पड़े बंगलाका पाठ

---

* यह बात विनोदमें बिलकुल स्वाभाविकतासे हँसते-हँसते बापूने कही थी। बापूजीके चेहरेका वह दृश्य आज जब अुनके शब्द सही सिद्ध हो रहे हैं, आँखोंके सामने खड़ा हो जाता है।

पढ़ा वर्णमाला लिखी। मन पाव दबाय तेल मला और अपना काम पूरा करके साढ़ दस बज सोने गओ।

श्रीरामपुर
२३–१२–४६ सोमवार

आज बापूजीका मौनवार था अिसलिअ जल्दी अुठना नहीं था। प्रार्थनाके समय ही बापूजीने मुझे जगाया। प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीनेके पहले बापूजीने अपनी डायरी लिखी। अुसमें लिखा

आज नींद अच्छी आओी। सवा तीन बजे अुठ बैठा। यहांका काम कैसे निबटाया जाय? मेरी अहिंसा और कायरताकी कैसी कसौटी हो रही है।

गरम पानी और "शहद" पीकर बापूने खुद ही पत्र लिखे। आजकी डाकमें साने गुरुजीको सहभोजनके बारेमें लिखा। ठक्करबापा तथा मणिलाल काका (दक्षिण अफ्रीका) के नाम पत्र लिखे। और मेरे पिताजीको मेरे यहां आनेके बाद पहला ही पत्र लिखा

चि० जयसुखलाल

मनुडी अभी सवेरे ६ बजे याद दिला रही है और यह पत्र लिख रहा हूं। मौनवार है न?

भाओी रतिलालकी बुनाओीसे बनी हुओी पूनीका जो नमूना तुमने दिया था वह सब कात चुका। पूनिया अच्छी थी। असी बारीक कताओीके लिअ पूना बड़ी होती है और अुस पर या कागजमें पकड़ा जाता है। भाओी रतिलालका साहस पूरी तरह सफल हो।

मनुडी सबुनाद है और कामसे संताप दे रही है। मन अिमीसे सुना कि परमानन्द गांधी जिस मधुर स्वरसे रामायण गाते थे वैसे ही स्वरसे तुम भी गाते हो। यह बात सुनी तब पछताया कि जरा पहले पता लग गया होता तो तुम्हें रोककर रामायण सुनता। परमानन्दभाओीका स्वर आज भी कानोंमें गूंजता है। तुमने तो अुन्हें क्या देखा होगा? कालिदासमें वह स्वर कुछ कुछ अुतरा था। अब तो प्रभु हमें जब मिलाये तब मिलेंगे। मेरी सूचना याद रखना।

बापूके आशीर्वाद

'प्रभु हमें जब मिलायें तब मिलेंगे'—परन्तु यह मिलन हो ही न सका। बापूजीने मेरे सामने परीक्षाकी शर्त रखी थी कि 'यह तो यज्ञ है। हमारे पौराणिक यज्ञोंमें सब तरहसे पवित्रता होनी चाहिये। अुनमें काम क्रोध, मोह लोभ अित्यादिका त्याग करना होता है। (अिसलिअे) यदि दो महीने बाद तुम्हें असा मोह हुआ कि अपने पिता या बहनोंसे मिलना हो जाय तो कितना अच्छा हो तो मैं तुम्हें नापास कर दूंगा। यह परीक्षा मेरे लिअे थी और अीश्वर-कृपासे बापूजीको अैसा लगा कि मैं परीक्षामें सफल हुआ। अिसलिअे १९४७ में हमें जब वर्धा होकर कराची जाना था अुससे पहले बापूजीने मेरे पिताजीको खुद ही बुलाया। परन्तु दुर्भाग्यसे वे तब पहुंच सके जब बापूजीका बिड़ला भवनसे अंतिम विदाअी हो रही थी। मेरे पिताजी मिलनेके अुल्लाससे महुवासे रवाना हुअे थे परन्तु प्रभुने अुनको मिलाया ही नहीं। अीश्वरकी असी अगम्य लीला है!

५
तीन अमूल्य पाठ

श्रीरामपुर,
२४–१२–४६ मंगलवार

आज सुबह बापूजीने मुझे तीन बजे जगाया। के नाम पत्र लिखवाये। तीनेक पत्र लिखवाये अितनेमें प्रार्थनाका समय हो जानेसे लिखाना छोड़ दिया। दातुन-पानीके बाद प्रार्थना वगैरा नित्यक्रम चला। गरम पानी और शहद पीकर बापूजीने अपनी डायरी लिखी। साढ़े छह बजे अनन्नासका रस लिया। यहां अनन्नास होता है। अितनेमें प्यारेलालजी अपने गांवसे आये। सुचेताबहन कृपालानी भी आअी थीं। घूमनेका सारा समय अुनके साथ बातोंमें चला गया और मालिशके समय दोनों अपने-अपने गांव चले गये।

आज स्नान करके आने पर साढ़े बारह बज गये थे। अेक बजे भोजन कर सके। खाना आज रोजकी अपेक्षा देरसे हुआ, क्योंकि कुछ डाक आदमीके हाथों-हाथ कलकत्ता भेजनी थी। अुसमें बहुत वक्त लगाना पड़ा। भोजनमें प्यारेलालजी अपने हाथसे निकाले हुअे नारियलके तेलका जो मसका रख गये थे वह और अेक खाखरा लिया। यह मसका साधारण घी या मक्खनका

काम देता है। अिसलिअ दूध छह औंस लिया और मक्खन खाना छोड़ दिया। अुबला हुआ साग भी थोड़ा ही लिया।

खाते खाते कर्नल जीवनसिंहजीने साथ बातें कीं। मैं भी मलने लिअे लगभग दो बजे अपने कामसे निबटनेके बाद आ सकी। अभी तक मैंने भोजन नहीं किया था अिसलिअे बापूजी नाराज हुअे और मुझसे अपने पास थाली लाकर खानेको कहा। यहां दोपहरको बहुत देरसे खानेका रिवाज है। सुबह लोग अच्छी तरह नाश्ता करते हैं दोपहरको तीन साढ़े तीन बजे खाना खाते हैं शामको चाय या नाश्ता लेते हैं और रातको भी देरसे भोजन करते हैं।

परन्तु बापूजीने कहा यह ढंग हमारे अनुकूल न हो तो अिसे छोड़ा जा सकता है। जल्दी अुठना और रातको दस साढ़े दस बजे भोजन करना शरीरमें जहर अुंडेलनेके बराबर है।

पांच ही मिनट घी मलवाया और कहा कि अभी खा लो फिर शामको भोजन न करके फलाहार कर लेना। दोपहरको अढ़ाओीसे तीन बजे तक बापूजी सोये। तीन बजे नारियलका पानी पीकर कुछ पत्र लिखवाये। साढ़े तीन बजे काता। साढ़े चार बजे पेट और माथे पर मिट्टीकी पट्टी ली। बापूजीको कुछ थकावट-सी मालूम होती है। मिट्टी रखनेके समयमें मेरी डायरी सुनते हुअे दो बार झपकी ले ली। डायरी और भी संक्षेपमें लिखनेकी सूचना की।

पौने पांच बजे सुचेताबहन वगैरा आये और अुन्होंने बापूजीके साथ अेकान्तमें बातें कीं।

शामके भोजनमें आठ औंस दूध अेक केला और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। रातको दस बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे।

मैं बापूजीकी कलकी डायरीकी नकल करने ठहर गअी अिसलिअे ग्यारह बजे सोअी। ठंड और बरसात खूब थी।

(बापू श्रीरामपुर २५-१२-४६)

श्रीरामपुर

२५-१२-४६ बुधवार

आज भी बापूजी अच्छी तरह सोये। प्रार्थनासे आध घंटे पहले अर्थात् साढ़े तीन बजे अुठे थे। दातुन-पानी किया। प्रार्थनामें पांचेक मिनटकी देर थी अिसलिअे अितने समयमें मेरी कलकी डायरीमें हस्ताक्षर किये और वगैरा वर्णमाला लिखी।

प्रार्थनाके बाद दसेक मिनटके लिअे बापूजी सो गये। रस पीकर कलके कुछ पत्रों पर दस्तखत किये और मुझे भी बंगला जल्दी सीख लेनेको कहा।

सात बजे घूमने निकले तब लावण्यप्रभाबहन और मि० अिंग्लाड आये। अुनके साथ मि० ग्लैन और अेल्थना ढाकासे बड़े दिनकी भेंट लाये। अिस भेंटमें साबुन, रूमाल, रेजर (अुस्तरा), कैंची थली वगैरा चीजें थीं। बापूजीने सन्तोष देनेके लिअे अुन्हें वचन दिया कि आज रेजर स्वयं काममें लेंगे।*

आजकल घूमते समय बापूजी अेक पुल लांघनेकी तालीम लेते हैं। पुल बहुत छोटा है परन्तु यात्रामें अिससे बहुत बड़े पुल आनेवाले हैं। अुन्हें पार करना आ जाय अिसीलिअे बापूजी यह तालीम ले रहे हैं। मुझे भी यह तालीम अच्छी तरह ले लेनेको कहा।

दोपहरको मैं घी मल रही थी अुस समय बापूजी कुछ पेचीदा अंग्रेजी पत्रव्यवहार सुन रहे थे। वह पूरा हो जानेके बाद मैंने बापूजीसे कहा आपने मुझे कॉलेजमें जाकर अेम० अे० या बी० अे० तक पढ़ने दिया होता, तो आपका अंग्रेजीमें होनेवाला काम मैं भी आसानीसे कर सकती। परन्तु आपने मुझे पढ़ने ही नहीं दिया।

बापूने कहा मुझे तो तुम्हें पढ़ना और गुनना दोनों सिखलाना है। अुसका क्या होगा?

मैंने कहा देखिये महादेवकाका अितना पढ़े तभी तो आपके निजी मंत्री बन सके। और दूसरे भी जितने बड़े लोग हैं वे सब डिग्री प्राप्त किये हुअे हैं। अिसलिअे तो वे अितने अूंचे चढ़े न?

बापू हंस पड़े। बोले "मोटे सो खोटे। डिग्रीकी जगह तुम अुपाधि शब्द काममें लो। और अुपाधि सचमुच अुपाधि ही है। मैं बैरिस्टर बना अिसका मुझे आज पश्चात्ताप होता है। और अिसीलिअे तो मुझे अिस बातका आनंद है कि मैंने [illegible] को अिस अुपाधिमें नहीं डाला यद्यपि मैं जानता हूँ कि अुन लोगोंको सन्तोष नहीं है। और सच कहूं तो मैं बैरिस्टर हूं अिसका मुझे अब खयाल ही नहीं आता। अिसलिअे अपने अनुभवके आधार पर दूसरोंको

* अिसी अुस्तरेका बापूजीने सारी यात्रामें अिस्तेमाल किया था। यह बात जब भेंट देनेवाले भाअियोंको मालूम हुअी तब वे अत्यंत प्रसन्न हुअे थे।

सो अभी अुपाधियां यथार्थ ही थीं। इन आगारमें गये कुछ अवश्य जानना चाहिये। परन्तु आजकलकी यूनिवर्सिटियोंकी पढ़ाओमें जो खामी हो रही है वह मैं सब मानता है। इसमें अगर काम रहा है। विद्यार्थी पढ़ने और इनमें जितना समय गया। ये अनार्य यदि कोओ इतनारमें काम करनेमें लगाव तो उनकी शरीर बच जाय। इस अिस पढ़ाओके पीछे ज्ञान प्राप्त करनेका ध्येय हो तो अलग बात है। तब तो नानक पीछे और पढ़ाओके पीछे यह सब होना चाहिये। परन्तु आजकल विद्यार्थियोंमें परा तक पीछे पढ़ाओ और पढ़ाओके पीछे परीक्षा पर दृष्टि होती है। और फिर? फिर अिस पासका अनयाग इसका समानमें होता है। कोओ डाक्टर बनता है कोओ वकील या बैरिस्टर बनता है और कोओ अिंजीनियर बनता है। और पास होनेके बाद नौकरीकी तलाश होती है। अिस प्रकार सारी मेहनतका परिणाम देखा तो शून्य। अनेक हमारी सारी पढ़ाओके पीछे यही ध्येय होता है कि हमें बढ़िया बड़ी नौकरी कब मिले। अिसमें अपवाद जरूर होंगे। चालीस करोड़ लोगोंमें सभी अगर करते हैं यह कहनेका मेरा हेतु नहीं। परन्तु पढ़ाओका उसमें यह आजकलका नियम बन गया है। अमुक प्रकारकी पढ़ाओ कर तो ही सेवा की जा सकती है यह निरा भ्रम है। किसी भी स्थितिमें रहकर मनुष्य सेवा कर सकता है। अीश्वरने मनुष्यको असी शक्तियां दी हैं कि वह कोओ बहाना बना ही नहीं सकता। वरना मनुष्य-जाति अैसी भयंकर है कि काम न करना हो तो बहाना ही बनाया करेगी। तुम देखोगी कि किसीके पास रुपया है तो किसीका शरीर काम देता है किसीकी बुद्धि काम दे सकती है तो किसीका जबान हाथ-पैर आंख कान वगैरा। सभी सेवाके काम दे सकते हैं। ये तो मैं तुम्हारे सामने अुदाहरण रखे। अिसलिये जो भी शक्ति हममें हो असे कृष्णार्पण कर दें तो हमें पूरे-पूरे नम्बर मिलेंगे। जिसकी शक्ति करोड़ देनेकी हो वह आधा करोड़ ही दे तो अुसे पचास नम्बर मिलेंगे। परन्तु जिसकी शक्ति पाओी ही देनेकी हो वह अगर पूरी पाओी दे दे तो असे सौमेंसे सौ नम्बर मिलेंगे।

व्यवहार साफ होना चाहिये। स्वार्थबुद्धिसे या डरके मारे मनुष्य यदि कुछ करेगा तो वह सेवा नहीं मानी जायगी। जहां अीश्वरार्पणकी भावना है वहां स्वार्थके लिअे स्थान ही नहीं है। अिस प्रकार सेवा करनेवाला रोज अपनी शक्तिमें वृद्धि करता है। अुद्यम करे तो वह भी सेवाभावसे ही करवा

है। जो मनुष्य अिस तरह सेवापरायण रहता है अुसके हसनेमें खाने-पीनेमें, बोलनेमें हर क्रियामें सेवाभाव भरा होता है। अिसलिअे अुसके सभी कार्योंमें निर्भयता होगी। अैसे भक्तोंको अीश्वर सभी आवश्यक शक्तियां दे देता है। अिसीलिअे गीता कहती है

> अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
> तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
> मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
> कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥
> तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
> ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥

(जो लोग अनन्य भावसे मेरा चिन्तन करते हुअे मुझे भजते हैं, नित्य मुझमें ही रहनेवाले अुन लोगोंके योगक्षेमका भार मैं अुठाता हूं। अर्थात् फलकी आशा मुझ पर छोड़कर मेरा काम करो। मुझमें चित्त पिरोनेवाले मुझे प्राणार्पण करनेवाले लोग अेक दूसरेको बोध देते हुअे, मेरा ही नित्य कीर्तन करते हुअे संतोष और आनंदमें रहते हैं। अिस प्रकार मुझमें तन्मय रहनेवाले मुझे प्रेमपूर्वक भजनेवाले भक्तोंको मैं ज्ञान देता हूं और अुस ज्ञानसे वे मुझे प्राप्त करते हैं।)

'अिन श्लोकोंका तुम विचार करो। अिनमें अंतिम श्लोक बड़ा महत्त्वपूर्ण है। अिसमें महाश्रद्धाकी जरूरत है। अीश्वरका काम करनेमें तुम अपनी प्राप्त की हुअी डिग्रीका कहां अुपयोग करोगी? मैं तुम्हारे मनमें यही बात बिठाना चाहता हूं। और कदाचित तुम पत्नी होती कॉलेजमें जाती होती तो आज कहां होती? मेरी चले तो मैं सभी कॉलेजकी लड़कियां और लड़कोंको दयाकी अिस आगमें झोंक दूं। सचमुच यदि हमारे विद्यार्थियोंके मनसे डिग्रीका मोह निकल जाय तो तुम देखोगी कि सारी दुनियाके नकशेमें हिन्दुस्तान जो बिन्दुमात्र है वह समुद्र जैसा हो जाय। तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर — यह सुन्दर कहावत छोटेसे कुटुम्ब पर ही लागू नहीं होती, बड़े-बड़े देशों पर भी लागू होती है। जैसा देश वैसी ही अुसकी रहन-सहन और वैसा ही अुसका कामकाज होना चाहिये। परन्तु अंग्रेजोंका न करने लायक अनुकरण करनेसे हमारा पतन ही होगा। 'हंस कौअेकी चाल चलने लगता तो मर ही जाता। परन्तु वह अपनी चाल

६
पंडितजी मिलने आये

श्रीरामपुर,
२६-१२-४६

आज तीन बज अुठ।

बहुत थी। बापूजी लेट लेट लिखवा रहे थ। म नाम बापूजीन पत्र लिखवाय। ठड
बापूजी झपकी लेते अुतन समयम म अनकी डायरीकी नकल अपन लिअे
कर लेती। दो दिनकी नकल करनी बाकी थी। बापूजीने मुझ यह गलत
परिश्रम न करनको कहा। परन्तु मन कहा आप अपनी डायरीमें मरे
बारेमें अुल्लेख करते ह अिसीलिअे म नकल कर लेती हू ताकि जीवन
भर वह मरे पास रहे।

प्रार्थनामें आज नही थे। कल रातको
वापस नही आय। बापूजी बहुत दुखी हुअ। प्रार्थनाके बाद
बारेमें के साथ बातें की और कलका प्रार्थना प्रवचन सुधारा। मने
बापूजीको गरम पानी देकर अपनी कलकी डायरी लिखी। आध घट बाद
साढ सात बज घूमन निकले। घूमत समय बापूजी कुछ विचारोंमें लीन
थ। के साथ भी बातें की। रोजकी तरह पुल पार करनकी तालीम
जारी है। पर धोत समय को प्रार्थनाम अुपस्थित न होनके बारेमें
पूछा अुनके साथ बातें की। अिसमें बहुत वक्त लग गया। पूछकर
नही गय थ अिसके लिअे बापून से कहा अन पर मेरा कोअी हक
नही है। अब पुत्रकी तरह व रहते ह अिसलिअ अितना कहना मुझ अपना
धर्म प्रतीत हुआ। वे मुझ छोड दें तो म बडा खुश होअूगा। यह लडकी
भी मुझ छोड सकती है। परन्तु मन अिसे वचन दिया है कि जब तक म
जिन्दा हू तब तक अिसे नही छोडूगा। यह चाहे तो मुझ छोड सकती है।
तुम भी मुझ छोड सकते हो। तो ही मेरी परीक्षा होगी। शायद ओीश्वरको
मेरी परीक्षा करनी होगी अिसीलिअ तो वही वह अकल्पित प्रसग अुपस्थित
नही करता हो? वह मानते ह कि मन में रहकर भूल की है। परन्तु
म कहा मानता हू? परन्तु मरी परीक्षा अिसीमें होगी। बापूजीन बडी
गंभीरतापूर्वक के सामन अपना हृदय अुडला।

मैं ये बातें सुननेके लिअे खड़ी रही अिसलिअे नहानेमें देर हो गअी। अिससे सभी काममें विलम्ब हुआ। खानेसे पहले बापूजीके पैरमें घी मलना था। बापूजीने अुलाहना दिया, 'तुम्हारा बातें सुननेके लिअे खड़ा रहना मुझे अच्छा नहीं लगा। कितनी ही दिलचस्प बातें हों तो भी हमें अपने नियमको भंग नहीं होने देना चाहिये। परन्तु के साथ हुअी बातें तुम्हारे समझने लायक तो जरूर थीं, अिसलिअे तुम्हें मेरे परोंमें घी मलनेसे मुक्त रखनेकी अिच्छा होती है। परन्तु तुम नहीं चाहोगी, अिसलिअे अिस सारे समयका बदला चुकानेके लिअे तुम्हें अपनी कुशलता दिखानी होगी। अिसका अर्थ यह नहीं कि खानेमें जल्दी मचाकर चली आओ।'

तारसे समाचार आये कि पं० जवाहरलालजी २७ तारीखको आनेवाले हैं। अुनके लिअे क्या बन्दोबस्त करना होगा अिसके सम्बन्धमें निमलदाके साथ बापूजीने बातें कीं। मुझसे बापूजीका कमोड ले जानेको कहा गया। खानेका अिन्तजाम आअी० अेन० अे० वाले कर्नल जीवनसिंहजीके आदमी करनेवाले हैं।

दोपहरको बापूजीने मेरी कलकी और आजकी अधूरी डायरी सुनी। अूपर अूपरसे खुद देख गये। अभी हस्ताक्षर नहीं किये।

शामको बापूने कुछ नहीं खाया। प्रार्थनाके बाद गरम पानी और शहद ही लिया। पानी पीकर बापूजीने आध घंटे काता।

बापूजी जिस अंगोछेको काममें लेते थे वह बीचमें से बिलकुल जर्जरित हो गया था। मैंने नया देनेसे पहले विचार तो बहुत किया कि अिसमें कुछ अक्ल लगाअूं और यदि जोड़ लग सके तो जोड़ लगाकर ही बापूजीको दूं ताकि शाल्व जैसा किस्सा न हो। बहुत विचार किया परन्तु बुद्धि कुछ चली नहीं। अन्तमें नया अंगोछा बापूजीके हाथमें रखा। बापूजीने कहा, "अभी पुराना काम देगा। (मैं तो मानती थी कि बापू कुछ भी कर तो भी अब अिसमें पैवन्द काम नहीं देगा और जोड़ लग ही नहीं सकेगा। साथ ही असे टुकड़ेमें रफू भी नहीं होगी। और अिससे ज्यादा बापूजी क्या करेंगे?) अिसलिअे मैंने झट अुत्तर दिया कि अिसमें मैंने बहुत अक्ल लगाअी है। अिसे छुट्टी दिये बिना चारा नहीं है। देखिये अब अिसमें आप क्या कर सकेंगे?

बापू हस पडे। मेरा कान खींचकर बोले — परन्तु अिस रूमालको अभी नया करके दो महीने चलाअू तो?

मन कहा — आप चला ही नहीं सकते।

अन्तमें अुन्होंने अुस रूमालको अुसी हालतमें डबल कर दिया ठीक चौकोर बनाकर अच्छी तरह जोडा और रफू कर लिया। (सचमुच अुस रूमालकी अुम्र दो महीने तो बढ ही गअी। परन्तु बादमें मन जिद की और यह कहकर कि अुसे मुझ नमूनेके तौर पर अपने पास रखना है मने रूमाल ले लिया। यह अगोछा बहुत सुंदर बन गया है। हमारे यहा रजाअीमें जैसे पल्ले डालनेका रिवाज होता है वैसी चौरस आकारवाली सुन्दर सिलाअी की गअी है। अिससे अगोछा ज्यादा मजबूत हो गया है।)

बापूजीकी असी बारीकी और कलात्मक किफायतशारीका कल्वाले शान्त पाठसे आज भिन्न ही प्रकारका पाठ मिला।

अक बहन बम्बअीमें डाक्टर है। वे नोआखालीमें सेवा करने आनेको कहती थीं। परन्तु बापूजीने अुनसे कहा — सुहरावर्दी साहबसे अिजाजत लेकर खुशीसे आ सकती हो।

रातको बापूजीने साढे नौ बजे सोनेसे पहले मेरी पूरी डायरी सुनी हस्ताक्षर किये और बिस्तरमें लेटे।

(बापू)

श्रीरामपुर
२७-१२-४६

आज रातको बापूजी दो बजे अुठे। मुझे जगाया। मेरे लिअे छींटके पंजाबी सलवार और कुरते बने थे। बापूजीने पूछा — तुमने छांट या लिये प्रकारकी मांग की जाय, अिस बारेमें — ने कुछ कहा था?

मने कहा — यह कपडा — नहीं लाये हैं। आपने बिडलाजीके आदमियोंसे कहा था। वे लाये हैं।

बापूजी बोले — तब तो क्या कमी हो सकती है? छांट भले ही आअी और सलवार-कुरते भी पहन डालना। परन्तु मनमें यदि यह भाव हो कि अुसे बराबर पहनना और अच्छी लगेगी तो अुसे निकाल देना। मनुष्य स्वादके लिअे खुराकको खट्टी मीठी और तीखी बनाता है। परन्तु यदि वह

यह वृत्ति पैदा करे कि हमारा शरीर अेक देवस्थान है अिसका अुपयोग सेवाथ होना चाहिये और वह सेवा करनेके लिअे पौष्टिक भोजन करनेसे शरीर कायम रह सकता है, तो अुस मनुष्यका जीवन भव्य बनता है। यही बात कपडेकी भी लागू होती है। कपडे शरीर ढकनेके लिअे, सरदी-गरमीसे शरीरकी रक्षा करनेके लिअे हैं, न कि फशन दिखानेके लिअे। आज तो हर बातमें फशन ही फशन है। लडकिया बिना बाहोंके पोलके पहनती ह बारीक साडिया पहनती ह, और पोल्के भी अुतने ही बारीक और चुस्त होते ह। मने असी बहुतसी निकम्मी बातें देखी ह। और यह सोचकर मनमें दु ख होता है कि क्या हमारी सस्कृतिका नाश बहनें ही करेगी।

'चुस्त कपडे पहननेसे श्वासोच्छवास अच्छी तरह नही लिया जा सकता, फेफडे कमजोर पड जाते ह, और अिसके परिणामस्वरूप स्त्रिया क्षय जसे रोगोंकी शिकार बनती ह। हिंदुस्तानमें पुरुषोंसे स्त्रिया और अुनमें भी युवतिया अिस रोगकी अधिक शिकार बनती हैं। अिसके अनेक कारणोंमें से यह भी अेक कारण है।

'बालोंकी भी यही बात है। मने तुम्ह बालोंकी सादगीके बारमें भी कहा तो है ही। अेक बार और कहता हू कि बालोंमें जितनी सादगी रहेगी अुतने ही बाल सुन्दर लगेंगे। बाल सिरकी रक्षाके लिअे हैं। अीश्वरने जो कुछ दिया है वह सब सदुपयोगके लिअे ही दिया है। अुसकी दी हुअी अेक भी चीज व्यय नही है।

'दूसरी बात यह कहनी है कि तुम्ह के साथ या और किसीके साथ बातोंमें समय बेकार नही खोना चाहिये। तुम अुन्नकी हो। और म तो अपना ही अुदाहरण तुम्ह देता हू। बचपनमें समवयस्क लोगोंकी कुसगतिमें पड जानेके कारण मने मास खाया और बडेकी चोरी की। हमेशा बराबरकी अुम्रवालोंमें यदि समझनेकी शक्ति हो और साथ ही निश्चय हो कि हम अेक-दूसरेके गुणोंका ही अनुकरण करेंगे, अवगुणोंका नही, तो ही दोनों व्यक्ति अूपर अुठते ह, नही तो आम तौर पर बुरी बातें ही सीखते ह और दोनोंका पतन होता है। सबके साथ आवश्यक बातें ही करनी चाहिये। गुण अवगुणको दूर कर सकता है, पर अवगुण अवगुणको क्या दूर कर सकता है? बहुत कुशल है। फिर भी मनुष्यमें कभी कभी कोअी अैसा दोष आ जाता है, जो सारी अच्छाअियोंको ढक देता है। परन्तु मेरे खयालसे शायद

मनुष्यकी परीक्षा करनेके लिअ ही ओश्वर सौ गुणोंके साथ अुसमें अक असा अवगुण रख देता है और फिर अुसकी परीक्षा करता है। जिस अवगुणको मनुष्य समझ ले तब तो फिर कहना ही क्या? तब मनुष्य मनुष्य नहीं रह जाता, वह अनंत शक्तिमें लीन हो जाता है। असा मनुष्यत्वमें भव्यता है।'

मनुष्य-जीवनका यह तत्त्वज्ञान बापूने रातको अढ़ाओसे साढ़े तीनके बीचमें समझाया। घूमनेमें थोड़ी देर थी, अिसलिअे मेरी दो छोटी डायरीमें हस्ताक्षर किये। मुझसे कहा: मुझे पता नहीं था कि तुम अितनी लम्बी डायरी लिख सकती हो। मुझे अच्छी लगती है। तुम्हें रोज मुझसे पढ़वा ही लेना चाहिये और याद रखकर हस्ताक्षर करा लेने चाहिये। हस्ताक्षर करानेका मूल्य आज तुम्हारी समझमें नहीं आयगा। परन्तु आजकल मैं तुम्हें जो कुछ दे रहा हूं, अुसमें अपना हृदय अुड़ेल रहा हूं। भविष्यमें यह डायरी अुसका प्रमाण होगी। साथ ही तुम्हारी कच्ची अुम्र होनेके कारण अिस सारी बात पर मेरे हस्ताक्षर होना जरूरी है। अिसलिअे डायरीमें हस्ताक्षर करानेका काम रोजका राज हो जाना चाहिये। अिसमें कितनी देर लगती है? मैं तो तुम्हें वैसे ही तालीम दे रहा हूं, जैसे मां बेटीको देती है।'

जवाहरलालजी आनेवाले हैं अिस कारण अुनके लिअे सडूवाला पाखाना तैयार कराया। अुसमें बापूजीने जो सुधार सुझाये अुन्हें करनेमें सुबहका सारा समय चला गया।

बाकीका क्रम तो लगभग नित्यके अनुसार ही चला। भोजनमें सबेरे बापूजीने रोजकी तरह ही सब चीजें लीं। शामको दूधके साथ अक खाखरा (पापड़ जैसी खस्ता रोटी) लिया था। बापूजी कहते थे 'आज कुछ भूख-सी मालूम होती है।' बापूजी आज दिनभर ... की बातें करते रहे। सारी बातचीत लगभग खानगी ही थी। अतः मेरे लिअे छुट्टी जैसी थी। मैंने अपना लिखनेका सारा काम पूरा कर डाला।

... ने अेण्टीफ्लाजिस्टीन मंगाया था। परन्तु बापूजीने काली मिट्टीको बारीक कपड़ेसे छनवा डाला और वह मिट्टी ... को भेजी। अुस मिट्टीमें भीगने लायक पानी डालकर और गरम करके लेपकी तरह लगानेको कहा। बापूजी मानते हैं कि अिस मिट्टीमें अेण्टीफ्लाजिस्टीनके लेपसे भी अधिक गुण हैं।

(बापू)

बापूजीने अपनी डायरीमें लिखा

आज सवेरे दो बजे अुठा। २-१५ को मनुडीको जगाया, अुमे के बारेमें समझाया। कपडा और बालोंकी सादगीके बारेमें तथा या और किसीके साथ बातोंमें समय न बितानेके सम्बन्धमें भी समझाया। और अिस बारेमें बातें की कि अक्सर जैसी मोहब्बत होती है वैसा असर पड़ता ही है। (डायरीमें) हस्ताक्षर करानेके बारेमें समझाया। वह अच्छी तरह समझ गअी। प्रार्थनाके बाद के साथ बातें की। अिसमें काफी समय दिया। बंगलाका पाठ किया, अितनेमें ५-१५ बज गये। बीमार पडी है। अुमे पत्र लिखा कि वैद्य डाक्टर बाहरसे न बुलाया जाय। पंचतत्त्व परमेश्वरका आधार रखकर जैसी अिच्छा हो वैसा करे।

ठक्करबापा आये। जवाहरलालजी वगैरा आनेवाले थे। परन्तु (रातको) साढे नौ बजे तक नहीं आये। बापाके साथ बापूकी थोडी बात हुअी। ७० तार भेजे। साढे नौ बजे सोनेकी तैयारी की।

श्रीरामपुर
२८-१२-४६

आज रातको बापूजी अढाअी बजे अुठ गये थे। परन्तु लालटेन देनेके बाद मुझे सुला दिया। और लिखनेका काम आज सारा बापूने खुद ही किया। प्रार्थनाके समय मुझे अुठाया। प्रार्थना वगैरा नित्यक्रम सदाके अनुसार।

साढे सात बजे घूमते वक्त जवाहरलालजी तथा मृदुलाबहन आये। ये लोग भी बापूजीके साथ घूमने आये। पुल लांघनेकी जो तालीम बापूजी ले रहे थे अुसे देखनेमें पंडितजीको बडा मजा आ रहा था। पंडितजी तो दो डगमें ही पुल पार कर गये। लौटते समय बापूजीने मुझे यह ध्यान रखनेको कहा था कि जवाहरलालजीकी सारी व्यवस्था ठीक है या नहीं। बापूजीके कहनेसे अुनका कमोड मैं पंडितजीके निवास-स्थान पर ले गअी। यह देखकर पंडितजी मुझ पर नाराज हुअे और बोले, 'तुमको अितनी अक्ल नहीं है कि बापूको कितनी तकलीफ होगी? बापूका कमोड हम कैसे अिस्तेमाल कर सकते हैं? मैं अितना नाजुक आदमी तो नहीं हूं।'

मने कहा लेकिन बापूने कहा किसीलिअे म त्यागी हू।

वे ज्यादा नाराज होकर कहने लगे बापूकी नाराजगी तुम्हे सहन करनी चाहिये। बापूका सभालनकी जिम्मेदारी तुम्हारी है। फिर अुनसे कितनी क्या जरूरत है यह देखनका काम तुम्हारा है न? बापू तो अैसे ह कि खुद तकलीफ भुगत लगे लेकिन दूसरेकी सब जरूरियात देख लगे। अैसे बापू ह। लेकिन फिर भी कहता हू कि म ता जवान आदमी हू कहीं भी चला जाअूगा। लकिन किसीको जिस तरह बापूकी जो जरूरियातकी चीजें ह वह तुम्ह न दनी चाहिये। चाहे बापू मार भी डालें। तुम डरना नहीं बापू मारग नही।

यह अतिम वाक्य बोलते बोलते तो अक क्षणमें पडितजीके चहरे परसे नाराजी जाती रही और विनोदका भाव आ गया। बादमें बुजुग लोग अक्सर प्यार करके अुन्हें मना लते ह वसे ही मुझ प्रमसे आलिंगन करके कहन लग जाओ बापूसे कहना जवाहरलाल मना करते ह। फिर पूछताछ की कि बापूकी तबीयत कसी रहती है भोजनमें क्या लेते ह वगरा वगरा।

बापूजीके प्रति पडितजीकी भक्तिको कौन नही जानता? परन्तु साक्षात् दशन होनस पावनताका अनभव हुआ। अिस बोधवाणीके समय अुनके भावनापूण हृदयसे कभी ओगीले शब्द निकलते थ तो कोअी वाक्य अत्यत धीमा और भावपूण निकलता था और कभी विनोदी शब्दोका स्वर कानमें गूजता था।

बापू कुछ लिखनेमें बहुत मशगूल थ। अिस समयका अुपयोग करके पडितजीकी बात लिख लेनेका मुझे मौका मिल गया। अभी मालिश स्नान वगरा बापूजीका सब काम बाकी है। आज बहुत देर होनकी सभावना है। मालिश करते समय मन बापूजीसे अुपरोक्त बात कही। बापूजी अितना ही बोल वह आदमी जसा ही है। अब वह कमोड काममें नही लेगा। रख दो।

ठक्करबापा भी तबीयत खराब हानके बावजूद यहा तक आ पहुचे ह। बापू कहन लग अिनके सामन अच्छ अच्छे जवानाको भी शरमाना पडे अितना काम ये अिस समय कर रहे ह।

खाते वक्त बापूजीने पडितजीके साथ बातें की। अुन्हे अक खाखरा और खोपरेका मसका और तेल—जो प्यारेलालजीने खास तौर पर

निकाल कर भेजा है — चखाया। अुसे बताते हुअे बापूजीने कहा, जहां जहां नारियलकी पैदावार होती है वहां मनुष्योंको अनाजकी जरूरत नहीं है। नारियलका पानी भी खुराक जैसा माना जा सकता है, नारियलका दूध खाया जा सकता है। नारियलका तेल आसानीसे निकल सकता है और आजकलके मिलावटी घीसे बहुत पौष्टिक है। और जो छूछ निकलती है अुसकी मिठाअी बनाअी जा सकती है। (अिस मिठाअीको बंगालमें संदेश कहते हैं। यह मिठाअी भी बापूजीने अुन्हें चखाअी।) हिंदुस्तानमें अैसा प्रदेश बहुत है जहां ताड़गुड़ और नारियलके अुद्योगका विकास हो सकता है। और अिससे अनाजकी बहुत बचत हो सकती है। बंगालमें असी प्राकृतिक संपत्ति भरपूर होते हुअे भी आज अुसकी हालत कंगाल जैसी है। अिसका कारण लोगोंके आलस्यके सिवाय मुझे तो और कुछ दिखाअी नहीं पड़ता। हमें प्रकृतिने तो अपार भंडार दिया है परन्तु आलस्य हमें खा जाता है। अिन बातोंके बाद दोनोंने लगभग डेढ़ घंटे तक अेकान्तमें बातें कीं।

जैसे अेक सयाना पुत्र पितासे थोड़े समयके लिअे जुदा हो जाता है और जब पिता-पुत्र फिर मिलते हैं तब पिताकी अनुपस्थितिमें हुअी भली-बुरी सभी घटनाओंसे पुत्र वफादारीके साथ पिताको परिचित कराता है और पितासे अुचित मार्गदर्शन प्राप्त करके हलका हो जाता है वैसा ही दृश्य आज यहां है। ये दोनों पुरुष अिस समय अिस मिट्टीके झोपड़ेमें अेक गद्दे पर बैठकर देशके भूत वर्तमान और भविष्यके प्रश्नोंकी चर्चा कर रहे हैं। बापूजी दिल्ली छोड़-कर यहां आये अुसके बाद जो जो घटनायें हो चुकी हैं, देशमें अिस समय हो रही हैं और आगे होंगी अुनके लिअे क्या मार्ग अुचित था, है और होगा — अिस सम्बन्धमें पंडितजी बापूसे मार्गदर्शन ले रहे हैं। मुझे थोड़ी भी चित्रकला आती होती तो अिस दृश्यको आज शब्दोंमें लिखनेके बजाय मैं अिसका चित्र खींच लेती। यह दृश्य अितना भव्य था। लगभग ग्यारह बजेसे साढ़े तीन बजे तक पंडितजी, शंकरराव देव, कृपालानीजी वगैरा मेहमानोंके साथ वारी बारीसे बातें करनेमें बापूजीका समय गया।

अिन मेहमानोंका समय व्यर्थ न जाय अिसके लिअे बापूजीने दोपहरको साढ़े तीन बजे मौन लिया ताकि कल साढ़े तीन बजेसे बातें हो सकें। शामकी प्रार्थनामें सभी मेहमान आये थे। जवाहरलालजी और कृपालानीजीने भाषण दिये थे।

गामकी थकावट होनेके कारण बापूजीने छह औंस दूध और फल ही लिये। रातको नौ बजे डा० राममनोहर लोहिया आये। बापूजी साढ़े नौ बजे बाद सोये।

श्रीरामपुर
२९–१२–४६

आज बापूजी पौने चार बजे उठे। पंडितजीके लिअे कुछ लिखना शुरू किया जितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया। प्रार्थना वगैरा नित्यक्रमके बाद बापूजीने परसोंका भाषण सुधारा।

साढ़े सात बजे घूमने निकले। सभी लोग साथ थे। बापूजीका मौन होनेसे कोअी खास बात नहीं हो रही थी। मालिश और स्नानके बाद ग्यारहसे अेक तकका समय पंडितजीके साथ बिताया। पंडितजी बातें सुना रहे थे। बापूजीको कुछ पूछना होता तो लिखकर पूछ लेते थे। दोसे ढाअी तक बापूजीने आराम किया। मुझे मेहमानोंको भोजन कराने जाना था जिसलिअे बापूजीने मिट्टी लेते समय पैरोंमें घी मलनेको कहा। अुठकर तुरन्त पंडितजीको फिर बुलवाया। ढाअीसे चार बजे तक पंडितजीके साथ। प्रार्थनाके बाद पंडितजी शंकरराव देव कृपालानीजी और मृदुलाबहनके साथ मंत्रणा की। आज भी शामका भोजन हल्का ही किया। बिहारके दंगोंसे बापूजीको काफी दुःख हुआ है।

पू० ठक्करबापाको आज बुखार नहीं आया। आज दिनमें बापू कात नहीं सके थे जिसलिअे जिस समय नौ बजे कात रहे हैं। कातते कातते प्रेस रिपोर्टरसे अखबार सुन रहे हैं और मैं पास बैठी अपनी डायरी लिख रही हूँ। साढ़े नौ बजे तक कातनेके बाद कुछ लिखनेका काम करके बापूजी बिस्तर पर लेटे।

श्रीरामपुर
३०–१२–४६

बापूजी अढ़ाअी बजे उठे हैं और पंडितजीके लिये कुछ लिख रहे हैं। मैं अपनी डायरी लिखने बैठी हूँ।

आजकल बापूजीको समय नहीं रहता जिसलिअे मेरी डायरी नहीं देख पाते। बापूजीका अभीका जीवन-मंथन वैसा ही है जैसा असा भगतने

गाया है समुद्रमें नाव तो कहीं भी जानेको मुड़ती है, पर नाविककी आंख केवल ध्रुवतारे पर होती है और अुसी निशानीके आधार पर वह अपनी नावको अपने मार्ग पर ले जाता है। आजकल बापूजी वैसा ही कर रहे हैं। अुन्होंने अपना निशान सत्य-ओीश्वर रामनामको बनाया है।

आज साढ़े सात बजे पंडितजी और अन्य मेहमान विदा हुअे। घूमकर आये तब पता चला कि कृपालानीजी अपनी पेटी भूल गये हैं। अुसे फेनी भिजवाया। बापूजीको पिछले तीनेक दिनसे थकावट जान पड़ती है। रोज ढाओी बजे अुठकर काममें लग जाते हैं पर यह सब बापूजीके लिअे शक्तिसे बहुत ही ज्यादा है।

शामको चरखा चलाते हुअे मुझसे पिछले तीन दिनकी डायरी पढ़वाओी। दूसरी डाक पढ़वाओी। बापूजीने कहा 'तुम्हारी डायरी रोज नहीं पढ़ी जाती, यह मुझे अच्छा नहीं लगता।

मैंने कहा आपका समय कहां रहता है?

बापूने कहा परन्तु प्यारेलालको तुमने बताओी, अिससे मुझे संतोष है। वह भी तुम्हारा काफी पथप्रदर्शन कर सकते हैं।' और कोओी खास बात आज नहीं हो पाओी।

(बापू। अच्छा लिखा है। ३१-१२-'४६ श्रीरामपुर)

पुनश्च

(२८ २९ और ३० तारीखकी मेरी डायरीमें ता० ३१-१२-'४६ को सबके ही अेकसाथ अूपर लिखे अनुसार बापूने हस्ताक्षर कर दिये।)

७

यात्राकी तैयारी

श्रीरामपुर
३१-१२-४६ मंगलवार

आज बापूजी प्रार्थनासे थोड़ी ही देर पहले अुठे। प्रार्थनामें लगभग १५ मिनटकी देर थी। अिस बीच मेरी डायरी देख गये और हस्ताक्षर कर दिये। मुझसे कहने लगे: "तुम बहुत लम्बा लिखती हो। पर लिखा अच्छा है।"

मैंने कहा: "संक्षेपमें लिखूं तो सही, परन्तु यह नोटबुक पूरी होने पर भाओीको (पिताजीको) भेजूंगी। अितना लंबा न लिखा हो तो अुन्हें यहांकी परिस्थितिका कैसे पता चले?"

बापू हंसते हंसते बोले: "चले चले, अगर लिखना आवे तो।"

प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीकर पत्र लिखे। ७ बजे प्यारेलालजी अपने गांवसे आये। अुनके साथ बातें करते करते घूमने गये।

९॥ बजे मालिशमें मैंने बापूजीसे कहा: "जब तक सुहरावर्दी जैसे लोग हैं तब तक आप झूठसे भरे वातावरणमें कैसे काम कर सकेंगे?" मेरे अिस प्रश्नका अुत्तर तो अेक तरफ रह गया, परन्तु अेक नया पाठ मुझे मिला।

"तुम सुहरावर्दी कैसे कह सकती हो? सुहरावर्दी साहब कहना चाहिये। वे कैसे भी हों, परन्तु आज अेक अूंचे ओहदे पर हैं। दूसरी दृष्टिसे कहूं तो तुमसे अुम्रमें बड़े हैं। अिस प्रकारकी त्रुटि हमारी प्रजामें बहुत पाओ जाती है। जब तक हममें विवेक-बुद्धिकी कमी होगी तब तक हम पिछड़े हुओ ही रहेंगे। पश्चिमके लोग तो अेक नौकरको भी अुससे कोओी चीज मंगानी हो तो 'प्लीज' आगे रख कर ही संबोधन करेंगे और कामके अंतमें 'थैंक यू' कहे बिना नहीं रहेंगे। यह तो मैंने तुम्हें अुदाहरण दिया है। परन्तु हमारी प्रजामें यह चीज नहीं है। भाषामें शिष्टता और विनय तो कभी छोड़ना ही नहीं चाहिये। अिस प्रकारकी त्रुटि हममें साधारण बन गओ है। और शायद ही कोओी अिस पर ध्यान देता है। मगर मैं तो भाषामें अशिष्टता आ जाय तो अुसे भी सूक्ष्म रूपमें हिंसा कहता हूं और राओीके बराबर भूलको पहाड़ जैसी

मानता हू। यह कुटेव कोओी साधारण नही है। जो हमसे बडे या बुजुग हो अुनके प्रति सम्मानपूण भाषा ही काममें लेनी चाहिये। जब प्रत्येक भारतवासीको अैसी आदत पड जायगी तभी हमारे देशका, जो पिछडा हुआ माना जाता है, अुद्धार होगा। अैसी आदतें बचपनसे डाली जानी चाहिये।"

अपनी भूलसे मिला हुआ यह बोधपाठ मुझे किसी अच्छी पाठशालामें भी पढनेको मिलता या नही अिसमें शका है।

आजकी खुराकमें बापूजीने परिवतन कराये। दोपहरके खाखरे बद कर दिये और अुसके बजाय पाच बादाम पिसवा कर सागमें डलवाये। पाच काजू लिये। शामको फल और अेक औस गुड लिया।

श्रीरामपुर
२–१–'४७, गुरवार

मैंने साथ रखनेका सारा सामान बाधा तथा तुरन्त आवश्यक हो असी चीजो और महत्त्वके कागजोका अेक बडा बगलझोला अपने अुठानेके लिअे अलग तयार किया।

ठीक साढे सात बजे बापूजीने श्रीरामपुर छोडा। मै बापूजीका बडा बगलझोला लेकर छोटे रास्तेसे तीस मिनटमें अर्थात आठ बजे यहा (चडी पुर) पहुच गअी। चडीपुर आकर बापूजीकी मालिशकी तयारी की, कूकर रखा और बरतन साफ किये। बापूजीके साथ सुशीलाबहन थी। रामधुन चल रही थी और दूसरे कीतनवाले भी कीतन कराते आ रहे थे। बापूजी यहा आठ बजकर पचास मिनट पर पहुचे। यहा जिस घरमें हमारा पडाव है अुस घरकी बहनोंने बापूका स्वागत किया अुन्हे तिलक लगाया और हार पहनाये।

अब्दुल्ला साहब, डी० अेस० पी० आये। अुन्हें बापूजीने कहा, जिन सनाके आदमियोका होना मुझे अच्छा नही लगता शोभा नही देता। मेरी रखवाली तो बहुत बडा प्रभु कर रहा है। मने अुस रखवाले — अीश्वर खुदा पर ही सब कुछ छोड दिया है। अुसे जरूरत होगी तो वह मुझे जिन्दा रखेगा, न जरूरत होगी तो अुठा लेगा।

मालिश स्नान, भोजन और आराम करके बापूजी अुठे तब लगभग १२–५० हो गये थे।

भोजनमें यहा ताजे बने हुअे मुरमुरे अुबाला हुआ शाक, अेक ग्रेपफ्रूट और दूध लिया। अेक बजे नारियलका पानी पिया। दोसे तीन बजे तक कातो।

कातकर मिट्टी लेते हुअे   के साथ बातें की। गामका अिम रायालम प्रार्थना साढे चार बजे हुअी कि बहनोंने लिअे बहुत देर न हो जाय। प्रार्थनामें बहनोंकी अच्छी संख्या रही। प्रार्थनासे आकर बापूजीने गाजर वाली और दूध लिया। वालीको शाकमें डाला था परन्तु चबानेमें बापूजीको कठिनाअी हुअी।

आज सुशीलाबहनके गांवमें घूमने गये। अुस गांवका नाम है चागराम। चंडीपुरके पास ही है। अेक बडा मकान है जिसमें दूसरे भी रहते हैं और अेक कमरेमें सुशीलाबहन रहती हैं। अुनसे तथा अन्य स्थानीय लोगोंसे बापूने बातें की। हम अचानक ही पहुंच गये थे अिसलिअे सुशीलाबहन बहुत प्रसन्न हुअीं। लौटते समय तो बापूजीने खूब दौडाया पचास मिनटमें वापस आ गये। जाते समय सवा घंटा लगा था। आकर मैंने बापूजीके पैर धोये और अुन्हें रामफल खाते हुअे मेरी डायरी सुनी बंगालीका पाठ किया और थकाव मालूम होनेके कारण लेट गये। नौ बजे बाबा (सतीशबाबू) आ पहुंचे।

चंडीपुर
३-१-४७ गुरुवार

आज रातको बापूजी बहुत जल्दी नहीं अुठे। सवा तीन बजे अुठे। दातुन करते करते किसी प्रसंगके आधार पर मुझे कहने लगे : मेरा मनोविज्ञान यह है कि हम कुछ भी काम करें और अुसका सोचा हुआ परिणाम न आवे तो यह समझना चाहिये कि दोष हमारा है। हमें गंभीरतासे विचार करना चाहिये कि हमारा सोचा हुआ परिणाम क्यों नहीं आया? अिसका जवाब अपने मनसे शांतचित्त होकर मांगना। तुम्हें जवाब मिले बिना नहीं रहेगा। यदि तुम अितनी विचारक बन सको तो मेरा काम कितना चमक अुठे? तुम्हारे लिअे यह बडा कठिन काम है परन्तु प्रयत्न करोगी तो बहुत आसान हो जायगा। जिस दिन हम अपने दोष देखने लगेंगे अुस दिनसे हमें अिस प्रकार लडाअी झगडे और मारकाटमें पडनेकी बात नहीं सूझेगी। केवल यही सूझेगा कि दुनियाका भला किस बातमें है। आज हमारे दिमाग खाली पड गये हैं। हम आपसमें अेक-दूसरे पर दोष मढने हैं। मेरे कहनेका यह आशय नहीं कि अैसा हम जान-बूझकर करते हैं परन्तु यह स्वाभाविक ही हमसे हो जाता है। जैसे आगसे अनजाने हाथ छू जाय तो हम तुरन्त अुसे हटा लेते हैं अुसमें यह विचार करनेकी जरूरत नहीं पडती कि हटायें या नहीं बस ही आजकल जो अमानुषिक कृत्य हो रहा है वह मानो स्वाभाविक हो

गया है। परन्तु अिसका तहमें जाकर हमें यह सोचना चाहिये कि कोअी हिन्दू अेक भी मुसलमानको क्या मारे? या कोअी मुसलमान अेक भी हिन्दूको क्या मारे? अिस दंगेकी जिम्मेदारी मेरी दृष्टिमें सारे हिन्दुस्तानकी है। प्रत्येक भारतीय यह सोचे कि 'मेरा हृदय किस ओर है? शुद्ध है या अशुद्ध? मैं प्रत्येक भारतीयको अपना भाअी मानता हूँ या नहीं?' यदि अेक भी हिन्दू यह चाहे कि मुसलमान मरे तो अच्छा हो अथवा अेक भी मुसलमान यह चाहे कि हिन्दू मरे तो अच्छा हो — भले वह खुद छुरियाँ न भोंकता हो, परन्तु मनमें अेक-दूसरेका बुरा चाहता हो — तो मैं कहता हूँ कि जो छुरा भोंककर मारनेवाले हैं अुनसे ये हल्के विचारवाले लोग अधिक क्रूर और निर्दय हैं। क्योंकि अुनका मन गंदा हो जाता है और यह गन्दगी वातावरणमें असे रजकण फैलाती है जो सूक्ष्मसे सूक्ष्म होते हैं। अुदाहरणार्थ, घरमें किसी प्रकारकी गंदगी है — अेक टी० बी० का शिकार हुआ आदमी है। कोअी जानता नहीं कि अुस आदमीको सचमुच टी० बी० हो गया है, शायद अुसमें यह भी न जानता हो कि मुझे क्षय जैसा रोग है। वह चाहे जहाँ थूककर गंदगी करता है। धीरे-धीरे अुस पर मक्खियाँ बैठती हैं और दूसरे जन्तु फैलते हैं। समझ लो कि तुम्हारे शरीरमें रोगके विरुद्ध लड़नेवाले जन्तु कम हो जायँ, फिर भी तुम भले-चंगे रहो। परन्तु तुम्हारे खाने पर ये मक्खियाँ कब आकर बैठ गअी और क्षयके जहरीले जंतु फैला गअी यह तुम भी नहीं जानती हो। परंतु तुम्हारे दुर्बल शरीरमें यह जहरीली खुराक जाय तो तुम क्षयकी शिकार तो अवश्य बनोगी।

[अिसी तरह हिन्दुस्तान अिस समय निर्बल है। अुसमें रोगोंके विरुद्ध लड़नेवाले जन्तु — विचारक निःस्वार्थ सेवाभावी और फूट न फैले यह चाहनेवाले लोग बहुत कम हो गये हैं। और अिसलिअे मनसा वाचा कर्मणा हम जैसा चाहें या करें वैसा होता है।]

'जैसा यह सूक्ष्म विज्ञान है वैसा ही मेरी दृष्टिसे मनका विज्ञान है। हममें कहावत है कि 'मन चंगा तो कठौतीमें गंगा।' अिस मनकी, विचारोंकी तुम बारीकीसे जाँच करना कि की या तुम्हारी बनाअी हुअी मने क्या काममें नहीं ली? यह मैं अुलाहनेके तौर पर नहीं कहता परंतु यह बतानेका प्रयत्न करता हूँ कि हमारे विचार क्या रूप लेते हैं।

दातुन करते करते बापूजीने अेक छोटीसी बात परसे सारे देशके वातावरणमें हमारे मनका, अिच्छाका कितना हाथ रहता है अथवा प्रत्येक मनुष्यकी

कातकर मिट्टी लेते हुअे   के साथ बातें की। गामका अिम सवालसे प्रार्थना साढे चार बजे हुअी कि बहनोंके लिअ बहुत देर न हो जाय। प्रार्थनामें बहनोंकी अच्छी संख्या रही। प्रार्थनासे आकर बापूजीने गाक वालों और दूध लिया। बालोंको गावमें डाला था परन्तु चबानेमें बापूजीको कठिनाअी हुअी।

आज सुशीलाबहनके गावमें घूमने गये। अुस गावका नाम है चागरगाव। चंडीपुरके पास ही है। अक बड़ा मकान है जिसमें दूसरे भी रहते हैं और अक कमरेमें सुशीलाबहन रहती हैं। अुनसे तथा अन्य स्थानीय लोगोंसे बापूने बातें की। हम अचानक ही पहुंच गये थे अिसलिअे सुशीलाबहन बहुत प्रसन्न हुअीं। लौटते समय तो बापूजीने खूब दौड़ाया पचास मिनटमें वापस आ गये। जाते समय मेघा घटा लगा था। आकर मैंने बापूजीके पैर धोये और अुन्होंने रामफल खाते हुअे मेरी डायरी सुनी बंगलाका पाठ किया और थकावट मालूम होनेके कारण लेट गये। नौ बजे बाबा (सतीशबाबू) आ पहुंचे।

चंडीपुर

३-१-४७ शुक्रवार

आज रातको बापूजी बहुत जल्दी नहीं अुठे। सवा तीन बजे अुठे। दातुन करते करते किसी प्रसंगके आधार पर मुझे कहने लगे मेरा मनोविज्ञान यह है कि हम कुछ भी काम करें और अुसका सोचा हुआ परिणाम न आवे तो यह समझना चाहिये कि दोष हमारा है। हमें गंभीरतासे विचार करना चाहिये कि हमारा सोचा हुआ परिणाम क्यों नहीं आया? अिसका जवाब अपने मनसे शान्तचित्त होकर मांगना। तुम्हें जवाब मिले बिना नहीं रहेगा। यदि तुम अितनी विचारक बन सको तो मेरा काम कितना चमक अुठे? तुम्हारे लिअे यह बड़ा कठिन काम है परन्तु प्रयत्न करोगी तो बहुत आसान हो जायगा। जिस दिन हम अपने दोष देखने लगेंगे अुस दिनसे हमें जिस प्रकार लड़ाअी झगड़े और मारकाटमें पड़नेकी बात नहीं सूझेगी। केवल यही सूझेगा कि दुनियाका भला किस बातमें है। आज हमारे दिमाग खाली पड़ गये हैं। हम आपसमें अेक-दूसरे पर दोष मढ़ते हैं। मेरे कहनेका यह आशय नहीं कि असा हम जान-बूझकर करते हैं परन्तु यह स्वाभाविक ही हमसे हो जाता है। जैसे आगसे अनजाने हाथ छू जाय तो हम तुरन्त अुसे हटा लेते हैं अुसमें यह विचार करनेकी जरूरत नहीं पड़ती कि हटायें या नहीं बस ही आजकल जो अमानुषिक कृत्य हो रहा है वह मानो स्वाभाविक हो

गया है। परन्तु अिसकी तहमें जाकर हमें यह सोचना चाहिये कि कोअी हिन्दू अेक भी मुसलमानको क्यों मारे? या कोअी मुसल्मान अेक भी हिन्दूको क्यों मारे? अिस दंगेकी जिम्मेदारी मेरी दृष्टिसे सारे हिन्दुस्तानकी है। प्रत्येक भारतीय यह सोचे कि मेरा हृदय किस ओर है? शुद्ध है या अशुद्ध? मैं प्रत्येक भारतीयको अपना भाअी मानता हूं या नहीं? यदि अेक भी हिन्दू यह चाहे कि मुसलमान मरे तो अच्छा हो अथवा अेक भी मुसल्मान यह चाहे कि हिन्दू मरे तो अच्छा हो — भले वह खुद छुरियां न भोंकता हो, परन्तु मनमें अेक-दूसरेका बुरा चाहता हो — तो मैं कहता हूं कि जो छुरा भोंककर मारनेवाले हैं अुनसे ये हल्के विचारवाले लोग अधिक क्रूर और निर्दय हैं। क्योंकि अुनका मन गंदा हो जाता है और यह गंदगी वातावरणमें असे रजकण फैलाती है जो सूक्ष्मसे सूक्ष्म होते हैं। अुदाहरणार्थ घरमें किसी प्रकारकी गंदगी है — अेक टी॰ बी॰ का शिकार हुआ आदमी है। कोअी जानता नहीं कि अुस आदमीको सचमुच टी॰ बी॰ हो गया है शायद शुरूमें वह भी न जानता हो कि मुझे क्षय जैसा रोग है। वह चाहे जहां थूककर गंदगी करता है। धीरे धीरे अुस पर मक्खियां बैठती हैं और दूसरे जन्तु फैलते हैं। समझ लो कि तुम्हारे शरीरमें रोगके विरुद्ध लड़नेवाले जन्तु कम हो जायं फिर भी तुम भली-चंगी रहो। परन्तु तुम्हारे खाने पर ये मक्खियां कब आकर बैठ गअी और क्षयके जहरीले जंतु फैला गअी यह तुम भी नहीं जानती हो। परंतु तुम्हारे दुर्बल शरीरमें यह जहरीली खुराक जाय तो तुम क्षयकी शिकार तो अवश्य बनोगी।

[अिसी तरह हिंदुस्तान अिस समय निर्बल है। अुसमें रोगके विरुद्ध लड़नेवाले जन्तु — विचारक निःस्वार्थ सेवाभावी और फूट न फैले यह चाहनेवाले लोग बहुत कम हो गये हैं। और अिसलिअे मनसा, वाचा कर्मणा हम जैसा चाहें या करें वैसा होता है।]

'जैसा यह सूक्ष्म विज्ञान है वैसा ही मेरी दृष्टिसे मनका विज्ञान है। हममें कहावत है कि 'मन चंगा तो कठौतीमें गंगा।' अिस मनकी विचारोंकी तुम बारीकीसे जांच करना कि [illegible] की या तुम्हारी बनाअी हुअी मैंने क्या काममें नहीं ली? यह मैं अुलाहनेके तौर पर नहीं कहता, परन्तु यह बतानेका प्रयत्न करता हूं कि हमारे विचार क्या रूप लेते हैं।'

दातुन करते करते बापूजीने अेक छोटीसी बात परसे सारे देशके वातावरणमें हमारे मनकी अिच्छाका कितना हाथ रहता है अथवा प्रत्येक मनुष्यकी

जसी अिच्छा वसा अुसका काय होना है अिस स्वयकी अपनी विचारसरणी मुझ बताअी। अिस समय जो हिन्दू-मुस्लिम-वमनस्य पदा हो गया है, अुसके लिअ बापूजी देशके प्रत्यक मनुष्यके मनको अधिक जिम्मेदार समझत ह। य बातें अुदाहरण-सहित अितनी सरलताम बापूजीन कही कि बिल्कुल गले अुतर गअीं। बापूजी तो असी छोटीसी मानी जानवाली भूलोंको — कदाचित साधारणत जिन्हे भूल भी नही कह सकते असे प्रसगोको पहाड जसा बना लेते ह। वे हमेशा कहत ह कि मनुष्यको आग बढना हो तो छोटीसी भूलको भी पहाड जसी बनाकर अुस सुधार लिया जाय ताकि फिर कभी असी भूल हो ही नही। यह बात बिल्कुल सच है।

सदाकी भाति प्रायना हुअी। आज प्रायनामें प्यारेलालजी थे अिस लिअ भजन और गीतापाठ अुन्होंने कराया। बापूजीने गरम पानी पीकर अुनके साथ बातें की। निमलबाबके साथ भी बातें की और आश्रमकी डाक लिखी। मने भी डाक लिखी और प्रात कालकी बातें नोट कर ली।

सुबह साढे सात बजे यहाकी हरिजन-बस्ती और जिन्हे नमोशूद्र कहा जाता है अुनका मुहल्ला देखने गय। वहा दगाअियान असे अमानुषिक काम किये ह कि दिल काप अुठता है। साथमें आअी० अन० अ० वाले देवनाथ दास और कनल जीवनसिंहजी थ। आकर बापूजीके पर धोये। और वे कलका प्राथना प्रवचन सुधारने बठ। अिससे मालिशमें काफी विलम्ब हो गया। मालिशके समय प्यारेलालजीके साथ बातें हुअी।

भोजनमें आज आठ औंस दूध बाअी सब्जी (खोपरेका) और थोडा कच्चा शाक लिया।

भोजनके समय म पास नही बठी थी। प्यारेलालजी थ अिसलिअे मुझ बापूजीन नहाकर कपड धो डालनको कहा क्योंकि बारह बज गय थ। म निबटकर आअी। बापूजीने भोजन कर लिया अुसके बाद बापूजीके बरतन साफ करके परोंमें घी मला। वे आध घट सोय। यहाका नक्शा देखा। दो बज अमियबाबू (गुरुदेव टागोरके मत्री) आय। अुनके साथ लगभग घट भर बातें की और देशमें रोगके रजकण किस प्रकार बढ गय ह यह जसे आज सुबह मुझ कहा था वसे ही लगभग धाराप्रवाह रूपमें अुन्हे सुनाया।

तीन बज बापू और म बहनोंकी सभामें गय। सभामें बहुत बहनें थीं। अस्पृश्यता और पवित्रता पर बापूजीन सुन्दर भाषण दिया। अन्तमें कहा, जब बहनें अिस कामको अपनायेंगी तभी देशकी अुन्नति होगी।

चार बजे पट पर मिट्टी लेते वक्त बिहारके भाअी, व्होल्टन साहब और सिनहाजी आये। अुनके साथ लगभग पाच बजे तक चर्चा चली। बापूजीने कमीशन नियुक्त करनेके बारेमें खूब जोर दिया। बिहारमें नोआखालीका मात कर असे कुछ कृत्य हुअे दीखते ह। और आपसमें भी गदगी हो असा लगता है।

बातें करते हुअे बापूजीको दूध, शाक और फल लेना था अिसलिअे मिट्टी साढे चार बजे अुतार ली। पौने पाच बजे खाना शुरू किया। दूधमें अेक औंस बार्ली पीसकर डाली थी। सब कुछ मिलाकर पी गये। पाच बजे खाना पूरा हुआ और प्रार्थनामें गये। कल जरा जल्दी हुअी थी। अिसलिअे आज प्रार्थना देरसे रखी। वहासे सीधे रामकृष्ण मिशनवाडीमें घूमने गये। आकर मने बापूजीके पर धोये। फिर अुन्होने अखबार सुने। अिस बीच मने अपना रातका कामकाज निबटाया। तार दुबटे किये। सौ तार निकले।

आज दिन भर मुझे अितना ज्यादा काम रहा कि सुबहसे घरकी डाक आअी हुअी थी फिर भी रातको बापूजी लेटे तब अुनके पैर दबाने और सिरमें तेल मलनेके बाद दस बजे वह पढी। और अभी यह डायरी पूरी की। (ग्यारहका घण्टा बज रहा है।) बापूजीके साथ बडा आनद आ रहा है और खूब सीखने और जाननेको मिल रहा है। अिस प्रकार सारा काम रोज पूरा किया जा सके तो कोअी अडचन न हो।

बापूजी सुबह बहुत जल्दी अुठते ह अिसलिअे मने सानस पहले विनोदमें कहा 'आज यदि आप जल्दी न अुठ सकें ता भगवानके नाम पर अेक दीया जलाअूगी।'

बापूजी हसते हुअे बोले 'भगवान असा लालची नही है।'

(ठीक समझी हो, परन्तु मेरी दृष्टिस कुछ सुधार करने जैसा मालूम होता है। बापू ५-१-'४७ चडीपुर)

अपनी डायरीमें तो आज बापूजीने अपना कार्यक्रम और दिनमें कौन कौन आया यही लिखा है।

सवेरे नमोशूद्राकी बस्तीमें गये थे। अुसे देखकर अपनी विचारमालामें अेक वाक्य अुद्धत किया है 'घूमते समय नमोशूद्राकी बाडीमें हुआ नुकसान दखा। सहज ही ये विचार आये कि मनुष्य धर्मके नाम पर या स्वार्थवश असी बरबादी कस करता होगा?'

चाहिये। अिस प्रकार मीठी वाणीसे बापूजीने अिन दोनों भाअियोंको तुरन्त बिदा दे दी।

मालिशमें बापूजी पंद्रह मिनट सो लिये अिसलिअ ताजे हो गये। अुठ कर कहने लगे, मेरी कुछ थकावट अुतर गअी। रातके ठीक दोसे सुबहके नौ बजे तक लगातार काम चला और अुसमें भी बोलनेका ही ज्यादा रहा। बापूजीके लिअ यह बहुत अधिक कहा जायगा। खानेमें दो खाखरे, साग, दूध, थोड़ासा पपीता और अेक छोटासा सदेशका टुकड़ा लिया। बापूजीने मुझे मुरमुरे, पोहे, नारियलका तेल वगैरा कैसे बनता है अिसका ब्यौरा जानलेनेको कहा। फिर बोले और हम चावल साथ रखें जिससे तुम्हें रोज खाखरे बनानेकी मेहनत न करनी पड़े। मुरमुरे बनाकर रख दिये जायं तो वे दस पंद्रह दिन तक चलेंगे और हमारा काम हो जायगा। मेरे जैसेके लिअ तो मुरमुरे गेहूंकी जगह अच्छी तरह काम दे सकनेवाली वस्तु है।

खाना खाकर बापूजी लगभग पौन घंटा सोये। कातते समय आज मेरी दो-तीन दिनकी डायरी सुनी। बापूजीने कहा कि सब पर अेक साथ हस्ताक्षर कर दूंगा अिसलिअ पाट पर रख दो।

शारेनबाबूने अेक बढ़िया धनुष-तकली बनाअी है जिस पर बापूजीने काता। कातकर ग्रामसभामें गये। चार बजे बापूजीके पेट पर मिट्टी रखकर मैं शामका खाना तैयार करने गअी। आज बापूजी आंखोंमें जलन होनेकी शिकायत करते थे। आंखों पर भी मैंने मिट्टी रखी। बापूजी आजकल बड़े गहन विचारोंमें डूबे रहते हैं। खूब थके हुअे हैं। शामको छह औंस दूध और थोड़ा शाक ही लिया।

शामको प्रार्थनामें अच्छी संख्या थी। लगभग दस बजे सोये। बिस्तरमें तो साढ़े नौ पर लेट गये। मैं आज जल्दी साढ़े दस बजे सो गअी। मुझे सरदीके कारण बुखार है। बापूजीको यह अच्छा नहीं लगता। खानेमें पहले कहने लगे, आज मेहरबानी करके तुम जल्दी सो जाओगी तो मुझे अच्छा लगेगा। मैं समझ गअी कि बापूजीको मेरी काफी चिन्ता होती है। कुछ भी बहस किये बिना सारा अतिरिक्त काम छोड़कर मैं सो गअी। अभी बापूजीका सूत दुबटा करने, कुछ पत्रोंकी नकल करने और कुछ अखबारोंकी कतरनें फाअिल करनेका काम बाकी है। कल निबटा दूंगी।

(बापू ५-१-'४७ रविवार चंडीपुर)

चंडीपुर,
५–१–'४७, रविवार

बापूजी अढाओी बजे अुठे। मुझे अुठाया। मैंने लालटेन जलाओी। सबसे पहला काम आज मेरी चार-पांच दिनकी डायरीको अूपर-अूपरसे देखकर हस्ताक्षर करनेका था। ता० ३–१–'४७ की डायरीमें भाषाकी दृष्टिसे क्या सुधार हो सकता है (व्याकरणकी कुछ भूलायें) सो बापूने बताया। थोडेसे चेकों पर हस्ताक्षर किये और यह समझाया कि किस प्रकार यह सब हिसाब रखा जाय। बापूजीने स्वयं ही कुछ पत्र आश्रमको लिखे। साढे सात बजे सदाकी भांति घूमने निकले। घूमते समय रास्ते पर सुधीरदा (सुधीरचन्द्र घोष) के साथ बातें कीं। अुन्हें विदेशमें राजदूतके नाते अथवा मंत्रि-मंडलमें अुपयोगी हो सकें तो अुस दृष्टिसे कुछ सूचनायें और मार्गदर्शन दिया। सुधीरदा बहुत ही सरल स्वभावके और सादे आदमी हैं।

जहां हत्यायें हुआी थीं वहां गये। सब कुछ अुजाड और वीरान पडा था। हड्डियां भी बिखरी पडी थीं। आकर बापूजीके पैर धोये। बापूजी और सुधीरदाके बीच खूब लम्बी बातें चलीं जिसलिअे मालिशमें बहुत देर हो गअी। मालिश जल्दी जल्दी कराओी। खाते समय बापूजीने को बुलाया। अुन्होंने जानेकी अिच्छा बताओी। "मेरे लिअे भी ये बातें समझने लायक होनेसे बापूजीने कहा कुछ खानगी नहीं है। मैं चाहता हूं कि तुम अिस किस्सेको समझो, अिसलिअे यहीं बैठ जाओ।" बापूजीने से कहा, "मैं समझूंगा तुम छुट्टी पर गये हो। तुम पर ने अटूट प्रेम बरसाया है। तुमने मेरे लिअे फकीरी ली है। तुम्हारी भक्तिपूर्ण भावनाके कारण मैंने तुम्हें मुक्त किया। मैं तो तुम्हें पुत्रके समान मानता हूं और मानूंगा। अिस समय तुम अुत्तेजित हो अिसलिअे मेरा सारा समझाना व्यर्थ है। यह भी हो सकता है कि मैं अपनी भूल न समझ पा रहा होअूं।"

बापूजीने भोजनमें दो खाखरे, आठ औंस दूध खोपरेका मसका जरासी कच्ची भाजी और दो सन्तरे लिये। भोजन करके आरामके लिअे लेटे। मैं पैरोंमें घी मल रही थी। अिसलिअे मुझसे बोले, "आज हर पैरको अढाओी मिनट देकर पांच मिनटमें दोनों पांव पूरे करने हैं। तुम अभी तक नहाओी नहीं? कब नहाओगी और कब कपडे धोओगी? आज तो धोनेको ढेरों कपडे निकाले हैं। बरतन भी बहुत मांजने होंगे। परन्तु की बात

समझना तुम्हारे लिअ बहुत जरूरी था क्योंकि तुम ब्यौरेवार लिख सकती हो और तुम अितनासे बातें कर लोगी तो मेरा समय भी बच जायगा।

बापूजीके परोमें घी मलकर चरखा तयार करके और झूठे तब नारियलका पानी देनको नारेनदासे कहकर म नहान धोन गअी। यहा जानका समय आम तौर पर अढ़ाअी-तीन बजेका होता है और म अपने कामकाजसे थकाअी बजे ही निबटी। रोज तो बापूजीको मेरा अितनी देरसे खाना अच्छा नही लगता जिसलिअ जल्दी खा लेती हू। परन्तु आज अपवाद था अिसलिअ मन घरके लोगोके साथ भोजन किया। जिससे दीदी गोरेनदा सब बहुत खुश हुअ। परन्तु बापूजीको मालूम हुआ तो कहने लगे असमय खानेसे न खाया होता दूध पी लिया होता या फल और नारियलके पानी जसा हल्का आहार ले लिया होता तो मुझे अधिक पसन्द होता। ये सब तो बीमार पडनके लक्षण ह। यदि तुम यहा बीमार हो गअी तो मेरे सब किये-कराये पर पानी फिर जायगा। तुम्हे मुझसे पूछना तो था कि म खाअू या नही? यह सब मुझ अच्छा नही लगा। तुम्हे अभी तक जुकाम है फिर भी अितने ज्यादा कपड धोय। परन्तु अब और काम छोडकर आध घटा आराम कर लो। यह मुझे अधिक अच्छा लगेगा और सन्तोष होगा। तुम्हारा आजका समय बिगाडनवाला तो म हू। मने तुम्हें बातें समझनको रोका। किमलिअ रोकना चाहिये था? परन्तु मेरा मन ; माना। खर जो हुआ सो हुआ। यह तो भविष्यकी सुरक्षितताके लिअे अितना कहना पडा।

कातकर बापूजी कारीगरोकी सभामें गय। मुझ नही ले गय। सोनको कहा। म सो गअी। बापूजीन आकर चार बजे मुझे जगाया तुम कितनी थक गअी थी अिसका खयाल तुम्हे मुर्देकी तरह सोते देखकर मुझ हुआ। तुम तो कहती थी कि नींद नही आती। सुबहके अढाअी बजसे तुम्हे अुठाया है। अिसलिअ थकावटका कोअी दोष नही। परन्तु थक-थककर बूतेसे ज्यादा काम करोगी तो मर जाओगी और म भी मर जाअूगा।

शामको खानमें अनन्नासका रस आठ औंस दूध और अक औंस गुड लिया। प्रार्थना चागरगावमें हुअी। वहासे हरिश्चरामें अक मुसलमान भाअीके यहा गय।

चारदा बाबा और मा आये। यात्रा शुरू होनेवाली है, अिसलिअे अुसके विषयमें चर्चा हुअी। बापूजीने कहा, वाअीरखिल कम्पका कोअी भी आदमी मेरी सवामें खास तौर पर रहे, यह म नहीं चाहता और मेरे साथ जो अखबारवाले रहना चाहे अुन्हें भी कह दिया जाय कि वे अपने खच जोखिम और जिम्मदारी पर रहना चाहें तो ही रह। बहुत बार अैसा भी हो सकता है कि ये लोग मेरे दलमें मान लिये जाय। अिसलिअे प्रेस रिपोर्टरोंको खास तौर पर समझा दिया जाय। ने जाना तय किया है। मी बहुत नहा टिक सकता। फिर भी देखना है। लेकिन मनु और निर्मलबाबू मेरी मडलीमें ही माने जायेंगे।

मने बाबा (सतीशबाबू) और मा (सतीशबाबूकी पत्नी हेमप्रभादेवी) दोनोंको बापूजीकी अतिरिक्त चीजें सौंप दी।

रातको प्राथना-सभासे आकर बापूजी खूब थक गये थे। आधे औंसके बराबर गुड लिया और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। मौन लकर बनमें पत्र जाच। दस बजे सोये।

शामके बाद मौन होनेसे बापूजीके पास काअी खास काम नहीं रहा। अब नियमानुसार रोज अेक अेक गावमें रहना होगा, अिसलिअे कमसे कम सामान साथ रहे अिसके लिअे बहुत प्रयत्न किया।

चडीपुर
६–१–'४७ सोमवार

बापूजी विशेष जल्दी नहीं अुठे। ठीक प्रार्थनाके समय ही अुठे। मौनवार होनेस लिखनेका काम अुन्होंने स्वय ही किया। प्रार्थना वगैरा नित्यकमसे निवटकर रस लिया। बादमें पत्र पढ़ते-पढ़ते सो गये। शायद कल शामको बूतेसे बाहर घूमे थे अुसकी थकावट होनेसे पैर दबानेको भी अिशारेसे कहा। मने पाचेक मिनट पैर दबाये कि गहरी नींदमें सो गये। साढ़े छह बजे अुठे। साढे सात बजे बापूजी और म अेक कार्यकर्ता भाअीको, जो बीमार पड़े हैं देखने गये। वहा बापूजीने लिखकर अुन्हें कुछ हिदायतें दीं। बार बार गरम पानीमें शहद और थोड़ा सोडा डालकर पीनेको कहा। कुछ भी खानेके लिअे मना कर दिया। पेट पर मिट्टी लेनेका भी आदेश दिया। वहासे आनेमें पूरा अेक घटा लगा। पैर धोकर सीधी मालिश की। मालिशमें बापूजी पच्चीस मिनट सो लिये।

शामको प्रार्थनामें बापूजी नग परा आय। मन कारण पूछा तो मौनके बाद बतानेको कहा। रातको बापूजीने अपना काम जल्दी समेट लिया और आठ बजे बाबा, मा, अरुणभाओी (सतीशबाबूके लडके) के साथ बातें की।

बापूजीके पैरमें चीरा पड गया है, जिसलिअे हेजलीन लगाया। प्यारेलालजी आय। अुनके साथ लगभग दस बजे तक बातें की।

बापूजी रातको लेटे थे और म तल मल रही थी तब मुझे चप्पल छोडनेका कारण बताते हुअे कहा "हम हिन्दू मंदिर मस्जिद या गिरजेमें जाते हैं तब चप्पल नहीं पहनते। तब मुझे तो दरिद्र-नारायणके पास जाना है जिस भूमिके स्वजन टूट गये हैं जहां स्त्रियां और बच्चोंकी हत्या हुओी है, जहाके लोगोंके पास लाज ढकनेको भी कपडे नहीं हैं जहां अनेक निर्दोषोंकी पवित्र हड्डियां पडी हुओी हैं असी भूमि पर चलना है और असे लोगोंसे मिलने जाना है। यह मेरे लिअे पवित्र यात्रा है। (कलसे नियमित प्रवास शुरू होनेवाला है।) असी हालतमें म चप्पल कैसे पहन सकता हूं?"

ये शब्द बोलते समय बापूजीके हृदयकी स्थिति वैसी ही थी जैसी मक्खन निकालनेके लिअे छाछ बिलोते समय छाछकी होती है। जिस पदल यात्राको बापूजी कितनी पवित्र मानते हैं, यह समझाया।

(बापू, मासिमपुर ८-१-'४७)

८

अेकला चलो रे

चंडीपुर

७-१-४७, मंगलवार

आज पवित्र यात्राका स्मरणीय दिवस होनेके कारण प्रार्थनामें 'वैष्णव जन' का भजन गानेके लिअे बापूजीने कहा। और अुसमें प्रत्येक कडीके अन्तमें खिस्तीजन पारसीजन सिक्खजन मुस्लिमजन और हरिजन जन तो तेने कहीअे जे पीड पराओी जाणे रे' जोडकर गानेका आदेश दिया।

प्रार्थनाके बाद लगभग अेक घंटे तक बापूजी और प्यारेलालजीके बीच बातें हुओीं। म सामान ठीक करनेमें लग गओी, जिसलिअे मने दोनोंकी बातें नहीं सुनीं।

आज को बापूजीने बडा हृदयस्पर्शी पत्र लिखा है और अुसमें यहाका विस्तृत चित्र खाचा है। अुसकी नकल की। बापूजीने अुस पत्रमें लिखा है

मेरे स्वास्थ्यकी चिन्ता न करो। अभी तो बहुत काम देता है। कब तक काम देगा यह तो भगवान जाने। सेवाग्राममें मेरी बीमारीका कारण मेरी मूर्खता थी। तब मुझमें कुशलता थोडी थी और स्वादेंद्रियकी प्रभुता थी। पाच चीजें खाओ या अेक चीज परन्तु मैं अिस बातका प्रत्येक क्षण अनुभव करता हू कि अिस अिन्द्रियके वश हो जाओ तो वह हमारे व्यवस्थित किये हुअे कामको चौपट कर डालती है। साथ ही से कहता हू कि मेरी चिन्ता न करो। मेरी चिन्ता करने वाला अेक सब शक्तिमान वैद्य हमारे सिर पर है वह काफी है। के नाम लिखा तुम्हारा पत्र आया था। जवाबकी मत पूछो। थोडेमें पत्र लिखता हू सो भी जल्दी अुठता हू अिसलिअे। काम सभल नहीं पाता। अुसकी भी चिन्ता नही करता। कहते शर्म आती है कि 'हरिजन' मिलता ता है, परन्तु पढ नही पाता। अपने-अपने गावमें हू। भला बुरा देखनेमें आयेगा तब तो कह ही दूगा। यहाका काम अटपटा है। रास्ता अधेरेमें तय करना है। 'मेरे लिअे अेक कदम काफी है। यह सारी प्रस्तावना है।

बापू सवा सात बजे अुठे। बाथरूममें गये। अितनी देरमें मने अिस गद्दी पर बापूजी बठते ह अुसका अतिम बेडिंग बाधा और पाचेक मिनटमें बापूजी बाहर आये। घरकी और दूसरी बहनाने बापूजीका तिलक लगाया आरती अुतारी। अेक तरफ मैं थी और दूसरी तरफ बापूजीकी काठकी बसाखी। बापूजी नगे पर थे।

आजका दिन मेरे जीवनमें अैतिहासिक दिन बन गया है। अुसके आनदकी तो किसीको कल्पना भी नही हो सकती। बापूजीके असे अद्भुत महायज्ञमें आज मेरे लिअे अुनकी लाठी बननेका अवसर आयगा यह तो मने कभी सोचा भी नही था।

ठीक साढे सात बजे जदि तोर डाक शुने केअो ना आसे, तबे अेकला चलो रे —तेरी पुकार सुनकर कोअी न आये तो तू अकेला ही चल— यह पक्ति गाते हुअे बापूजीने नगे पर घरके बाहर रखे। अुस समयका दृश्य

असा था मानो 'परथम पहेलुं मस्तक मूकी वळती लेवुं नाम' (पहले सिर रखकर बादमें प्रभुका नाम लेना चाहिये।) वाली पंक्तिको अुन्होंने प्रत्यक्ष आचरणका रूप दे दिया हो। 'अेकला चलो रे' के भजनके बाद रामधुन और अुसके बाद अेक गाते गाते मार्ग काट रहे थे। तुलसीदासजीने गाया है 'दंडक वन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाओ'। अुसी तरह यह भी निरा जंगल ही था और बापूजी मानो अनेक निर्दोषों पर गुजारे हुओ सितम और त्रासको मिटानेके लिओ ही जा रहे थे। सबसे आगे सेनाके आदमी थे, बादमें प्रेस रिपोर्टर थे और अुनके पीछे बापूजी और मैं। दो आदमी मुश्किलसे अेक साथ चल सकें अितनी चौड़ी पगडंडी थी। परन्तु मार्ग बड़ा रमणीय था। नारियल और सुपारीके हरे हरे पत्ते बापूजी पर झुक झुककर मानो प्रणाम करके अुनका स्वागत कर रहे थे। चारों तरफ हरियाली छाओ हुओ थी। और घनी हरीभरी वनराजिके अूपर सामने लाल लाल आकाशमें सूर्यदेव भी मानो अिस महापुरुषकी अैतिहासिक यात्राकी घड़ीके साक्षी बनने निकल आये थे। अिस भव्य अरुणोदयका प्रतिबिम्ब आसपासके सुन्दर तालाबोंमें पड़ रहा था।

जगह जगह अनेक सुन्दर झरने थे। मेरे मनमें विचार आया आजका यह सुन्दर और भव्य अवसर किस पुण्यके प्रतापसे मिला होगा? पू० बाके आशीर्वादका और मेरे माता पिताकी अुनके प्रति रही भक्तिका ही यह सुफल है। असी अनेक भावनाओंसे मैं हर्षित हो रही थी। और ओश्वरसे अेक ही प्रार्थना कर रही थी कि मुझे परीक्षामें पार अुतारना मेरे प्रभु! रास्तेमें दो जगह ठहरे। चांगेरगांवसे सुशीलाबहन आनेवाली थीं परन्तु वे दूसरे रास्तेसे गओ।

बीचमें ही सतीशबाबू (बाबा) और चारु आ पहुंचे। ठीक नौ बजे हम यहां (मासिमपुर) पहुंचे।

मासिमपुर
७–१–'४७ दोपहरके दो बजे

बापूजी अिस समय कात रहे हैं और मैं डायरी लिखने बैठी हूं। हम यहां नौ बजे पहुंचे। यहां किसीका कोओी घर नहीं था। जहां देखो वहीं जले हुओ मकान थे। निर्मलदा जल्दी आ पहुंचे थे। निर्मलदाने अपना सामान आप ही अुठाया था। बड़े सिद्धान्तवादी आदमी हैं।

बाबा (सतीशचन्द्र दासगुप्ता) और अुनकी मंडलीने जो फोल्डिंग हट' बनाया है अुसे खडा किया गया है। नीचे घास है। अूपर चटाअी बिछाअी है। दो खाटें हैं अेक बापूजीकी और दूसरी मेरी। छोटी छोटी खिडकियां और रोशनदान रखे गये हैं। पीछेकी ओर बापूजीकी मालिश हो सके अैसा स्थान रखा गया है। कमोड रखनेकी भी छोटी कोठरी-सी बनाअी गअी है। छोटीसी होने पर भी यह झोंपडी छोटी-बडी सारी सुविधा-ओंवाली और बहुत रमणीय है। अूपर तिरंगा राष्ट्रध्वज फहरा रहा है।

बापूजीने सुबह आते ही पहले यह झोंपडी देखी। फिर बाहर अेक पटिये पर जब मैं अुनके पैर गरम पानीसे धो रही थी तब (नंगे पैर चलनेसे बापूजीके पांवोंमें छाले पड गये हैं। बापूजीके पांव बडे स्वच्छ और कोमल हैं। हमारे हाथोंसे भी वे अपने पांवोंके तलुअे ज्यादा स्वच्छ रखते हैं। तलुओंमें जरासा भी मैल या कालापन नहीं होता।) वे बोले, 'तुमने देखा कि सतीशबाबूने मेरे अिस महलके लिअे कितना परिश्रम किया है? अिसके अलावा, अुठानेवालेको अेक जगहसे दूसरी जगह ले जाना आसान हो, अिसके लिअे छोटे-छोटे हिस्से बनाये हैं। ताकि छोटा बच्चा भी अेक हिस्सा अुठा सके। अिन्होंने मुझ पर अैसा प्रेम बरसाया है। परन्तु अैसे अपार प्रेमको स्वार्थी बनकर मैं ही कैसे स्वीकार करूं? अिसलिअे अपने मनमें मैंने निश्चय किया है कि यह महल अब किसी और गांवमें नहीं ले जाया जायगा। अिसका अुपयोग अेक छोटासा अस्पताल बनानेमें होगा या बस ही किसी और कामके लिअे किया जायगा। मैं तो जहां तहां, जो जगह मिलेगी वहीं आरामसे पडा रहूंगा। कोअी जगह नहीं मिली तो अंतमें यहां पेड कितने अधिक हैं? ये हमें कहां अिनकार करते हैं? अुनके नीचे आरामसे पडे रहेंगे। जैसे रामजीको निबाहना होगा वैसे निबाहेंगे। अिसकी चिन्ता हम किस लिअे करें? गांवोंमें जो भी कार्यकर्ता गये हैं अुन्हें मैंने कह दिया है कि जिस गांवमें बैठो वहींके लोग तुम्हें खाने-पीनेको दें जैसे कुटुम्बके आदमियोंको खिलाते हैं अुसी तरह। कार्यकर्ता अुनके कुटुम्बी बन जायं। वे यह भाव न दिखायें कि हम कुछ हैं अथवा हम तुम्हारी सेवा करने आये हैं अिसलिअे तुम पर अुपकार कर रहे हैं। अगर अैसा भाव दिखायेंगे तो वे टिक नहीं सकेंगे। यदि वे बीमार पड़ें तो गांवोंमें जो दवा-दारू और वैद्य-हकीम मिलें अुन्हींसे अथवा पंचमहाभूत जो कुछ दें अुसीसे संतोष मानें। यही

नियम तुम्हारे लिअे और मेरे लिअे भी है। तुम देखना अिस निश्चयका परिणाम अद्भुत होगा। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं।'

पर थाकर मन बापूजीकी मालिश की। मालिशमें बापूजी बीस मिनट सो लिये। दो बजसे अुठे थे। रातके दोसे दिनके पौने दस तक सतत आठ घंटे काम किया। नहाने धोनेमें साढ़े ग्यारह हो गये। आज पहला ही दिन है अिसलिअे हर काममें थोड़ी देर हुआी। भोजनमें आठ औंस दूध अुबाला हुआ शाक दो खाखरे और अेक चम्मच लिया।

भोजनके समय सुशीलाबहन और प्यारेलालजी बैठे थे अिसलिअे मैं नहाने धोने और दूसरा काम निबटानेमें लग गअी। तीन बजे बापूजी बंगलाका पाठ करते करते आधा घंटा सो लिये। मुझे भी पैरोंमें घी मलकर सो जानेको कहा। परन्तु मुझे और बहुत काम था अिसलिअे मैं सोअी नहीं। साढ़े तीन बजे बापूजी अुठे। नारियलका पानी पिया। डाक देख और पढ़ कर बापूजीने अपनी डायरीमें कुछ नोट किया। पौने चार बजे मिट्टी ली। अब्दुल्ला साहब और जमान साहबके साथ निराश्रितोंके बारेमें बातें कीं। मिट्टी लेते ही रिलीफ कमेटी की बैठक शुरू हो गअी। परन्तु मैं अुसमें भाग न ले सकी। अुसमें बैठती तो दूसरा थोड़ा जरूरी कामकाज रह जाता। अिसलिअे अिच्छा होते हुअे भी अुसमें शामिल नहीं हुअी। अन्नदाबाबूके साथ लगभग दो घंटे निराश्रितोंके प्रश्न पर चर्चा चली। बापूजी मानते हैं कि निराश्रितोंको दान देनेके बजाय अुन्हें स्वावलम्बनकी ओर मोड़ना चाहिये। कुछ दिन भले दान देना पड़े मगर केवल दानसे तो मुफ्तका खाना और मस्जिदमें सोना अिस कहावतके अनुसार अुनकी वृत्ति हो जायगी।

ठीक पांच बजे प्रार्थनामें गये। प्रार्थनामें रामधुन शुरू की कि मुसलमान भाअी प्रार्थनामें से अुठने लगे। परन्तु प्रार्थना जारी रखी। प्रार्थनासे पहले शामको बापूजीने अेक केलेका गूदा और आठ औंस दूध लिया और साढ़े सात बजे अेक औंस गुड़ लिया।

अिसके बाद अेक दो नाम और मुलाकाती आते गये परन्तु साढ़े नौके बाद मिलनेवालोंको सबको मना कर दिया। बस बहुत कुछ काम निपटा ही निबटा देते हैं।

थोड़ा घूमनेके बाद बापूजीके पैर धोये। बापूजीने बंगलाका पाठ किया मैंने बिछौने वगैराका रातका काम पूरा किया। साढ़े नौ बजे बापूजी

विस्तर पर लेटे। बापूजीके सिरमें तल मलकर और पैर दबाकर मैंने थोडेस नोट लिखनेके लिअे आध घंटेकी छुट्टी मागी। बापूजीने अधिकसे अधिक दस बजे सो जानेको कहा। आजकी डायरी टुकडे-टुकडेमें लिखी गअी है। डर था कि सब काम पूरा नही कर सकूगी परन्तु आज कोअी विशेष कठिनाअी नहा हुअी। सवेरे रसोअी और मालिशका समय अेकसाथ हानेसे मैं कूकर रखनेका ठहरती हू अुतनी दर बापूजीका हा जाती है। बापूजीने खाखरे दूसर किसी समय बनाकर रखनेका आदश दिया। यद्यपि अुन्हाने खाखरेकी जगह मुरमुरसे काम चला लेनेका कहा परन्तु मैंने अिनकार कर दिया। अिसलिअे अब किसी समय बनाकर रखनेका कहा ताकि सवेरे समयकी खीचतान न हो।

प्रभुकृपास अिस प्रकार आजका पहला दिन बहुत अच्छी तरह निर्विघ्न पूरा हुआ।

बापूजीका डायरीकी नकल की। ठीक दस बजे हैं। मैं भी अब बापूजीको दिये हुअे वचनके अनुसार साने जाती हू।

फतहपुर,
८-१-४७ बुधवार

बापूजीने दो बजे मुझे जगाया। आजूजीका पत्र लिखवाया। अुसमें के पत्रका अुल्लेख किया। अेक पत्र बिहारके सबमें राजेद्रबाबूके नाम लिखवाया। फिर मेरी डायरी सुनी। अब रोजकी रोज सुनकर किसी भी समय हस्ताक्षर कर देनेको कहा। महादेव और प्रभा काम करत थे अुसी ढगसे तुम्हें करना सिखाना चाहता हू। तुमने बहुत कुछ सीख लिया है, फिर भी अभी बहुत सीखना बाकी है।' बापूजीने डाक लिखवाअी, फिर मने पत्कर सुनाअी। अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया।

प्रार्थनाके बाद तीन चार दिनकी मेरी डायरीमें हस्ताक्षर किये और बादमें बापूजीने निर्मलदाके साथ काम किया।

हम ठीक सात बजे मासिमपुरसे यहाके लिअे रवाना हुअे। साथमें कुछ स्थानाय स्वयंसेवक ह। थोडा थोडा सामान सबने अुठाया। साढे आठ बजे यहा पहुचे। रास्तेमें मुसलमान भाअी मिलने थे। बापूजी सबको सलाम करते थे परन्तु व लोग अिस तरह चले जात थे माना कुछ जानत हा न हा। मैंने

बापूजीसे कहा आप किसलिओ सलाम करते हैं जब अिन लोगोंको कुछ पड़ी ही नहीं है? बापू बोले अिसमें हमारा क्या जायगा? कभी न कभी ये जरूर समझेंगे। हमें कभी नम्रता नहीं छोड़नी चाहिये। ये लोग यही मानते हैं कि यह हमारा दुश्मन आ गया है जब कि मुझे तो साबित करना है कि मैं किसीका दुश्मन नहीं सबका मित्र हूँ सेवक हूँ। और यह दावा मैं तभी कर सकता हूँ जब मुझमें और मेरे साथ रहनेवालोंमें पूरी नम्रता हो।

रास्तेमें रामधुन भजनादि कलकी तरह ही चले।

यहां अेक पाठशालामें हमारा पड़ाव है। यह पाठशाला मुसलमानोंकी है। बापूजीके पर धाये कि कुछ मुसलमान भाओी बापूजीसे बातें करने आ गये। मुझे तो लगा कि सिर्फ गप्पें ही लगाने आये हैं। परन्तु बापूजी सबकी बात बहुत धीरजसे सुन रहे थे। बापूजी अुन लोगोंके साथ बातें कर रहे थे अुस बीच मैंने अुनके नहानेके लिअे खंभे गाड़कर अुनके चारों ओर कनात बांध ली और मालिशके लिअे भी वैसी ही व्यवस्था कर दी। कमोड भी अुसी बाथरूममें लगा दिया। बापूजीके लिअे साग भी अबलनेको रख दिया और खाखरे भी बना लिये। हमारे साथ आओ० अेन० अे० वाले सरदार जीवनसिंहजीकी टोली है। ये लोग पत्थरके चूल्हे तैयार करके बाहर दाल रोटी बनाते थे। असी तरह अेक दूसरा चूल्हा बनाकर अुस पर बापूजीके लिअे नहानेका पानी रखा। हवा और ठंड सब लग रही थी। बापूजी मालिशमें सो नहीं सके। मालिशके समय कहने लगे यहांके मुसलमान कैसी सयानी सयानी बातें करते हैं! मानो बेचारे बिलकुल निर्दोष हों।

साढ़े ग्यारह बजे कामसे निबटनेके बाद बापूजीको भोजन कराकर मैं नहाने धोने गअी। बापूजीने भोजनमें तीन खाखरे आठ औंस दूध साग, यीस्ट और अेक ग्रेपफ्रूट लिया।

यहां पानीकी भी बड़ी तंगी रहती है। बाहरसे बाल्टीमें लाना पड़ता है। सो ले आओी। मेरे और बापूजीके कपड़े धोने और नहानेमें अेक बज गया। फिर भोजन किया। आज सरदार जीवनसिंहजीकी दाल रोटी खाओी। रोटी पंजाबी थी। अितनी मोटी थी कि मुश्किलसे आधी खा सकी। परन्तु खाना स्वादिष्ट लगा। तीन पत्थर जमाकर अच्छी तरह पकाया गया था। सबने हाथोंहाथ काम किया।

खाना खाकर बापूजीके पैर मलते समय देखा कि पैरोंमें बिवाअियां पड़ गअी हैं और खून निकल आया है। अुन बिवाअियोंमें घी भरा। मेरी आंखोंमें आंसू आ गये। अंगूठेके जोड़में तो गहरा चीरा पड़ गया है। बापूजीकी अिस अुम्रमें कितनी बड़ी परीक्षा हो रही है? भारतके लोगोंका कैसा दुर्भाग्य है कि वे अिस महापुरुषको पहचान नहीं सकते। क्या औश्वर महापुरुषोंके यही हाल करता है? रामचन्द्रजीने चौदह वर्षका वनवास भोगा। अिसीलिअे आज वे औश्वरके अवतारके रूपमें पूजे जाते हैं। अिस प्रकार दुनियाको सबक देनेके लिअे औश्वर अवतार लेता ही है। जब जब अधर्म फैलता है तब तब औश्वरको अवतार अवश्य लेना पड़ता है।

> यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
> अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

गीताके अिस श्लोकका अेकाअेक मनमें स्मरण हो आया। अिस श्लोकका यहां मैं प्रत्यक्ष दर्शन कर रही हूं।

दोपहरको कातकर मिट्टी लेते लेते बापूजी मुसलमान भाअियोंके साथ बातें करने लगे। अुन बातोंमें बापूजीने कहा: 'यदि आप लोग हिन्दुओंको नहीं अपनायेंगे तो आपकी हालत खराब होगी। यहां अथवा जहां भी आप बहुमतमें हैं वहां किसी दुबले हिन्दूको मारनेका काम तो अेक छोटा बच्चा भी कर सकता है। अैसा नीच काम करनेका आपके कुरान शरीफमें कहीं भी लिखा हो तो मुझे बताअिये। मैं तो कुरान शरीफका विद्यार्थी हूं। और फिर मुसलमानोंसे मेरी गहरी दोस्ती रही है। आज भी जैसी मेरी यह लड़की है वैसी मेरी दूसरी बहुतसी मुसलमान लड़कियां हैं। अुनमें से अेक अम्तुस्सलाम है जो यहां अुपवास कर रही है। अुसे तो आप जानते ही होंगे। वह लड़की अैसी है कि मेरे लिअे जान दे दे। अिसलिअे मेरी आपसे नम्र प्रार्थना है कि जो कोअी अैसा अनुचित काम करे अुसे चेतावनी दीजिये ताकि आपका भविष्य अुज्ज्वल बने।'

बादमें मुसलमान भाअियोंने बिहारकी और दूसरी दलीलें दीं। अिस बीच बापूजीको जरा धूप आ गअी। रातके दो बजेसे अुठे हैं, अिसलिअे सब थक गये हैं। परन्तु धूप आ जानेके लिअे बापूजीने अुन लोगोंसे माफी मांगी। नम्रताके अैसे पाठ सीखनेको मिल रहे हैं।

चार बजे बापूजीने दूध, फल तीन सतरे और थोडासा शाक लिया। असके बाद प्रार्थनामें गये। प्रार्थनामें मुसलमान भाअी बहुत थे। प्रार्थनासे आने पर हरेरामजी मिले। (ये हरेरामजी बिडलाजीके यहां नौकर हैं। हरिजन हैं। दिल्लीमें बापूजीकी खूब सेवा करते थे। अुन्हें बिडलाजीने बापूकी सेवा करने भेजा था। हरेरामजी बड़े ध्यानपूर्वक बापूजीकी सेवामें तल्लीन हो जाते थे।)

हरेरामजी बापूजीको प्रणाम करने आये। बापूजीने अुनसे पूछा 'क्या आये हो?' और हालचाल पूछे। फिर बापूजीने अिनकार करते हुअे कहा 'यह तपस्या है। मैं बिडलाजीसे यह कहूं कि मेरे लिअे रसोअिया मोटर-गाडी, विमान नौकर-चाकर सबकी व्यवस्था कर दो तो वह कर देंगे। परन्तु अिसका नाम यज्ञ नहीं। यज्ञमें कठिनाअी तो आती ही है। और कठिनाअीके बिना अिसे तप कैसे कहा जाय?' अितनी बात समझाकर अुन्हें बिदा किया।

बेचारे बड़े निराश हुअे। मेरे पास आकर कहने लगे तुम बापूसे कहो कि मुझे रख लें। मैंने कहा कि बापूजी जब बिडलाजीकी नहीं मानते तो मेरी क्या मानने ही क्या लगे? और मैं अुनसे कहूं तो वे मुझको यहांसे निकाल दें।

घूमते वक्त अेक मुसलमान भाअीके आग्रहसे अुनके घर गये। जाते-आते बड़ी तेजीसे चले। सुशीलाबहन आ गअी थीं।

घूमकर आने पर बापूजीने गरम पानी और शहद लिया। प्रार्थना प्रवचन और डाक देखी। सुशीलाबहनको थोडासा लिखवाया।

मैंने अपनी डायरी लिखी। बापूजीका और अपना बिस्तर किया। सुबहके लिअे सामान बांधा और बापूजीके पांव धोये। दस बजे अुनके घुटनेके बाद पैर दबाये और सिरमें तेल मला। बापूजीके सोनेके बाद अुनका सूत सुनाया। फिर कताअी की। अितनेमें साढ़े दस हो गये। यह बापूजीको अच्छा नहीं लगा। कहने लगे, मैं मान जाअूं अुसके बाद अधिकसे अधिक पन्द्रह मिनटमें ज्यादा जागनेकी तुम्हें छुट्टी नहीं है। यदि काम अधूरा रहे तो सुबह मुझे कह दो कि अितना काम पूरा नहीं हुआ।

मैं पौने ग्यारह बजे सोअी।

(बापू ९-१-४७ फतहपुर)

दासपाडा,
९–१–४७, गुरुवार

आज भी फतहपुरमें बापूजीने मुझे दो बजे जगाया। और रातमें जल्दी सो जानेका कहा। बादमें लालटेन जलाकर जाजूजीने चरखा-संघकी जो लम्बी रिपोर्ट भेजी है अुसे पढा अुसीमें सारा समय बीता और प्रार्थनाका वक्त हो गया।

प्रार्थनाके बाद बापूजीसे मेरी डायरीमें हस्ताक्षर कराये। फिर अुन्हें गरम पानी और शहद देकर रस निकालने गअी। अितने समयमें कल लिखाअी हुअी डाक पर हस्ताक्षर करके बापूजीने मुझे सुधार बताये।

फतहपुरसे यहां आनेके लिअे हम ठीक सात पतीसको निकले। यहां अेक छोटासा झोपडा है, परन्तु बडा साफ-सुथरा है। घरमें अेक बूढेके सिवा कोअी नहीं था। अुसका अिस दंगेमें दूसरा बहुत कुछ स्वाहा हो गया है। नारियलके पत्तोंकी छत है। गुजरातके घासके झोपडे जैसा लगता है। बापूजीको यह झोपडा खूब पसन्द आया।

बापूजीके पैर धोकर मैंने मालिश और स्नानकी तैयारी की। आज तो सरदारजीके आदमियोंने ही खड्डा खोदकर मालिश और नहानेकी सुविधाके लिअे परदे डाल दिये। कर्नल जीवनसिंहजीने बापूजीके लिअे साग काटा, और मैं बापूजीके लिअे कूकर किस तरह रखती हूं यह दिलचस्पीसे देखा। मैंने बापूजीसे सरदारजीकी बात की तो वे कहने लगे, 'ये बडे जबरदस्त सैनिक हैं। सुभाषबाबूके साथ खूब काम किया है। और तलवार-बन्दूकके दांव बढिया जानते हैं। परन्तु यहां पर अहिंसक बनकर बैठे हैं। यह कोअी असी वैसी बात नहीं मानी जा सकती। परन्तु मेरे साथ अैसे बहुतसे सैनिक रहे हैं। अफ्रीकामें लडाअीके समय जो सेना थी अुसको अपना काम करना ही पडता था। प्रत्येक काम हिस्सेके अनुसार बांट लेते थे। अुसमें अच्छे अच्छे पढे लिखे भारतीय तो खाना पकाते ही थे, परन्तु गोरे भी अुत्साहसे शरीक होते थे। अिसलिअे जीवनसिंहजी खाना न पकाते तो मुझे आश्चर्य होता, पकानेसे नहीं होता। जो सैनिक हो गया है वह हर कामका जाननेवाला होना ही चाहिये।'

मालिशमें बापूजी बीस-पच्चीस मिनट सोये। नहाना दस बजे पूरा हुआ। खानेके समय मारवाडी रिलीफ सोसायटीके अेक भाअी जो पुस्तकें लाये थे अुन्हें देखा।

जीवन-चक्र चल रहा है अुसे जारी रखनेमें अर्थात् संसारके दुःख दूर करनेमें सहायक हो। दोनों अेक गाड़ीके दो पहिये हैं। विवाहका अर्थ यह नहीं है कि विषय-वासनाका पोषण किया जाय बहुत बच्चे पैदा किये जायँ — जो यहाँ वहाँ भटकते फिरें जिन्हें खानेके भी लाले पड़ें तो दूध तो मिले ही कहाँ? विवाहका अर्थ यह नहीं कि पति-पत्नी आपसमें झगड़ते रहें अेक-दूसरे पर चिढ़ते रहें और दोनोंके शरीर नाजुक हो जायँ। अिसलिअे विवाह करनेसे पहले मैं सब लड़कियोंसे विचार करनेको कहता हूँ। विवाह करनेके बाद ब्रह्मचर्यका पालन करना बहुत कठिन होता है। यदि ब्रह्मचर्यका पालन करके दोनों विचारपूर्वक जीवन बितायें तो कितने अूँचे अुठ जायँ? मैं अितना अूँचा अिसलिअे नहीं अुठा हूँ कि मैं बैरिस्टर बन गया या बाकी अितनी पूजा आज अिसलिअे नहीं होती कि वह मेरी पत्नी थी बल्कि अिसका कारण यह है कि हम दोनोंने ब्रह्मचर्यका पालन किया। अिसमें भी बा यदि दृढ़ न रही होती तो भी हम अितने अूँचे नहीं अुठ सकते थे। लोगोंने मुझे जो महात्माका पद दिया है अुसका श्रेय बाको है। ब्रह्मचर्यका पालन करनेका अर्थ है निर्विकार होना। जो निर्विकार हो अुसके सामने अप्सरा भी आकर क्यों न खड़ी रहे तो भी अुसकी दृष्टि दूषित नहीं होती। जो निर्विकार है अुसमें क्रोध मोह असत्य हिंसा चोरी झूठ परिग्रह आदि कुछ भी नहीं हो सकता। अथवा मैं तो यहाँ तक जाअूँगा कि अुस आदमीमें अैसे अवगुण प्रवेश ही नहीं कर सकते। अिन सबके साथ अुसके मनमें यदि रामजी रमते हों तो कभी बीमार पड़ना तो क्या अुसे अेक फुँसी तक न होगी और वह मृत्युसे रामजीका नाम लेते हुअे हँसते हँसते अेक मित्रकी भाँति भेंट करेगा। अुसे रोगसे पीड़ित होकर मरनेका मौका ही नहीं आ सकता। यह हुआ विवाहित जीवनका बड़ा लाभ। परन्तु यह लाभ तो कोअी विरले ही आदमी प्राप्त कर सकते हैं। यह लाभ अुठाने जितनी हमारी आत्मा प्रबल न हो तो कुछ भी नहीं हो सकता। नहीं तो ... के जैसे हाल होते हैं।

कोअी काम करना हो तो अुसके बारेमें हमें पूरा ज्ञान होना चाहिये। अुदाहरणार्थ रोटी (बाजरेकी) कैसे बनाअी जाती है यह तुम्हें मालूम है? मेरी माकी रोटी अभी तक मुझे याद आती है। आजकल तो यह रोटी चकले पर थापकर बनाअी जाती है। मेरी मा बा वगैरा सब हाथसे थाप-थापकर बनाती थीं। जिसमें चकलेकी जरूरत नहीं पड़ती। हा

अेक हाथ किसी समय काम न करे तो शायद चकलेकी जरूरत पडे। परन्तु अधिक मीठी तो वह तभी लगती है जब दोनों हाथोंसे थापकर बनाअी जाय। तुम्हें तो अिस स्वादका शायद पता भी नहीं होगा।

'अिसी तरह अिन दो शक्तियोंके मेलसे अधिक सेवा करनेके लिअे विवाह करना ही मेरा श्रेय है। सेवा अर्थात् देशसेवा करना। देशसेवाका अर्थ यह नहीं है कि मन्त्री बनें तो ही सेवा हो सकती है। घरकी संभाल रखना भी देशसेवा है। अुदाहरणके लिअे रसोअी बनाना। रसोअी अिस ढंगसे बनानी चाहिये कि अनाजका अेक कण भी अैसे कठिन समयमें बेकार न जाय। थोडी बानगियोंमें शरीरके लिअे आवश्यक सभी तत्त्व मिल जाने चाहियें। कपडा यह सोचकर पहनें कि शरीरकी रक्षाके लिअे पहनना है। हमारे देशका अेक भी आदमी नंगा भूखा न रहना चाहिये। जितनी जरूरत हो अुतना ही संग्रह किया जाय। आजकल बहुतसे घरोंमें स्त्रियां किफायत तो करती हैं, परन्तु संग्रह अितना करती हैं कि जिससे दूसरोंको खाने-पीने पहनने वगैराकी चीजें नहीं मिलतीं अथवा महंगी लेनी पडती हैं। यह मितव्यय स्वार्थपूर्ण कहा जायगा। अिसलिअे अैसी वृत्ति पैदा करनी चाहिये कि हम जो कुछ करें वह अपने देशको ध्यानमें रखकर करें। अैसी दृष्टि रखकर काम करनेवाली गृहिणी मेरी दृष्टिसे बडीसे बडी देशसेवा करती है। आजकल तो देशसेवाका नाम बडा हो गया है। लोग मानते हैं कि अखबारोंमें फोटो और नाम छपना अथवा जेलमें जाकर मन्त्री बन जाना ही सच्ची देशसेवा है। अिसलिअे सभी लोग मन्त्री बनना और सत्ता लेना चाहते हैं। अैसी हालतमें सच्चे मन्त्री कैसे काम कर सकते हैं? बेशक, मन्त्रियोंकी भी देशको जरूरत है। परन्तु मन्त्री अगर मन्त्री पदके लिअे योग्य हो तो ही शोभा देता है। अुस पदको सुशोभित करना हमारा कर्तव्य हो जाता है। अितना समझ सकें तो अेक अपढसे अपढ स्त्री भी देशकी सेवा करती है। ये सब विचार तुम्हींको अिस ढंगसे समझाता हूं। को भी समझाये तो हैं परन्तु जरा दूसरे ढंगसे। अुनका रहन-सहन भिन्न है। वह विवाहित थी। तुम अभी बच्ची हो। तुम सत्रह वर्षकी हो गअी परन्तु मेरी दृष्टिमें तो छह-सात वर्षकी बालिका ही हो।

'यह नोआखालीका यज्ञ तुरन्त पूरा हो जायगा, अैसा सोचना आकाश-कुसुम जैसा है। अिसलिअे बेकार है। जिस समय मुझे अैसे चिह्न दिखाअी नहीं देते कि हिन्दू-मुसलमानोंका हार्दिक वैमनस्य बिलकुल नष्ट हो

जायगा। वह तभी मिटगा जब मुझमें पूर्णता आ जायगी। परन्तु अभी तक रामनाम अितना हृदयगत हो गया है असा मेरा दावा नहीं है। अुस दिशामें मेरा प्रयत्न जरूर है।

'आजकी सब बातोंसे तुम्हें गंभीर बननेका कोअी कारण नहीं। माके नाते मैं अपना फर्ज अदा कर रहा हूं। मेरे मनमें जो भरा है वह तुम्हें पिला रहा हूं। अपनी डायरीमें ये बातें विचारपूर्वक लिखना। यद्यपि मुझे भय है कि आजकी हमारी बातें तुम्हें जरा कठिन मालूम होंगी। साथ ही अेक बातमें से दूसरी अनेक बातें निकल आअी हैं। परन्तु आजकी बातें तुम्हारी जीवन-रचनाके लिअे बुनियादी हैं। मैं मर जाअूंगा तब तुम्हारे लिअे जयसुखलालके लिअे तुम्हारी बहनोंके लिअे ये बातें अुपयोगी सिद्ध होंगी। मैं पुरुष होकर भी तुम्हारी मां बना हूं। अिसलिअे मेरा भार आजकी बातें तुम्हें कह देनेसे हल्का हो गया।

(ठीक है परन्तु लम्बा लिखा है। बापू रामचर ११-१-४७ शनि।)

जगतपुर
१०-१-४७ शुक्रवार

अुपरोक्त बातें बापूजीने सवेरे तड़के ही कही थीं। अुन्हें लिखनेमें मेरा पूरा अेक घंटा गया। बापूजी प्रार्थनाके बाद प्रवचन सुधारनेमें और अपने काममें लग गये और मैंने यह सब लिखनेका काम पूरा किया। बापूजीने अभी देखा नहीं। मुझे डर है कि बापूजीको यह लंबा लगेगा। बापूजी ७-४० पर बाहर आये और हमारी यात्रा शुरू हुआी। बंगलाका पाठ लिखनेमें साढ़े सात बजकर दस मिनट हो गये। साधारण नियम साढ़े सात बजे यात्रा शुरू करनेका रखा है।

दासपाड़ासे यहां आनेका हमारा रास्ता साफ किया गया था। परन्तु मुसलमान भाअियोंने अुसे गोबरसे और जहां तहां मलेसे गंदा कर दिया था। यह भी मालूम हुआ कि असा जान-बूझकर किया गया है। बापूजी कहने लगे यह मुझे अच्छा लगता है। जिस प्रकार यदि मेरे प्रति अुनका रोष बाहर निकले तो अिसमें कोअी दोष नहीं है।

यह झोंपड़ा अेक हिन्दूका है। आकर हमेशाकी भांति मालिश-स्नान वगैरासे निबटनेमें साढ़े दस हो गये। मालिशमें बापूजी चालीस मिनट सो लिये।

दोपहरको ग्यारह बजे भोजन हुआ। भोजनमें दो खाखरे, शाक, दूध और अनन्नास लिया। साढे बारहसे अेक तक आराम किया। अेक बजे अुठकर नारियलका पानी पिया और काता। दो बजे प्यारेलालजी आये, अुनके साथ बातें की। अितनेमें बहनें मिलने आ गअी। बहुतसी बहनोंको जबरन् मुसलमान बनाया गया था। कुछ बहनें असी दुःखी थी मानो अुनके पतियों और पुत्रोंकी हत्या हुअी हो। बापूजीके सामने वे हिचकियां भर भर कर रोते हुअे अपना हृदय अुंडेल रही थी। बापू बोले, तुम अिस तरह रो रही हो और मैं हिचकियां भरकर तुम्हारी तरह रोता नही। तुम्हारे और मेरे बीच अितना ही फर्क है। मेरा हृदय रो रहा है। तुम्हारा दुःख मेरा दुःख है। अिसीलिअे मैं यहां आया हूं। रामनामके सिवा आश्वासन प्राप्त करनेकी और कोअी दवा नही है। सबसे बडी दवा यही है। कितना ही रोयें तो भी गअी हुअी चीज वापस नही आयेगी। यह जान लें तो फिर अिस प्रकार दुःखका कारण नहीं रह जाता।"

आश्वासनके ये शब्द बापूजी बडी गंभीरतासे कह रहे थे। और जैसे जैसे वे बोलते जाते थे वैसे वैसे वातावरण गंभीर बनता जा रहा था। ये बहनें मिलने आअी तब असा करुणामय वातावरण था कि अच्छे अच्छोंका दिल भी काबूमें न रहे।

साढे तीनसे चार तक बापूजीने मिट्टी ली। कुछ मुलाकाती आये हुअे थे अुनसे मिले। डाकके पत्रों पर हस्ताक्षर किये।

शामको केवल गुड ही लिया। दूध, फल सभी छोड दिया। कहने लगे 'आज मिलने आनेवाली बहनोंका दृश्य असा था जो आखोंके सामनेसे हट नही सकता। कौन जाने अभी असे और कितने दुःखद दृश्य देखना नसीबमें बदा होगा!'

नित्यकी भांति प्रार्थना हुअी। वहांसे आकर घूमे। प्रार्थना प्रवचन देखा। मुलाकाती आये थे अुनसे मिले। आठ बजे लेटे लेटे अखबार सुने। लगभग दस बजे बापूजी सो गये।

मैंने अपना सामान मिलाकर पक्का किया। डायरी पूरी की। बापूकी डायरीकी नकल की। साढे दस हुअे हैं, सोनेकी तैयारी है। बापूजीके १२० तार हुअे।

बाबाने बापूजीके पैरोंमें लगानेको हेजलीन भेजा है। अुसे आज सोते समय लगाकर पट्टियां बांधी हैं।

लामचर
११-१-४७ शनिवार

जगतपुरमें रात बिताओ। दो बजे बापूजीने मुझे जगाया। मुझसे डायरी लिखनेके बारेमें पूछा। फिर पत्र लिखवाये। पहला पत्र मायवन्लभ मामा (पू० कस्तूरबाके भाओ) को लिखवाया। और दूसरे का लिख वाये। प्रार्थनाका समय हो जाने पर लिखाना बन्द किया। दातुन-पानी करके प्रार्थना की। दातुन करते हुअ आजकल मैं क्या खुराक लेती हूँ, कब लेती हूँ अित्यादि बातें पूछीं। अितने अधिक काममें भी बापूजी मेरी छोटी छोटी बातोंसे परिचित रहते हैं। प्रार्थनाके बाद मुँह हाथ गरम पानी देकर और रस तैयार करके बरतन मले और सामान तैयार किया। सुबह मुझे काफी वक्त मिल गया। क्योंकि सुबहके लिअ जरूरी चीजें बाहर रखकर सारा सामान मैंने रातको ही बांध लिया था। साढ़े सात बजते ही बापूजीने चलनेकी तैयारी की। बापूजीके सूतको दुबटा किया। वे बाथरूममें गये अुतनी देरमें बिस्तर बांधा। घड़ीमें ठीक सात चालीस होने पर जगतपुर छोड़ा।

रास्तेमें भजन और रामधुन जारी रही। बीचमें अेक बिलकुल जला हुआ घर देखा। वहां खूनके दाग भी थे। अैसा लगा कि वहां हत्याअें हुअी होंगी।

मैंने बापूसे अपनी कलकी डायरी लिख चुकनेकी बात कही थी अिसलिअ डाक और अपनी डायरी यहां पहुँचते ही बापूजीकी मेज पर रख दी। पर धोते समय बापूजीने पत्र देखकर अुन पर हस्ताक्षर किये। मालिशमें डायरी देखने लगे। परन्तु थकावट थी अिसलिअ सो गये।

स्नानके बाद खाते समय मैंने अपनी डायरी सुनाओ। बापूजी थोड़ेमें लिखनेको कहते हैं मगर मुझे थोड़ेमें लिखना नहीं आता। मैंने कहा मुझे आपका अेक अेक शब्द लिखना है। बापू कहने लगे : "यह तुम्हारा झूठा मोह है। परन्तु मुझे जबरन् तुमसे कुछ नहीं कराना है। तुम जितना अधिक लिख सको लिखो।" मुझे वह अच्छा लगा, क्योंकि मेरा खयाल है कि लिखनेसे अक्षर सुधरते हैं।

खाते-खाते कलकी डायरीमें बापूने हस्ताक्षर किये। अुसमें भी स्वाक्षर लिखनेकी आलोचना की। परन्तु कुल मिलाकर बापूजीको वह अच्छा लगा। तुरन्त ही लिख ली थी अिसलिअ कोओ खास बात छूटी नहीं थी।

भोजनमें शाक, बारह औंस दूध, पांच बादाम और पांच काजूकी चटनी खाओ। बादाम और काजू कराचीसे जयंतीभाओीने भेजे हैं। अुनका पारसल भटकता भटकता आज मिला।

बापूजीके दायें पैरका अंगूठा दुखता था। और कोअी खास बात नहीं हुअी।

जगतपुरसे लामचरका रास्ता बहुत ही खराब था। जमीन बहुत ठंडी थी और खेतमें चलकर जाना था। अेक नया परिवर्तन यह हुआ कि आज पहला ही दिन है जब प्रत्येक मुसलमान भाअीने बापूजीको सलाम ली और अुन्हें सलाम की।

बापूजी अखबार सुनते सुनते जल्दी सो गये। दस बजे फिर अुठे। मैंने अिस बीच डायरी लिखी और घरके लिअे पत्र लिखा। सूत अुतार रही थी कि बापूजी जाग गये। बाथरूममें जानेके बाद बिस्तर किया। बापूजी साढ़े दस बजे बिछौने पर लेटे। अुनके सिरमें तेल मला। पैर दबाये और सदाकी भांति प्रणाम किया। अुन्होंने मुझ पर वात्सल्यपूर्ण हाथ फेरा। मैं कब सो गअी अिसका पता ही नहीं रहा। काम खूब रहता है, परन्तु रातको नींद आनेमें पांच मिनट भी नहीं लगते।

कारपाडा
१२-१-४७ रविवार

कल डा० सुशीलाबहन नय्यरने बापूजीको रोज डेढ़ दो बजे अुठनेसे मना कर दिया। अिसका अुनके स्वास्थ्य पर असर पड़ रहा है। अंतमें बापूजी समझ गये और जल्दी न अुठनेकी बात स्वीकार कर ली। परन्तु आज अपनी आदतके अनुसार डेढ़ बजे अुठ गये। मैं भी अुठी। परन्तु दोनों फिर सो गये और प्रार्थनाके समय अुठे। प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लिया तथा रस पिया। सुशीलाबहनके साथ बातें करनी थीं अिसलिअे और कोअी लिखनेका खास काम नहीं कराया।

हम लामचरसे ७-४० को निकले। ८-४५ पर यहां पहुंचे। रास्तेमें
क सायकी बातामें अुन्होंने सबके साथ मिलकर अेक हो जानेको कहा।
यह सच है कि कारपाडाके भाअी-बहनोंने भव्य स्वागत किया। यह गांव

सुशीलाबहन पका है। गांवके लोगों पर अुनकी बड़ी अच्छी छाप पड़ी है खास तौर पर स्त्रियां और लड़कियां अुनके प्रति बहुत आदर रखती हैं।*

अुन्होंने बापूजीके स्नान और मालिशके लिअे सुन्दर व्यवस्था की थी। असलिअे बापूजी पहुंचते ही सीधे मालिश और स्नानके लिअे चले गये। और समय भी बहुत बच गया। मालिश और स्नानके बाद भोजनमें थोड़ा सब्जी दूध पांच बादाम और पांच काजू लिये। ये बादाम और काजू सुशीलाबहनने बापूजीके लिअे बहुत समयसे बचा कर रखे थे ताकि बापूजी अुनके घर आयें तब दिये जा सकें। बापू कहने लगे यह तो 'गरीब बेरा जैसी बात हुअी।'

दोपहरको बहनोंकी सभा थी। अुसमें बापूजीने सबसे कातनेका अनुरोध किया। बहनें बहुत अधिक संख्यामें थीं। कारीगरोंकी भी सभा था। अिस प्रकार दोपहरका सारा समय अिन दोनों सभाओंमें ही चला गया। शामको भोजनमें दूध और थोड़ासा पपीता लिया। आज बापूजीने १५० तार लग भग ४५ मिनटमें काते। धनुष-तकलीसे काता था। शामको थकावट लग रही थी असलिअे लगभग पौने नौ बजे ही सो गये। शामको छह बजकर छह मिनट पर मौन लिया। सरदार निरंजनसिंह गिल आये थे।

(बापू नारायणपुर १५-१-४७)

शाहपुर
१३-१-४७ सोमवार

चार बजे अुठे। आज प्रातःकालीन प्रार्थना कारपाड़ामें सुशीलाबहन पैने कराअी। नियमानुसार प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लिया। अेक तार कास्मिखाके नाम अम्तुस्सलामबहनके अपवासके बारेमें किया। बापूजी डाक पढ़ते पढ़ते सो गये थे। ठीक साढ़े सात बजे अुठे। और सात चालीस पर कारपाड़ासे यहां आनेको रवाना हुअे। चलनेसे पहले सुशीलाबहनने सबके ललाट पर तिलक लगाया। बापूजीके साथ दोनों सुशीलाबहन थीं

* सुशीलाबहन पै आजकल कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टकी मंत्री हैं। नोआखालीमें बापूजीके साथ जितने कार्यकर्ता थे अुनमें से प्रत्येकको अेक अेक गांव सौंपा गया था अुसी तरह अिन बहनको यह गांव सौंपा गया था।

डा०

सुशीलाबहन नय्यर और सुशीलाबहन पै। प्यारेलालजी भी साथ थे। अुन्होंने चलते चलते मुझे गीताके १२ वें अध्याय-सम्बन्धी प्रश्न समझाये।

हम ठीक साढे आठ बजे यहां पहुंचे। आज मालिश और स्नान सब मन कराया। भोजनमें बापूने दो खाखरे आठ औंस दूध, नींबू कच्चा शाक और अेक सद्दसका टुकडा लिया। खाते समय के साथ खानगी बातें होनेके कारण मैं नहाने धोने चली गयी और जल्दी काम पूरा कर लिया। बापूजी खाकर धूपमें जमीन पर लेटे। सिर पर छाया कर ली थी। शाम तक बाहर खुलेमें ही रहे। सुचेताबहन दोपहरको आयी थी। अुनकी भयानक बातें सुनकर तो दिल कांप अुठता था। क्रूर ढंगसे हिन्दू स्त्रियोंकी अिज्जत ली गयी थी। डा० सुशीला नय्यर मुर्दोंकी जांच करने लामचर गयी और वहांसे अम्तुस्सलामबहनकी परीक्षा करके साढे चार बजे लौटीं।

शामको आठ औंस दूध और खजूरकी आठ पेशियां आप दिलवाकर लीं।

प्रार्थनाके बाद घूमकर जल्दी आ गये। सवा आठ बजे बापूजीके पैर धोये और वे सोये। पैरका अंगूठा अब ठीक है। बापूजी कहते हैं "तुम सबने मेरी सेवा कर करके मुझे कोमल बना दिया है, अिसलिअे मेरे पैर भी कोमल बन गये हैं। अिसका फल तो मुझीको भुगतना चाहिये न?"

(बापू नारायणपुर, १५–१–४७)

भटियालपुर,
१४–१–४७

रोजकी तरह बापूजी चार बजे ही अुठे। प्रार्थनाके बाद शाहपुरकी गृहस्वामिनीके साथ बातें कीं। अुसने बापूजीसे कहा "हमें डर लगता है।" बापूजी बोले, "अगर डर लगता है तो यह देश छोड देना तुम्हारा धर्म माना जायगा। जहां डर न लगे वहां जाना चाहिये।" गरम पानी पीनेके बाद अनन्नासका रस दिया। रस पीकर बापूजीने बंगला बारहखडी और वर्णमाला लिखी। लिखते लिखते झपकी आ गयी। ७–३५ पर अुठे और भटियालपुरके लिअे रवाना हुअे।

आजका यह गांव प्यारेलालजीका है। रास्तेमें कुछ मुसलमानोंके घर पर दो-दो चार-चार मिनटके लिअे ठहरे थे। मैं मुसलमान बहनोंसे मिलनेके लिअे अन्दर जाती परन्तु मुझे देखकर वे भाग जाती थीं। फिर भी मैं अन्दर जाकर

अुनसे बातें करती थी। बापूजीसे मिलनेकी अुनसे प्रार्थना करती और कहती थी आपके आगमनमें अेक संत महात्मा आये हैं। आप अुनके दर्शन किये बिना कैसे रह सकती हैं? अेक बाडीमें पहले तो स्त्रियोंने बापूके सामने आना स्वीकार किया पर बादमें अिनकार कर दिया। परन्तु दूसरा मुंह देगा। दूसरी अेक बाडीमें तो बहनोंने बापूजीके साथ फोटो खिंचवानेकी मांग की। बापूजी बीचमें कुर्सी पर बैठे बहनें खडी रहीं और अुस परिवारके अेक लडकेने फोटो लिया। अैसा लगा जैसे बापूजीके प्रति बहनों और कुटुम्बके पुरुषोंमें कुछ भक्ति हो। बापूजी कभी पोज देते ही नहीं परन्तु अिस ढंगसे यहां ले लिया गया। यहां आनेके बाद यह पहला ही अवसर था जब बहनें अितनी आजादीसे मिलीं।

हम सवा नौ बजे भटियालपुर पहुंचे। दोनों सुशीलाबहन वहां मौजूद थीं। डा० सुशीलाबहनने मालिश की। मैंने बापूजीको स्नान कराया। आज बापूजीके लिअे प्यारेलालजीने खाखरे बनाये थे। आठ औंस दूध दो खाखरे और कच्चा शाक लिया। दोपहरको निरंजनसिंह गिल गये थे। आज यहां अेक ठाकुरजीके मंदिरमें बापूजीके हाथों मूर्तिकी फिरसे प्रतिष्ठा की गअी। अिसकी मूर्ति दंगेमें अुठा ली गअी थी। अिस अुत्सवमें बहुतसे मुसलमान भी आये थे। जिन मुसलमानोंने मूर्ति अुठाअी थी अुन्हींके सान्निध्यमें मूर्तिकी दुबारा प्रतिष्ठा होना कोअी छोटा-मोटा काम नहीं माना जा सकता। मुसलमानोंने प्रतिज्ञा ली कि हम अपनी जान देकर भी अिस देवमंदिरकी रक्षा करेंगे। बादमें आरती हुअी और प्रसाद बांटा गया।

नित्यके अनुसार प्रार्थना वगैराका क्रम रहा। शामको भोजनमें केवल दूध और भापसे पकाया हुआ सेब लिया। रातको दस बजे बापूजी सोये।

(बापू नारायणपुर १५-१-४७)

९
कडी परीक्षा

नारायणपुर,
१५–१–'४७

आज भी बापूजी सदाकी भांति चार बजे ही अुठे। परन्तु कह रहे थे कि तीन बजेसे जाग रहा हू।" प्रार्थना नित्यक्रमके अनुसार। ७–३५ पर यहां आनेके लिअे भटियालपुर छोडा। रास्तेमें डा० सुशीला बहन अलग होकर अपने गांव चली गअी।

यहां पहुंचने पर पैर धोकर मै बापूजीके लिअे नहानेकी तैयारी करने लगी। पर खानेकी पेटी' में रोज पैर घिसनेका जो पत्थर रखता थी वह नहीं मिला। खूब ढूंढा परन्तु कहीं भी नहीं मिला। बापूजीसे कहा तो बोले तुमने बडी भूल की है। कदाचित् मनुडी खो जाय तो काम चल सकता है परन्तु वह पत्थर खो जानेसे काम नहीं चल सकता। मै चाहता हू कि वह पत्थर तुम स्वयं ही ढूंढकर लाओ। निर्मलबाबूसे कह देना कि मेरे लिअे खाना तैयार कर ले। परन्तु पत्थर तो तुम खुद ही ढूंढने जाओ। असा करोगी तो दूसरी बार कोअी चीज भूलोगी नहीं। और अिसमें तुम्हारी और मेरी परीक्षा होगी कि मैं तुम्हें निर्भीकताका कैसा पाठ पढा सका हू और तुमने अुसे कितना हजम किया है?"

मैने स्वयंसेवकको साथ ले जानेके लिअे पूछा तो बापूने साफ अिनकार कर दिया। और मैं भी थोडी गुस्सेमें बापूजीको छोडकर चली गअी। मुझे डर तो लग रहा था कि कोअी गुडा पकड लेगा तो क्या होगा। नारियलकी घनी झाडियां थी और मुश्किल रास्ता था। परंतु किसी तरह अुस बाडीमें पहुंची जहां भटियालपुरसे यहां आते हुअे बापूजीके पैर बहुत ठडे हो जानेके कारण अुन्हें धोनेके लिअे पत्थर निकाला था। बुढियाने वह पत्थर फेंक दिया था, परन्तु तुरत मिल गया। अुसे लेकर अेक बजे बापूजीके पास आअी। रास्ते भर मनमें रामनामकी रट लगाती रही। शायद अितना अीश्वर-स्मरण मैंने आज तक कभी नहीं किया होगा। भूख भी अुतनी ही

ढूंढनेकी लगी थी। आज बापूजीकी अमुर गवा ल्ग गअी अिसलिये मनमें अपार दुःख हुआ। पत्थर बापूजीके सामने डालकर बोली — लीजिये आपका पत्थर। और मैं रो पड़ी।

बापूजी खिलखिलाकर हँस पड़े। मुझे लगा कि मेरा तो दम निकल गया और ये हँस रहे हैं! फिर कहने लगे, आज तुम्हारी परीक्षा हो गअी। अीश्वर जो करता है वह मंगल लिये ही करता है। पहले ही दिन मैंने तुमसे कह दिया था कि मेरे मनमें नरीन होना बड़ी हिम्मतका काम है। अगर जरा भी हिम्मत हार गअी तो नापास हो जाओगी अिसलिये वापस जाना हो तो चली जाओ। यह तुम्हें याद है? अिस पत्थरके निमित्तसे तुम्हारी परीक्षा हुअी। जिसमें मेरी दृष्टिसे तुम अुत्तीर्ण हुअी हो। मुझे अिससे कितना आनन्द हुआ अिसका तुम्हें पता नहीं है। साथ ही तुम अेक सुंदर पाठ भी सीखी। पत्थर तो बहुत मिल जायेंगे दूसरा ढूंढ लूंगी — असी लापरवाही नहीं रखनी चाहिये। प्रत्येक अुपयोगी वस्तुको सभालकर रखना सीखना चाहिये।

मैंने कहा, बापूजी अगर दिलसे कभी रामनाम लिया हो तो आज ही लिया है।

बापूजी बोले, हाँ जब दुःख पड़ता है तभी अीश्वर याद आता है। फिर भी अुसकी दया कितनी अपार है! मनुष्य सुखमें अुसका स्मरण नहीं करता, परन्तु दुःखमें थोड़ा भी याद करता है तो अीश्वर अुसे बचा लेता है।

अिस प्रकार मुझ पर आअी हुअी अिस अकल्पित विपत्तिने दोपहर तकका सारा समय ले लिया और दूसरा कुछ भी काम नहीं हो सका।

ढेढ बज जाने पर बापूजी कहने लगे, तुम्हें खूब भूख लगी होगी। खाना हो तो खा लो। परन्तु मैं तो चाहूँगा कि नारियलका पानी या फल लेकर थोड़ा देर आराम कर लो। अिससे तुम्हारी थकावट अुतर जायगी।

मैंने अिनकार करते हुअे कहा कि कपड़े धोकर और बहुतसा काम पड़ा है असे पूरा करके खाअूँगी। परन्तु बापूजीको यह अच्छा नहीं लगा।

बापूजी दोनों पलड़े बराबर करा लेते हैं। अेक तरफ कड़ी धूपमें जितनी दूर मुझे पत्थर लेनेको भेजा और दूसरी तरफ वहाँसे आने पर जबरन् हलका

भोजन कराकर आध घंटे सुलाया। बापूजीका सब काम असा ही होता है और अिससे सचमुच जीवनका वास्तविक निर्माण होता है।

शामको रोजकी तरह प्रार्थना हुआी। प्रार्थनाके बाद घूमते समय बापूजी कहने लगे, "अगर आज तुम्हें गुंडे पकड़ लेते और तुम वहां मर जाती होती तो मैं खुशीसे नाचता। परन्तु तुम डरकर भाग आती तो मुझे जरा भी अच्छा न लगता। आज प्रातःकाल पत्थरके प्रसंगमें मुझे तुम्हारी परीक्षा लेनी थी। यह समझकर ही मैंने तुम्हें भेजा था। मैंने तुम्हें अिस तरह अकेली भेजकर कितना खतरा अुठाया, अिसका तुम्हें खयाल नहीं आया होगा। मुझे लगा कि यह लड़की 'अेकला चलो रे' का गीत तो स्वस्थ स्वरसे गाती है, परन्तु अिसने अुसे पचाया कितना होगा? भगवानकी अिच्छासे तुम पत्थर भूल आओी, अिसलिअे मेरे मनमें जो अिच्छा थी वह पूरी हुअी। आजके प्रसंग परसे तुम विचार करना कि मैं कितना कठोर हो सकता हूं। मुझे भी अिसका भान हुआ और तुम्हें तो हुआ ही होगा।"

रामचरसे बापूजीने डायरी नहीं देखी थी, अिसलिअे घूमकर लौटने पर बीस मिनटमें डायरी सुन ली और तुरन्त ही हस्ताक्षर कर दिये।

बादमें अखबार सुने। साढ़े नौ बजे सोनेकी तैयारी की। आज बापूजीके अेक सौ चौबीस तार हुअे। खुराक रोजकी तरह ली। शामको छह औंस दूध लिया। दो औंस कम कर दिया।

(बापू १५-१-४७, नारायणपुर)

रामलक्ष्मपुर
१६-१-'४७

आज रातको तीन बजे बापूजीने मुझे जगाया। मैं घुटने सिकोड़कर सो रही थी। अिसलिअे सीधी सोनेको कहा। फिर कहने लगे, "अब तक तो तुम सब कुछ मनमें श्रद्धा रखकर करती रही हो। परन्तु अब जो कुछ करो वह समझकर ज्ञानपूर्वक करो, तो तुम्हारी शकल बदल जायगी। श्रद्धा अंध-श्रद्धा नहीं होनी चाहिये। हम जो कुछ करें अुसमें ज्ञानपूर्वक हमारी श्रद्धा होनी चाहिये। कोअी आदमी कुछ भी पढ़ाओी करे, अुदाहरणार्थ शब्द या वर्णमाला सीखनेकी श्रद्धा तो रखे परन्तु वर्णमालाका ज्ञान प्राप्त न करे, ह्रस्व, दीर्घ मात्रा, शब्द, अल्पविराम, पूर्णविराम वगैरा कहां और कैसे लगाये जायें

यह ज्ञान बिना पढ़े तो कभी बार अपने आप हो जाता है। लेकिन हां सुनो, जो अब जरूर श्रद्धा न रखकर अपनेमें ज्ञानको मिलना चाहिये। गीतामें कहा है कि

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा॥
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति॥
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः॥

अिसलिअे तुम अपने अन्दर ज्ञानपूर्ण श्रद्धा पैदा करनेकी कोशिश करो।

अितनेमें प्रार्थनाका समय हो गया। अिसलिअे प्रार्थनाके बाद निर्मलाबेनने प्रार्थना प्रवचनका अनुवाद करके बताया। मैं डायरी लिख रही थी कि आये और अुनके गांवको क्या प्रारम्भिक तैयारी करनी है यह पूछ गये।

साढ़े सात बजे नारायणपुर छोड़ा। हमारा यह गांव दूर माना जा सकता है। आज ठंड खूब थी। धूप बिलकुल नहीं थी। रास्तेमें बापूजीके पांवमें पैरकी पट्टी निकल गअी। यह थोड़ा चल लेनेके बाद पता चला। बापूजी कहने लगे वह पट्टी तो ढूंढनी ही चाहिये। कनल जीवनसिंहजीने अेक साथी आधी दूर तक जाकर पट्टी ढूंढ लाये। अिससे बापूजी आनन्दित हुअे। बोले 'मुझे बड़ा अच्छा लगा। हमारे आलस्यके कारण अेक चिन्दी भी चली जाय तो भारतको कितनी हानि पहुंचे?

रास्तेकी अेक बाड़ीमें अेक बहनने पैर धोनेके लिअे गरम पानी कर रखा था। वहां पर धोये। अेक मुस्लिम बाड़ीमें भी गये। यहां हम पौने नौ बजे पहुंचे। पैर धोनेका पानी तैयार था। यह गांव कनुआओंका है। अुनकी व्यवस्था सुन्दर थी। बाथरूम और पाखाना घर भी तैयार कर रखा था। अिस गांवमें आकर मुझे कोअी खास तैयारी नहीं करनी पड़ी। पर घाते समय बापूजीको डंडा रास (काठियावाड़ी) सिखलाया गया। स्थानीय देहाती बच्चोंको सियास्वामीकी जय प्यारे राघवकी जय बोलो हनुमान कृपालुकी जय जय जय — धुनके तालके साथ रास अच्छी तरह सिखाया गया

था। बापूजीको पैर धोने समय ही यह रास बताया गया, अिसलिअे अुनका समय बच गया। यह व्यवस्था अुन्हें बहुत पसंद आओी।

आज ने बापूजीकी मालिश करनेकी मांग की। मुझसे पूछा तो मैंने कहा, 'आपको सेवा करनी हो तो जरूर कीजिये। मैं जानती हूं कि बापूजीकी कोओी भी सेवा करनेको मिले तो अुसका आनंद अनोखा होता है। अिसलिअे मैं मना नहीं कर सकती।' परन्तु बापूजीको यह अच्छा नहीं लगा। कहने लगे "यह मेरे स्वभावमें है कि जो चीज लगातार चलती आओी हो अुसे बदला न जाय। मुझे यह आजका परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। तुम्हें को अुनका धर्म बताना चाहिये था। मैं तुममें अितनी हिम्मत पैदा करना चाहता हूं कि जो सच्ची बात हो वह सबसे स्पष्ट कह दो। तुम्हें कहना चाहिये था कि बापूकी सेवा आपके लिअे मुख्य वस्तु नहीं है। आपके लिअे अिस गांवकी सेवा ही सच्ची सेवा है। यदि अिसमें से आप जरा भी विचलित होंगे तो अुतना पाप करेंगे। साथ ही, बापूकी सेवा गांवकी सेवा करनेके समयमें से चोरी करके ही तो आप करेंगे! मान लीजिये कि बापू न आये होते तो आपने अुतने समयमें गांवकी कुछ न कुछ सेवा तो की ही होती? जब तुम अितना और अिस तरह कहनेका साहस अपनेमें पैदा करोगी अुस दिन मैं मानूंगा कि अब हर हालतमें तुम्हारा कुशल ही है। सच बातसे किसीको बुरा लगेगा या अच्छा लगेगा यह विचार नहीं किया जा सकता। हां, मर्यादामें रहकर अच्छी भाषामें कहना चाहिये। किसीको अच्छा लगनेके लिअे हम अपना नियम तोड़ दें तो दुनियामें आगे नहीं बढ़ा जा सकता। तुम्हें पता है न कि बच्चोंको हमेशा मीठा ही मीठा भाता है। फिर भी माता अुन्हें जिलानेके लिअे या तन्दुरुस्त रखनेके लिअे कभी कभी निष्ठुर बनकर अुनको कड़वी दवा भी देती है।"

मालिश और स्नानके बाद बापूजी अन्दर गये। भोजन अन्दर किया परन्तु भोजन करके जल्दी ही बाहर आ गये। खाना रोजकी भांति ही था — थोड़े मुरमुरे, आठ औंस दूध, न्याखरे शाक और खोपरेका संदेश।

दोपहरको काओी तीन बजे कातते समय कुछ महिलायें आओीं। अुन्होंने अपने हाथके सूतकी खादी बापूजीको भेंट की। बापूजीने अुनसे कहा "तुम्हें अपने परिवारके लिअे स्वयं ही अिस प्रकार कात कर खादी बना लेनी चाहिये। मुस्लिम बहनोंके साथ मिलजुलकर तुम अुन्हें अपनी बहन बना लो।

अपनी कला अुन्हें सिखाओ। अितना कर लोगी तो अिस प्रदेशमें जो यह कहा जाता है कि मुसलमानोंका बहुमत है अुसके बजाय यह कहा जायगा कि हिन्दू मुसलमान दोनोंका समभाग है। तुम बहनें तो असा बहुतसा काम कर सकती हो जो पुरुष कभी नहीं कर सकते।

बहनोंके जानेके बाद बापूजीने मिट्टी ली। मिट्टी लेते हुअे कुछ पत्र लिखवाये। अुठकर रामफल और दूधको फाड़कर अुसका पानी लिया। प्रार्थनाके बाद प्रवचन लिखा। रेडियोने तकलीफका नाच किया। आखिर मुझे और साढ़े दस बजे बापूजी सोये।

(बापू पारकोट १७-१-४७ गुरुवार)

पारकोट,
१७-१-४७

नियमानुसार प्रार्थना। बापूजीको सदाकी भांति गरम पानी और शहद दिया। दस मिनट बापूजी सोये। अुठकर अनन्नासका रस लिया। ७-४० पर हम यहांके लिअे रवाना हुअे। आज पारकोट और रामन्दपुरकी दो भजन मंडलियां मिल गयी थीं। अिस रास्तेमें बरबाद हुअे मकान बहुत थे। साढ़े आठ बजे यहां पहुंचे। बापूके पैर धोकर मैंने मालिश और स्नानकी तैयारी की। अभी तक धूप नहीं आयी थी अिसलिअे बापूजीने थोड़ी देर तक दूसरा काम किया। मालिश करके अुन्हें स्नान कराया तब तक ग्यारह बज गये। खुराक बापूने सदाकी भांति ही ली।

धूपमें ही बैठकर खाना खाया और धूपमें ही लेटे। बापूजीके पैर मलनेके बाद कपड़े धोने और बरतन मांजनेमें मेरा अेक घंटा चला गया। ३। बजे बापूजी अुठे। नारियलका पानी पिया। साढ़े तीन बजे मिट्टी ली। चार बजे स्त्रियोंकी सभामें गये।

सभामें बहनोंको बातें मुस्लिम बहनोंसे मिलने और घरबारकी सफाई रखनेका अनुरोध किया।

साढ़े चार बजे सभासे आकर केला, दूध और हरे जरदालू लिये। खाकर प्रार्थनामें गये। प्रार्थनासे अेक मुस्लिम मुहल्लेमें गये। बापूजी खूब थक गये थे। आकर पैर धोनेके बाद प्रार्थना प्रवचन देखा। बंगलाका पाठ किया।

अितनेमें नौ वज गये। म पर दबा रही थी अुस समय बापूजी वात्सल्यपूर्ण वाणीसे कहने लगे, 'तुम थक जाओ तो मुझे कह देना। जब मने आज तुम्हें दौडते दौडते मेरे लिअे नहानेका पानी भरकर बाल्टी लाते देखा, तब मुझे खयाल हुआ कि मैं तुमसे बिल्कुल निष्ठुर बनकर काम लेने लगा हू। तुम जरा भी सकोच न करना। क्योंकि यह समय लेना कि तुम बीमार पड गअी तो खैरियत नही। मेरी यह अुत्कट अिच्छा है कि तुम्ह दोपहरका आध घटे सो ही लेना चाहिये। परन्तु मुझे अिसका आश्चय और दु ख है कि मैं अितना भी समय तुम्हारे लिअे क्या नही निकाल पाता। तुम अिसमें मदद करो तो म आध घटा तुम्हारे लिअे आसानीसे निकाल सकता हू। म तुम्ह अेक मिनट भी फुरसत नहा लेने देता। वस मुझे यह पसद है। परन्तु यह तुम पर भार न बन जाय, तो मुझे तुमसे अितना काम लेनेमें कोअी आपत्ति नही है।'

मने कहा, आप चिन्ता न कीजिये। मुझे अिससे कितनी ही बातें सीखनेको मिलती है।'

अिस प्रकार बातें करते करते बापूजी सो गये। मुझे सोनेमें ग्यारह बज गये।

काअी सगी मा अपनी बच्ची पर अितना प्रेम बरसा सकती है अुससे भी अधिक प्रेमामृत बापूजीकी आजकी अिस बातके अेक अेक शब्दसे झर रहा था। अितनी अधिक चिन्ताओंके बीच भी मेरे जैसीकी वे अितनी मीठी चिन्ता रखते ह। मुझे सवेरे पानी भरकर लाते देखकर अुन्ह कितना दु ख हुआ ? माताके समान असी प्रेमपूर्ण और मीठी चिता कौन पुरुष रख सकता है ? परन्तु बापूजीने बार बार कहा है कि "जस मने सत्य अपरिग्रह अस्पृश्यता, अहिंसा और असे अनेक आदर्श देशके सामने रखे ह वस ही मुझे यह आदर्श भी पेश करना है कि पुरुष भी माता बन सकता है। स्त्रियोंके प्रति पुरुषोंकी दृष्टि माता जसी मीठी हो जायगी तभी हमारी भव्य सस्कृति स्थायी बन सकेगी। सचमुच असे अनुभवमें से आजकल म गुजर रही हू। बापूजी मेरी माता बनकर यह प्रयोग कर रहे ह अिसे म अपना अहोभाग्य समझकर आनन्दसे फूली नही समाती।

(बापू वाल्कवाट, १८-१-४७, शनिवार)

बाल्लकोट
१८-१-४७ शनिवार

आज बापूजी सवा तीन बजसे जाग रहे थ। मुझे जगाकर कहा आज तो अभी निद्रा आ गअी कि रातमें मुझे अक बार भी अुठना नहीं पडा। यह मुझे बहुत अच्छा लगा। प्रार्थनाके बाद बापूजीने अपना भाषण लिखा और सारा समय और को पत्र लिखनेमें बिताया। अतिम दस ही मिनट जरा लेट। हमने सात पतीस पर बाराकोट छोडा। रास्तेमें अक मुसलमानके घर पर ठहरे थे। वहा सबको सलाम करके आगे बढे। यहा आनेके बाद सारा कार्यक्रम नित्यकी भाति चला। मालिश और स्नानादिसे दस बजे निबटे। बापूजीने रोजकी तरह खाखरे शाक और दूध लिया।

मन दो बज अपना कामकाज पूरा करके ढाओी बज बापूजीने पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखी। पर दबाय और म भी पन्द्रह मिनट सोअी। तीन बज महिलाओंकी सभा हुअी। बहनें बहुत आअी थी।

शामको बापूजीने दूध और अक केला ही लिया। प्रार्थना वगरा नियमानुसार हुआ। लगभग दस बज सोय। बापूजीके पर अब कुछ अच्छे होने लग ह। तबीयत अितन कामकाजके हिसाबसे ठीक है हालाकि बहुत कम भोजन करते ह बहुत ज्यादा काम करते ह नींद कम कर डाली है और अितनी असह्य ठड पड रही है। यह तो स्पष्ट ही दिखाअी देता है कि अीश्वर ही अुनमें शक्ति पूर रहा है।

आतकोरा
१९-१-४७

सदाकी भाति साढे तीन बज अुठ। दातुन-पानीके बाद प्रार्थना हुअी। आज गरम पानी करनेमें जरा दर हो गअी। गरम पानी देरसे हो तो फलोका रस भी बापूजी देरसे ही ले पाते ह। रातको म अीधन अदर लना भूल गअी थी। (रोज थोडा आधन अदर ले लेती हू जिससे सुबह ओसमें भीग न जाय।) अिसलिअ वह ओसमें भीग गया था। मने अपनी आम्नीकी चिन्दी फाडकर लालटेनके घासलेटमें डुबोअी। बापूजी पीछस देख रह थ। लेकिन मुझ अिसका पता नहीं था। दियासलाअी पेटीसे निकालते ही बापू कहने लग यह चिन्दी बताना तो। मन बताअी।

बापूजीने अुसे देखा और मुझसे कहने लगे, ' अिसे धो डालो और धूपमें सुखा लो। चिन्दीमें लगा तेल तो जायगा ही। परन्तु तेल बचायें तो नाडा जाता है और नाडा बचायें तो तेल जाता है। अिसलिअे फायदा नाडा बचानेमें ही है। नाडा बन जाय अुतनी बडी चिन्दी कहीं चूल्हा जलानेके काममें ली जाती है? मैं कितना लोभी हूं अिसका तुम्हें पता है? साथ ही मैं बनिया भी हूं। गरम पानी जरा देरसे हुआ तो क्या चिन्ता है? चिन्दीने कितना अधिक तेल पी लिया? अिसके सिवा, मेरा ध्यान न गया होता तो वह जल ही जाती न? '

मने कहा, ' पर अितना लोभ क्यों किया जाय? "

बापूजी बोले, ' हां, तुम तो अुदार बापकी बेटी हो। परन्तु मेरे बाप थोडे ही बैठे हैं जो मुझे रुपया देंगे? मेरे विनोदमें भी हमेशा गांभीर्य रहता है। अुसे तुम समझना सीख लो तो काफी है।

मैंने वह चिन्दी धो डाली। वह सूखी अिसमें पहले दो-तीन बार पूछताछ हुअी। और जब चिन्दी सूखी और अुसका नाडेके रूपमें अुपयोग हुआ, तब ही अिस बातकी पूर्णाहुति हुअी।

बादमें बापूजी डाकके काममें लगे और मैं अपने काममें लगी। कल 'यीस्ट' की बोतल फूट गयी थी अिसलिअे बापूजीने हरअेक चीज साथ ही रखनेको कहा। पहलेसे मेज देनेको मना कर दिया। साढे पचीस पर हमने बादलकोट छोडा। आजका रास्ता बहुत ही खराब था। सरदार जीवनसिंहजी दो बार फिसल कर गिर पडे। पगडंडी असी थी कि मैं और बापूजी बडी मुश्किलसे साथ साथ चल सकते थे। कहीं कहीं तो मुझे छोडकर अुन्हें अपनी बाठकी लकडीके सहारे चलना पडता था। अिसके सिवा यह रास्ता कार्यकर्ताओंने साफ तो किया था लेकिन रातको मुसलमानोंके लडके गंदा कर गये थे। अेक-दो साथियोंने अपनी आंखोंसे यह देखा था। यह गंदगी — मैं जरा पीछे रह गयी थी अिसलिअे — बापूजी पत्तोंसे साफ करने लगे। मैंने देखा कि सब अेकाअेक रुक गये हैं। अेकके बाद अेक लाअिन बनाकर चलने लायक वह पगडंडी थी। मुझे बापूजी पर गुस्सा आया। मैंने कहा, आप मुझे क्या लज्जित करते हैं? मुझे कहनेके बजाय आपने खुद क्यों साफ किया? अिस पर बापूजी हंस पडे और बोले, तुम्हें क्या पता कि अैसे

काम करनेमें मुझे कितना आनन्द आता है? तुम यह जानती होतीं तो
अिस प्रकार मुझ पर गुस्सा न होतीं।'

गांवके लोग देख रहे थे। अिसलिअे मुझे गांवके लोगों पर भी मन
ही मन गुस्सा आया। बापूजी जैसे पुरुष तो यह गन्दगी साफ कर रहे हैं
जिन्हें जगत पूज्य मानता है और गांवके अनाड़ी और अज्ञान लोग खड़े
खड़े पुतलोंकी तरह देख रहे हैं! जरा भी शर्म नहीं आती?

परन्तु बापूजी कहने लगे, "तुम देख लेना कलसे ये लोग रास्ते मुझे
साफ नहीं करने देंगे। क्योंकि सबको यह पाठ मिल जायगा कि गन्दगीकी
सफाओी करना हलका काम नहीं है। परन्तु मेरे ही लिअे ये रास्ता साफ
करेंगे तो मुझे बुरा लगेगा।

मैंने कहा, "केवल कल भरको कर देंगे और बादमें नहीं करेंगे तो
आप क्या करेंगे?'

"मैं तुम्हें देखनेको भेजूंगा और फिर अैसा गन्दा रास्ता होगा तो तुम
साफ करने आओगी। अस्वच्छको स्वच्छ करना तो मेरा धंधा ही है।"

बापूजीकी यह आखिरी बात कितनी सत्य है अिसका वर्णन करना
मेरी शक्तिसे बाहर है। परन्तु अैसी छोटी छोटी अस्वच्छताओंसे लेकर
जीवनकी व्यवहारकी राजनीतिकी और धर्मकी अनेक अस्वच्छताओंको स्वच्छ
करना अुनका धंधा ही था। और अुन्होंने कैसे प्रकारसे हमें स्वच्छ किये
भी नहीं। यहां तो मैं यह देख ही रही हूं। खूबी तो यह है कि जो
छोटी या निकम्मी बात मानी जाती है अुसीको बापूजी महत्त्वकी और मुख्य
बात साबित करके बता देते हैं। तब समझमें आता है कि जीवनको सच्चे
अर्थमें जीनेके लिअे यह छोटी बात ही महत्त्वकी है।

रास्तेमें हम अुस जगह पहुंचे जहां धूपमें अेक मदरसा लगा हुआ
था। महात्मा रास्ता तंग था अिस कारण कर्नल जीवनसिंहजी फिसल कर
गिर पड़े। अुनका पहाड़ी और कसा हुआ शरीर है अुस पर फौजी सिपाही!
जब वे भी फिसल पड़ें तो वह रास्ता बापूजीके लिअे कितना खतरनाक हो
सकता है अिसकी कल्पना ही कर लेनी पड़ती। बापूजी खूब हंसे। कहने
लगे, "समुद्रमें ही आग लगे तो क्या किया जाय?'

मदरसेमें पढ़नेवाले लड़के-लड़कियां हमें देखकर भागने लगे। बापूजीने
सबको सलाम करनेकी कोशिश की। परन्तु कोओी सलाम नहीं करता था।

अब्दुल्ला साहबने सबसे अपना काम जारी रखनेको कहा। मुझे सहज ही विचार आया कि भाग्यमें हो तभी मिले न? नरसिंह मेहताने सच ही गाया है 'जेहना भाग्यमा जे समे जे लख्यु ' — जिसके भाग्यमें जिस समय जो लिखा हो। बापूजी जैसे पुनीत पुरुष जिनके दर्शन दुर्लभ हो सकते है, स्वयं प्रत्यक्ष आकर सामने खड़े है परन्तु अज्ञानने उन लोगोंको अंधा बना दिया है। यह है भाग्यकी बलिहारी!

आनाशेरा लगभग दो मील होगा। परन्तु यहां पहुंचनेमें पूरा अेक घटा लग गया।

यहां आकर नित्यके अनुसार बापूजीके पैर धोकर मैंने रोजका काम काज शुरू किया। धूप नहीं थी अिसलिअे मालिश और स्नान देरसे हुआ। अिस बीच बापूजीने दूसरा काम निबटाया। मैं जब मालिश कर रही थी तब बापूजीने अपने हाथसे हजामत बनाअी। अेकसाथ दोनों काम निबट गये।

गांवका अेक बूढ़ेके घर गये। बूढ़ा बहरा था, शरीरसे अशक्त था परन्तु बापूजीके सामने अुठ कर खड़ा हुआ। बापूजीने प्रेमपूर्वक अुसके गाल पर थपकी लगाअी। तुरन्त ही बूढ़ेकी पत्नी आयी। अुसने बूढ़ेको कपूरकी अेक माला दी और अेक स्वयं रखी। दोनोंने बापूजीको माला पहनाअी। बुढ़िया कांप रही थी। अुसने बापूजीके हाथ पकड़ लिये, सारे शरीरको लगाये और पावनता अनुभव की। दो मीठे नारियल खास तौर पर रख छोड़े थे जिनका पानी पीनेका आग्रह किया। मुझे यह दृश्य देखकर रामायणकी शबरीके बरोकी बात याद आअी। आसपास हराभरा जंगल था। जैसे प्रभुने शबरीके बेर प्रेमसे खाये थे वैसे बापूजीने नारियलका पानी प्रेमसे पिया।

कंदमूल फल सुरस अति दिये राम कहुं आनि।
प्रेम सहित खाये प्रभु बारबार बखानि॥

मैं रोज रामायण पढ़ती हूं। अैसा क्रमसे जब आज घूमकर आअी और रामायण पढ़ने बैठी तो यही अरण्यकाण्ड सोरठा पढ़नेमें आया। यही दृश्य मैंने अुस समय देखा जब बूढ़े-बूढ़ीने सग्रह करके रखे हुअे नारियलका पानी पानेके लिअे बापूजीके सामने रखा। बापूजी नारियल खानेके बाद कुछ भी नहीं लेते लेकिन प्रेमसे लिये हुअे नारियलके पानीका अस्वीकार न करके अुसका पानी स्वयं लिया और दूसरेका मुझे जबरदस्ती पिलाया। अिस अवसर पर बापूजीके चेहरे पर आनन्द झलक रहा था।

वहांसे लौटते हुअे बापू भजन आप कहो मन ... जाते जैसे आदमी मिल जाते हैं तब हमेशा आनन्द होता है। ये दोनों बूढ़े-बूढ़ी गरीब आगरान तो होंगे ही। शायद कुछ कम हो।

दोपहरको खानेमें बापूजीका कातना रह गया था। आकर अब कात रहे हैं। सामने साढ़े सात हुअे हैं। शैलेनभाअी अखबार सुना रहे हैं। मैं डायरी लिख रही हूं।

पुनश्च मेरी डायरी कातनेके बाद बापूने साढ़े नौ बजे सुनी हस्ताक्षर करनेके बाद सोये।

शिरडी,
२०-१-४७

आज बापूजी सवा पांच बजे जागे। प्रार्थनाके बाद नियमानुसार गरम पानी और शहद लिया। बादमें रस देकर और सामान पैक करके मैं कलका वह रास्ता देखने गयी। रास्ता गन्दा ही था। अिसलिअे बापूजीसे कहने न जाकर मैं स्वयं साफ करने लगी। गांवके लोग भी सफाअीमें शरीक हो गये। अिसलिअे मेरा काम पन्द्रह मिनटमें निबट गया। गांवके लोगोंने मुझसे कहा 'कलसे आप न आअिये। हम खुद साफ कर लेंगे।'

अिस पर मौन खुलने पर बापूजीने कहा 'आज तुमने मेरा पुण्य ले लिया न? वह रास्ता मुझीको साफ करना था। खैर, अिससे दो काम होंगे। अेक तो सफाअी रखी जायगी, दूसरे लोग दिया हुआ वचन पालना सीखेंगे तो सचाअी सीखेंगे जिसका यहां बिल्कुल अभाव है। तुम जानती हो कि हमारे काठियावाड़में भी सबको रास्ते गंदे करनेकी बड़ी बुरी आदत है। तुम यह मत समझना कि यहीं सबको थूकने या टट्टी बैठनेकी गन्दी आदत है। हिन्दुस्तानमें बहुत जगह लोगोंको यह कुटेव है। काठियावाड़में तो खास तौर पर है। यह सुधार करनेकी बचपनसे मेरी साध थी। परन्तु संयोगवश मैं काठियावाड़में स्थायी होकर न रह सका। तुम्हें मुझ पर जो क्रोध आया वह अनुचित था। क्योंकि जैसे खुद खायें तभी पेट भरता है, वैसे ही स्वच्छताका नियम मेरे लिअे है। स्वयं सफाअी करनेमें मुझे अपार आनन्द होता है।

(बापूजी सुबह मुझसे पहले शिरडी पहुंच गये थे। वहां अम्तुस्सलाम बहन अुपवास कर रही थीं। वह गांव अुनका कार्यक्षेत्र था। यह कहा जाता है कि अुस गांवमें कुछ मुसलमान भाअियोंने हथियार छुपा रखे हैं। अिससे

बहनको दु ख हुआ कि मेरे जातिभाओी यह कैसा कृत्य कर रहे ह। अम्तुस्सलाम वहन शरीफ मुसलमान खानदानकी लडकी ह। बापूजी तो अुन्हें अपनी सगी बेटीसे बढकर मानते थे। जिस अेकताके कार्यमें अुनका ठोस हाथ रहा। और आज भी वे यही काय कर रही ह। दीखनेमें दुबली-पतली, अुम्र लगभग पचाससे अूपर होगी, मगर वे जी-तोड मेहनत कर रही ह। अिन बहनने नोआखालीमें अुपवास किये थे तब वे मृत्युकी प्यासे ही अुठी थी असा कहा जा सकता है।)

मै और निमल्दा पीछे रहे, परन्तु सामान अुठानेवाला आज और कोओी न था। बापूजी जल्दी चले गये, जिसलिअे सभी लोग चले गये। अिससे बडी कठिनाओी हुओी। परन्तु बापूजी मागमें अेक दो स्थानो पर मुसलमानोके घर ठहरे, जिसलिअे म समय पर पहुच सकी।

अम्तुस्सलाम बहन बहुत ही अशक्त हो गओी हैं। अुनका बिस्तर बाहर किया और अुन्हे बापूजीने सूयस्नान लेनेको कहा। बापूजीने दिन भर मुसल्मान भाअियोसे समझौतेकी बातचीत जारी रखी।

अम्तुस्सलाम बहन दिनभर गीता, कुरान शरीफ या भजन सुननेकी अिच्छा रखती हैं। सब बारी बारीसे सुनाते हैं।

बापूजीकी दिनभरकी बातचीतके परिणामस्वरूप रातको नौ बजे लिखापढी हुओी और मुसल्मान भाअियोने समझौता किया। बहनके अुपवास छूटे। प्रार्थनाके बाद अुन्होने बापूजीके हाथो मोसबीके रसका प्याला लिया। सन्देशसे सबका मीठा मुह कराया। प्रार्थना हुओी। प्रभुका अुपकार माना कि अुपवासका सुखद अत आया। वातावरण आनन्दमय बन गया और सबको शान्ति हुओी।

बापूजी रातके ग्यारह बजे सोये। दिनभर बातें करते रहनेसे थक गये थे।

मैथूरी,
२१-१-'४७

रोजकी तरह प्रार्थना हुओी। आज सुशीलाबहनने प्रार्थना करायी। बापूजीको गरम पानी देकर म सामान ठीक करने गयी।

अितनेमें सात बज गये। बापूजी अुठे। अम्तुस्सलाम बहनके पास गये। अुनसे बिदा ली। कुछ बहनें बापूजीको तिलक लगाकर प्रणाम कर गओी और हम रवाना हुअे।

आज   भी गये अिसलिअ मुझ पर कामका काफी जोर पडा। वे बीमार पडे हैं। बापूजी कहते हैं यह आदमी मेरे पास अचानक आ गया। पहले वह सिपाही था। बादमें आओी० अन० अ० में भरती हो गया। अुसने मुझसे कहा कि वह मेरी सेवामें ही जीवन बिताना चाहता है परन्तु अिसमें मुझे दगा दिखाओी देता है। मगर मुझे क्या? मेरा जीवन अिसीसे बना है। फिर महाभारतकी कहानी सुनाओी कि जब पाचों पाडव और द्रौपदी वनमें (महाभारतके युद्धके बाद) गये तब स्वर्गारोहणके समय युधिष्ठिरके साथी अेक अेक करके सभी गिरते गये। अन्तमें द्रौपदी भी स्वर्गमें साथ न जा सकी। अेक कुत्ता बाकी रहा। अिसी तरह अिस यज्ञमें पहलेसे ही साथी अेक अेक करके अेक अेक निकलते जा रहे हैं। यह मुझे अच्छा लगता है। अन्त तक तुम रह जाओ तो? कदाचित रह भी जाओ। अिस कहानीसे बडा सुन्दर अर्थ निकलता है कुत्ते जैसे अल्प प्राणीने जिसकी कुछ भी कीमत नहीं असे क्या पुण्य किये होंगे कि वह अिन पाचों जनोंके बाद भी जिन्दा रहा? कारण यही है कि वह वफादार था। अिसलिअ यह माननेका कोओी कारण नहीं कि बडे माने जानेवाले आदमी या व्यक्ति पाप नहीं करते और छोटे ही करते हैं। कभी कभी अल्प माने जानेवाले बडोंसे अधिक आगे बढे हुअे होते हैं।

नामका अेक मुसलमान भाओी आये। अुन्हें पंडित सुन्दरलालजीने यहां भेजा है। अुनका नाम हुनर है। वे यहां रहेंगे। बापूजीने अुन्हें प्रत्येक काम स्वयं करनेकी सूचना दी। रसोओी आदि भी साफ लेनेका कहा। सबसे पहले अुन्हें पाखाना-सफाओीका काम सौंपा गया। मुझे अिन भाओी पर बडी दया आती है। बापूजी आनेवालेकी पहले-पहल खूब परीक्षा लेते हैं। परन्तु मैं अिन भाओीकी मदद नहीं कर सकता। यदि कुछ भी सहानुभूति दिखाअूं और बापूजीको मालूम हो जाय तो वे मेरी खबर ले डालें। अिसलिअ बहुत दया आने पर भी मैं कठोर बनकर वहांसे चली गओी — कारण यह था कि कहीं अुनके साथ बातें करनेमें जी पिघल जाय और अुन्हें मदद कर बैठूं। अिसलिअ वहांसे चले जानेमें ही मैंने खैरियत मानी।

मैंने बापूजीसे यह बात कही। बापूजी कहने लगे — मैं अिसे दया नहीं निर्दयता कहूंगा। सच्ची दया दूसरी तरहकी है। जो काम अिस भाओीके जीवनमें आनन्ददायक होकर अिस अभ्यासके मार्ग पर चलनेवाले हैं वे कठिन होने पर भी मददगार हैं। अतः अिस समय अिसके प्रति सहानुभूति बताना निर्दयता ही है।

पटमें कोअी बिगाड हो गया हो और ऑपरेशन करना जरूरी हो, अुस समय डाक्टर यदि यह कि बेचारेको हथियार लगाअूगा तो खून निकलेगा और ज्यादा परेशान होगा तो अेफ० आर० सी० अेम० हुआ डाक्टर भी अयोग्य ही माना जायगा। बीमारका पेट अुसे चीरना ही चाहिये और भीतरकी खराबी निकालनी ही चाहिये। अिस प्रकार अुस भाअी पर आअी हुअी तुम्हारी दयाको मैं दया नहीं कहूगा। अच्छा हुआ कि तुमने अुसकी मदद नही की वर्ना पता नही म क्या करता।

बापूजीके कार्योंमें कसा सूक्ष्म तत्त्वज्ञान होता है? असा तत्त्वज्ञान मैं किसी कालेजमें गआी होती तो वहा कोअी प्रोफेसर मुझे अिस ढगसे समझा सकता या नही अिसमें शका है।

सुबहका भोजन तो रोजकी भाति लिया। शामको प्रार्थनाके बाद दूधको फाडकर अुसका पानी पिया और नारियलका मसका लिया। प्रार्थनामें अम्तुस्सलाम बहनके अुपवास सबधी बातें कही। मुसलमान भाअियोंने यह खबर अखबारोंमें देनेस मना किया। बापूजीने समझाया कि प्रगट हुअी बात छिपानी नही चाहिये। यह खबर अखबारोंमें न देनेके पीछे अुनका जरूर कुछ न कुछ हेतु रहा होगा, परन्तु बापूजी अिस तरह किसीके चक्करमें आनेवाले नही थे। खबर छपवानी ही पडी।

दस बजे बापूजी अखबार सुनकर सोये। मने दिनभरमें बहुतसा काम निबटा लिया। कपडोंमें सारी चादरे धोअी। बापूजीका तकिया रुअी निकालकर और धूप सुखाकर फिरसे भरा। लिखना भी बहुत था। छोटा-बडा सारा सामान भी साफ किया। रातको अूघते अूघते घरकी डाक लिख रही थी। कब सो गआी अिसका पता नही चला। सवेरे अुठी तो कागज-कलम अिधर-अुधर बिखरे पडे थे। बापूजी भी अितने ज्यादा थक गये थे कि गहरी नीदमें थे। अिसलिअे आज अुनके अुलाहनेसे बच गअी। सवेरे मरा यह सारा पराक्रम देखकर अुन्होंने पूछा। मने बताया तो बोले "म तो कहता ही हू कि मुझ कौन धोखा दे सकता है? मने तुम्हे मेरे सोनेके बाद जागनेसे बिल्कुल मना कर दिया है तो भी तुमने मेहनत करके काम निबटानके लिअे जागनेका प्रयत्न किया। परन्तु अीश्वरने तुम्हारी आखोंमें नीद भर दी। यह क्या बताता है? अिसलिअे म तो मानता हू कि दगा किसीका सगा नही। आअिंदा सावधान रहना और असा न करना।

यह अेक छोटीसी बात है परन्तु अितना तो मानना ही पडेगा कि बापूजीको धोखा देनेकी कोशिश करनेवाला स्वयं ही धोखा खाता है।

पनियाला
२२-१-४७

आज पूज्य बाका मासिक मृत्यु दिवस है। अिसलिअे बापू जल्दी अुठे। मुझे भी फौरन जगाया। दातुनके बाद प्रार्थना की और सदाकी तरह पूरी गीताका पारायण किया। पारायणमें मैं अकेली ही थी। कलसे बापूजी कुछ अधिक थके हुअे लगते हैं।

प्रार्थनाके बाद गरम पानी पिया। परन्तु शहदकी बोतल नहीं मिली। कोअी अुठा ले गया दीखता है क्योंकि मैंने रातको सब कुछ तैयार करके रखा था। सुबह देखा तो बोतल गायब थी। परन्तु खुशकिस्मतीसे अनुभीदीके पास अच्छा गुड था। अुसमें गरम पानी डालकर नींबू निचोडा और वह बापूजीने पिया। कहने लगे "कोअी हर्ज नहीं। जो ले गये होंगे वे खानेके काममें ही तो लेंगे। हमारा काम गुडसे अच्छी तरह चल जाता है। अब कौनसा कौन ले गया है अुसकी जांच करानेके झगडेमें मत पडना।"

प्रार्थनाके बाद कुछ पत्र देखते देखते — हाथमें पत्र रखकर ही — बापूजी सो गये। ये पत्र यदि अुनके हाथमें से मैं ले लेती तो वे जाग जाते। अिसलिअे सामान बांधनेमें मुझे देर हो गअी। बाहर कीर्तनवाले आ गये थे। सब सामान जमानेमें मुझे पांच मिनट ज्यादा लगे। बापूजी कहने लगे "लोग कभीके आ गये हैं। कहा जायगा कि तुमने आज पांच सौ आदमियोंके पांच मिनट चुराये हैं। यह मुझसे बर्दाश्त नहीं हो सकता। मैं जाता हूं। तुम पीछेसे आ जाना। परन्तु आज मैं जाता हूं जिससे यह मैं समझ लेना कि रोज मैं अिसी तरह चला जाअूंगा और तुम दौडकर मुझे पकड सकोगी अिसलिअे रोज असा करोगी तो चलेगा। तुम लडकी हो और मैं बूढा हूं अिस विचारसे तुम छूट सकती हो। परन्तु यह अपराध होगा। जिसलिअे सदा नियत समय पर काम होना चाहिये। किसी आदमीको समय दे कर कहा हो कि सात बजे मैं बाहर निकलूंगा तब सात पर दो सेकण्ड भी हो जायं तो मुझे अखरेगा। मुझे अुठा देना तुम्हारा धर्म था। मुझे जगाकर भी चाहे जैसा ली होती तो वह तुम्हारा पुण्यकार्य माना जाता और कहा जाता कि तुमने अपने धर्मका पालन किया है।

वार्तोका काम रोजकी तरह चला। सुबहसे मुझे बुखार था। ग्यारह बजे १०३ हो गया। परन्तु बापूजीसे कह देती तो बिस्तर पर लिटा देते, अिस डरसे नहीं कहा। दो बजे लगभग १०४ हो गया तो सो गअी। चार बजे अुतर गया। फिर बापूजीके पेडू पर मिट्टीकी पट्टी रखी। और दो घंटे आराम करके काममें लग सकी, जिससे मनमें संतोष हुआ। मिट्टी लेते समय बापूजी मेरी डायरी देख गये और अुस पर हस्ताक्षर किये।

शामको प्रार्थनामें बरसात हुअी तो भी कोअी अुठा नहीं। बापूजी पर चद्दर डाल दी। फिर भी मैं और बापूजी काफी भीग गये। लोगोंमें से कोअी अुठा नहीं। मुसलमान भाअी अच्छी संख्यामें थे। भजनके बाद अेकाअेक नअी धुन दिमागमें आ जानेसे मैंने वही गाअी। लोगोंने तालके साथ सुन्दर ढंगसे गाअी।

रघुपति राघव राजा राम पतित-पावन सीताराम,
अीश्वर अल्लाह तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान।

यह धुन गाअी तो सही, परन्तु मुझे डर था कि बापूजीसे पूछे बिना मैंने जो समझदारी बताअी अुसका अुनके मन पर न जाने क्या असर होगा।

परन्तु नियमानुसार धुनके बाद प्रवचन हुआ। अुसमें अिस धुनका अुन्होंने सुन्दर अुल्लेख किया। अिस पर मेरे संतोषका पार नहीं रहा।

प्रार्थना-स्थलसे लौटे तब बापूजी कहने लगे 'आजकी धुन मुझे बड़ी मधुर लगी। लोगोंको पसन्द आअी। तुमने कहांसे सीखी? या तुमने खुद बना ली?"

मैंने अुसका अितिहास कहा 'पोरबन्दरमें सुदामाके मंदिरमें अेक सभागृह था (आज भी है)। वहां अेक ब्राह्मण महाराज कथा कहते थे। अुनकी कथा पूरी होने पर धुन गाअी जाती थी। अुसमें प्रत्येक जातिके लोग भाग ले सकते थे। मैं भी अपनी माके साथ आठ-दस वर्षकी अुम्रमें अिस सत्संगमें जाया करती थी। वहां अेक दिन मैंने यह धुन सुनी थी। यहां तो आज अचानक दिमागमें आ गअी।

बापूजी कहने लगे "अीश्वरने ही तुम्हें यह धुन सुझाअी। मेरे यज्ञमें अीश्वर किस खूबीसे मदद दे रहा है! अुस शक्ति पर मेरी श्रद्धा अधिकाधिक प्रबल होती जा रही है। चारों ओरसे जब मेरे कामोंका विरोध हो रहा है, तब मैं अधिक दृढ़ होता जा रहा हूं। मेरे साथ मेरा अीश्वर है

और वह मुझ कितनी सहायता दे रहा है यह तो तुम दखो। आजकी यह रामधुन अिसकी साक्षी है।

पुरान जमानमें असा ही था। अब रोज यही धुन गवाना। कौन जान अिस कठिन समयमें अीश्वरन ही तुम्हें यह धुन सुझाओ हो। ठीक समय पर अिससे प्रार्थनामें नय प्राणका सचार हो गया। मा-बापके साथ भजन-कीर्तनमें जानसे कभी कभी असा लाभ होता है जो जीवनमें महत्वपूर्ण भाग अदा करता है। म भी पोरबन्दरमें रामजीके मदिरमें जाता था तब बडा आनन्द आता था। परन्तु आजकल तो सब कुछ मिटता जा रहा है। सुदामाजीके मन्दिरमें और वह भी ब्राह्मणन अल्लाहका नाम बहुत स्वाभाविकतासे लिया। आजका यह कलुषित वातावरण तो पिछले पाच सात वर्षोंमें ही बना है।

घूमकर आन पर बापूने दूधको फाडकर अुसका पानी लिया। नारियलका मसका लिया और काता। अखबार सुन। साढे नौ बज बापूजी सोय। मने काता नही था अिसलिअ कातकर दस बज सोअी।

बरसातमें भीग गअी थी अिसलिअ शामके समय फिर बुखार आ गया है। परन्तु अब सोना ही है अिसलिअ कोअी चिन्ताकी बात नहीं।

डाल्टा
२३-१-४७

आज बापूजी अक नीदमें सुबह हो जानकी बात कह रहे थ। जब सरदार जीवनसिंहजी जगान आय तभी जाग। रोजकी तरह प्रार्थना हुअी। गरम पानी पाते समय   के साथ अुनके कामोंके बारमें बातें की। और बादमें अुनके बच्चोंके बारेमें भी बातें की। बालकोंके बारेमें बोलते हुअ बच्चोंके प्रति माता पिताकी क्या जिम्मेदारी है और माता पिता आजकल किस ढगस अपना फज अदा करत ह अिसकी सुन्दर ठोस और बोधप्रद बातें बापून कही

नहीं समझता कि सत्य क्या चीज है असकी मरे पास बहुत शिकायतें आअी ह। मरे ख्यालसे बच्चे असे बनें तो अिसमें भी मैं मा बापका कसूर मानता हू। तुम्हारे अितने बालकोंमें स किसीमें भी तुम्हारा गुण क्या नहीं आया? अिसका कारण यह है कि तुमन बच्चोंकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया। मा-बाप लगातार बच्चे पैदा करते जाते ह परन्तु बच्चोंके सस्कार या शिक्षाकी परवाह नहीं करते। अपन विषय-सुखके लिअ भारतका

(देशका) कचूमर निकालना जिसे ही कहा जायगा। मेरा ही अुदाहरण लो। हरिलालके जन्मके समयका। वह पैदा हुआ तब मैंने अुस पर अुतना ध्यान नहीं दिया, जितना पिताकी हैसियतसे मुझे देना चाहिये था। अुसे छोटासा छोड़कर मैं विलायत चला गया। परिणाम क्या हुआ यह तो तुम जानते ही हो। अब अुसका ब्याह कर देनेमें ही अुसका भला है।   की शादी न की होती तो वह बिगड़ जाती।   अुन्होंने मेरी अेक बात कही कि 'अुसने मनुके बारेमें जो अीर्ष्याभरे वाक्य मुझे सुनाये हैं वे मैंने मनुसे कहे नहीं। न कहना चाहता हूं।'   यह बात सुनकर मैं अुद्विग्न हो गअी कि मैं तो किसीके बीचमें पड़ी ही नहीं फिर अैसा क्यों हुआ? अिस प्रकार विचारों ही विचारोंमें पतियालासे डाल्टा तक पहुंच गये।

रोज 'अेकला चलो रे' का यात्राके दौरानमें गाया जानेवाला भजन आज नहीं गाया। मैं प्रातःकालकी बापूजी और   की बातें सुनकर मनमें दुःखी थी, अिसलिअे यह भजन गाना भूल गअी। परन्तु यहां आने पर चुपचाप बापूजीके पैर धो रही थी तब अुन्होंने अुलाहना दिया "आज तुमने अपने मनका गाना मुक्त कंठसे यात्रामें नहीं गाया। जो कुछ मनमें हो वह कह दो। आज तुम कुछ परेशान हो क्या? क्या तबीयत ठीक नहीं है?" वगैरा बातें पूछीं। मैंने बापूजीसे कहा कि बादमें बताअूंगी।

मालिश वगैरा निबटाकर बापूजीको स्नान करा रही थी तब बापू फिर मुझसे कहने लगे, "यदि तुम शान्त हो गअी हो तो अब कहो।" मैंने सुबहकी बात कही और मेरे लिअे अिन लोगोंको अितना दुःख है वगैरा कहा।

बापू बोले "मनको अितना दुःखी क्या बनाती हो? मुझे भी कितने ही लोग गालियां देते हैं। क्या लोग मेरी अीर्ष्या नहीं करते होंगे? परन्तु मैं अिस तरह सब बातें ध्यानमें रखूं तो अपनेको संभालना भूल जाअूं और पागल बन जाअूं। अिसीलिअे मैंने   की कही हुअी बात तुमसे नहीं कही थी। आज भी तुम्हारे सामने कहनेकी अिच्छा नहीं थी। परन्तु तुम अपना काम कर रही थीं और   के साथ हो रही बातें खानगी नहीं थीं।   यह आदमी बहुत भला है वैरागी है। तुमने देख लिया कि मैंने तुम्हारे सामने अुसे बच्चोंके लिअे अितना अुलाहना दिया, परन्तु अुसने कोअी अुत्तर नहीं दिया। अिसीलिअे मैंने अुसे अपने पास रख छोड़ा है। हमें सदा गुणग्राही रहना चाहिये। तुम मेरे वानर गुरुको

जानती हो न? कोअी हमारी निन्दा करे तो हमें खुशीसे नाचना चाहिये। निन्दक बाबा वीर हमारा यह भजन तो तुम जानती हो।

म बापूजीकी बातोंसे अुल्लासमें आ गअी। मेरे मनमें बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि यदि हम असे छोटे मामलोंमें निराश हो जाय तो हमारा जीना व्यर्थ है।

बापूजीने अन्तमें कहा जीवनका आनन्द ही परीक्षा तथा निन्दापूर्ण और आलोचनामय वातावरणके बीच सांगोपांग जीनेमें है। और तभी पता चलता है कि अीश्वरके प्रति हमारी श्रद्धा कैसी है। तभी कहा जा सकता है कि हम अीश्वरके सच्चे भक्त हैं या केवल जबानसे बकवास करते हैं। तुम यह मीठा भजन गाती हो न?

जीवनने पथ जता ताप थाक लागशे
वधती विटंबणा सहता तुं थाकशे
सहता संकट अे बधाय
हो मानवी न लेजे विसामो

(जीवनके मार्ग पर चलते हुअे तुझे धूप लगेगी और थकावट मालूम होगी बढ़ती हुअी कठिनाअियां सहते सहते तू थक जायगा। लेकिन अिन सब संकटोंको सहन करते हुअे भी हे मानव तू कभी आराम न लेना, आगे ही बढ़ते जाना।)

यद्यपि सारा ही भजन बड़ा मधुर है परन्तु यह हिस्सा मेरी दृष्टिसे तुम्हारी अिस समयकी मनोव्यथा पर अधिक लागू होता है।

आज बापूका नहानेमें बहुत समय चला गया। मुझे अुपरान्त पाठ सिखानेमें वे तल्लीन हो गये थे। वाणीका प्रवाह सतत बह रहा था। मुझे पता था कि समय बहुत हो गया है फिर भी अुस प्रवाहको रोक देनेका मेरा जी नहीं हुआ। अनेके अेक अेक शब्दमें अेक अेक वाक्यमें ज्ञान भरा था।

अिस गांवमें कुछ अधिक सुविधायें हैं और गांव भी रमणीय है। परन्तु हर जगह बरसातका गीलापन बहुत है। गृहस्वामीने मुझे बड़े प्रेमसे खाना खिलाया। बापूजीका वगआका पाठ नियमानुसार चला। आजकी डाकमें सरदारसाहब जवाहरलालजी और स्वेत्र कुरेशीने पत्र आये थे।

घनश्यामदासजी बिडलाका भी पत्र था। सरदारदादाको बापूजीने छोटीसी चिट्ठी लिखी। बिडलाजीके आदमी सतरे भी दे गये। अुन्हीके साथ डाक भेजी।

बापूजीने दोपहरके भोजनमें तो राजके अनुसार ही चीजें लीं। शामको फाडे हुअे दूधका पानी और शहद लिया। आज लिखनेमें बापूजीका बहुत समय बीता। बहुतसे पत्र आये और अुनके अुत्तर दिये। सबको बापूजीने स्वयं ही पत्र लिखे। अिसके बाद वे सो गये। आजके तार १२० हुअे। बापूजीने तुनाअीकी पूनियां कातीं।

मुरियम
२४–१–'४७, शनिवार

प्रार्थना नित्यकी भांति हुअी। प्रार्थनाके बाद आसामके बारेमें बापूजीने जो प्रस्ताव तैयार किया था अुसके कागज ढूंढनेमें अुनका बहुत समय चला गया। निर्मलदाने भी तलाश किये, लेकिन नहीं मिले। शायद दूसरे कागजोंके साथ निर्मलदाकी फाअिलमें कलकत्ते चले गये हों। बादमें मेरी डायरी सुनी। अुस पर तुरन्त हस्ताक्षर किये। बापूजी बंगलाका पाठ कर रहे थे अुस बीच मैंने अुनका सूत दुबटा किया। लिखते लिखते पंद्रह मिनट सो लिये। मैंने पैर दबाये। अितनेमें रवाना होनेका समय हो गया। यहां आठ बजे पहुंचे। डाल्टास मुरियम तक अठाअी मीलका रास्ता है।

आज हम अेक मुसलमानकी बाड़ीमें ठहरे हैं। बड़ा प्रेमी कुटुम्ब है। गृहस्वामीका नाम हबीबुल्ला साहब पटवारी है। मुसलमान भाअी बापूजीसे बड़े प्रेमसे मिले। मौलवी साहबने जो चाहिये सो मदद दिलवाअी। मुझे अपने घरकी स्त्रियोंके पास (जनानखानेमें) ले गये। मेरा अुनसे और अुनका मुझसे परिचय कराया और बापूजीको समय मिले तब बहनोंके पास लानेकी विनती की। अिसके बाद मैं बापूजीकी मालिश स्नान वगैरा निबटाकर राजके काममें लगी। बापूजी नहाकर बाहर आये। तब मैं अुन्हें घरकी स्त्रियोंके पास ले गयी। सबने भक्तिपूर्वक अुन्हें सलाम किया। कुछ बहनें शरमा रही थीं। अुनसे बापूजीने कहा, 'मैं तो तुम्हारे बापके बराबर बूढ़ा आदमी हूं। मुझसे कोअी स्त्री पर्दा रखती ही नहीं। पर्दा रखना हो तो सच्चा पर्दा दिलमें रखना चाहिये। झूठा पर्दा छोड दो। बाहरसे पर्दा रखो और मनमें विकार भरे हों तो वह पाप है।'

हबीब साहबने अिसका सुन्दर अनुवाद करके बहनोंसे कहा : "आज हम पावन हो गये। हम पर हिंदुओंको मारनेका काला कलंक है अिसलिअ हम पापी हैं। हमारे आंगनमें ये खुदाके फरिश्ते आये हैं, अुनके दर्शन करके पावन होनेमें पर्दा कैसा?" यह जरा जोर देकर कहा अिसलिअ सब बहनें बाहर आ गअीं। कुछ बच्चोंने बापूजीसे संदेशके टुकड़े लिये।

बापूजीने बहनोंका सफाअी पर ध्यान आकर्षित किया : "तुम बाहरकी और हृदयकी सफाअी करो।" यह पहला ही अवसर है कि मुसलमान परिवारमें हम अिस प्रकार कुटुंबी जैसे बन सके। बापूजीका धीरज और तप सफल हुआ।

बापूजी मुसलमानोंको सलाम करते थे तो भी वे मानते थे कि गांधी हमारा दुश्मन है। परन्तु अुन लोगोंको बापूने प्रेम और धीरजसे जीत लिया।

दोपहरको बापूजीने रोजकी तरह ही खुराक ली। परन्तु हबीब साहब बापूजीके लिअ खास तौर पर रामफल लाये अिसलिअ खाकरा अेक ही खाया। खाकर बापूजी तुरन्त सो गये। मैंने पैरोंमें घी मला। नहाकर कपड़े धोये अितनेमें बापूजी जाग गये। अुन्हें नारियलका पानी दिया।

मैंने डेढ़ बजे तक भोजन नहीं किया था अिसलिअ बापूजी मुझ पर नाराज हुअे और अपने पास ही थाली लाकर खाने बैठनेको कहा। भूल हो गअी अिसलिअ अुनका हुक्म मानना ही पड़ा। खाना खाकर मिट्टीकी पट्टी रखी। मिट्टी लेते हुअे बापूने मुझसे पत्र लिखवाये। ठक्करबापा, शारदाबहन और बलसारियाको। बापू पत्र लिखवा रहे थे अितनेमें बाजा (मनोरंजनबाबू) और मजिस्ट्रेट आये।

शामको प्रार्थनासे पहले बापूने नारियलका दूध, बकरीके दूधका संदेश और अेक केला लिया।

प्रार्थना-सभा आज बहुत बड़ी थी और सब लोग आनन्दसे रामधुन गा रहे थे।

बापूजी बोले : "आज प्रार्थना-सभा बहुत बड़ी थी और हिंदू मुसलमान सब धुनमें शरीक थे। अुसमें कहीं भी गड़बड़ नहीं दिखाअी देती थी। अिस गांवका वातावरण अच्छा रखनेमें हबीब साहबका काफी हाथ मालूम होता है।"

प्रार्थनासे लौटने पर भी अेकके बाद अेक लोग दर्शन करने आते रहे। साढ़े नौ बजे तक यही हाल रहा। बापूजी बहुत थक गये थे। सवा दसके बाद सोये।

(बापू २५–१–'४७, हीरापुर, रवि)

हीरापुर,
२५–१–'४७

रातको बापूजीके पेटमें थोड़ी गड़बड़ थी। मुझे भी बुखारकी हरारत-सी मालूम होती थी। प्रार्थना नियमानुसार हुअी। प्रार्थनाके बाद गीताके आठवें अध्यायके श्लोकोंके अुच्चारणमें बापूजीने मेरी भूलें बताअीं।

भट्ट (कार्यकर्ता) भाअीसे बापूजीने कहा, 'मेरे साथ जो लोग स्वयंसेवकके तौर पर काम करते हैं अुनका भोजनालय अलग होना चाहिये। अुन्हें हाथसे खाना पकाना चाहिये। नहीं तो जिस गृहस्वामीके यहां वे ठहरेंगे, अुनके लिअे भार बन जायेंगे।" अुन्होंने यह बात स्वीकार की।

गरम पानी देनेके बाद बापूजीने मुझे जबरन् सुलाया। साढ़े छह बजे अुठी। अुठकर मैंने बापूजीके लिअे रस निकाला। परन्तु मो जानसे मेरा लिखने और सूत अुतारनेका सब काम रह गया। मुरियमसे यह गांव केवल डेढ़ मील पर होनेके कारण यहां हम जल्दी पहुंच गये। मुरियमसे रवाना होनेके पहले सभी बहनें बापूजीसे मिलीं। बापूजीने अुनसे कहा, 'हिन्दू स्त्रियोंको अपनी बहनोंकी तरह समझना। जब तक तुम घरकी और बाहरकी सफाअी नहीं रखने लगोगी तब तक हृदयकी स्वच्छता तुममें आ ही नहीं सकती। अिसलिअे आजसे ही अपने कपड़ोंकी, अपने बच्चोंकी घरकी और शरीरकी सफाअी करने लग जाना। अिससे तुम देखोगी कि तुम्हारे दिलोंकी सफाअी अपने-आप होने लगी है।'

यहां आकर बापूजीने थोड़ा लिखनेका काम किया। मालिश और स्नानके बाद खाखरा आदि भोजन किया। मुझे भी साथमें ही खा लेनेको कहा। परन्तु मैं नहाअी नहीं था अिसलिअे मैंने नहीं खाया। आज बापूजीने कहा 'काम या लिखनेमें तुम्हें समय नहीं खोना चाहिये। जैसे लाड़ली बा (कस्तूरबा) करती थी। तुम जिस तरह मक्खियां अुड़ाने बैठोगी तो तुम्हारा भी काम पूरा नहीं होगा और मेरा भी नहीं होगा।'

दोपहरको बापूजी अच्छी तरह लगभग घटभर सोये। तबीयत अच्छी नहीं थी। स्वामीजीने गीताके कुछ प्रश्न पूछे। अुत्तरमें अेक बात बापूजीने कही, औीश्वर-परायण मनुष्य काममें गलती करे तो वह भी सुधर जाती है। आज मैं अधिक खा गया। पेट आराम चाहता था। के करने जैसी हालत हो गअी। रोका जा सके तो रोकना था अिसलिअे मैं सो गया। लेकिन क्को रोका अिसमें थकावट बहुत मालूम हुअी। परन्तु रामनामकी अच्छी मदद रही। नतीजा यह हुआ कि मैं अच्छी तरह सो सका और सब काम भलीभांति हो गया।

आज बापूजीके बस्तेमें से मैंने बहुतसे बेकार कागज निकाल डाले। निर्मलदाने अिस काममें अच्छी सहायता दी।

शामको बापूजीने भोजनमें कुछ नहीं लिया। कलसे प्रार्थना प्रवचनके नोट लेनेको बापूजीने मुझे कहा ताकि अखबारोंमें भाषणकी जो रिपोर्ट जाती है अुसमें कुछ छूट न जाय। वैसे निर्मलदा तो लेते ही हैं। बापूजी हिन्दीमें बोलते हैं और वे अंग्रेजीमें या बंगालीमें लिखते हैं परन्तु मूल रिपोर्ट तो हिन्दीमें ही लिखी जा सकती है।

प्रार्थनासे आकर पौन घंटा घूमे। साढ़े नौ बजे बापूजी और मैं दोनों साथ ही सो गये। आज जल्दीसे जल्दी सोये।

बासा

२६–१–४७

आज बापूजी बहुत जल्दी अुठे। सवाअी बजे पाखाने जाना पड़ा बादमें नहीं सोये। मेरी डायरी देखी। दूसरा काम किया अितनेमें लगभग राजके अुजेरा समय हो गया। अिसलिअे दातुन-पानी किया।

बापूजीके साथ जो स्वयंसेवक आते हैं अुनका अलग भोजनालय रखनेकी बात कही। मैं और निर्मलदा जहां खाते हैं वहां ये लोग नहीं खा सकते। कल हीरापुरमें हम जब ठहरे थे वहांके गृहस्वामीने अिन सबको खाना खिलाया था। अिसलिअे अिस बातका खास तौर पर ध्यान रखनेके लिअे बापूजीने महेश बाबूको आग्रहपूर्वक कहा।

२६ जनवरीको स्वातन्त्र्य-दिवस होनेके कारण हीरापुर छोड़नेसे पहले बन्दे मातरम् गाया गया। फिर सात चालीसको हीरापुरसे निकले। यहांसे

लिअे रवाना होनेसे पहले कुछ मुसल्मान बहनोंसे मैं मिलने गअी तो अुन्होंने बापूजीसे मिलनेकी अिच्छा प्रगट की। अिसलिअे बापूजीको म अुन महिलाओंके पास ले गअी। परन्तु अेकके सिवा सब महिलायें अन्दर चली गअी। मुझे भी दु ख हुआ कि बहनोंके कहनेसे मैं बापूजीको यहां लाअी और वे सब अंदर चली गअी। मैंने बहुत समझाया परन्तु वे बाहर निकली ही नहीं। अिसलिअे अन्तमें बापूजी हर बहनकी खाटके पास जाकर हरअेकको सलाम करके आगे बढे। पद्रह सोलह वर्षकी लडकियोंके पास जाकर भी बापूजी सलाम कर आये! अिस पर म बहुत शर्मिन्दा हुअी। यह कोअी छोटी-मोटी बदनामीकी बात नहीं है। मने बहनोंसे कहा, अिसमें आपसे अधिक मुझे नीचा देखना पडा है। क्योंकि आपके कहनेसे मैं बापूजीको लाअी और यहां आकर मेरी अुम्रकी लडकियोंको बापू जसे महापुरुषको सलाम करना पडा! आप मेरी बहनें ह अिसलिअे आपसे ज्यादा मुझे शर्म आ रही है। हमारे घर पर अेक महापुरुष आये ह अैसा आप म मानें तो मुझे कोअी परवाह नहीं। अपनी दृष्टिसे जिन्हें म भगवान मानती हूं अुन्हें आप भगवान न मानें अिसे म समझ सकती हूं। परन्तु हमसे यह आदमी अुम्रमें बडा है अिस खयालसे तो आपको अिनका सत्कार करना चाहिये। बडी देरके बाद मेरी बात अुन्हें जची, लेकिन अुनमें से हरअेकके घर हमारे हो आनेके बाद ही। फिर सब महिलायें बाहर निकलीं।

अिस पर बापूजी कहने लगे, 'देखा तुमने? अेक अेक लडकीका मन जहरसे भरा है। स्त्रियोंमें भी कितना जहर फल गया है? अिस जहरको मिटानेमें तुम जितनी अुपयोगी हो सको अुतनी होनेका प्रयत्न तुम करना। तुम्हारे शुद्ध हृदयका प्रतिबिम्ब अिन लोगों पर पडे बिना नहीं रहेगा। अिसलिअे यह समझ लो कि अिस काममें तुम जितनी अुत्तीर्ण होगी अुतना मुझे लाभ होगा। तुम और म दो ही व्यक्ति अिस महायज्ञमें हैं। अिसलिअे यह समझ लो कि तुम्हें मेरा कोअी काम छोडकर भी यह काम पहले करना है। तुमने देखा कि आज पहले बहनें नहीं आअीं अुसमें पुरुषोंकी सिखावट थी? परसों हबीब साहबके यहां जो दृश्य देखा अुससे यह अुल्टा ही था।'

यहां हम ८–१० पर पहुंचे। आजकी यात्रा सबसे छोटी थी। बापूजीको लगा मानो कुछ चले ही नहीं। आकर तुरन्त ही अुन्होंने डाक लिखी। रशीद अहमद, कुंजबिहारीबाबू, प्रकाशम्, जवाहरलालजी मदालसा बहन डा० जाकीर और रविशंकर शुक्लको पत्र लिखनेके बाद मालिश हुअी। मालिश

शुरू करनेसे पहले अे० पी० आअी० के अेक प्रतिनिधि डालेनभाअीने बापूजीसे पूछा कि आज स्वातंत्र्य दिवस होनेके कारण कोअी खास कार्यक्रम रखा जाय या नहीं। बापूजीने कहा, 'मैं तो यह यज्ञ आरंभ करके बैठा हूं। मेरे लिअे यही स्वातंत्र्य दिवस है। परन्तु गांवके लोगोंमें अुत्साह पैदा करनेके लिअे तुम लोग (प्रेस प्रतिनिधि और दूसरे) अुत्सव मना सकते हो।'

अिस कारण यहां सरदार निरंजनसिंह गिलके हाथों ध्वज-वन्दन हुआ। बापूजी और मैं अुसमें शरीक होकर साढ़े मालिशके लिअे धूपमें रखाये हुअे तम्बूमें गये। सामूहिक भोजनका कार्यक्रम रखा गया था। बादमें समाचार आये कि यदि मुसलमान लोग खाने आयेंगे तो थोड़े लोग यहां आयेंगे, क्योंकि अुन्हें डर है कि अैसा करनेसे संभवतः अुन्हें जबरन् मुसलमान बनाया जायगा। अिसलिअे बापूजीने कहा, 'जो लोग डरे हुअे हैं वे सहभोजमें भाग न लें।' आज अिसी मुहल्लेमें रखनेको कहा। मुझे भी अुन्होंने शामको भोजमें जानेको कहा। बापूजीने आज अुपवास किया है। अिसलिअे स्नानके बाद गरम पानी और शहद लिया। शामको अुपवास छूटेगा। खूब काता। मिट्टी लेते हुअे पत्र लिखवाये — कुल्ली कातनवाले मणिलालभाअीको, गोसलजीको, धीरुभाअीको डा० भागवतको और परमानन्दभाअीको।

बापूजीने स्वातंत्र्य दिवसके बारेमें दुःखी हृदयसे कहा, 'आज २६ जनवरी है, स्वाधीनता दिवस है। जबसे कांग्रेसका जन्म हुआ तबसे भारतने अेक नया जन्म लिया है। सब हिन्दुस्तानी यह जानते नहीं थे परन्तु धीरे धीरे कांग्रेसकी वृद्धि हुअी और कांग्रेसने गांव-गांवमें आन्दोलन करके लोगोंको यह भान कराया कि आजादी क्या चीज है। अुस जमानेमें अेक भी गांवमें कोअी जानता नहीं था कि हिन्दू-मुसलमान-वैमनस्य चीज क्या है। परन्तु आज दोनोंमें अतिशय वैमनस्य फैल गया है। आज दोनोंके दो दिल हो गये हैं, यह दुःखकी बात है। यदि अैसा कलुषित वातावरण न होता तो मैं यहां तिरंगा झंडा फहराता। मुझसे कुछ भाअियोंने पूछा था। मैंने जान-बूझकर अुन्हें मना कर दिया। परन्तु यदि किसी अंग्रेज अफसरने मुझसे कहा होता कि यहां तिरंगा झंडा नहीं फहरा सकते तो मैं जरूर वहीं झंडा फहराता। अिसके लिअे मेरी जान भी देनी पड़ती तो मैं दे देता। परन्तु आज मैं किससे कहूं? मान लीजिये कि मैं यह झंडा फहराअूं और मुसलमान भाअी अुसे सहन भी कर लें। परन्तु मनमें वे यही

मानेंगे कि यह आफ्त कहांसे आ गअी। असा मैं नहीं करना चाहता। परन्तु मेरे मनमें जो भरा है वह तो कहूंगा ही। जब झंडेकी बात पहले-महल अुठी तब मेरे मनमें विचार आया था कि अेक ही रंग रखेंगे तो अन्याय होगा। हिन्दुस्तानमें तो अनेक जातियां हैं। हां अेक दिन असा जरूर था जब हिन्दू मुसल्मान, पारसी सभी भारतीय जातियां मानती थीं कि यही हमारा झंडा है। और अिसी झंडेके लिअे लोग मरे भी हैं। आज तो कितने ही झंडे हो गये हैं। परन्तु तिरंगा झंडा तो होना ही चाहिये। जैसे यूनियन जेक है। किसी समय असा जमाना था परन्तु अब नहीं रहा। आज मैं किससे कहूं? अथवा किसके साथ लडूं? हम सब भारतीय हैं और भाअी भाअी हैं। स्वाधीनतामें आपसमें अेक-दूसरेके मनमें बरका जहर फैल जाय तो वह स्वाधीनता किस कामकी? परन्तु आज तो वह सब हमारे लिअे आकाश-कुसुम जैसी बात हो गअी है। हमें असा लगना चाहिये कि जब तक आजादी न मिल जाय तब तक हम चैनसे नहीं बैठेंगे। आज हम भाअी भाअी आपसमें लड़ रहे हैं। आजादीसे पहले पाकिस्तान कैसा? क्या अंग्रेज पाकिस्तान देंगे? कौन जानता है आजादी कैसी होगी? अंग्रेज तो यहांसे अवश्य जायेंगे। परन्तु अमरीका और रूस मौजूद हैं। अगर हम सावधान नहीं रहेंगे तो मर जायेंगे। अभी अभी 'जन-गण-मन' गाया गया। कितना सुन्दर गीत है? हिन्दुस्तानमें अभी असी चीजें मौजूद हैं। परन्तु अिसे हम हृदयसे गायें तो सब अेक हो जायें। असा नहीं करेंगे तो हम मूर्ख कहलायेंगे। यदि आप सबका हृदय स्वीकार करे कि यह अनुभवी बूढ़ा जो कह रहा है वह सही है, तो आजसे आप मेरे कहे मुताबिक चलनेकी कोशिश कीजिये।

आज मैंने झंडा नहीं फहराया। परन्तु मेरे साथ जो अखबारोंके प्रतिनिधि घूम रहे हैं अुन्होंने फहराया। बंगालके महापुरुष नेताजीने अिसी स्वाधीनताके लिअे अपनी जान कुरबान की थी। यदि अुनके लिअे हम अितना भी 'यत्न' न करें तो किसके लिअे करेंगे?"

आज बापूजीने घूमनेके बाद दूध और खजूर लिये। मैं अपना कामकाज निबटाकर प्रेसवालोंके निमंत्रण पर वहां भोजन करने गअी। खिचड़ी और शाक बनाया गया था। खानेके लिअे जानेमें मुझे आधा घंटा देर हो गअी अिसलिअे सब मेरी प्रतीक्षामें बैठे थे। साढ़े आठ बजे खाकर आअी तब बापूजी अखबार पढ़ रहे थे। साढ़े नौके बाद सोये।

बापूजीको रातमें अेक दो बार अुठना पड़ता है। मैं रोज सोचती कि अुस समय अुठ जाअूंगी और तसला पानी वगैरा दे दूंगी। परन्तु बापूजी अितने धीरेसे अुठते हैं कि मुझे पता ही नहीं चलता। अुलटे ठंडमें सिकुड़कर पड़ी रहती हूं तो मुझे अच्छी तरह ओढ़ा देते हैं। अिसलिअे सोनेसे पहले मैंने बापूजीसे कहा, 'आपकी सेवा करनेके बजाय मैं रातको आपसे सेवा कराती हूं। आजसे मुझे जरूर अुठा दिया करें।'

वे बोले: "रातकी मेरी सेवाकी बात करती हो परन्तु दिनमें मैं तुमसे मजा कराता हूं। तुम मुर्देकी भांति गहरी नींदमें सोओी रहती हो। तुम्हें सुन्दर निर्दोष निद्रा बहुत अच्छी लगती है। यह निद्रा अिस बातका विश्वास कराती है कि तुम कितनी निर्दोष हो। मनुष्यका जैसा मानसिक वातावरण होता है वैसा ही परिणाम दिखाओी देता है। भले मनुष्य बोले नहीं परन्तु निद्रा आहार व्यवहार आदि सबसे परीक्षा हो जाती है कि वह किस कोटिका आदमी होगा।"

बापूजीके पैर दबाकर सिरमें तेल मलकर और प्रणाम करके मच्छर दानी बन्द की। अिस वक्त पौने ग्यारह बज गये हैं। मैंने अपनी डायरी भी पूरी कर ली। दातुनकी कूची बनाना बाकी है सो बनाकर सोने जाअूंगी।

पल्ला
२०–१–'४७ सोमवार

आज ठंड अितनी अधिक थी कि अुठनेका मेरा जी ही नहीं होता था। बापूजीके पैर बहुत ठंडे हो गये थे। बहुत देर तक दबाये। प्रार्थना आदि नित्यक्रम रोजके अनुसार चला। अब शामकी प्रार्थनाके समय अपनी डायरी साथ ले जाती हूं। बंगला भाषान्तर होता है अुस बीच मैं लिख लेती हूं। बापूजी सुबह पानी पीते समय रोज सुन लेते हैं। देखकर हस्ताक्षर कर देते हैं।

आज बापूजीने बंगला बारहखड़ी पूरी की। अुसे लिखनेमें पूरा आध घंटा लगा। फिर कुछ पत्र लिखे। सात बजे थोड़ी देर साथ। ७–४० पर हम बासासे चले और ८–१० पर यहां पहुंचे। अेक ही मील चलना था। हमारा पड़ाव यहां अेक जुलाहेके घर है। बापूजीका मौन है। जुलाहा परिवार बड़ा प्रेमी है। धूप निकलनेके बाद बापूजीको मालिश की। स्नान करके भी वे बाहर धूपमें ही रहे।

आज दोपहरके भोजनमें बापूजीने पाच काजू पाच बादाम, मुरमुरे और साग लिया। राजेन्द्रबाबूकी आत्मकथाकी पुस्तक आओी है। अुसे पढनेमें बापूजीने बहुत समय लगा दिया। आज सोमवार है अिसलिअे मुझे तो छुट्टी जसा ही लगता है। अपना अतिरिक्त काम आज मने पूरा कर लिया। बापूजीकी चादरें और सतरजी बडी मैलो हा गओी थी। आज सब धा डालीं। लगभग चालीससे अधिक कपडे धोये। अितनेमें तीन बज गये। बादमें कल्के लिअे खाखरे बना लिये।

दोपहरको दो बजे बापूजीने नारियलका पानी लिया। शामको प्रार्थनाके बाद यहाकी यूनियनके पुराने अध्यक्षके घर गये। वह मुसल्मान परिवार था। वहा बापूजीने नारियलका पानी लिया। बहनें भी मिलीं। अेक बहन आठवी तक पढी हुअी थी। बापूजीने बहनोंसे खास तौर पर शिक्षा प्राप्त करने अर्थात् लिखना-पढना सीखनेका कहा और कातने पर जोर देते हुअे कहा कातनेसे सौमें साठ रुपयेका कपडा बचता है। और कपासका तो यह देश है ही। फिर आजकल कपडेकी अितनी असह्य महगाअी है। हमारे जैसे देशमें कपडे पर अकुश ही किसलिअे हो? बहनें विचार कर तो अुन्हें जरूर लगेगा कि वे अपना कितना समय फिजूल खो देती है। छोटी छोटी लडकिया भी कात सकती है। आप जो पर्दा रखती है अुसे मनमें रखिये। पर्देका अर्थ है शरम मर्यादा और सभ्यता। परन्तु बाहर दिखानेको पर्दा रखें और मन मला हो तो पर्दा किस कामका?

आज हम जिस जुलाहेके घर ठहरे है अुस पर बापूजी बहुत ही खुश है। अुसका अुल्लेख करके बोले, 'मुझे बडा आनन्द होता है कि आज मेरा मुकाम अेक जुलाहेके घर पर है। मुझे सब बडे प्रेमसे रखते है। प्रेमके बिना महल कदखाना जसा लगता है, जब कि प्रेमपूर्ण झोपडी महलसे भी अधिक अच्छी लगती है। सच बात तो यह है कि मैं बगालकी झोपडिया पर मुग्ध हू। अिनमें जो हवा और रोशनी मिलती है वह महलोंमें कहासे मिल सकती है? परन्तु दुःखकी बात यह है कि असा सादा जीवन होने और कुदरतकी मेहरबानीके बावजूद यहाके हिन्दू और मुसल्मान अेक-दूसरेके साथ मुहब्बतसे नहा रहते। क्या धर्म भिन्न होनेसे हम अिन्सानियत खो देंगे? परन्तु मुझे आशा है कि यह वैमनस्य हम जल्दी भूल जायगे और अपनी जिम्मेदारीको समझेंगे। जहा दंगे हुअे है वहा अभी भी

बाजार बन्द है। लोग अेक-दूसरेको अविश्वासकी दृष्टिसे देखते हैं। अिसमें नुकसान हमारा ही है। किसीको फायदा नहीं होगा। अेक तरफ अन्न न पकनेके कारण अकाल पड़ा हुआ है, तो दूसरी तरफ अज्ञान और जड़ताके कारण हम अपनी ही हानि कर रहे हैं। अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ा मार रहे हैं।

हमारे सामने कितने ही असे सवाल खड़े हैं, जिनके लिअे सरकारको जरा भी तकलीफ देनेकी आवश्यकता नहीं। हम खुद अुन सवालोंको हल कर सकते हैं। अुदाहरणके लिअे स्वास्थ्य, स्वच्छता, फल-फूलोंके छोटे छोटे पौधे अुगाना, पक्के पाखाने बनाना और नियमपूर्वक खाद तैयार करना अित्यादि अनेक काम हमारे सामने हैं। यदि हम अपने दिमागको अिन कामोंमें लगा दें तो सबको कितना लाभ हो? किसीको अेक पलकी भी फुरसत मिले तो मुझसे कहना। परन्तु यह तभी होगा जब हमारी बुद्धि खुले। प्रभुसे मैं निरंतर यह प्रार्थना करता हूं कि जैसा अिस लड़कीने सबको सन्मति दे भगवान गाया वैसे वह हमारी बुद्धिको खोले और हमें अच्छे काम करनेकी शक्ति दे।

यह आजकी प्रार्थना-सभाका प्रवचन है। निर्मलदा अिसका बंगला अनुवाद कर रहे थे, अुस बीच बापूने अपनी डायरी लिखी। मैंने अपनी लिखी।

बापूजी शामको बहुत थक गये थे। प्रार्थनाके बाद घूमकर लौटने पर मैंने आज अुनके पैर धोये। आज बहुत ठंड है। बापूजीने स्टीम लिया हुआ अेक सेब और दूध लिया। ओढ़कर अुन्होंने थोड़ासा कातां। कातकर अखबार सुने। शैलेनभाओी सुना रहे थे। बापूजी बहुत ठंडे हो गये थे अिसलिअे मैंने अुनका शरीर दबाया। सवा नौ बजके बाद बिस्तर किया। बापूजीने हाथ-मुंह धोकर गरम पानी पिया और लेट गये। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और अुनके पैर दबाकर मैं भी पौने दस बजे सोयी। आजके जैसी ठंड कभी अनुभव नहीं की।

रातमें भी बापूजीको बड़ी ठंड लग रही थी, अिसलिअे अुन्होंने मुझे जगाया। मैंने अुन्हें और ओढ़ाया और खूब दबाकर अुनका शरीर गरम किया।

पाचगाव,
२८–१–४७

सदाकी भाति पल्लामें प्रार्थना हुअी। आज निर्मल्दाने बहुत मीठे स्वरमें भजन गाया।

कल रातको बापूजीने स्त्रियोंके कुछ सवालोंकी छानबीन की थी। अुनके जो थोड़ेसे सवाल आये अुनमें अेक सवाल यह था कि यदि गुडे स्त्रिया पर हमला कर तो व क्या कर? भाग जाय या सामना करनेके लिअे हथियार तैयार रखें?

बापूजीने कहा, बचावके लिअे हथियार रखनेकी अर्थात् हिंसा करनेकी तैयारी की ही नही जा सकती। अन्दर अहिंसक साहस बढानेकी तैयारी करनी चाहिये। जो मनुष्य अहिंसक है अुसके जीवनमें असे सकटका अवसर आता ही नही। वह शाति और गौरवके साथ हसते हसते मृत्युका आलिंगन करनेको तैयार रहता है। क्योंकि सच्ची सहायता हथियारोंकी नही, परन्तु अीश्वरकी ही है।

ससारके पास आज आदर्श अहिंसासे पैदा होनेवाला साहस नही है अिसीलिअे वह अणुबम जैसे शस्त्रोंसे सुसज्जित है। परन्तु लोगोंको स्वाभाविक रूपमें किसी पर आधार रखे बगर स्वतत्रतासे रहना सीखना पड़ेगा। किसीके वश हो जानेकी अपेक्षा स्त्रियाको प्राणत्याग करनेकी हिम्मत अपने भीतर पैदा करनी चाहिये। तब अुनमें अतरकी पवित्रता अितनी बढ जायगी कि गुडोंके हथियार अपने-आप नीचे गिर पड़ेंगे। मुझसे अगर अपने प्राण दे देने और हमला करनेवालेकी जान लेनेके बीच चुनाव करनेको कहा जाय तो मैं कहूंगा कि हसते-हसते प्राण देनेमें ही सच्ची बहादुरी है।'

प्रार्थनाके बाद बापूने मुझसे कुछ पत्र लिखवाये। अुनमें अपराह्न बातका अुल्लेख किया। पत्र लिखाते लिखाते बापूजी सो गये। अेक महिलाने बापूजीको पेंसिलसे पत्र लिखा था। अुसका अुल्लेख करके बापूजीने लिखा "अब तुम हमेशा स्याहीसे ही लिखना। पेंसिलसे लिखना पाप है आलस्य है हिंसा है।'

रोजकी तरह हम साढ़े सात बजे पल्लासे यहाके लिअे रवाना हुअे। रास्तेमें रामकुमार द, मुहम्मद रजा और मुफलिस रहम अिन तीन जनोंके

घर गये। अिसलिअे यहां नौ बजे पहुंचे। मुफस्सिल रहमतके यहां रात्रिभोजन लिया। म स्त्रियोंने पास गअी, तो सब स्त्रियां अन्दर चली गअीं और अन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया। आज यह अक नया ही अनुभव हुआ। थोडी देरमें अेक अधेड अुम्रकी स्त्री मेरे पास आअी। अुसने बडी भस्मनमाट्तसे बातें कीं। पूछा कि मेरा और बापूजीका क्या रिश्ता है। अितनेमें दूसरी स्त्रियां भी बाहर आ गअीं। अेक बहन खाना बना रही थी। अुसने मुझे मछलीका शाक और रोटी खानेका बहुत आग्रह किया। मैं वहां मछली में खाती नहीं, और रोटी खानेकी अिस समय मुझे आदत नहीं। अिससे अधेड अुम्रवाली स्त्री कहने लगी "तुम बहाना बनाती हो। तुम कहती हो कि गांधीजी हिन्दू-मुसलमान-अेकता करनेके लिअे निकले हैं। परन्तु हिन्दू अपने-आपको अूंचा मानते हैं और हमें नीचा समझते हैं हमसे भ्रष्ट होते हैं। तुम भी तो हिन्दू ही हो न?"

मैंने कहा "मुझे खानेमें कोअी अेतराज नहीं है। आपके मनको संतोष देनेके लिअे मैं रोटी मुंहमें डालनेको तैयार हूं परन्तु अिस तवे या हाथको भी मछलीका शाक लगा हुआ होगा तो मैं नहीं खाअूंगी।"

शुद्ध रोटी बनाअी गअी। अुसमें से मैंने अेक टुकडा तोडकर खा लिया। अिन बहनोंने मेरी परीक्षा की। कहने लगी "तुममें हिन्दू-मुस्लिमका भेद नहीं है।"

मैंने रास्तेमें यह बात बापूजीसे कही। बापूजी कहने लगे "तुमने थोडीसी रोटी ले ली यह अच्छा किया। परन्तु तुमने देख लिया न कि मेरे बारेमें भी बहनोंमें कितनी शंका है?"

मुहम्मद रजाके यहांसे सवेरे आये। यहां आने पर बापूजीके पैर धोकर सुरत मालिश की। स्नानके बाद खानेमें दो खाखरे शाक दो काजू दूध और गृहस्वामीको खुश करनेके लिअे थोडा नारियलका संदेश खाया। खाते समय बापूजीने अधूरे रह गये पत्र लिखवाये। बादमें आराम किया। सोकर अुठने पर दो नारियलका पानी पिया। कातते समय फिर पत्र लिखवाने लगे। अितनेमें प्यारेलालजी और सुशीलाबहन आ गये। अिसलिअे पत्र अधूरे रहे।

शामकी प्रार्थना-सभामें आज बहनोंके साथ मेरी मुलाकात और रोटी खानेका अुल्लेख करके बापूजीने कहा "मेरी यात्रामें मुझे अेक हिन्दू और दो

मुसलमानोंके घर ले जाया गया। अिससे मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मैं तो भावका भूखा हूं। मुझे पहलेसे नहीं कहा गया था कि कितनी जगह जाना पड़ेगा, परन्तु रास्तेमें निमंत्रण देनेवाले भाअियोंमें मुहब्बत देखी अिसलिअे मैं वहां चला गया। तीनों जगह मुझे कुछ न कुछ खानेके लिअे कहा गया। परन्तु वह मेरा खानेका वक्त नहीं था। मैंने कहा, मुझे फल भेजेंगे तो मैं जरूर खाअूंगा। मेरे साथ मेरी पोती भी यात्रा करती है। वह बहनोंके पास गअी। बहनोंने प्रेमसे अुसका स्वागत किया और अेक बूढ़ी माअीने यह जानने पर कि वह लड़की मेरी पोती है अुसका आलिंगन किया। अेक बहनने मछलीका शाक और रोटी बनाअी थी। अुस बहनने मेरी पोतीसे शाक रोटी खानेका आग्रह किया। परन्तु लड़की बेचारी क्या करती? अुसने अिनकार किया और कहा कि अिस समय मेरी खानेकी आदत नहीं। तब बहनोंको संदेह हुआ कि छुआछूतकी दृष्टिसे यह लड़की कुछ नहीं खा रही है। अिस पर जरासी रोटी तोड़कर लड़कीने खाअी जिससे बहनें खुश हो गअीं। मुझमें या मेरे साथ यात्रा करनेवालोंमें जात-पांतका भेद नहीं है। हमें किसीके भी साथ बैठकर खानेमें जरा भी आपत्ति नहीं है। मैं अपने मुसलमान मित्रोंसे प्रार्थना करता हूं कि जो हिन्दू यह मानते हों कि मुसलमानोंके हाथका खानेसे अपवित्र हो जाते हैं अुनके प्रति आप अुदार दृष्टिसे देखें। मैं समझता हूं कि अुनका यह खयाल गलत है। परन्तु सच्चे प्रेमकी परीक्षा किसीके साथ खानेमें ही थोड़े होती है। समय पाकर यह वहम अवश्य दूर हो जायगा। अिस दिशामें बहुत काम सफलतापूर्वक हुआ भी है। परन्तु वहम जब तक पूरी तरह मिट न जाय तब तक जहां जहां आपको सच्चा प्रेम देखनेको मिले वहां अुसकी कद्र कीजिये। तभी आप सब अेक-दूसरेके अधिक निकट आ सकेंगे।

२६ जनवरीके प्रसंगका अुल्लेख करते हुअे बापूजीने कहा, "मेरे साथ अखबारवाले यात्रा करते हैं। अुन्होंने अेक समूह भोजन रखा था। मुसलमान भाअी तो अुस पंगतमें खाने नहीं आये थे। परन्तु जिसके यहां ये भाअी ठहरे थे अुसने हाथ जोड़कर कहा कि मुझसे आप अपने साथ खानेका आग्रह न करें। आप तो अेक दिन रहकर चले जायेंगे लेकिन मुझ पर आफत आ जायगी। आपके जानेके बाद मुझ पर दबाव पड़ेगा कि तू भ्रष्ट हो गया है अिसलिअे तू मुसलमान हो जा।

अिस आदमीका डर मुझ सच्चा लगा। और मने अखबारवालोंसे यह निया कि आप अिस बचारेकी झोपडीमें महमान न रखें। हिन्दू और मुसलमान अपनी अपनी कमजोरी मिटाकर अेक-दूसरेके नजदीक कब आयेंगे यह म नही जानता। परन्तु यह मकसद पूरा करनेके लिअे जरूरत पडने पर म अपनी जान देनेका भी तयार हू। अिसलिअे आप सब मेरे साथ अीश्वरसे प्राथना करे कि हे प्रभो! असा सुन्दर दिन जल्दी ही ला दे।"

मेरे छोटेसे प्रसग परसे आज बापूजीने अत्यन्त मधुर हृदयस्पर्शी प्रवचन किया।

प्राथनासे आकर बापूजीने आठ खजूर और आठ औंस दूध लिया।

रातको दस बजनेके बाद बापूजी सोये। तब तक अुन्होने प्यारेलालजीके साथ महत्त्वकी बातें कीं प्रवचन लिखा और दूसरे पत्र लिखे।

जयाग
२९-१-४७

बापूजीका प्राथना अित्यादिका कायक्रम नित्यके अनुसार चला। कुछ डाक देखी और बगला वणमाला लिखी। मुझ शब्द लिखवाये। बापूजी बगला शब्द स्वय सीखकर मुझ सिखाते ह और मजेकी बात तो यह है कि स्वय ककहरा लिख देते ह और मुझ अुस पर हाथ घुमानेको कहते ह। अुन्हें कोओ अक्षर या शब्द समझमें नही आता तो वे मुझसे पूछते ह और म अुनसे पूछती हू। दोनोमें से कोओ न समझ सके तो जाते ह निमलदाके पास। बापूजीने आज बारहखडीके अपने लिखे अक्षरो पर मेरा हाथ घुमवाया ताकि मेरे अक्षर सुधरे। यह देखकर निमलदा खूब हसे। कहने लगे "य शिक्षक और शिष्या खूब ह!" अिस प्रकार आजकल हमारी बगलाकी पढाओी चल रही है।

साढे सात बजे हमने पाचगाव छोडा। सवा आठ बजे हम यहा पहुचे। यहा रातभर जागकर गृहस्वामीने हमारी व्यवस्था बडे प्रेमसे की थी। जगलमें मगल अिसीका नाम है। रामजीने जब चौदह वष वनवास भोगा था तब वनमें रहनवाले भीलो या जगली मनुष्योंने ही नही पशु-पक्षियोंने भी कितने प्रेमसे अुनका स्वागत किया था जिसका वणन हम रामायणमें पढते ह। वैसा ही यह दूसरा प्रत्यक्ष दशन म कर रही हू। यहा हमारा मुकाम भी जगलमें रहनेवाले जुलाहे मोची हरिजन आदि लोगोंके यहीं रहता है। परन्तु वे हमें प्रेमसे नहला देते ह। अुनका सत्कार नभ्भकी दिल्लीमें रहनेवाले शहरियोंके

मलाबारसे कहीं बढ़कर है, असा कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। वहां पढ़े लिखे लोग रहते हैं जिन्हें बापूजीने जितनी तालीम दी है। वहां बापूजीका विस्तृत साहित्य पढ़नेवाला वर्ग भी है। लेकिन यहां केवल भक्तिमय प्रेमका राज्य है। स्त्रियां भी अपने पर आ पड़नेवाले जितने असह्य दुःखोंके बावजूद बापूजीके आने पर अुनका स्वागत करनेके लिअे मंगल शंख बजाती हैं, शकुन करती हैं, तिलक लगाकर आरती अुतारनेको दीपमाला जलाती हैं और मंगलनादसे आकाशको गुंजा देती हैं। सचमुच बापूजी जब दौरा करते हैं तब शहरोंका (बम्बअी, पूना, दिल्ली वगैराका) स्वागत मैंने अपनी आंखों देखा है। परन्तु यह स्वागत कुछ अनोखा ही लगता है। चारों ओरका वातावरण प्रकृतिकी शोभासे भरपूर है। नोआखालीके ये गांव बहुत ही रमणीय हैं। अुसमें भी ग्रामीण लोगोंका स्वागत। फिर क्या पूछना? अिसके सिवा ये मेरे पुरुष अकेले ही नंगे पैरों अैसी असह्य सरदीमें यात्रा कर रहे हैं। अिस पवित्र यात्रामें शरीक होनेका मुझे जो सौभाग्य मिला है अुसके आनंदकी क्या बात कहूं? आज मैं रामायणके अुस प्रसंगकी कल्पना अच्छी तरह कर सकती हूं जब लक्ष्मणजी रामचंद्रजीसे वनवासमें खुदको साथ रखनेकी प्रार्थना करने गये और रामचंद्रजीने बड़ी आनाकानीके बाद अुन्हें अपने साथ ले जाना स्वीकार कर लिया। तब अुन्हें कितना आनन्द हुआ होगा? भगवानने बापूजीकी अिस यात्रामें रहनेका मुझे कैसा सुन्दर अवसर दिया है! अुसकी दया वास्तवमें अपार है।

यहां आकर बापूजीके पांव धोये। डॉ० सुशीलाबहन आअी हैं। आज बापूजीकी मालिश अुन्होंने की। अिस बीच मैंने बापूजीके लिअे खाखरे और शाक बनाया। बापूजी नहाकर बाहर निकले कि तुरंत अुन्होंने भोजन कर लिया। वे बोले, 'मेरी सेवा तो बहुत होती है। फिर भी मैं बेचैन रहता हूं। काम बढ़ता जा रहा है और पूरा नहीं हो पाता। यह मुझे खटकता है।'

आज बापूने कुछ प्रश्नोंके अुत्तर दिये हैं। वह प्रश्नोत्तरी अिस प्रकार है।

प्रश्न — क्या आप चाहते हैं कि मुसलमान आपकी प्रार्थनामें आयें?

बापूजीने कहा — मेरी प्रार्थनामें सबको सम्मिलित होना ही चाहिये, असा मेरा जरा भी आग्रह नहीं है। परन्तु यदि मुसलमान भाअी प्रार्थनामें

बापूजी बहुत व्यथामें बोल रहे हैं यह मैं फौरन समझ गअी। तुमने यदि मुंह धोनेको भी गरम पानी देनेका विचार किया है तब तो यह कमी साहबी होगी? आज जहां लोगोंको रोटी पकानेको लकड़ी नहीं मिलती वहां तुम मेरे लिअे मुंह धोनेको गरम पानी करती हो यह तुम्हारे लिअे और मेरे लिअे आश्चर्यकी बात नहीं? नहानेके लिअे तो गरम पानीकी बात समझी जा सकती है। परन्तु मुंह-हाथ धोनेके लिअे भी तुमने गरम पानी किया यह मेरी समझमें नहीं आ सकता। अितनी सचेत हो जाओ कि तुम अभी तक कहां हो? बस मुझे अितना ही तुमसे कहना है।

हाथ धोनेके लिअे गरम पानी काममें लेनेमें भी बापूजीको गरीबोंके दुःखका कितना खयाल होता है यह अिससे देखा जा सकता है। जहां रोटी पकानेको भी लकड़ी नहीं मिलती वहां हाथ धोनेको गरम पानी किया जा सकता है? अिस हद तक बढ़ा हुआ नाजुकपन हम कब दूर करेंगे?' ये शब्द बोलते हुअे बापूजी अत्यन्त दुःखी हो गये थे यह मैं स्पष्ट देख सकी।

खाते समय यह बहुत ही वेदनाभरी घटना हो गअी। मुझे भी बहुत खटकी। बापूजीने अिसके भीतर छिपे हुअे सुन्दर पाठका विचार और मनन करनेकी सूचना की।

आमकी
३०-१-४७

सदाकी भांति प्रार्थना हुअी। बंगलाका पाठ करनेके बाद मेरी डायरी बापूजी देख गये।

बम्बअीसे दो बहनें खास तौर पर बापूजीको १२५० रुपये हाथोंहाथ देने आअी हैं। बापूजीने यह रुपया मुझे सौंपा और सतीशबाबूको देकर अुसकी रसीद लेनेकी सूचना की।

सात बजे बापूजीने रस लिया और दस मिनट आराम किया। साढ़े सात बजे हमने पांचगांव छोड़ा। पौने नौ बजे हम यहां पहुंचे। यहां आकर तुरन्त ही बापूजीने पंडितजीके नाम पत्र लिखा। सारा पत्र अंग्रेजीमें लिखा परन्तु सम्बोधन 'चि० जवाहरलाल' किया। सुन्दर लगता था। मालतीदीदी (मालती देवी चौधरी) भी आअी थीं। मालिश स्नानादिसे निबटकर बापूने दस बजे भोजन किया। भोजनमें शाक दो खाखरे दूध और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। आज

शामके लिअे दूध नहीं है। हां जाय सो सही। दोपहरको हॉरेस अेलेक्जेंडर आये। शामको कातते कातते बापूने अेक घंटा अुनके साथ बातें कीं। बादमें जामन साहब आये। अुन्होंने २५० रुपयेका अेक चापड़ा बनाया है, जिसे देखनेके लिअे वे हमें ले गये।

परन्तु बापूजी बोले "हमारी काठियावाडी भाषामें कहूं तो यह अेक पिंजरा ही है। हम आगे पहुंचे थे कि याद आया बापूजीका छोटा रूमाल खाना में भूल गअी हूं। अुसे लाने दौड़ती हुअी डेरे पर गअी और ले आअी। हमारा आजका मुकाम अेक कायस्थके घर है। अिस गांवमें ५४२ हिन्दू १९५४ मुसलमान २६ जुलाहे और ७५ दूसरी जातियोंके लोग हैं। पांच भंगियोंके घर हैं। जिन भाअीके घर हमारा मुकाम है, अुनका नाम यगदाबाबुमार दे है।

आज शामके लिअे दूध कहीं भी नहीं मिला। अन्तमें हारकर मैंने बापूजीसे यह बात कही। वे बोले "अिसमें क्या हुआ? नारियलका दूध बकरीके दूधका काम अच्छी तरह देगा। और बकरीके घीके बजाय हम नारियलका ताजा तेल खायेंगे।

मैंने नारियलका दूध आठ औंस बकरीके दूधकी तरह तैयार किया परन्तु यह दूध पचनेमें भारी पड़ा और बापूजीको दस्त होने लगे। शाम तक तो बहुत ही कमजोरी आ गअी। बापूजीको खूब पसीना छूटा। सिर पकड़ रखा। मैंने निर्मलदाको पुकारा। मुझे खयाल हुआ कि सुशीलाबहनको बुलवा लूं। कभी कुछ हो जाय तो मैं मूर्ख मानी जाअूंगी। (सुशीलाबहन बापूजीकी प्रार्थनासे पहले ही चली गअी थी। थोड़ासा फर्क पड़ा।)

मैं निर्मलदाको चिट्ठी देने गअी त्यों ही बापूजी जागे "मनुड़ा तुमने निर्मलबाबूको पुकारा यह मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगा। परन्तु तुम्हारी अुम्रको देखकर मैं तुम्हें क्षमा करता हूं। फिर भी अैसे समयमें कुछ न करके हृदयसे रामनाम लेनेकी तुमसे आशा रखता हूं। मैं तो मनमें रामनाम ले ही रहा था। तुमने निर्मलबाबूको बुलानेके बजाय मनमें रामनाम लेना शुरू कर दिया होता तो मुझे बहुत अच्छा लगता। अब तुम अिस बारेमें सुशीलासे न कहना, न चिट्ठी लिखकर अुसे बुलाना। मेरा सच्चा डॉक्टर राम ही है। अुसे मुझसे काम लेनेकी गरज होगी तब तक वह जिलायेगा, नहीं तो अुठा लेगा।

जीश्वरने मेरी कैसी लाज रखी? खयाल हुआ कि श्रद्धालु मनुष्यकी ओीश्वर वास्तवमें मदद करता है। मेरी यह कितनी बडी कसौटी थी? सुशीलाको न बुलाना ये शब्द बापूजीके मुहसे निकले और मैंने निमलाम अपनी चिट्ठी छीन ली।

यह घटना बापूजीके सामने ही हो रही थी। अिसलिअे वे लेटे-लेटे ही सब बात समझ गये। मुझसे कहने लगे क्यो तुमने लिख भी डाला था न? मैंने मंजूर किया।

आज तुम्हें और मुझे जीश्वरने बचा लिया। यह चिट्ठी लेकर सुशीला तो दौड़ती हुअी मेरे पास आती परन्तु मुझे वह जरा भी अच्छा न लगता। मैं तुम पर और अपने पर चिन्ता। आज तुम्हारी और मेरी परीक्षा हुअी। यदि रामनामका मंत्र मेरे हृदयमें गहरा अुतर जायगा तो मैं कभी बीमार होकर नही मरूंगा। यह नियम हर आदमीके लिअे है केवल मेरे लिअे नहीं। मनुष्य जो भूल करता है अुसका फल अुसे भोगना ही पडता है। आखिरी सांस तक रामनामका स्मरण हृदयगत रहना चाहिये। तोतेकी तरह नही बल्कि हृदयसे रटना चाहिये। रामायणमें कथा है कि जब सीताजीने हनुमानजीको मोतियोंकी माला दी तब अुन्होंने अुसे तोड डाला। अुन्हें देखना था कि अुसमें राम नाम है या नही। अुनकी दृष्टिमें मोतीका कोअी मूल्य नही था। रामनाममें वे अितने तन्मय थे। यह घटना सच्ची होगी या नहीं अिस झंझटमें हम क्या पडें? हनुमानजी जैसा पहाडी शरीर शायद हम न बना सकें। परन्तु आत्मा तो पहाडी बना सकते हैं। मैंने जो अुदाहरण दिया असे सिद्ध कर सकता है। मनुष्य चाहे तो अभी सिद्ध करनेका प्रयत्न ही करे तो भी काफी है। सिद्ध न कर सके लेकिन मनुष्य प्रयत्न करे और फल जीश्वरको सौंप दे। गीतामाताने कहा है कि और सबको प्रयत्न करना चाहिये। अब तुम समझी होगी कि तुम्हारी मेरी या किसीकी भी बीमारीके बारेमें मेरी क्या दृष्टि है? जिस प्रकार तुम्हें मुझ

आज के साथ ब्रह्मचर्यकी बातें करते समय मैंने जो कहा था वह तुम्हारे समझने जैसा है। मैंने कहा कि जो पुरुष मानते हैं कि स्त्रियोंको छूनेमें भी पाप है और अिसलिअे अुन्हें नही छूते क्योंकि स्त्रीके स्पर्शमात्रसे विकार पैदा होनेका अुन्हें डर रहता है असे आदमी ब्रह्मचारी हों तो भी मैं अुन्हें ब्रह्मचारी नही मानता। दूसरे यह मत मानो कि मनुष्य बूढा हो गया है

अिसलिअे निर्विकार हो गया है। वह निर्विकार अिसलिअे है कि अुसकी शक्ति बूढी हो गअी है न कि ब्रह्मचर्यके पालनसे। और मन तो आखिरी दम तक भी बूढा नहीं होता। मेरे कुछ मित्रोंमें भी अिस विषयमें मतभेद जरूर है। परन्तु मैं तो अनेक प्रयोगों और अनुभवोंके बाद यह दावा करता हूं कि अुन सबमें सच्चा ब्रह्मचारी मैं हूं। जो निर्विकार हो अुसे रोग क्या हो? वह रोगसे पीडित रह ही नहीं सकता। जिन्होंने मेरे साथ अिस विषयमें बहस की है वे बीमार ही रहते हैं। जिसके लिअे सभी स्त्रियां मां, बहन या बेटी हैं, वह अुनके स्पर्शसे विकारी क्या बने? भले सामने अप्सरा जैसी स्त्रियां क्यों न हों! फिर भी मैं तो कहता हूं कि मेरी मृत्यु ही यह साबित करेगी कि मेरा यह दावा सच्चा है या झूठा। मनुष्यकी मृत्युसे पहले यह नहीं कहा जा सकता क्योंकि क्षणभरमें मनुष्य बदल भी सकता है। मन अितना चंचल होता है। अिसीलिअे मैंने अुनसे कहा कि यदि मैं रोगसे मरूं, तो यह मान लेना कि मैं अिस पृथ्वी पर दंभी और रावण जैसा राक्षस था। परन्तु यदि रामनाम रटते रटते जाअूं तो ही मुझे सच्चा ब्रह्मचारी सच्चा महात्मा मानना।

बापूजी रामनामकी अपनी असीम श्रद्धा पर धाराप्रवाह बोलते जा रहे थे। अेक अेक शब्द हृदयकी गहराअीसे निकल रहा था।

मैं तो अिस घटनासे यही सोच रही थी कि भगवानने मुझे कैसे समय पर बचा लिया। सचमुच सेवा करनेसे केवल अुनके पांव दबाने या भोजन तैयार करने जैसे कामोंसे सच्चे बापूजीको नहीं पहचाना जा सकता। असे अवसरों पर ही अुनके विराट स्वरूपका दर्शन होता है। और तभी खयाल होता है कि सच्चे बापू ये हैं। गीतामें जिस पुरुषोत्तमका वर्णन किया गया है वैसे ही साक्षात् पुरुषोत्तमके समीप रहनेका सौभाग्य अीश्वरने मुझे दिया यह अुसकी मुझ पर कितनी बडी दया है?

रातको बापूजीने अपने पत्रमें भी अेक आभार बहनको रामनामके बारेमें लिखा, 'रामबाण दवा तो संसारमें अेक ही है और वह रामनाम है। अिस नामको रटनेवाला जिन नियमोंका पालन करना चाहिये अुनका पालन करे। परन्तु यह रामबाण दवा हम सब कहां कर पाते हैं?'

रातको बापूजी अेकदम ताजे हो गये थे। घूम कर लौटनेके बाद हॉरेस अेलेक्ज़ेण्डरके साथ ही लगभग सारे समय अुनकी बातें हुअीं।

अुनके जानेके बाद बापूने प्रेस प्रतिनिधियोंके साथ फिर २५० रुपयवाले झापडेकी बात की। वह झापडा नहा परन्तु पिटारा है। अुसमें न हवा आ सकती है न धूप आ सकती है। नारियलके पत्तोंका झापडा बनायें तो अूपरका शय अुड जायगा और पच्चीस रुपयेमें काम पूरा हो जायगा। मुझ ठेका दनको तयार हो? म तो अिसमें स कमीशन भी कमा लूगा।' सब खिल खिलाकर हस पडे।

रातको दस बजे बापूजी बिस्तर पर लेटे। मने हमेशाकी तरह अुनके सिरमे तेल मला। पर दबाकर अब डायरी पूरी कर रही हू। थोडी दोपहरमें लिखी थी। अिस समय साढे दस हुअ ह।

रातको लेटे लेटे म विचार कर रही थी कि बापूजीने आश्रमके नियमोंमें ब्रह्मचर्यका जो व्रत रखा वह कितनी अुच्च कोटिका विचार करके रखा होगा। अुसके आध्यात्मिक भावका साक्षात्कार यहा हो रहा है। मरे जसी छोटी लडकीकी माता बनकर बापूजी भिन्न भिन्न प्रकारसे मरा निर्माण कर रहे ह। अिसीलिअ अुन्होंने मुझ ब्रह्मचर्य-व्रतकी बारीकी समझाओ।

नवग्राम
३१-१-४७

रोजकी तरह प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद नियमानुसार मेरी डायरीमें बापूजीने दस्तखत किये।

बिहारमें जो अुपद्रव और गडबडी चल रही है अुससे परिचित रहनके लिअ जिन भाअीको (नाशन-तत्रके) बापूजीने सब बातें समझनेके लिअ बुलवाया था व श्री जदुभाअी सहाय आये हैं। हुनरभाअी हिन्दी-अुर्दूकी डाक देखते ह। बापूजीने बिहारमें कमीशन नियुक्त करनेका सुझाव दिया। परन्तु को यह बात बहुत पसद हो असा नहीं लगता। मिट्टी लेते समय हॉरेस अेलेक्जेण्डर आये। अुनसे बापूजीकी आध्यात्मिक और वर्तमान हलचलों पर बहुत बातें हुअी।

दोपहरको बहनोंकी सभा हुअी। अुसमें अेक बहनने प्रश्न पूछा कि अुसका पति सन्यासी हो गया है अब वह क्या करे? बापूजीने कहा जिसका पति सन्यासी हो गया है अुसे शुद्ध जीवन बिताना चाहिये। वह अपनी रोटी खुद कमाये। परिग्रह न करे। सन्यासी कोअी भगवे कपडे पहननेसे ही ह

है असी बात नहीं। कुछ न सूझे तो चरखा चलाये। मने चरखेको काम धेनु कहा है। कातते समय रामनामका रटन करे। कदाचित यह स यास पतिके स यासमे मेरे खयालमें वढ जायगा। वह ग्राम-सफाओी और बच्चाकी सफाओी आदि भिन्न भिन्न सेवाके काममें अपनेको लगा दे। खाली दिमाग शतानका घर यह कहावत शायद बगलामें भी होगी। हम बेकार बठेंगे तो हजार अुत्पात सूझेंगे। अिसलिअे अेक मिनट भी खाली न बठना ही तुम्हारे लिअे सबसे सुन्दर माग है।

शामको बापूजीने कुछ नहीं खाया। शहदका पानी और अेक औंस गुड लिया।

आमिनपाड़ा,
१–२–'४७

रातकी तरह प्राथना। फिर बापूजीने पत्र लिखवाये और बगलाका पाठ किया। 'डायरी' शब्द लिखनेके बजाय 'रोजनामी' अथवा 'नित्यनोध' जसे शब्द लिखनेको कहा। कलकी डायरी सिलसिलेवार नहीं लिखी गओी थी। अिसलिअे बापूने कहा कि जो बात या घटना जिस समय हो अुसे अुसी क्रमसे लिखा जाय, तो किसी समय यह देखनेकी जरूरत पड़ने पर कि कौनसी बात कब कही गओी हमें तलाश न करना पड़े। अत अिसका ध्यान रखा जाय।

दूसरी बात यह कही कि यह डायरी चाहे जिसके हाथोंमें न पड़ जाय अिसकी खास तौर पर सावधानी रखनी चाहिये। हमारे पास कुछ खानगी तो है ही नहीं फिर भी चाहे जिसके हाथमें जानेसे अुसका दुरुपयोग हो सकता है। यह डायरी भविष्यमें तुम्हें बड़ी काम आयेगी। जय सुखलालको अच्छी लगेगी। तुम्हें मालूम है कि सुशीलाने आगाखा महलमें जो डायरी रखी थी वह मेरी दृष्टिसे अेक अतिहासिक और मूल्यवान डायरी हो गओी है। अिसीलिअे म अिस बात पर जोर देता हू और ध्यान देता हू। अत तुम अिसे सभाल कर रखो या जयसुखलालके पास भेज दो। प्यारेलालको बताओो तो वह बहुतसे अच्छे सुधार कर सकते ह। मेरे पास खूब गहराओीमें जानेका समय ही कहा है। मेरा विश्वास है कि प्यारेलाल विद्वान आदमी ह। वे मुझे अच्छी तरह समझते हैं। तुम अुनके पास डायरी पढ़ने भेजोगी तो कुछ खोओोगी नहीं बल्कि पाओोगी और अुन्हें मेरे कामकी कल्पना होगी।

परन्तु मन डायरीमें बहुत कुछ अुल्टा-सीधा लिखा हो और वे हँसी अुड़ायें तो? अिस विचारसे मन अिनकार कर दिया।

बापूजी बोले — किसीके मुँहकी तरफ हम क्या देखें? वे हँसी अुड़ायेंगे तो भी तुम सबक सीखोगी। कोअी यह कहेगा या वह कहेगा, अिसकी कल्पना किसलिअे की जाय? अीश्वरको जो करना होगा सो करेगा। हम अपना कर्तव्य-पालन करते रहें। यदि यह कल्पना करके कि अच्छा होगा या बुरा होगा हम पुरुषार्थ न करें, तो आगे नहीं बढ़ा जा सकता। परन्तु साहस बढ़ाकर जैसे हम हों वैसे ही दिखाअी दें। और असा करते हुअे कोअी हमें सुधारनेवाली बातें कहे, तो अुन्हें सुनकर हम अुनका स्वागत करें। बड़से बड़े मान जानेवाले मनुष्यको कभी कभी छोटे बालक भी असा सबक सिखा देते हैं कि अुसका सारा जीवन ही बदल जाता है। यह मैंने स्वयं अनुभव किया है। अिसलिअे जिससे जो सीखनेको मिले वह सीख लेनेकी वृत्ति हमें अपने भीतर पैदा करनी चाहिये।

हमने साढ़े सात बजे नवग्राम छोड़ा। सवा आठ बजे हम यहाँ पहुँचे।

भोजन करते समय प्यारेलालजी अपने गाँवसे आये। वे बापूजीके लिअे स्वयं खाखरे बनाकर लाये थे। अिसलिअे अुनके बनाये हुअे दो खाखरे, शाक, दूध और खाखरेके सन्देशका छोटासा टुकड़ा बापूजीने लिया। दो बजे नारियलका पानी और गायका दूध और आठ खजूर लिये।

हम जिनके यहाँ ठहरे हैं अुनका नाम कृष्णमोहन चटर्जी है।

आज प्रार्थना-सभामें बापूजीने अिस्लाम धर्मकी सुन्दर व्याख्या की। कलकी अपेक्षा आजकी प्रार्थनामें हिन्दू-मुसलमानोंकी संख्या बहुत ज्यादा थी और खूब शोरगुल था। बापूजीने शांति हो जानेके बाद प्रवचन शुरू किया।

अेक मौलवी साहबने कहा कि गांधीजीका अिस्लामके कानूनके बारेमें बोलनेका कोअी हक नहीं। अुन्होंने राम जैसे (मनुष्य) राजाके साथ खुदाका नाम जोड़नेका भी विरोध किया। अिस पर बापूजीने कहा — मेरे खयालसे धर्मके मामलेमें यह बिल्कुल संकुचित दृष्टि है। अिस्लाम धर्म, हिन्दू धर्म या पारसी धर्म कोअी पेटीमें बन्द करके रखनेकी वस्तु नहीं है। मनुष्यमात्रको असका अध्ययन करके अुसके धार्मिक और सिद्धान्त जो जीवनमें अुपयोगी

हो, स्वीकार या अस्वीकार करनेका पूरा अधिकार है। मने अिस्लाम धर्मका अध्ययन किया है अिसलिअे यह कहता हू।

बादमें डा० सुशीलाबहन जिस गाव (चांगेरगाव) में काम करती ह वहासे सुदर समाचार आये। अुन्होने अपनी दवादारू और सेवासे बहुतसे मुसल्मान भाअी-बहनोका अच्छा करके अुनका प्रेम सम्पादन किया है। अुह सेवाग्राम जाना है परन्तु वे लोग जाने नही देते। साथ ही जिन लोगोने दगेके समय लूटपाट की थी वे खुद सुशीलाबहनको लूटका माल केवल अुनके प्रेम और सेवाके कारण अपने-आप लौटा जाते ह। यह कितना सुन्दर हृदय-परिवर्तन कहा जायगा?

बापूजीने कहा, 'म तो सरकारको यह सलाह दूगा कि लूट करनेवालोको अदालतोमें घसीटना छोड दे। हा सच्चे दिलसे अुह समझाकर यदि जनता और सेनाके आदमी अिस दिशामें काम कर, तो वह शाति स्थायी शान्ति होगी।

जायदादके ट्रस्टियोके बारेमें अेक सवाल बापूजीसे पूछा गया था। अुस प्रश्नका अुत्तर देते हुअे बापूजीने कहा 'जो भी सम्पत्ति है वह सब आश्वरकी, खुदाकी है यह सवशक्तिमान अीश्वरसे ही मनुष्यको मिली है। आदमीके पास जो कुछ है वह अुसकी निजी सम्पत्ति नही परन्तु ससारकी सेवाके लिअे अुसे सौंपी गअी सम्पत्ति है। किसी भी व्यक्तिके पास यदि अुसकी अपनी जरूरतसे ज्यादा जायदाद हो तो वह भगवानकी दुखी और गरीब सतानकी सेवामें अुसका अुपयोग करनेके लिअे अुस जायदादका ट्रस्टी है। अीश्वर पर यदि श्रद्धा रखें तो वह सवशक्तिमान है। वह बाअी वस्तु सग्रह करता ही नही। *मनुष्यको चाहिये कि वह अपनी जरूरतके अनुसार राज लेकर कुछ भी सग्रह* न करे। यदि हम यह सत्य अपना ल तो मेरे खयालसे कानूनकी दृष्टिमें यह ट्रस्टीपन ही माना जायगा। फिर किसीको लूटने या चूसनेकी नौबत नही आयेगी।'

बापूजीका हर बार जसा गीताजीमें कहा है भिन्न भिन्न स्वरूपोमें दशन होता है। काअी भी मामला अुनके सामने रखें तो अुसमें से अटूट खजानेके रूपमें नअी नअी बातें जाननेको मिलती ह। कुबेरके भडार जसा है। अिस खजानेमें स जितना ले अुतना थोडा है। लेनेवालेमें लेनेकी शक्ति होनी चाहिये।

दशघरिया
२-२-४७

नित्यकी भाति प्राथना हुआ। बादमें बगगावा पाठ। अुसके बाद बापूजाने गरम पानी लिया। आज बापूजी प्यारेलालजीके साथ बातें करते रहे अिसलिअे अुनमे मेरी डायरी पढ़वाना रह गया।

बादमें मारवाड़ महाराजा साहबने दस हजार रुपया जो भेज भेजा है अुस पर बापूजीने हस्ताक्षर कर दिये और अुन्हें अेक पोस्टकार्ड लिखा। फिर फलोंका रस लेकर सो गये। मैं पैर दबा रही थी अिसलिअे तैयार होनेमें देर लगी।

सात पतीसको हम यहाके लिअे रवाना हुअे। रास्तेमें दो सुन्दर दग। सुन्दर मकान वीरान कर डाले गये हैं। मनुष्योंकी हत्यायें भी हुअी हैं। बापूजीने के साथ बात करते हुअे कहा कि जरूरी कामके बिना या मेरे बुलाये बगैर कोअी मेरे पास न आये। अिसीमें मेरा कार्यकर्ताका और यशका श्रेय है। सब अपनी अपनी मतिके अनुसार कार्य करते रहे।

मालिश और स्नान नियमानुसार। दोपहरके भोजनमें बापूजीने खाखरे दो दूध आठ औंस जरासा खोपरेका मावा और ग्रेपफ्रूट लिया। अिस गावमें २५१ हिन्दुओं और ८०० मुसलमानोंकी आबादी है।

शामको अब्दुल्ला साहब (अेस० पी०) के साथ बात करनेके बाद बापूने मौन लिया।

भोजनमें शामको दूध अेक केला और जरासे मुरमुरे लिये। रातमें अेक औंस गुड़ लिया। रातको मौन शुरू हो गया था अिसलिअे खास तौर पर कोअी नहीं आया था।

शादुरखील
३-२-४७

सदाकी भाति प्राथना। प्राथनाके बाद तुरत बापूने आज जवाहरलालजीको पत्र लिखा। पानी पीने समय मैंने अपनी डायरी अुन्हें सुनाअी परन्तु हस्ताक्षर दशघरियामें नहीं हो सके। मैं डायरीको दूसरी पुस्तकोंके नीचे रखकर चली गअी थी अिसलिअे बापूजीने हस्ताक्षर करनेको ढूंढी तब मिली नहीं।

सात बजकर पतीस मिनट पर हम दशघरियासे चले। रास्तेमें क्षमनाथ चौधरी और हबीबुल्लाकी वाडीमें थोड़ी देर ठहरे।

यहा हम यशादा पाल नामक कायस्थके घर ठहरे ह।

यहा आकर राजकी तरह सब कायक्रम चला। स्नानादिसे निवत्त होकर बापूजीने भोजनमें पाच बादाम पाच काजू दूध और खापरेका स देश लिया जो हमारे यजमानने बनाया था। बापूजी अिन लोगोकी जरासी भी चीज स्वीकार कर लेते ह तो ये अपने-आपको कृतकृत्य मानते हैं।

यहा २७१ हिंदुओ और १२१२ मुसलमानोकी वस्ती है। आज मौन है जिसलिअे कोअी खास बात नही हुअी। बापूजीका मौन हो अुस दिन सब सूना सूना लगता है। शामको बापूजी यहाकी अेक पाठशाला देखने गये। वहासे आकर दस खजूर और आठ औंस दूध लिया। दूसरा कुछ नही लिया। नियमानुसार प्राथना हुअी। प्राथनामें अच्छी सख्या थी।

शादुरखील,
४–२–'४७

अब मौनवारके दिन अेक ही गावमें दो दिन ठहरनेका कायक्रम रखा है, क्योकि गावके लोगोको मौनके दिन बापूजीके साथ बातें करनेका लाभ नहीं मिलता। अिसलिअे सवेरे मुझे बहुत थोडा काम रहा।

रोज हम जिस समय यात्राके लिअे प्रयाण करते ह अुसी समय अर्थात ७–३० पर हम घूमने निकले। अेक मुसलमान वकीलके यहा गये। म स्त्रियोसे अन्दर मिलनेको गअी। अुन्होने बापूजीसे मिलनेकी अिच्छा प्रगट की जिसलिअे अुन्हे बापूजीसे मिलाया। साढे आठ बजे लौटे। रोजकी भाति बापूजीके पैर धोकर मने मालिश की व स्नान कराया। मुझे आजसे बापूजीने गीताके श्लोक लिखनेको कहा। पैर धुलवाते हुअे बापूजीने कुछ पत्रो पर दस्तखत किये। के साथ बातें करते हुअे नअी तालीमकी चर्चा की। नअी तालीम सीखनेवालेका अपना शरीर मजबूत बना लेना चाहिये। मोटे मुरमुरे खापरेका तेल खली और खाना पकानेकी अन्य सब कला सीख लेनी चाहिये। स्वभाव पर अुसे अैसा अकुश रखना चाहिये कि सत्याचरण करते हुअे सबके साथ प्रेमपूवक घुलमिल सके। अुसे हिन्दी भाषा और नागरी लिपि सीख लेनी चाहिये। गुजराती सीख लेनी चाहिये। बगला भी। आज दिनभर लगभग मुसलमान भाअी और व भी पदाधिकारी ही मिलने आते रहे।

आजकी प्राथना-सभा अेक मुसलमान भाअीकी वाडीमें हुअी। निमन्त्र अनुवाद कर रहे थे तब बापूजीने मुझे लिखकर दिया कि तुम अन्दर बहनोमे

मिल जाओ ताकि बादमें वक्त खराब न हो। मैं बहनोंके पास गया। मैंने अुन्हें औजबिल्ला सुनाया। अेक लड़की बहन बोली: "हम तो हिन्दूके साथ बात करनेमें भी पाप समझती हैं।" मैंने कहा: "तुम्हारा आग्रह था, अिसलिअ तो कुरानकी यह आयत मैंने सुनाअी। परन्तु मुझे तो यह जानना है कि तुम किस तरह पढ़ती हो। अिसलिअ अब तुम मुझे पढ़कर बताओ। मैं तुम्हारे सामने विद्यार्थी बनकर सीखना चाहता हूं।" मेरी अिस बातका अेक बुढ़िया माजी पर अच्छा असर हुआ। अुन्होंने अुस लड़कीको डांटा और अेक छोटीसी आयत भी मुझे सुनाअी।

अितना निश्चित है कि यहांके वातावरणमें खूब जहर भरा है। लोगोंको धर्मके बहाने जिस तरह भुलावेमें डालकर नामी लोग मनमाना काम कर रहे हैं।

मैंने बापूजीसे प्रार्थनाके बाद यह बात कही। बापूजी बोले: "अिसीलिअ तो मैं कहता हूं कि जरूरतसे अधिक ज्ञानने अधिक अज्ञान और जड़ता पैदा की है। जैसे हमारे यहां समझदार जरूरतसे ज्यादा समझदारी बताता है तो अुसे अकलमंदका दादा कहा जाता है, अुसी तरह अिस आवश्यकतासे अधिक ज्ञानने बरबादी ही की है।"

हमारी प्रार्थना-सभा नादुरलीगके मुख्य नेता सलीमुल्ला साहबके घर पर हुअी थी। प्रार्थनाके दौरानमें रामधुन तालियोंके साथ अच्छी तरह गाअी गअी थी। बापूजीको बंगला भाषामें मानपत्र दिया गया था।

बापूजीने कहा: "मुझे तो आपके दिलों पर कब्जा करके सबको अेक करना है। यदि दिलोंमें अेकता कायम न हो तो बाकी काम सिद्ध नहीं होगा और जब तक अेकता कायम नहीं होगी तब तक हमारे भाग्यमें गुलामी ही लिखी रहेगी। हम सब किसी भी नामसे पुकारे जाते हों, परन्तु गुलामी तो हम केवल सर्वशक्तिमान अीश्वरकी ही स्वीकार करें। मैं खुदाको केवल मानव जैसे रामके साथ जोड़ता हूं यह माननेमें अज्ञान है। मेरा राम ही मेरे लिअ अीश्वर है। वह पहले था, आज है और आगे भी सनातन काल तक कायम रहेगा। अुसका न जन्म हुआ है, न किसीने अुसे बनाया है। अिसलिअे सब लोग भिन्न भिन्न धर्मोंका अध्ययन करके अुनका आदर करना सीखें। रहीम और करीम नामवाले मेरे मुसलमान मित्र हैं। अुन मित्रोंको मैं अुनके नामसे बुलाअूं तो अिसका अर्थ यह नहीं होता कि मैंने अुन्हें खुदाके साथ जोड़

न्या है। और अिसे आप गुनाह कहेंगे? वरका वदला वरसे लेनेमें मेरा विश्वास नही। जाति जातिके बीच सच्चा भाअीचारा स्थापित हुअे बिना हमें किसी भी काममें कामयाबी नही मिलेगी।

'मुझे जबरदस्ती विहार भिजवानेकी जरूरत नही पडेगी। परन्तु जब मुझे महसूस होगा कि अमुक जगह बठकर म राष्ट्रकी अुत्तम सेवा कर सकूगा तो वहा अवश्य पहुच जाअूगा। अिसीलिअे यहा आकर बठा हू।

शामको बापूजीने दूध नहीं लिया। दो औंस गुड लिया। दस बजे सोने गये। पाच सात मिनटमें म भी सोने चली गअी।

श्रीनगर,
५–२–'४७

नित्यकी भाति प्राथना वगराका क्रम चला। मुझे सख्त जुकाम और बुखार होनेसे बापूजीने अपने पास सुला दिया और डाक सारी खुद ही लिखी। सुबह ठेठ साढे छह बजे मुझे अुठाया।

रोजकी तरह सात पतीसका 'नादुरखील' छोडा। यहा वीणाबहन दास और दूसरी महिलाओने सुन्दर तयारी की थी। व अिस गावमें काम करती है। सवा आठ पर हम यहा पहुचे। आकपक रगोली पूरी गअी थी। आज हमारा मुकाम शेख तानी (जुलाहे) के घरमें है। पिछले अक्तूबरमें अुनका सवस्व लुट गया था। बापूजीके पाव धोकर मने मालिश की। मालिशमें बापूजी बीस मिनट सो लिये। स्नानके समय भी सो गये।

बापूजीका भोजन करा रही थी अुस समय वीणादीदी अपना थर्मामीटर लेकर मेरे पास आअी और बापूजीके सामने जबरन् मेरा बुखार नापा। १०४ था। यह देखकर बापूजी मुझ पर बहुत नाराज हुअे।

मेरा खयाल था कि जल्दी कामसे फारिग होकर सो जाअूगी। परतु वीणादीदी नही मानी। और अितना बुखार होने पर भी काम किया, अिसलिअे बापूजी खूब नाराज हुअे। कहने लगे, 'यदि तुमने सुबहसे अपना काम स्वभाअी या निर्मलबाबूको सौंप दिया होता और तुम सो जाती तो यह हाल न होता। यह सब अच्छा नहीं कहा जा सकता। परन्तु सूक्ष्म दृष्टिसे कहू तो यह मूर्छा भी कही जा सकती है। अिसकी अपेक्षा नम्रतासे आराम लिया होता तो म खुश होता। मने कअी बार तुमसे कहा है कि काम करने लगती हो तो फिर तुम शरीरकी तरफ नहीं देखती। अिसके लिअे आगाखा महलमें तुम्हें कितना ही

बार रुलाना पड़ा था। आज भी रुलाना पड़ेगा। जरा भी थकावट मालूम हो तो काम छोड़ ही देना चाहिये। तुम कहती हो कि मेरे पास कामका ढेर लगा हुआ है फिर भी मैं वक्त निकालकर आराम लिये बिना नहीं रहता। नहीं तो मैं सेवा कैसे कर सकता हूँ? जिसे सेवा करनी है असे पहले अपनी सेवा करना सीखना चाहिये।

दो घंटे आराम लेनेके बाद मेरा बुखार अुतर गया। शामको ६॥ हो जाने पर प्रार्थना करने गअी। वीणाबहनीने आज बड़ी मदद की। अिसलिअे बापूजीकी सेवामें कोअी खास दिक्कत नहीं हुअी।

आज बापूजीके प्रार्थना-स्थान पर मंडप-सा बनाया गया था। अूपर भी छत बनाअी गअी थी। प्रार्थनामें लोगोंकी खासी भीड़ थी। परन्तु शान्ति थी। बापूजीने प्रार्थना-स्थलको सजानेका विरोध किया। कहा अिससे रुपये और शक्तिका व्यय होता है। थोड़ीसी अूँची बैठक रहे ताकि लोगोंको दिखा जा सके और लोग मुझे देख सकें। बैठनेके लिअे नरम गद्दी जैसी हो ताकि थकावट न लगे। अिसके सिवा किसी भी प्रकारकी सजावट करनेकी जरूरत नहीं।

प्रार्थनामें आज अहिंसाके शास्त्र पर कहा। बापूजी बोले: जो आजादीकी रक्षा करनेवाले (मन्त्री) होंगे वे विरोधियोंको मार डालनेके लिअे तैयार नहीं होंगे परन्तु खुद मरनेको तैयार होंगे। हिंदुस्तानके स्वराज्यके मामलेमें अंग्रेज क्या कहते हैं या क्या नहीं कहते हैं अिसकी मुझे परवाह नहीं। अुसका आधार हम पर ही है। अिसीलिअे तो जब जवाहरलालजी और दूसरे साथियोंने राज्य शासन अपने हाथमें लिया तब मैंने कहा था कि आजसे आपको काटोंकी सेज पर सोना है। हमारा ध्येय भारतकी संपूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना है और अुसके बिना चैन नहीं लेना है। परन्तु यदि कोअी यह मानता हो कि हम अंग्रेजोंको तलवारके जोरसे निकाल देंगे तो यह बड़ी भूल है। अंग्रेज लोग तलवारसे कभी नहीं डरते। अंग्रेज जातिकी लगन दृढ़ता और हिम्मत विलक्षण है। अिसलिअे तलवारकी ताकतसे वे कभी नहीं भागेंगे। परन्तु यदि हम मौतका बदला मारकर नहीं बल्कि मर कर देंगे तो अिस अहिंसाके साहससे वे अवश्य हारकर चले जायेंगे। अहिंसासे बढ़कर किसी शक्तिको मैं नहीं जानता। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि अभी तक हमें पूरी आजादी नहीं मिली अिसका कारण

यह है कि हमारी अहिंसा कच्ची है। परन्तु कुछ भी हो। आज तक अहिंसाकी ताकतका विकास करनेका जो प्रयत्न हुआ, अुस ताकतका जवाब ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि-मंडलका तैयार किया हुआ दस्तावेज है।

"युद्धके परिणामोंका हम विचार करें, तो मालूम होगा कि मित्रराज्योंको भी लाभ नहीं हुआ। दुश्मनका तो होता ही कहांसे? असंख्य मानव कट गये। परन्तु फिर भी आज दुनियाकी स्थिति असी है कि वह अिस समय अनाज और कपड़के बिना अधमरी हो गअी है। मैं तो बिना किसी हिचकिचाहटके कह सकता हूं कि परिणामकी परवाह किये बिना धर्मके रूपमें नहीं, तो केवल प्रामाणिक नीतिके रूपमें अहिंसाको अपनाकर अिस शक्तिसे प्राप्त होनेवाले आत्मविश्वास पर आधार रखनेमें हमारा अधिक श्रेय है।

अंग्रेजी भाषाके बारेमें बोलते हुअे बापूजीने कहा: अंग्रेजी शिक्षाने हमारी बुद्धिको मानसिक भोजनके अभावमें बिलकुल भूखा मारकर हमें पंगु बना दिया है। मैं तो चाहूंगा कि हमारी अितनी अधिक समृद्ध भाषाओंकी शिक्षा विद्यार्थियोंको दी जाय। हम यदि लगनसे काम करें और अंग्रेजी शिक्षाका मोह छोड़ दें, तो जनताको सच्ची नागरिकताके धर्म और अधिकारोंकी शिक्षा बहुत जल्दी दे सकते हैं।"

आज जब प्रवचनका बंगलामें अनुवाद हो रहा था तभी मैं घर चली आअी थी। बापूजीके लिअे दूध और सेब तैयार करके सो गअी। फिरसे रातको बुखार हो आया। परन्तु साढ़े आठ बजे अुठकर बापूजीका बिछौना करके मैंने रोजका कामकाज पूरा किया। बापूजीके सिरमें तेल मलकर और पांव दबाकर फिर जल्दी सो गअी।

बापूजीको मेरा काम करना अच्छा नहीं लगा। असा लगा कि नाराज हैं। परन्तु मैं चुपचाप कामकाज निबटाकर सो गअी। (आजकी डायरी ता० ६-२-'४७ के दिन लिखी गअी है।)

धरमपुर
६-२-'४७ गुरुवार

रोजकी भांति प्रार्थनाके लिअे अुठी। बापूजीने कहा कि तुम्हें रातभर बुखार रहा अिसलिअे सो रहो। परन्तु मुझे अच्छा लगा अिसलिअे अुठ बैठी। प्रार्थनामें गीताजीके अध्यायमें भूल हो गअी। शुक्रवारका अध्याय मैंने आज पढ़ना आरंभ कर दिया। बापूजीने सचेत किया। मुझसे कहने लगे : यह

भूल बताती है कि तुम बीमार हो फिर भी या तो मैं तुम्हें आराम नहीं लेने देता या तुम नहीं लेती। बापूजीका पानी और रस लेकर मैं सो गयी। बापूजीने को पत्र लिखा। उसमें लिखा कि लीग और राजा लोग कुछ भी करें। मेरी दृष्टिसे काग्रेसको कुछ नहीं करना है। कपड़े और खराबके मामलेमें मेरा विचार सीधा और दृढ़ है।

साढ़े सात बजे हमने श्रीनगर छोड़ा। रास्तेमें एक मुसलमान भाओ सिकंदर जूनियाकी बाडीमें रुके। मैं स्त्रियोंके पास गयी। आकर रोजकी तरह बापूजीकी मालिश स्नान अित्यादि काम पूरा किया। भोजनमें बापूजीने पाच काजू पाच बादाम शाक फल और दूध लिया। मेरी तबीयत ठीक रही। सब काम किया। परन्तु दोपहरके बाद १०४ टेम्परेचर हो गया। अिसलिअ चारसे पाच तक बापूजीके पास सो गयी। पाच बजे प्रार्थनाके समय जागी और नियमानुसार बापूजीके साथ प्रार्थना करने गयी।

शामको बापूजीने भोजन कुछ नहीं किया। केवल गुड़ ही लिया। अिसलिअ प्रार्थनाके बाद मेरे पास कोओ खास काम नहीं था। बापूजी कहने लगे तुम्हें सुला सकें अिसीलिअ मैंने केवल गुड़ लिया है। बापूजीने मेरी चिन्ताके कारण और मेरे आरामके लिअ सिर्फ गुड़ लिया अिसका पता मुझे रातको लगा। मैंने माना था कि शायद तबीयत ठीक न होनेके कारण वे दूसरा कुछ लेनेसे अिनकार कर रहे हैं। परन्तु वे दूसरोंकी चिन्ता कितनी ज्यादा करते हैं? मुझे गुड़की बात सुनकर दु:ख हुआ। सोचा मैंने अपना स्वास्थ्य नहीं संभाला अिसीकी यह सजा मिली।

आज सफाओके बारेमें बापूजीने कहा कि स्वच्छता तो मेरा मुख्य और मनपसन्द विषय है। पश्चिमकी बहुतसी बातें मुझे पसन्द नहीं मगर वहां स्वच्छताका नियम मैंने खास सीखा है। यहांके तालाबोंमें जैसी पानीमें कपड़े धोने होते हैं और वही पानी पीना होता है। यह देखकर मुझे बड़ा दु:ख होता है। लोग जरा भी संकोच किये बगैर जहां-तहां थूकते हैं पान खाकर पिचकारियां छोड़ते हैं। यह सब हमारे देशमें स्वाभाविक बन गया है। अिससे बड़ा दु:ख होता है। यह हमारे लिअ शर्मकी बात है। हिन्दुस्तानमें अनेक रोगोंका कारण अिस प्रकारकी गंदगी ही है। अितने पर भी भारत जी रहा है यही मेरे लिअ तो अचरजकी बात है। यहांकी आबादीमें मृत्युका अनुपात दुनियामें सबसे अधिक है। पूरी सफाओ रखनेमें गरीबी कभी

बाधक नहीं होगी। सिर्फ हम आलस्य छोड़ दें तो अपने देशको स्वर्णभूमि बना सकते हैं। अंग्रेजीमें कहावत है कि स्वच्छता दैवी गुणके निकट पहुंच सकती है। और यदि हम बाहरकी सफाओी रखनेके नियमोंका मनन करेंगे तो अन्दरकी सफाओी रखना हमें अपने-आप सूझेगा।

बापूजीकी प्रवृत्तियोंसे परिचित रहनेके लिअे सब अखबारी संवाददाता साथ रहनेकी मांग करते हैं। बापूजी कहते हैं "अखबारवालोंने अभी-अभी अिस क्षेत्र पर चढ़ाओी की है। यहां तो अनुके लिअे किसी भी प्रकारकी सुविधा नहीं है। यदि वे मेरे आसपास ठाटबाट खड़ा करें तो मैं अुन्हें चले जानेको कह दूं। परन्तु वे बहुत सादे ढंगसे देहातके अनुकूल बनकर जीवन बिता रहे हैं। मेरी सलाह है कि अखबारवाले यहां संवाददाता भेजकर व्यर्थ खर्च न करें। फिर भी अखबारवालोंके पास अपने आदमी मेरे पास भेजनेको ज्यादा रुपया हो तो वे मुझे रुपया ही भेज दें। यहांका कष्ट सब कोओी सहन नहीं कर सकते।

बापूजीसे अेक प्रश्न यह पूछा गया कि "१९२५ में आपने कहा था कि मैं तो शासन विधानमें यह धारा रखूंगा कि स्वतंत्र भारतमें जो शारीरिक परिश्रमसे राज्यकी कुछ न कुछ सेवा कर सकें अुसीको मत देनेका अधिकार दिया जाय। क्या आप अिस बात पर अब भी कायम हैं?" बापूजीने जवाब दिया "अिस बात पर तो मैं मरूंगा तब तक कायम रहूंगा। भगवानने मनुष्यको बनाया है अिसलिअे प्रत्येक मनुष्यका यह धर्म है कि वह काम किये बिना खाना न खाये। रुपयेवाले अपना रुपया दे दें और सबके साथ हाथ-पर चलाकर खायें। बुद्धिसे रुपया बटोरकर भोग विलासके साधन खड़े करके असे आराममें जीवन व्यतीत करना पाप है।"

राजाओंके विषयमें बोलते हुअे बापूजीने कहा, "हिन्दुस्तानमें राजा तो ६०० हैं और प्रजा करोड़ोंकी संख्यामें है। राजाओंसे मैं कहूंगा कि तुम राजा न रहो और प्रजाके सेवक बन जाओ। अिसमें तुम्हारा और प्रजाका सबका कुशल है।"

बापूजीके पास आनेवाले भिन्न भिन्न प्रश्नों पर अलग अलग चर्चाअें होती हैं और अुनसे बापूजीके निश्चित विचार विस्तारसे जाननेको मिलते हैं।

प्रसादपुर,
७-२-४७

रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे साढ़े तीन बजे अुठे। प्रार्थनाके बाद मेरी दोनों दिनकी डायरीमें बापूजीने हस्ताक्षर किये। रोजकी तरह बंगलाका पाठ किया। निर्मलदाने अेक बंगाली बालिकाका बंगलामें लिखा पत्र सुनाया।

सात पच्चीस पर धरमपुर छोड़ा। सवा आठ बजे हम यहां पहुंचे। यह मकान डाक्टर भूपेन्द्रकुमार मजूमदारका है।

मेरी तबीयत अच्छी है जिसलिअे बापूजीने सभी काम करनेकी अिजाजत दे दी। आकर रोजकी भांति मैंने बापूजीकी मालिश की, स्नान कराया। बापूजी नहाकर निकले जितनेमें सुशीलाबहन पै आअी। बापूजीके लिअे अुन्होंने संभालकर थोड़ेसे काजू-बादाम रख छोड़े थे सो लाअी। बापूजीने भोजनमें साग, दूध, थोड़े मुरमुरे और दो काजू लिये। खाखरे नहीं खाये। बाकी सारा क्रम नित्यकी भांति चला।

तीसरे पहरको बहुत लोग मिलने आये। अुनमें प्रोफेसर राजकुमार चक्रवर्ती, सतीशबाबू, मनोरंजनबाबू, चारुदा, मां (हेमप्रभादेवी), जमान साहब और पुलिस अफसर भी थे। कर्नल शाहनवाज साहब (आअी० अेन० अे० वाले) और हरिदासभाअी तथा बेलाबहन (नेताजीकी भतीजी) आअी। निरंजनसिंह गिल भी आये।

बापूजी मिट्टी लेने लेटे थोड़ी देर सो गये। अुठकर अुन्होंने मेरे बारेमें आये हुअे अेक स्वप्नकी बात कही: "तुम अुसे मरते देखती हो और अुसे बचानेका धर्म समझकर अुसके पास जाती हो। परन्तु तुम जैसे पास पहुंचती ही हो कि वह बादशाह विकराल हो जाता है। तुमने अुसे चांटे लगाये। जिसलिअे अुसने आकर तुमसे माफी मांगी। तुम मुझे यह बात कहने आती हो जितनेमें मेरी आंख खुल जाती है। मैं तुम्हें शाबाशी देने जा रहा था।"

बापूजी कहने लगे, "मैं तुम्हें अिस स्वप्नके जैसी बनाना चाहता हूं। यह स्वप्न सिद्ध करनेमें वर्षों या शायद युगोंका समय भी लग सकता है। परन्तु कितना भी समय लगे, अुससे हमें क्या? हम कर्तव्य करते करते मर गये तो अगले जन्ममें अिसे पूरा करेंगे। परन्तु अिसमें बीमारीको जरा भी स्थान नहीं होना चाहिये। हमारी भाषामें दृढ़ता होनी चाहिये, रहन-सहनमें

मर्यादा और विवेक होना चाहिये। और डरके लिये थोडा भी स्थान नहीं होना चाहिये। अितना तुम पचा लोगी तो खूब अूंची अुठोगी।"

अूपरकी बातें हो रही थीं अितनेमें ठक्करबापा आ गये। डाकका बड़ा-सा ढेर लाये। बापा और बापूजीने थोडीसी बातें की। आजकी डाकमें सबके पत्र बहुत गरमागरम है।

शामको जमान साहबके साथ बातें करते समय अुन्होंने बताया कि निराश्रितोंके लिअे सदाव्रत खोला गया है, जहां अुन्हें मुफ्त अनाज दिया जाता है। अिस पर बापूजीने अपने विचार बताते हुअे कहा: "प्रत्येक मनुष्यको मेहनत करके ही खानेका अधिकार है। सरकारको अिस तरहका काम खोलना चाहिये। अुदाहरणार्थ, रास्ते सुधारना, देहातकी पुनर्रचना करना, सहकारी ढंग पर अुद्योग स्थापित करना आदि। असे अनेक कामोंमें जो लोग साथ दें अुन्हींको पूरा राशन लेनेका अधिकार है। हमारे यहां जो मुफ्त दान दिया जाता है और हमने अुसका जो अर्थ किया है, अुसका मैं विरोधी हूं। सशक्त लोग कुछ भी काम न करें और सरकारकी तरफसे रहने तथा खानेकी मुफ्त सुविधा पानेकी आशा रखें, यह मेरी दृष्टिसे अुचित नहीं है। वैसे जो लोग बेघरबार निराश्रित हो गये हैं अुनके प्रति मुझे पूरी सहानुभूति है। सट्टा करके जो लोग रुपया प्राप्त करते हैं वह सच्ची कमाअीका पैसा नहीं है। हर आदमी अपना पसीना बहाकर खुद मेहनत करके कमाये और खाये तब तो हमारे यहां स्वर्ग हो जाय, अिसमें मुझे कोअी सदेह नहीं है। कवि, डॉक्टर, लेखक, शिक्षक, वकील और व्यापारी कुछ भी स्वार्थ रखे बिना यदि सच्चे दिलसे अपने-अपने फर्ज अदा करें और अपने ज्ञान अथवा कुशलताको अपने अपने ढंगसे मानव-सेवामें खर्च करें, तो हमारा भारत संसारमें प्रथम श्रेणीका देश बन जाय।"

बापूजीने जमान साहबको अिस प्रकार अपने विचार बताये। अिस पर मैं विचार कर रही थी कि वे अितनी बड़ी अपेक्षा अिन लोगोंसे कैसे रखते हैं? मैंने बापूजीसे पूछा तो वे कहने लगे:

"अेक आदमी भी अिस प्रकार करने लग जाय तो अुसका असर दूसरों पर पडेगा। हमें निराश न होकर प्रयत्नशील रहना चाहिये। हिन्दुस्तानमें अगर स्वार्थी हैं तो परमार्थी भी कम नहीं हैं। साथ ही मैं तो गीता-माताका अभ्यासी हूं। अिसलिअे कहूंगा कि गीतामाताने कहा है कि तुम

श्रद्धा रखकर किसी फलकी अपेक्षा रखे बिना शुद्ध भावनासे अपना कर्तव्य करते रहो।

आज बापूजी प्रार्थनासे लौटने पर कातने बैठ गये। रोज दोपहरको ही कात लेते हैं। परन्तु आजका दिन मुलाकातियोंसे भरा हुआ था। कातते कातते अखबार सुने। मैंने डाक सुनाओी। फिर पैर धोये और बापूजी बिस्तर पर लेटे। शामको कुछ नहीं खाया। बहुत थक गये हैं। गरम पानी और शहद लिया। पांच ही मिनटमें बिस्तर पर लेट गये। बादमें मैं पैर दबा रही थी कि सो गये।

बापूजीके सोनेके बाद मैंने घरके लिओ पत्र लिखा। बापूजीके लिखे हुओ पत्रोंकी नकल करके डायरी लिखी। काता। जितनेमें साढ़े बारह हो गये। परन्तु लिखनेका काम बहुत बढ़ गया था। अुसे पूरा कर लिया। अिसलिओ हल्की हो गअी।

नदीग्राम
८-२-'४७

मैं रातको दरसे मौन गअी तब बापूजी गहरी नींदमें थे। परन्तु डेढ़ बजे अुठे और मुझे जगाकर लालटेन जलानेको कहा। मुझसे कहा "मैं रामनाम तो ले ही रहा था परन्तु अब पत्र मजिस्ट्रेटको लिखना था अिसलिओ मन पर बोझ है। नींद अुड गअी। और भी बहुतसे पत्र लिखने हैं। और कल धारा जो ढेर सारी डाक लाये हैं वह भी पढ़नी है। अिसलिओ लालटेन लेकर मुझसे लिखवाओगी न?"

मैंने लालटेन जलाकर कागज कलम वगैरा लिये। मैंने कहा "आप लेट जाओ।"

बापूजी बोले "तुम ७७ वर्षकी हो जाओ फिर लिखना। अभी तो लड़कीका मैं दिनमें सारा दिन पूरा आराम नहीं दे सकता और जो रातको भी ... बिना सो गअी। मुझसे कहने लगे "जिस लड़कीको मैं दिनमें सारा दिन पूरा आराम नहीं दे सकता और जो रातको देर तक काम करती है अगर यदि आधी रातको भी अुठाकर काम करवाअूं तो मैं कैसा पापी माना जाअूंगा?"

मैं तुरन्त समझ गअी कि कल रातमें साढ़े बारह बजे तक लिखती रही यह बापूजीके ध्यानसे बाहर नहीं रहा। मेरा कसूर था अिसलिओ कुछ बोलनेकी गुंजाअिश नहीं थी। बापूजी मेरा कितना ध्यान रखते हैं?

बापूजीने डेढ़से सवा तीन बजे तक काम किया। बादमें मुझे फिर जगाया। दातुन-पानी किया। प्रार्थना हुओ। आज बेलाबहनने प्रार्थनामें सुन्दर भजन गाया।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने गरम पानी और शहद लिया। और बंगला पाठ करके सो गये। मैं थोडी देर बापूजीके हाथ-पैर दबाती रही। पंद्रह मिनट सोये। अुठकर रस लिया और यहां आनेका समय हो गया।

लगभग रातके डेढ़ बजेसे काम कर रहे हैं फिर भी बापूजी कहते हैं कि "मुझे थकावट नहीं मालूम होती। मुझमें कहा यदि तुम रातको मेरे साथ ही जल्दी सो गअी होती तो सारा काम तुमसे कराता। परन्तु तुम देरसे सोने आअी अिसलिअे तुमसे कैसे काम लेता?" मुझे भी जल्दी न सोनेका अफसोस हुआ।

साढ़े सात बजे प्रसादपुर छोड़ा। आठ पच्चीसको हम यहां पहुंचे। बापाका पत्र भिजवाया। बापूजी दूसरी डाक देख रहे थे, अितनेमें मैंने मालिशकी तैयारी की। मालिशमें पचास मिनट सोये। सारी रातका जागरण था अिसलिअे अितना सो लिये यह अच्छा हुआ।

दोपहरके खानेमें खुराक बहुत घटा दी। दो खाखरे छ औंस दूध और शाक ही लिया।

कातते समय सुरेन्द्र घोष, लावण्यप्रभाबहन और मिदनापुरके कार्यकर्ता आये। सुचेताबहन कृपालानी और मनोरंजन बाबू भी आये।

आज बापूने कुछ प्रश्नोंके अुत्तर देते हुअे कहा "मुसलमान हिन्दुओंका बहिष्कार करते हैं ऐसी बातें मेरे पास जरूर आअी हैं। परन्तु सभी जगह यह स्थिति नहीं है। जिनके सिवा हिन्दुओंके पास जितनी जाती जा सकें अुससे अधिक जमीन है। अिसमें दोनों वर्गोंकी अपार हानि होती है। मैं तो यह सलाह दूंगा कि वे जितनी खुद जोत सकें अुतनी जमीन रखें अधिक जमीन अपने कब्जेमें न रखें। हम कोअी अनिरिक्त चीज नहीं रख सकते — फिर वह छोटी हो या बड़ी। समाजको अिस आदर्श तक पहुंचनेकी साधना करनी चाहिये।

"मैं यहां दो-तीन महीनोंसे आया हुआ हूं। अिस अर्सेमें अितना जरूर देखता हूं कि हिन्दुओंने किसी हद तक अपनी बहादुरी दिखानेका साहस किया है अथवा यों कहें कि अपनी कमजोरी मिटाअी है। थोड़े दिन

पहले ही भटियालपुरमें जिस मन्दिरको मुसलमानोंने नष्ट कर दिया था वही प्यारेलालजीकी मेहनतसे भरे हाथों फिर देव प्रतिष्ठा हुआी है। अुसमें मुसलमानभाअी भी मौजूद थे। अितना ही नहीं, अुन्होंने प्रतिज्ञा भी ली कि भविष्यमें अपनी जान देकर भी हम अिस मन्दिरको बचायेंगे। पहले अपनी जान कुर्बान करेंगे, बादमें ही कोअी मन्दिरको हाथ लगा सकेगा। अिस प्रकारकी हवा पैदा हो जाय या मुसलमान भाअी असी प्रतिज्ञा लें यह कोअी असी-वैसी बात नहीं है। मेरे दौरेमें अभी छोटी-मोटी बातें होती रही हैं, जिनसे हमें अितना आत्म-संतोष जरूर होता है कि कुछ न कुछ काम हो रहा है। यदि मैं शुद्ध होआूं, जो कहता हूं वही करता होअूं, तो यह काम अवश्य टिकेगा। मैं यह भी मानता हूं कि सेवक जो सार्वजनिक सेवा करता है अुसका अुसके निजी जीवनके साथ भी मेल बैठना चाहिये और अुसका जीवन अुतना ही विशुद्ध और पारदर्शक होना चाहिये। प्रत्येक सच्चा कार्य मनुष्यको अमर बनाता है। मनुष्यके मर जानेके बाद अुसका काम रुक जाता है यह कहना गलत है। अिसलिअे मेरे साथके लोग और कार्यकर्ता भीतर और बाहरसे शुद्ध होंगे तो अुनका काम अवश्य चमकेगा। नहीं तो समाज अपने-आप अुन्हें अुस स्थान पर नहीं रहने देगा। यह मेरा कानून नहीं दुनियाका कानून है। यदि सार्वजनिक सेवकमें थोड़ा भी आडंबर या अभिमान होगा तो वह अेक क्षण भी नहीं टिक सकेगा।

आजकी प्रार्थनामें सुशीलाबहनके साथ कारपाड़ासे ८० स्त्रियां आअी थीं। सुशीलाबहन कह रही थीं कि अिनमें से कुछ बहनें तो असी हैं जिन्होंने कभी गांवसे बाहर पैर नहीं रखा। रामधुनको बहनोंने सुंदर ढंगसे गाया।

अिस गांवमें मुश्किलसे बापूजीके ही रहने लायक छोटीसी जगह मिली है। बाकी सबके लिअे तम्बू तानने पड़े हैं। असा दृश्य दिखाअी देता है मानो कोअी काफिला पड़ा हो। क्योंकि संवाददाताओं और फोटोग्राफरोंका दल बहुत बढ़ गया है। अिसके अलावा गांवोंके लोग भी शामिल हो गये हैं। खेतोंमें तम्बू तानकर सब पड़े हैं।

प्रार्थनासे आकर बापूजीने पेट हुअे दूधका पानी लिया। डाक देखकर दस बजे बाद सोये। मैं कलके अुपवासके कारण बापूजीके सिरमें तेल मल कर और पैर दबाकर फौरन सो गअी।

विजयनगर
९–२–४७

रातकी भांति प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद नियमानुसार बंगलाका पाठ किया और कुछ पत्र स्वयं ही लिखे। यहां कार्यकर्ताके रूपमें मुख्यतः बहनें ही काम कर रही हैं। ये बहनें भजन गाते-गाते सुबह जल्दी ही बापूजीको लेने नंदीग्राम आ पहुंची थीं। अुनमें से दो छोटी अुम्रकी बहनोंको बापूजीकी बैसाखी बननेकी बड़ी अिच्छा थी, अिसलिअे अुन्हें बैसाखी बनने दिया और मैं निर्मलदाके साथ छोटे रास्तेसे यहां आ गअी।

यहां आकर बापूजीके पहुंचनेसे पहले ही मैंने सारी व्यवस्था कर ली। अिसलिअे बापूजीके आते ही पैर धोकर मालिश की। और स्नान करके साढ़े दस बजे निबट गये। अितने दिनोंके सफरमें बापूजीने अरसेसे जल्दी आज भोजन किया।

बेलाबहन यहांसे गअी। किशोरलाल काकाको दमा है, अिसलिअे बेला बहनने अुनके लिअे अेक जड़ी-बूटी भेजनेको बापूजीसे कहा। वे कहती थीं कि यह अुनकी आजमाअी हुअी जड़ी-बूटी है। परन्तु बापूजीने विनोदमें कहा, 'अगर किशोरलालका दमा जड़से चला जाय तो मैं तुम्हें अिनाम दूंगा।'

मुझ पर अभी तक सरदीका असर है, अिसलिअे बापूजीने दोपहरको सुला दिया और कहा, 'मैं अुठाअूं तब अुठना।' मैं सोती रही। परन्तु जागनेके बाद क्या देखती हूं कि बापूजीने चरखा खुद तैयार कर लिया है और कातने बैठ गये हैं। मैंने रोषमें कहा: 'मैं अभी भी जागी न होती तो आप अुठाते ही नहीं न? मुझे यह खयाल नहीं था कि आप खुद चरखा तैयार करके मुझे अुठायेंगे।'

बापूजी हंसकर कहने लगे: 'तुम्हें क्या पता कि अपना काम आप ही करनेमें मुझे कितना आनंद आता है! तुम तो रोज करती ही हो और आगे भी करोगी। परन्तु मुझे जब जब अपना काम खुद करनेका मौका मिलता है तब अुसका सदुपयोग करनेका आनंद लूट लेता हूं। तुम जरा और अच्छी हो जाओ, फिर मैं थोड़े ही तुम्हें अेक घंटा सोने दूंगा? मैं कितना निर्दय बन सकता हूं यह अनुभव करना हो तो तुम लोहे जैसी मजबूत बन जाओ। लुहारको लोहा तब आगमें तपाते और अुस पर आराम

इत्यादि भारत यकत स्लेट पर क्या आती है? असा निष्ठुर मैं तभी बन सकता हूँ जब तुम सेप हुअे स्लेट जैसी बन जाओ। और तुम स्लेटके आकार भी कैसे सुंदर बनते हैं? असा आकार तुम्हारा मैं तभी बना सकता हूँ जब तुम अितनी मजबूत बन जाओ। अिसलिअे तुम्हें मेरा प्रत्येक काम करनेकी अिच्छा तभी रखनी चाहिये जब तुम्हारे मनमें भी राग न हो।

बातोंमें बातते हुअे दूसरे पत्र लिखवाये। अितनेमें अुपस्टाफ वाली मुहम्मद भाअी आ गये। आज बापूजीने प्रार्थनासे पहले ही पांच बीस पर मौन ले लिया। प्रार्थनामें लिखा हुआ भाषण पढ़ा गया। आजका भाषण कार्यकर्ताओंकी प्रश्नोत्तरीके रूपमें था।

बापूजीके पास अेक प्रश्न यह आया कुछ कार्यकर्ताओंको सेवामें अपना जीवन बितानेके बाद कुछ अंशोंमें सत्ताका भी शौक हो जाता है। अिसलिअे अुनके साथी अथवा अुनके मातहत काम करनेवाले कार्यकर्ता अुन पर किस तरह नियंत्रण रखें? और संस्था लोकतांत्रिक नीतिको किस प्रकार कायम रख सकती है? अनुभवसे पता चलता है कि असे कार्यकर्ताओंके साथ असहयोग करनेसे कार्योंमें विघ्न आता है।

बापूजीने कहा मनुष्य स्वभावसे सत्ताका शौकीन है। और अिस शौकका अंत तो मृत्युके साथ ही होता है। अिसलिअे सत्ताके पीछे पड़े हुअे सेवकको अंकुशमें रखनेका काम दूसरोंके लिअे मुश्किल है। जिसका अेक कारण यह है कि दूसरोंमें भी यह दोष जान-अनजान होना संभव है। साथ ही जगतमें सर्वथा अहिंसक ढंगसे चलनेवाली अेक भी संस्था देखनेमें नहीं आती। और जब तक हम यह नहीं कह सकते कि कोअी भी संस्था पूरी तरह लोकतांत्रिक ढंग पर चल रही है। जब तक लोकतंत्रको पूरी तरह अहिंसाका आधार न हो तब तक वह कभी पूर्ण नहीं माना जा सकता। यदि अुद्देश्य अथवा कार्य शुद्ध हो तो अहिंसक असहयोग सफल हुअे बिना रह ही नहीं सकता। और असे असहयोगसे संस्थाको बिल्कुल आंच नहीं आयगी। जिस प्रयोगमें अहिंसाकी मात्रा थोड़ी हो या बिल्कुल न हो तो ही असफलता मिलेगी। मैंने अनुभव किया है कि जो लोग दूसरोंकी शिकायत करते हैं वे स्वयं ही सत्ताका लालच मनमें रखते हैं। अिसलिअे जहां अेक ही किस्मके दो प्रतिस्पर्धियोंमें भेद किया जाता

है वहां अुन बतानेसे किसीका समाधान नहीं होता और दोनों पक्ष रोषसे भर जाते हैं।

'जैसे हमारे शहरोंमें दलबन्दी है और सत्ताके लिअे गंदी चालें चली जाती हैं, वैसी ही गांवोंमें होने लगे तो भारतके लिअे अफसोसकी बात होगी। यदि कार्यकर्ता सत्ताके लिअे गांवोंमें जायेंगे तो वे देहातकी प्रगतिमें बाधक होंगे। मैं तो यह कहूंगा कि परिणामकी आशा रखे बिना हम अपना काम करते रहें और अुस काममें स्थानीय लोगोंकी सहायता लें। यदि हमें सत्ताका मोह नहीं लगा होगा तो हमारा काम हरगिज नहीं बिगड़ेगा। शहरोंके पढ़े लिखे और सुधरे हुअे माने जानेवाले लोग हमारे गांवोंकी तरफसे लापरवाह रहे हैं। यह हमने भयंकर अपराध किया है। यदि हम अिसका हृदयसे प्रायश्चित्त करेंगे तो हममें धीरज आयेगा। मैं तो गांवोंमें घूम रहा हूं। वहां कमसे कम अेक-दो प्रामाणिक कार्यकर्ता तो मिलते ही हैं। अिसलिअे अब भी गांव अच्छे हैं। परन्तु अुनकी अच्छाअी स्वीकार करने या मानने जितनी नम्रता हममें नहीं है। जिस स्थानीय दलबन्दी द्वारा काम करना है अुस गांवमें अलग ही रहना चाहिये। और यदि सब दलोंकी या जो किसी भी दलमें न हो अैसे लोगोंकी अच्छी सहायता मिलती हो तो अुसे नम्रतासे स्वीकार कर लेना चाहिये। हम देहातियोंमें से अेक बन सकें अिसी अुद्देश्यसे मैंने प्रत्येक गांवमें अपने अेक अेक साथीको रखा है। और जो कार्यकर्ता बंगला न जानता हो अुसीके साथ दुभाषियेका काम करनेके लिअे अपवाद-स्वरूप दूसरा साथी रखा है। अिससे मुझे लाभ हुआ दीखता है। हमें जल्दबाजीमें निर्णय कर लेनेकी बुरी आदत है। बाहरकी मदद बिना काम नहीं होता, यह गलत बात है। स्थानीय सहायता जितनी मिले अुसे लेकर हम अकेले ही हिम्मत और ममत्वके साथ काम करेंगे तो जरूर विजयी होंगे। फिर भी यदि सफलता न मिले तो और किसीका (किसी व्यक्तिका या समयका) दोष बताये बिना अपना ही दोष बताना हम सीखेंगे तभी हमारी अुन्नति होगी। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं।'

यह मकान जोगेशचन्द्र मजूमदारका है। अिस गांवमें १२६९ मुसलमान और ८६५ हिन्दू हैं। बहुतसे घर जला दिये गये हैं। लोगोंके नाम पर रुपया भी लिया गया है। लगभग सबको जबरन मुसलमान बनाया गया है। हिन्दुओंमें बहुतसे जुलाहे हैं। अमीर लोग तो अधिकांश बाहर रहते हैं।

प्रात कालके भोजनमें थोड मुरमुरे पाच बादाम दो काजू खार और आठ औंस दूध लिया। दोपहरको दो बजे दो नारियलका पानी। शामको प्रार्थनासे पहले आठ औंस दूध और अुसमें अेक चम्मच खारका चूर्ण डाला। प्रार्थनाके बाद अखबार सुनते हुअे गरम पानी और दो चम्मच शहद लिया। शामको लगभग अढ़ाअी मील घूमे। पौने दस बजे बापूजी बिस्तरमें लेटे। मुझे सोनेमें साढ़े दस हो गये।

विजयनगर
१०-२-४७ सोमवार

अिस गावमें दो दिन तक रहना है अिसलिअ आज तो प्रार्थनाके बाद कोअी खास काम नहीं रहा। रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे अुठे। दातुन करके प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाका पाठ किया। मौन दिवस होनेके कारण   और   को वह मननीय पत्र लिखे।

अभी तक मेरी सरदी नहीं मिटी अिसलिअे अेक पर्चे पर लिखा

यह जुकाम मिटानेका अुपाय तुम्हें ढूंढना चाहिये। रामनाम तो रामबाण दवा है अुससे जरूर मिटना चाहिये। छाती और गलेमें कुछ न कुछ लपेट रखो तो ठीक रहे। कुछ भी हो रामनामका अेक कानून यह है कि कुदरतके नियम न टूटने चाहिये। अिस पर विचार करना सीख लो।

ठीक सात पतीसको घूमने निकले। गोपीनाथपुर जानेवाले थे। तीस मिनट चलने पर भी हम गोपीनाथपुर नहीं पहुंचे अिसलिअे बापूजीने पता पूछा कितनी दूर है? जवाब मिला कि अभी दस-पन्द्रह मिनट और लगेंगे। अिस प्रकार आते-जाते सहज ही दो घंटे बीत जाते। अिसलिअे असा सोचकर कि अिस तरह चलनेसे यात्रा पूरी नहीं होगी। हर बातकी सीमा होनी चाहिये। हम लौट आये। मुकाम पर आये तब ८-५५ हो गये। आकर बापूजीके पैर धोये। मन्दिरमें बापूजी तीस मिनट सोये। आज मौन दिवस है अिसलिअे सुनसान लगता है।

बापूजीने दोपहरके भोजनमें अेक खाखरा साग आठ औंस दूध और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। दोपहरको नारियलका पानी लिया। लगभग सारा दिन बापूजीने लिखने-पढ़नेमें ही बिताया।

अेक भाअीने बापूजीसे बात कही कि अेक मुसल्मान व्यापारी सच्चा तराजू रखता था और अेक हिंदू व्यापारी झूठा तराजू रखता था अिससे क्या यह नही लगता कि मुसल्मान व्यापारी प्रामाणिक ह और हिंदू व्यापारी अप्रामाणिक ह?

बापूजीने जवाब दिया अिस अधूरे जगतमें कोअी अेक जाति पूरी तरह प्रामाणिक नही और न कोअी अेक जाति पूरी तरह अप्रामाणिक है। जो कोअी अपने ग्राहकोको अिस प्रकार धोखा देता है, वह व्यक्ति अप्रामाणिक है। परतु अिस परसे सारी जातिको कसे बेअीमान कहा जा सकता है, यह मेरी समझमें नही आता।

"नोआखाली तो अेक असा रमणीय प्रदेश है, जहा अपार प्राकृतिक सपत्ति है। यदि अिसमें हिंदू-मुसल्मानोकी अपूर्व अेकता और हार्दिक मित्रता हो जाय तो मैं अिसे पृथ्वी पर स्वर्ग कहूगा। बेचारे हिंदुओको अभी तक डर है। जो लौट आये ह अुनकी स्थिति अच्छी है अमा मुझे अक्सर कहते ह। मेरे अनेक मुसल्मान मित्रोने कहा है कि हम चाहते ह कि वे अपने अपने घर लौट आयें। परन्तु अिस समय अुनके लिअे कोअी खाने-पीनेका बन्दोबस्त है? अभी तक जसा म चाहता ▪ वसा वातावरण पदा नही हुआ है। जसे खानेका स्वाद मुहमें रखने पर ही मालूम होता है वसा ही यह काम है। यह तो तभी हो सकता है जब तमाम अपराधी जो छिपकर घूम रहे ह बाहर आकर अपना अपराध प्रगट करके प्रायश्चित्त करें। तभी डरके मारे जो लोग घबराये हुअे ह व भय-मुक्तिकी शाति अनुभव कर सकेंगे।

म तो यहा अपनी अहिंसाकी परीक्षा पास करने आया हू। अहिंसामें असफलताके लिअे तो स्थान ही नही है। म यहा करूगा या मरूगा। जिसके हृदयमें दोनो जातियोके बीच या मानव-जातिके बीच अक्षय — मत्री स्थापित करनेकी लालसा है, असे अहिंसकके लिअे दूसरा कोअी रास्ता हो ही नहा सकता। मेरे लिअे तो है ही नही।'

आज शामको भोजनमें केवल अेक औंस गुड ही लिया।

दो बहनें (जो स्थानीय कार्यकर्त्री ह) रातको गरम पानीसे जल गअी। अुनके लिअे म वसलीन लेने जा रही थी। बापूजीने मना किया। "देहातमें अभी दवाका अुपयोग क्या किया जाय? अुनके पैर पर मिट्टी लगवाकर

चूने और तेलका लेप कराओ। मुझसे कहने लगे 'यदि स्थानीय कार्यकर्ता अिस प्रकार प्रसिद्ध विलायती दवायें काममें लें तो फिर अिन गांवोंके लोगों पर क्या असर डालेंगे? अुल्टे देहाती लोग अब कुटेव सीखेंगे। चाय, बीड़ी सिगरेट आदि गांवोंमें अिसी तरह पहुंची है। यह किसका दोष है? देहातियोंका नहीं परन्तु शहरियोंका। अुन बहनोंका मिट्टीसे आराम भी मिला। रातको दस बजे सोनेसे पहले मैं अुनकी खबर लेने गयी तब वे आराम कर रही थी।

बापूजीके प्रत्येक कार्यमें सूक्ष्म विचारोंसे भरे पाठ रहते ही हैं और वे भी अेकसे नहीं परन्तु विविधतापूर्ण।

अुन बहनोंके समाचार लेनेके बाद बापूजीके सिरमें तेल मलकर पैर दबाकर और पत्र लिखकर मैं भी सोने चली गयी।

हैमचडी

११-२-४७ मंगलवार

आज सवेरे अुठे ही थे कि निर्मलबाबूने के आये हुअे तार सुनाये। प्रार्थनाके बाद तुरंत बापूजीने अुनके अुत्तर तैयार किये। ओसके कारण लकड़ियां गीली हो जानेसे चूल्हा नहीं सुलग रहा था। अिसलिअे गरम पानी करनेमें देर हो गयी। रस भी देरसे पीनेको मिला। अिस कारण रस पीनेके बाद तुरंत ही बापूजीने यात्रामें चलना शुरू कर दिया।

विजयनगर छोड़नेसे पहले बापूजीने यहांके पाखानोंका निरीक्षण किया कि वे कैसे हैं और अुनकी सफाअी कैसे होती है। कुछ सूचनायें भी दीं। कुल मिलाकर अुन्हें संतोष हुआ।

रास्तेमें जीवनसिंहजीको पैगंबर साहबके कुछ सुन्दर वचनामृत सुनाये। ये वचनामृत केवल मुसलमानों पर ही लागू नहीं होते परन्तु मनुष्यमात्रके मनन करने योग्य हैं।

१ मुसलमान या किसी भी दूसरी जातिके किसी आदमी पर जुल्म होता हो तो अुसकी मदद पर पहुंच जाना चाहिये।

२ जो व्यभिचार करता है चोरी करता है शराब पीता है या डाका डालता है अथवा रुपये-पैसेके व्यवहारमें धोखेबाजी करता है वह न सच्चा

मुसल्मान है और न सच्चा अिन्सान है। अिसलिअे हे मानव तू चेत और सावधान हो जा।

३ जिसका अपने मन पर और अपने-आप पर काबू है अुसकी विजय सबसे बढ़कर है।

४ मनुष्य जब व्यभिचार करता है तब प्रभु अुसे अपनेसे अलग कर देता है। (अुसके साथ प्रभु नहीं, परन्तु शैतान बसता है।)

५ मनुष्योंमें सबसे बुरा आदमी दुष्ट विद्वान है। भला अपढ़ सबसे अच्छा आदमी है।

६ जिसकी जबान या हाथसे मनुष्य-जातिको या अन्य किसी प्राणीको जरा भी चोट नहीं पहुंचती वह पूरा मुसलमान या अिन्सान है।

७ जो व्यक्ति प्रभुके पैदा किये हुअे प्राणियों पर दयाभाव रखता है अुस पर प्रभु प्रसन्न रहते हैं।

८ जो स्वयं विश्वासघात नहीं करता, बल्कि जिसका दुश्मन भी कभी अुस पर विश्वास रखे तो अुसकी मददके लिअे दौड़ता है और दिये हुअे वचनका पालन करता है वही सच्चा अिन्सान है।

९ जो झूठ बोलता है, जो वचन भंग करता है, अुसे मैं अपना नहीं मानता।

१० आदमी जो अपने लिअे चाहता है वही अपने भाअीके लिअे न चाहे तब तक वह सच्चा अिन्सान नहीं, सच्चा मुसलमान नहीं।

११ जो अपने लिअे श्रम नहीं करता अथवा दूसरेके लिअे भी काम नहीं करता, अुसे प्रभु बदला नहीं देता।

१२ अुपवास और संयमसे मेरे अनुयायी ब्रह्मचारी बनेंगे, बन सकते हैं।

१३ मनुष्यका आधा अंग स्त्री है।

१४ साध्वी स्त्री दुनियाकी सबसे कीमती, भव्य और अुम्दा चीज है।

१५ जो जानता है और तदनुसार चलता है वही सच्चा ज्ञानी है।

१६ स्त्रियों पर हाथ न अुठाओ, कुदृष्टि न डालो। अपनी स्त्रीके सिवा सब स्त्रियोंको अपनी माता, बहन या बेटीके समान समझो।

बापू कहने लगे, 'सौभाग्यसे धर्मशास्त्रोंमें अैसे बड़े कीमती कानून और प्रत्येक मनुष्यके लिअे सुखी होनेके रास्ते बताये गये हैं। अुनका आचरण

और मनन हम कर सकें तो आज हम ससारकी श्रेष्ठ मानी जानेवाली जातियोंमें प्रथम पद भोग सकते ह।

पर धोते समय बापूजीने मुझसे कहा पैगम्बर साहबके ये वचन मुझे कण्ठस्थ करके रोज सुबह मनन करे और शामको अिनमें से कितने पाले गये या नहीं पाले गये जिसका मनन ही हिसाब लगाकर तदनुसार चले तो मुझे विश्वास है कि पद्रह दिनमें अुस व्यक्तिका व्यक्तित्व अनोखा बन जाय।

मालिशकी तैयारी करनेमें मुझे नित्यकी अपेक्षा अधिक विलम्ब हुआ जिसलिअे बापूजीने बहुतसी डाक (गुजराती) को लिख डाली। यहा आज बापडीके सिवा और कोओी सुविधा नहीं है जिसलिअे सब कुछ नये सिरेसे और खुद ही किया। लगभग हफ्ते भरसे मुझे सरदी और बुखार रहता है जिसलिअे आज निर्मलदाकी दी हुअी कुननकी गोलियां मने खाओी। निर्मलदाने अपना काम छोड़कर मेरे काममें बड़ी मदद दी। हुनर भाओीने साग काटा। बापूजीने लिअे कूकर रखकर अुनकी मालिश की। सब हाथा-हाथ काम करते ह। निर्मलदा तो कलकत्ता विश्वविद्यालयके बड़े प्रोफेसर ह परन्तु चूल्हा सुलगाने बैठ गये। अिस प्रकार हमारी मडली या कुटुम्ब मिल जुलकर काम करनेवाला है। और मै सबसे छोटी हूं अिस लिअे मेरे प्रति सबकी अपार सहानुभूति है।

बापूजीको डर है कि मुझे निमोनिया हो जायगा। मुझसे कहने लगे यदि आज बुखार चढ़ा तो तुम्हें बेटनीट पर देना ही पड़ेगा। मणिलालकी तो बचनेकी आशा ही नहीं थी। मने अुस पर अुस समय खतरा अुठाकर जिसका प्रयोग किया और वह अच्छा हो गया। शायद सबसे अच्छी तन्दुरुस्ती अिस समय मुझीकी है। अिसलिअे जब सप्ताह भरसे बुखार और जुकाम नहीं जा रहा है तो अिस तरह बैठा नहीं रहा जा सकता। मने अिनकार किया।

बापूजी बोले तुमने मुझे वचन दिया है कि म कहूंगा सो तुम करोगी। अिसलिअे जो वचन न पाले अुसकी कीमत तांबेके पैसेके बराबर है।

बापूजी छोटी-छोटी मानी जानेवाली बातोंमें कहावतोंका सुन्दर अुपयोग करके हमारा काम निकाल लेते ह। और सबसे भव्य पाठ तो आज

बापूजीने पगम्बर साहबके जिन वचनोंका मनन कराया था अुनमें दिया हुआ अेक कानून है। अुसकी भी बापूजीने याद दिलाओी।

दोपहरके भोजनमें दो खाखरे, शाक और आठ औंस दूध लिया। खिलाकर और कपड़े धोकर बापूजीके पैरोंमें घी मला। मुझे बापूजीने सोनेको कहा। सोनेके पहले देशी अेण्टीफ्लोजिस्टीन — मिट्टीको छनवाकर और गरम करके अुसमें थोड़ा नमक, सूंठ और अजवायनका चूर्ण और हल्दी मिलाकर खूब अेकमेक किया और अुसे गरम गरम ही छाती और पसलियों पर लगाकर तथा रुओी रखकर मैं सो गओी। अुसके बाद ही बापूजी सोये। बापूजी बीमारोंकी असी प्रेम और चिन्ताभरी देखभाल करते हैं।

शामको बाबा (सतीशबाबू) और हेमप्रभाबहन (अुनकी पत्नी) आये।

शाम तकका काम आज धीरे धीरे निबटाया। शामको प्रार्थनामें गओी तब बुखारकी तैयारी हो असा लग रहा था। परन्तु प्रार्थनासे लौटकर बापूजीको दूधमें खारका अेक औंस चूर्ण डालकर दिया और तीन संतरे लिये। बादमें सोओी। बुखार बापूजीने ही देखा। १०५ हो गया था। सिर बहुत ज्यादा दुख रहा था। निर्मलदाका खयाल था कि आज १५ ग्रेन कुनैन पेटमें गया है अिसलिअे शायद बुखार नहीं आयेगा। परन्तु ठीक समय पर आ गया। बाबा और मा (हेमप्रभाबहन) सभी बैठे थे।

'तुम अेक अपराधीकी तरह समझदार बनकर अब सो रही हो न?' बापूजीने हंसते-हंसते कहा और 'बेडशीट पर' मुंह लेना ही पड़ा। खूब सोओी। ठेठ रातके साढ़े बारह बजे जागी। पसीनेमें तरबतर हो गओी। शैलेनभाओीने बापूजीको अखबार सुनाये। बादमें बापूजी भी सो गये। साढ़े बारह बजे मैं जागी और बापूजीने बुखार नापा। नॉर्मल हो गया था। अुठकर बापूजीका बिस्तर किया। फिर बापूजीके पैर धोये, पैर दबाये, सिरमें तेल मला और सुबहके लिअे दातुन वगैरा तैयार करके मैं और बापूजी दोनों अेक बजे फिर सोये। अेक नींदमें सुबह हो गओी। जब निर्मलदाने जगाया तब बापूजी जागे और मुझे जगाया।

प्रार्थनाके बाद प्रातःकाल मुझे शरीर-संबंधी कुछ बातें मननीय और प्रेमपूर्ण ढंगसे अिस तरह समझाओी जैसे मां अपनी बेटीको समझाती है। अुनमें से कुछ बातें प्रत्येक स्त्रीके समझने लायक होनेसे यहां देती हूं।

लडकियोंके शरीर झूठी शरमसे बिगडते हैं। अिसमें भारतका आंकडा सबसे ज्यादा है। स्त्रियां यह भूल जाती हैं अथवा अुन्हें समझाया ही नहीं जाता कि आजकी बाला कल मां बनेगी। अिसलिअ प्रत्येक भारतीय अिसके लिअ जिम्मेदार है। वह देशको महापुरुष भी दे सकती है और सत चार बदमाश या हत्यारे भी दे सकती है। जब अपनी पुत्री तेरह चौदह वर्षकी होती है तब अुस खिलती कलीसी लडकीके प्रति जो ममत्व दार भी नहीं होता और नासमझ भी नहीं होती माता पिताको सबसे अधिक प्रेम और ममत्व दिखानेकी जरूरत है। और यह जिम्मेदारी खास तौर पर माताकी है। परन्तु अिसके बजाय हमारे समाजमें अुल्टी बात होती है। वह लडकी बडी होती है अिसलिअ मानो गरीब गायसी लगती है। अुसके साथ अिस तरहका बर्ताव होता है मानो अुसने कोअी सामाजिक अपराध किया हो। बाहर कहीं भी जानेकी अुसे मनाही होती है। अिस करुण स्थितिकी करुणता अुसके कोमल मस्तिष्क पर असर करती है।

अिसी प्रकार लडकियोंकी आजकलकी पोशाकने अुनका सत्यानाश किया है। वे जितने चुस्त कपडे पहनती हैं या अुन्हें पहनाये जाते हैं कि अुन्हें देखकर मुझे दया आती है। वे पूरा श्वासोच्छ्वास ले पाती होंगी या नहीं अिसमें मुझे शंका है। फैशनने तो सत्यानाश ही कर दिया है। लडकियां अपने शरीरकी रक्षासे फैशनकी रक्षाको अधिक कीमती समझती हैं। यह हमारी कैसी दयाजनक स्थिति है? और अिन सब बातोंके कारण वे अत्यन्त दुर्बल और अशक्त बनी रहती हैं। यदि स्त्रियां कुछ न करके अपनी मर्यादा रखें अपने शरीरको नीरोग बनायें और अपने रंगढंगमें अपनी खुराकमें अपने व्यवहारमें अपनी पोशाकमें अपने वाचनमें कार्योंमें यत्न लिखनेमें तथा रहन-सहनमें पूरी सादगी और सात्त्विकताको अपनायें— और यह स्त्रियोंके लिअे स्वाभाविक वस्तु है—तो मेरा विश्वास है कि हमारी संतानें गामा पहलवान या दयानन्द सरस्वती जैसे बहादुर सात्त्विक संत (ये हमारी ही स्त्रियोंके बालक थे न?) के समान होंगी। परन्तु अैसे बालक आज अंगुलियों पर गिनने लायक हो गये हैं। मुझे असह्य आदर्श स्त्रियां चाहिये। परन्तु आज तो यह आकाशसे कुसुम तोडने जैसी बात है। अिसमें पुरुषोंका अपराध जरा भी कम नहीं है। परन्तु अब

समझे और दूसरा न समझे, तब भी बात बनती नहीं। असी लालसा रखने वाला मैं तुम्हारी मां बना हूं। यदि अिस दृष्टिसे मैं तुम्हें तालीम न दे सकूं तो मैं अपनेको असा विचार करनेका अधिकारी नहीं मानूंगा। अिस लिअे मुझे खुशी हुअी कि तुम निश्चयतापूर्वक यहां रही हो। तुम्हारे अिस साहसकी मैं कीमत और कद्र करता हूं। जब तक तुम मेरे हाथमें रहोगी तब तक मैं तुम्हें तालीम देकर तैयार करनेमें हरगिज नहीं चूकूंगा। अिसमें मेरा समय जरा भी नहीं बिगड़ता। मैं मानता हूं कि करोड़ों स्त्रियोंमें से अेक लड़कीकी मां बनकर अुसीका सही ढंगसे पालन-पोषण करके मांका आदर्श दुनियाको मैं बता सकूं तो भी यह आत्म-संतोष तो प्राप्त करूंगा कि सारे संसारकी लड़कियोंकी मैंने सेवा की।

'पुरुषोंको अेक नया पाठ दूंगा कि वे अपनी बहन-बेटियोंको अुनकी माता बनकर आदर्श शिक्षा देना सीखें। मैं मानता हूं कि मनुष्य आत्म-संतोष प्राप्त करनेके लिअे दूसरोंकी कितनी ही फटकार सहन करके और दुःख अुठाकर जब प्रयत्न करता है तब अुसमें दूसरोंकी परवाह करनेकी वृत्ति अपने-आप कम हो जाती है। परवाह करनी भी नहीं चाहिये। आत्मा ही परमात्मा है। अतः परमात्माको पानेके लिअे बड़ीसे बड़ी मुसीबत भी आ जाय तो क्या अुसे सहन न किया जाय? और क्या मानवको प्रसन्न करनेके लिअे अुसके अिशारों पर नाचा जाये? हां, अिसमें मर्यादाके लिअे काफी गुंजाअिश है। कोअी यह माने कि अुसे शराब पीने या व्यभिचार करनेमें आत्म-संतोष मिलता है और दूसरेका कहा न करे, तो यह निरा दंभ और असत्य है। यह तो तुम समझती हो न? परन्तु शुद्ध भावनासे — शुद्ध हृदयसे अिस परमात्मारूपी आत्माको संतोष देना ही मनुष्यका प्रथम कर्तव्य है। मैं यही करनेका प्रयत्न कर रहा हूं। अिसे मैं अपने अिस यज्ञका अेक अविभाज्य अंग मानता हूं। यहां मेरी जितनी परीक्षा हो सके अुतनी मुझे करनी है। मुझे अपनी ही परीक्षा देनी है। अिसमें कभी असफल हो जाअूं तो? यह सब अीश्वराधीन है। अीश्वरके सिवा मुझे किसीकी साक्षी नहीं चाहिये। सफलता असफलताकी चिन्ता हम क्या करें? और अिसमें कहीं दंभ होगा तुम भी कहीं दंभ करती होगी भले हम अुसे जानते भी न हों, तो वह संसारको मालूम हो जायगा। यह यज्ञ अनोखा है। मैं यहां लोगोंको प्रेमसे वशमें करके भाअीचारा पैदा करनेकी तपश्चर्या कर रहा हूं। अिसमें कहीं भी

दबकी गुंजाअिश नहीं हो सकती। होगा तो वह अपने-आप बाहर आयगा। और संसार अुसे जानकर मुझ पर फटकार बरसायगा। अुसमें भी हमारा भला ही है जगतका भी भला है। जगतको पाठ मिलेगा कि यह स्त्री महात्मा था। दूसरी बार वह किसीको अिस प्रकार महात्मापद नहीं देगा। संसारका तो दोनों दृष्टियोंसे श्रेय है। मैं सच्चा महात्मा होअूं या झूठा। यदि सच्चा हूं तो संसारका लाभ ही है। मेरे जीवनसे अुसे कुछ सीखना हो तो सीखे। और यदि मैं झूठा हूं तो भी संसारका लाभ है दूसरी बार वह किसीको अितनी आसानीसे महात्मा जैसा पद नहीं देगा। अिसलिअे वह सावधान हो जायगा। यह अेक और अेक दो जैसी स्पष्ट बात समझानेका मैं प्रयत्न कर रहा हूं।

१२ तारीखको पानी पीते पीते सुबहकी नीरव शान्तिमें अिस प्रकार अपने हृदयकी गहराअीसे निकली हुअी बातें अेक सांसमें बापूजीने कह डालीं। अुनके अेक अेक शब्द अेक अेक वाक्यमें अुनका वात्सल्यभाव अुमड़ता दिखाअी देता था। मुंह परसे समस्त स्त्री-जातिका चित्र प्रस्तुत करते समय अुतना ही गांभीर्य अुनके चेहरे पर झलक अुठा क्योंकि वे जिम्मेदार स्त्री-सुधारक हैं।

कफिलातली
१३-२-'४७ बुधवार

सुबहकी प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीकर जो बातें कही थीं वे कलकी डायरी भी आज लिखनेके कारण अुसमें आ गअी। कलके नोट आज प्रार्थनाके बाद जब बापूजी डाक पढ़ रहे थे तब सुबह-सुबह ही लिख डाले।

साढ़े सात बजे हैमचडी छोड़ा। रास्तेमें फ्रेण्ड्स युनिटके स्थान पर रुके थे। ये लोग बड़े सेवाभावसे काम कर रहे हैं। बापूजी अुनका काम देखकर बड़े प्रसन्न हुअे।

आज मैं बिल्कुल अच्छी हो गअी हूं। (देशी अेण्टीफ्लोजिस्टीन) गरम मिट्टीके लेपसे। यह लेप अेक ही दिन लगाया। अुसने अच्छा काम किया। कफ बिल्कुल बिखर गया। और अेक बार भी सिरमें दर्द नहीं हुआ।

यहा जात हुअे रास्तेमें भी सुबहकी बातोंके सिलसिलेमें और म अच्छी हा गजी हू अिस बारेमें बातें करत हुअे बापूजीने मुझे समझाया। वे बोले

म तुम्हें गढ रहा हू। अिसमें सफलता मिलेगी या असफलता यह मैं नही जानता। कुम्हार जब घडे या हडिया बनाता है तब अुसे पता थाडे ही रहता है कि आवामें डालनेसे व फट या टूट जायेंगे। वह बेचारा आनदसे, अुत्साहसे बच्चे सुन्दर आकार बना बनाकर आवामें रख देता है। अुनमें से कुछ टूट जाते ह कुछ तडक जाते ह और कुछ सुन्दर और पक्के बनकर निकलत ह। अिस प्रकार मैं ता कुम्हार ठहरा। अिस समय कुम्हारकी तरह अच्छे घडेकी आशासे म तुम्हें तयार कर रहा हू। वह टूट जाय या फूट जाय तो मेरी और तुम्हारी तकदीर। तुम या म कोअी भी क्या करें? अिसलिअे हमें अिसकी चिन्ता करनी ही नही चाहिये। हमें ता कुम्हारकी तरह अितना ही देखना है कि मिट्टी अच्छी खूब दर्जेकी हो ककरीली न हा और आकार सुदर और पक्का बने। आवामें जानेके बादकी चिन्ता करनेवाला ता अीश्वर है। अिसी तरह हमारे अिस यत्नमें सत्य, शुद्धता और निर्मलता हो, कही दभका नाम न रह क्षण क्षण पर सावधान कदम अुठाया जाय अपने हृदयस दस बार पूछा जाय और किसीको अच्छा-बुरा लगनेकी परवाह न करके विवेकपूवक जा सच हो वही किया जाय। यदि म यह मानता ह कि असी मिट्टी मेरे पास है, तो मुझे आकार गढनेमें कोअी बाधा नही होगी। यदि मिट्टीमें ककर हा (अर्थात् तुममें कोअी दोष हा) तो वे आकार गढनेमें बाधक ही हागे। तुम मिट्टी हा और म आकार तयार करनेवाला कुम्हार हू। मने तुम्हारी तारीफ लिखी है। अिसलिअे तुम्हें सचेत करता हू। तुम मुझ जो भी पूछना हा निडर हाकर पूछ सकती हो। परन्तु सत्यके लिअे लडना तो मेरे लिअे अेक खेल है। अैसी लडाअियासे म कभी हारता नही। अभी तक अीश्वरने निभाया है।

तुम देखोगी कि मने अमा बहुत बनाया है और बहुत तोडा है। साबरमती जसे आश्रमका बिखेर देनेमें मुझे देर नही लगी। अिसलिअे अिस काममें भी मुझे जरासी भी ककरी दिखाअी दगी तो अुस कुम्हारकी हडियाकी तरह अिसे तोड डालनेमें मुझे देर नहीं लगेगी। तुम सतत जाग्रत रहो अिसीलिअे आज सुबहसे तुम्हें यह सब कह रहा हू।'

बापूजीकी सुबहकी बातोंसे भी आज अभीकी बातें मुझे अपने लिये अधिक गंभीर लगी। क्या बापूजीके पास रहना तेज तलवारकी धार पर चलनेके बराबर नहीं? प्रभु इस परीक्षामें पास होनेका बल मुझे दे रहा है यह उसकी असीम कृपा है।

डॉ० सुशीलाबहन नय्यर रेड क्रास केन्द्रमें थीं। वे हमारे साथ ही यहां आओ। वे कस्तूरबा ट्रस्टकी बैठकमें शरीक होने दिल्ली जा रही हैं। सुशीलाबहनने बापूजीका ब्लड प्रेशर (खूनका दबाव) देखा। १९२/११० था। यहां साढ़े सात बजे पहुंचे। मालिश स्नान वगैरासे निबटनेमें ग्यारह बज गये। भोजनमें बापूजीने दो खाखरे दूध सन्देशका अेक छोटा टुकड़ा और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। भोजन करते हुअे कुछ डाक सुशीलाबहनके साथ दिल्ली भेजनेकी तैयारी की। साढ़े बारहसे अेक तक आराम किया। बादमें काता। कातते कातते पत्र लिखवाये। अढ़ाई बजे नारियलका पानी लिया। साढ़े तीनसे चार तक मिट्टी ली। आज सिर और पेडू पर दो पट्टियां लीं। मुलाकाती आते ही रहे थे। फिर भी दस मिनट सो लिये। प्रार्थनाके बाद स्टीम किया हुआ अेक सेब और आठ औंस दूध लिया। घूमकर लौटने पर अखबार सुने और डाक सुनी। रातको गरम पानी और शहद लिया।

बापूजीको रातमें काफी थकावट मालूम हुअी। पौने दस बजे बिस्तर पर लेटे।

बापूजीके सो जानेके बाद मैं जरा भी जागती हूं तो अुन्हें अच्छा नहीं लगता। अिसलिअे मैं बापूजीके सोनेके समयसे पहले सब काम कर लेनेकी कोशिश करती हूं।

पूर्व बेरवा
१४-२-४७

रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे साढ़े तीन बजे अुठे। दातुन करके प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाका पाठ किया। फिर मेरी डायरी सुनकर हस्ताक्षर किये। डाकका काम पूरा करके थकावट मालूम होने पर बापूजी सवा छः बजे सो गये। सवा सात बजे अुठे।

बापूजीके आजके पत्रोंमें ये बातें थीं : 'जो मनुष्य अनीतिको अपनाता है वह संग करने योग्य नहीं है। अुसका कितना भी मूल्य

लगाया जाता हो, तो भी हमें अुसकी परवाह नहीं करनी चाहिये। अब तक तो अीश्वरने मेरी लाज रखी है। मनुष्यकी सजाको तो मैं पी गया हूँ।

बापूजी कितने अीश्वरमय हो गये हैं, यह आजके अुनके पत्रसे मालूम होता है।

के बारेमें कमीशन नियुक्त करनेके सबंधमें बापूजीने अपनी राय प्रगट की। बापूजी मानते हैं कि जिसकी जड़में सत्य है अुस पर कुछ आरोप लगाया जाने पर पंच द्वारा तटस्थ जाँच होनेमें किसीको कोई आपत्ति होनी ही नहीं चाहिये। बल्कि जाँचके लिअे पंच नियुक्त करनेका आग्रह रखना चाहिये। साँचको कभी आँच होती ही नहीं।

हमने साढ़े सात बजे कफिगनली छोड़ा और आठ बजकर दस मिनट पर यहाँ पहुँच गये। गाँव बहुत पास ही लगा।

आज ठंड और बादल हैं। यहाँ आकर बापूजीके पैर धोये। फिर अुन्होंने शैलेनभाअीसे 'शिक्षण' पुस्तककी अंतिम बंगला कविता पढ़ी और अुसका अनुवाद किया। किसी भी बंगला जाननेवालेको बापूजी अपना गुरु बना लेते हैं, भले वह बालक हो या बड़ा।

हवा ज्यादा चलने और बादल होनेके कारण मालिश अंदर ही की। स्नानके बाद भोजनमें आज खाखरे छोड़ दिये। सिर्फ आठ औंस दूध और जरा-सी खोपरेकी पीसी हुअी गिरी ली।

दो बजे गरम पानी, शहद और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। चार बजे नारियलका पानी पिया। भोजनका यह सारा परिवर्तन बापूजीको खूब काम रहता है अिसलिअे किया।

शामको दूधका पानी लिया और गोपीनाथ बारदोलाअी, मौलाना साहब, जवाहरलालजी और जयरामदासजीको पत्र लिखवाये।

बापूजी मुहम्मद साहबके वचनामृत पढ़ रहे थे, तब तीनेक मुसलमान भाअी आये। अुन्होंने कहा: 'हमें आशीर्वाद दीजिये कि हमारा दिल साफ रहे।' जिस पर बापूजी बोले:

मुहम्मद साहबने कहा है: अिस दुनियामें रहो, मगर अेक मुसाफिरकी तरह या आकर चले जानेवालेकी तरह रहो। मौत किसी भी वक्त आकर अिन्सानको पकड़ लेगी। सबसे अच्छा आदमी वह है जो अधिक समय जीकर अच्छे काम करता है। मनुष्यकी परीक्षा अुसके बोलने या कहनेसे

अकेला चलो रे

बापूजीकी सुबहकी बातासे भी आज अभीकी बातें मुझ अपने लिअ अधिक गभीर लगी। क्या बापूजीके पास रहना तेज तलवारकी धार पर चलनके बराबर नही? प्रभु अिस परीक्षामें पास होनका बल मुझे दे रहा है यह उसकी असीम कृपा है।

डा० सुशीलाबहन नय्यर रेड क्रास केन्द्रमें थी। वे हमारे साथ ही यहा आओी। वे कस्तूरबा ट्रस्टकी बैठकमें शरीक होने दिल्ली जा रही है। सुशीलाबहनने बापूजीका ब्लड प्रेशर (खूनका दबाव) देखा। १९२/११० था। यहा साढे सात बजे पहुचे। मालिश स्नान वगैरासे निबटनमें ग्यारह बज गये। भोजनमें बापूजीने दो खाखरे दूध सन्देशका अक छोटा टुकडा और अक ग्रेपफ्रूट लिया। भोजन करते हुअ कुछ डाक सुशीलाबहनके साथ निपटी भजनकी तयारी की। साढे बारहमे अक तक आराम किया। बादम काता। कातते कातते पत्र लिखवाये। अढाओी बजे नारियलका पानी लिया। साढे तीनसे चार तक मिट्टी ली। आज सिर और पेडू पर दो पट्टिया ली। मुलाकाती आते ही रहे थे। फिर भी दस मिनट सो लिये। प्रार्थनाके बाद स्टीम किया हुआ अक सेब और आठ औंस दूध लिया। घूमकर लौटने पर अखबार सुने और डाक सुनी। रातको गरम पानी और शहद लिया।

बापूजीको रातमें काफी थकावट मालूम हुओी। पौने दस बजे बिस्तर पर लेटे।

बापूजीके सो जानेके बाद मैं जरा भी जागती हू तो अुन्हें अच्छा नही लगता। अिसलिअे मैं बापूजीके सोनेके समयसे पहले सब काम कर लेनकी कोशिश करती हू।

पूर्व बेरवा
१४–२–४७

रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे साढे तीन बजे अुठे। दातुन करके प्रार्थनाके बाद बापूजीने बगलाका पाठ किया। फिर मेरी डायरी सुनकर हस्ताक्षर किये। डाकका काम पूरा करके थकावट मालूम होने पर बापूजी सवा छ बजे सो गये। सवा सात बजे अुठे।

बापूजीके आजके पत्रोंमें ये बातें थी जो मनुष्य अनीतिको अप नाता है वह सग करने योग्य नही है। अुसका कितना भी मूल्य

लगाया जाता हो, तो भी हमें अुसकी परवाह नहीं करनी चाहिये। अब तक तो अीश्वरने मेरी लाज रखी है। मनुष्यकी सजाको तो मैं पी गया हूं।'

बापूजी कितने अीश्वरमय हो गये हैं, यह आजके अुनके पत्रसे मालूम होता है।

... के बारेमें कमीशन नियुक्त करनेके सबधमें बापूजीने अपनी राय प्रगट की। बापूजी मानते हैं कि जिसकी जड़में सत्य है अुस पर कुछ आरोप लगाया जाने पर पंच द्वारा तटस्थ जांच होनेमें किसीको कोअी आपत्ति होनी ही नहीं चाहिये। बल्कि जांचके लिअे पंच नियुक्त करनेका आग्रह रखना चाहिये। सांचको कभी आंच होती ही नहीं।

हमने साढ़े सात बजे काफिलातली छोड़ा और आठ बजकर दस मिनट पर यहां पहुंच गये। गांव बहुत पास ही लगा।

आज ठंड और बादल हैं। यहां आकर बापूजीके पैर धोये। फिर अुन्होंने शैलेनभाअीसे शिक्षण पुस्तककी अंतिम बंगला कविता पढ़ी और अुसका अनुवाद किया। किसी भी बंगला जाननेवालेको बापूजी अपना गुरु बना लेते हैं भले वह बालक हो या बड़ा।

हवा ज्यादा चलने और बादल होनेके कारण मालिश अन्दर ही की। स्नानके बाद भोजनमें आज खाखरे छोड़ दिये। सिर्फ आठ औंस दूध और जरा-सी खोपरेकी पीसी हुअी गिरी ली।

दो बजे गरम पानी, शहद और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। चार बजे नारियलका पानी पिया। भोजनका यह सारा परिवर्तन बापूजीको खूब काम रहता है अिसलिअे किया।

शामको दूधका पानी लिया और गोपीनाथ बारडोलाअी, मौलाना साहब जवाहरलालजी और जयरामदासजीको पत्र लिखवाये।

बापूजी मुहम्मद साहबके वचनामृत पढ़ रहे थे, तब तीनेक मुसलमान भाअी आये। अुन्होंने कहा, 'हमें आशीर्वाद दीजिये कि हमारा दिल साफ रहे।' अिस पर बापूजी बोले

'मुहम्मद साहबने कहा है अिस दुनियामें रहो मगर अेक मुसाफिरकी तरह या आकर चले जानेवालेकी तरह रहो। मौत किसी भी वक्त आकर अिन्सानको पकड़ लेगी। सबसे अच्छा आदमी वह है जो अधिक समय जीकर अच्छे काम करता है। मनुष्यकी परीक्षा अुसके बोलने या कहनेसे

मालिश और स्नानके बाद भोजनमें तीन खाखरे छ औंस दूध, शाक और 'यीस्ट' लिया। फलोंमें सेव सतरा और अेक ग्रेपफ्रूट लिया। खाते खाते जवाहरलालजी और वारडालाअीजीको पत्र लिखाये।

आजके पत्र मुझसे खाते खाते लिखवाये, अिसलिअे म देरसे नहाअी और देरसे भोजन किया।

बापा (ठक्करबापा) का हैमचरसे लिखा हुआ ८-२-४७ का कार्ड आज मिला। पासके गावका कार्ड सात दिनमें मिला। असा यहाका डाक विभाग है।

अिस गावके लोग बापूजीको अभिनन्दन-पत्र देना चाहते ह जिनमें मुसलमान भाअी भी ह। लकडीका खुदा हुआ सुदर कास्केट बनाया है।

बापूजीकी यहा कसी ज्वलन्त विजय हो रही है, अिसका वर्णन करना कठिन है। जहा राम शब्द ही नही लिया जा सकता था, वहा रास्ते भर यात्राके दौरानमें रामधुन और भजन गाये जाते ह। मुसलमान भाअी-बहन यह आग्रह करते ह कि बापूजी अुनके यहा ठहरें, और अभिनन्दन पत्र देनेका या अैसा ही कोअी सार्वजनिक काम करना हो तो अुसमें गावकी प्रत्येक जातिके लोग मिलकर काम करते ह। यह कोअी छोटीसी बात नही है। बापूजीने भजनकी 'परथम पहेलु मस्तक मूकी' (सबसे पहले मस्तक रखकर) कडीको प्रभावशाली ढगसे आचरणमें अुतारा है। अिसीलिअे अुन्हे अैसी ज्वलन्त विजय मिल रही है। फिर भी वे कभी अैसा दावा नही करते कि यह सब अुनके द्वारा हुआ है। निष्काम कर्मयोग करनेवाले बापूजीके मुहसे सदा यही निकलता है कि 'भगवान ही सब कुछ करा रहा है।'

यह मानपत्र सार्वजनिक सभामें पढनेके लिअे मना करते हुअे बापूजीने कहा, 'मानपत्र मुझे अभी ही दे दीजिये। असे समयमें मानपत्र कसे लिया जाय? प्रेम तो हृदयका होना चाहिये। और हृदयके प्रेमका प्रदर्शन करनेकी जरूरत नही होती। मने क्या किया है? जो कुछ आपको अच्छा लगता है वह तो खुदाकी मेहरबानीसे ही हुआ है। प्रेमको हृदयमें रखकर काम कीजिये। मेरे प्रति आपके दिलमें प्रेम हो तो मेरा काम कीजिये। यही मुझे मानपत्र देनेके बराबर है। न तो लोगोंको डराअिये और न लोगोंसे डरिये।

अपरकी बार बापूजीने चार पांच आदमियोंसे कहीं जिनमें हिन्दू मुसलमान जुलाहे वगैरा गांवके प्रतिनिधि थे और घर कातनेका व्रत ले लिया। अिन लोगोंकी अिच्छा प्रार्थना सभामें मानपत्र देनेकी थी।

यह खादीका बास्कट मुझे अच्छा लगा। कलाकी दृष्टिसे तो सुन्दर है ही। परन्तु मन मुझे अिस अैतिहासिक यादगार विजय चिह्नके रूपमें अपने पास रखनेकी बापूजीसे मांग की। बापूजीने फौरन हंसते हुअे मंजूर किया। मैं जानता हूं तुम्हें अैसी चीजें संग्रह करनेका शौक है। परन्तु अिससे प्रेरणा लेती रहोगी तो मुझे अच्छा लगेगा। *

निर्मलबाबू विजयनगर गये हैं। प्रार्थनामें प्रवचनका अनुवाद श्यामलालजीने किया। पहले बापूजीने शान्तिभाअीसे करानेको कहा था। प्रार्थनामें जाते हुअे अब्दुलगनीके पुत्र सदरुद्दीनभाअी मिले। अुन्होंने बहुत-सी बातें सुनाअीं। प्रार्थनाके बाद यहांके जैन मन्दिरमें पाकिस्तान केन्द्र बनाया गया था अुसे देखने गये। बाबाके साथ अिस सम्बन्धमें बातें हुअीं। योग्य कारवाअी करनेका स्थानीय भाअियोंने आश्वासन दिया।

यहां अिमाम साहब बीमार थे अुन्हें भी देखने गये।

अिस थानेमें छः यूनियन हैं। यह चौथा है। आबादी ४५००० है। अिस यूनियनकी आबादी २२००० है। अिसमें ९५ फी सदी मुसलमान और ५ प्रतिशत हिन्दू हैं। हिन्दू जमीदार व्यापारी या जुलाहे हैं।

बापूजी साढ़े नौके बाद बिछौने पर लेटे। कातना बाकी था अिसलिअे कातते समय रातका अखबार सुने।

रायपुरा
१६–२–४७

रोजकी भांति प्रार्थनाके लिअे अुठे। अिस गांवमें आज दूसरा दिन बिताना है। अिसलिअे सवेरे कोअी विशेष काम नहीं रहा। प्रार्थनाके बाद बापूजीको गरम पानी और शहद देकर कुछ पत्रोंकी नकल की। अपनी डायरी लिखी। और घरके लिअे पत्र लिखा। बहुत दिनोंके बाद घर पत्र लिख

---

* आज वह अैतिहासिक बास्केट सचमुच मेरे पास प्रेरणात्मक प्रसादीके रूपमें सुरक्षित है।

सकी। समय ही नही रहता। अब अेक गावमें दो दिन रहना हो तभी पत्र लिख डालनेका नियम रखनेका बापूजीने कहा। मेरी बडी बहनने बापूजीसे शिकायत की थी कि मने अुन्हे अेक महीनेमे पत्र नही लिखा। अिसलिअे बापूजीने रस पीते समय मुझे डाटा और अपने सामने बठाकर सबको पत्र लिखनेका आदेश दिया।

ठीक साढे सात बजे घूमने निकले। ने कुछ प्रश्न पुछवाये ह। अुनके बारेमें बापूजी कहने लगे ये प्रश्न मुझीसे पूछने चाहिये थे। भाषा शिथिल है। में कुछ अपलक्षण (दोष) ह, जो प्रगट हुअे बिना नही रहत। परन्तु मनुष्यमें जब अेक तरहका घमडीपन आ जाता है तब वह अपने अवगुण नही देख सकता। गव मनुष्य-जातिका दुश्मन है। परन्तु मुझे दुश्मन, शत्रु आदि शब्द ही अच्छे नही लगते। असलमें वह गवका अथवा अपनी भूलका समझकर अिस कमजोरीको दूर कर दे तो कितना अूचा चढ सकता है? अिसलिअे अुमके जीवनसे हमें सबक मिलता है। अुसे हम दुश्मन कस कह सकते ह? म तुम्हारी भूलें निकालकर तुम्ह बताअू ता तुम्हारा दुश्मन थोडे ही बन जाता हू? अिससे तो तुम्ह सीखनेका मिलता है। अिसी तरह यदि हम अपने घमडीपनका पहचान सकें तो जीवनमें बहुत अूचे अुठ जाय। परन्तु यह पहचाननेकी शक्ति सबका स्वय ही प्रगट करनी हाती है। जो व्यक्ति अन खाता है अुस व्यक्तिको अपनी आता द्वारा शरीरकी शक्तिके अनुसार अुम अन्नका पचाना पडता है। आतें शुद्ध हागी ता पाचक रस अपने-आप पदा हागे—अन्नका खून ही बनेगा। और आतें कमजार हागी ता वह व्यक्ति रागी बनेगा। अिसी तरहका विधान मनुष्यके प्रत्यक काय पर लागू होता है।

घूमकर लौटने पर बापूजीके पर धोये। मालिश और स्नानके बाद भाजनमें बापूजीने अेक खाखरा आठ औंस दूध और शाक लिया। बादमें मगालसाबहन और किशारलाल काकाको पत्र लिखे। दा बजे गाववालोंके प्रीति भाजमें गये। वहा बडा शोरगुल था। बापूजीने कोअी खास बात नही कही। साढे तीन बजके करीब लौटे। आकर बापूजीने बची हुआ अेक पूनी काती। कातकर सिर और पट्टू पर मिट्टी ली। पर दबाते समय फिर अन्नकी पाचन क्रिया परसे मनुष्यके नतिक व्यवहारकी बात कही और नम्रता बढाने पर जोर दिया तथा अिन बाता पर विचारनेका कहा।

अक्सा चलो रे

मुझ तब यूनियनके अध्यक्ष मजल्ल हक सयद अहमद और अस्तर जमान साहब आय। अुन्होने यह शिकायत की कि हिन्दुस्तान मुझ मुकदमे चलाये ह। बापूजीने वहा अगर मुझ केस हाग तो मुझे मजा हागी। नाम-पते वगराके विना म क्स विचार कर सकता हू?

प्राथनाके बाद बिडलाजीके मुनीम भरतरामजी आये। बिड़ला वाम गारोकी तरफसे २५५३ रुपय नोआखाली कष्ट निवारणके लिअ दे गय।

आजकी प्राथनामें बहुतसे मुसल्मान भाओ थ। मुख्य मौलवियामें थी मजमल्अली चौधरी फजलुल रहमान फजलुल हक काजी अजीजुल्ला रहमान और कमीजुल्ला साहब थ।

अिन सबके मनमें बापूजीके प्रति अच्छा आदर है असा मालूम हाता था। म प्राथनामें कुरानकी जो आयत बोल्ती हू अुसके अुच्चारणमें जरासा सुधार करनेकी अक मौल्वी साहबने सूचना की। अिसलिअ बापूजीने अुनके पास आध घटे बठकर सही अुच्चारण सीख लेनेको कहा। रातको आठ बजे जब बापूजी अखवार सुन रहे थ तब मौल्वी साहबने बडे प्रमसे मुल सही अुच्चारण सिखाया।

शामको बापूजीने अक केला और छ औस दूध लिया। और सोते वक्त गरम पानी शहद म सोडा लिया।

बापूजीके औसत तार अब १०० या कभी कभी १५० भी हो जाते ह। सात यूनियोसे अितने तार निकलते ह।

पौन दस पर सोनकी तयारी की। रोजकी भाति बापूजीके पर दबाकर सिरमें तेल मलकर और प्रणाम करके म भी फौरन सो गयी। मौनके कारण सब कुछ शान्त है।

देवीपुर
१७-२-४७ सोमवार

रोजकी तरह प्राथनाके बाद बापूजीने बगलाका क्वहरा लिया। गरम पानी पीते हुअ डायरी सुनी और हस्ताक्षर किय। बादमें डाकका काम शुरू हुआ।

अक पत्रमें बापूजीने लिखा पिछले पत्रका जवाब बाकी ही था कि आज दूसरा पत्र आ गया। पहले पत्रका अत्तर तुरन्त दने लायक नही था। मुझ पर आजकल काम और विचारका खासा भार रहता है। यहाका काम

दिन दिन सरल नहीं बल्कि कठिन होता जा रहा है। क्योंकि हमले बढ़ते जा रहे हैं। फिर भी मेरा विश्वास बढ़ रहा है। साथ ही हिम्मत भी। अन्तमें तो करना या मरना ही है न? बीचमें कुछ है ही नहीं। मेरी तीसरी यात्रा कब शुरू होगी यह निश्चित नहीं है। दिसम्बर २५ तारीखको पहुंचना है। आगेका आधार तो मेरी थकावट पर रहेगा। २५ तारीख तककी यात्रा ीश्वर पूरी करा दे तब भी अच्छा ही समझूंगा।

अेक लड़कीने मेरी तरह बापूजीके साथ रहनेकी मांग की। अुसके अुत्तरमें लिखा तुम मेरे पास आना चाहती हो यह विचार मुझे पसन्द है। परन्तु जब मैं रोज अेक नये गांवकी यात्रा करता हूं तब सभी प्रकारकी परेशानियां और मुसीबतें होती हैं। गांवोंमें घूमते हैं तब चीजें बहुत नहीं मिलतीं, जगहकी तंगी रहती है, और पानी तो बहुत ही खराब होता है। असी स्थितिमें तुम्हें बुलानेका साहस नहीं होता। अिसलिअे मेरी अिच्छा यह है कि तुम थोड़ा धीरज रखो। प्रभुकी अिच्छा होगी तो असा समय आ जायगा जब तुम मेरे साथ रह सकोगी। तुम्हारे लिखे अनुसार तुम्हारा काम अच्छा चल रहा है। तुम वहीं प्रगति करती रहो। बुननेके काममें खूब कुशल हो जाओ और कातनेके काममें भी पहला नम्बर रखो तो अमूल्य साबित हो सकती हो। क्योंकि तभी सब जगह तुम्हारा अुपयोगिता सिद्ध होगी। मराठी तो अच्छी सीख ही ली होगी। न सीखी हो तो सीख लेना। नैसर्गिक अुपचारके बारेमें विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर लेना। अुर्दू लिपि और भाषाका बढ़िया ज्ञान प्राप्त कर लो। संस्कृत भी सीख लो। यह सब विनोदमें ही कर लेना चाहिये। असा करोगी तो समय कहां चला जाता है, अिसका पता भी नहीं चलेगा। पत्रों द्वारा मुझसे मिलती रहना। [redacted] का बुखार अभी मिटा नहीं यह अच्छा नहीं लगता। तुम नैसर्गिक अुपचारका अच्छा अध्ययन कर लो यह सरल है। फिर तो तुम ही [redacted] का बुखार मिटा सकती हो। अुसके खानेकी संभाल रखनी चाहिये। मैं मानता हूं कि कटिस्नान घर्षण स्नान और मिट्टीकी पट्टियां देनी चाहियें। अुसका मस्तिष्क शान्त होना चाहिये। और रामरटन करना चाहिये।'

अेक और पत्रमें [redacted] यहांका डाक विभागका काम ढीला है। डाककी दृष्टिसे मैं बहुत दूर हूं।

आजके विविध पत्राम बापूजीकी मानसिक दशाका और यहाकी स्थितिका खयाल होता है।

६–५० तक काम किया। बादमें पद्रह मिनट आराम किया। मने सामान बाधा। कुछ सामान आगे भेज दिया। ७–३५ को रातके समय यात्रा आरभ हुआी। ८–५५ का रायपुरास यहा पहुच।

यहाका स्वागत भव्य था। लोगान बडे प्रम और श्रद्धास तयारिया की थी। ध्वज तोरण पताका वगरा सजावट की गअी थी। यह सब बापूजीकी हिम्मत पर ही हुआ।

बापूजीका आज मौनवार है। असलिअे कुछ गभीर विचाराम लीन मालूम होत ह।

पर धाकर 'गलनभाआव' पास थोडासा बगलाका पाठ पढा। अिननमें मन मालिशकी तयारी की। मालिश और स्नानक बाद भाजनमें शाक छानकर असमें पिसे हुअे पाच बादाम और पाच काजू डाले। गरम दूधमें अेक नीबू निचोया और वह फटा हुआ दूध आठ औंस लिया। भाजनके बाद अेक घटा आराम किया। मने परोमें घी मलकर बहुतसे कपड धोन थ सो धोय। बापूजीका सूत दुबटा किया। कागज जमाये। बहनाके पास गअी। भाजन किया। अिननमें बापूजी अुठे और अक नारियलका पानी पिया। बादमें कातो। कातते समय मने पत्र सुनाय। तीन बज मिट्टी ली। बापूजी आध घटे सोय। शामको ग्रेपफ्रूट और आठ औंस दूध लिया।

दूध पीते पीते वक्त हो जानसे बापूजीका मौन खुला। सुबहकी अितनी आकपक सजावटकी तरफ दिनभर मेरा ध्यान नही गया। अिसलिअ बापूजीन मुझसे कहा "तुम्हे यह जानना चाहिअ कि ये सब चीज अिन लागान कहासे जुटाअी और यहाक मुख्य कायकता कौन ह अित्यादि।

अब मेरी समझमें आया कि आज बापूजी जरा गभीर क्या थ। म सारी बात समझ गअी। म तुरत दौडी और मने सारी जाच की। अिस गावमें तीन सौ हिन्दू और पद्रह सौ मुसल्मान है। हिन्दुओमें ब्राह्मण कायस्थ और शूद्र ह। सजावट लाल-पीले कागजो तल और घीके दीयो, और जरी तथा पताकाओसे की गअी थी। देहातमें तो असी वस्तुअें

हरगिज नही मिलती। असलिअे कार्यकर्ताको बुलाकर बापूजीने पूछा 'आप ये सब चीजें कहासे लाये?'

अुस भाअीने कहा बापू आपके चरण हमारे यहा कब पडते! आप आनेवाले थे असलिअे हम सबने आठ आठ आने देकर तीन सौ रुपये अिकट्ठे किये थे। अुसीमें से हमने यह खर्च किया है।

अिससे बापूजी बडे दुःखी हुअे य फूल और जाहाअिल्लो तो क्षण भरमें मुरझा जायगी। अिसस मुझे यही लगता है कि आप सब मुझे धोखा दे रहे है। मेरी हिम्मत पर यह ठाटबाट रखकर साम्प्रदायिक भावनाको आप अधिक अुत्तेजित कर रहे है। आपको पता है कि म अिस समय अग्निकी ज्वालाओंमें जल रहा हू। अितनी अधिक फूलमालाअें सजाअी गअी है अिनके बजाय सूतके हार सजाये जाते तो मुझे अितना न खटकता। क्योंकि वे हार शोभा बढाते है और अुनसे कपडा भी बनता है। जिसलिअ कुछ भी बेकार नही जाता। मेरे खयालसे अिस गावमें रुपया बहुत है। नहीं तो अिस कठिन समयमें आपको असी सजावट करनेकी बात न सूझती। आपके मनमें मेरे लिअे जो प्रेम है अुसे साबित करनेका यदि यह सारी सजावट की हो तो यह बिलकुल अनुचित है। अिसस प्रेम जरा भी प्रगट नही होता। आपको मेरे प्रति प्रेम हो तो मेरे कहने पर अमल करे। अुतना मेरे लिअे काफी है। जितने कत्लेआमके बाद अिन फलो पर रुपया खर्च करना आपको कैसे सूझा होगा यही म समझ नही सकता। और फिर आप तो काग्रेसके कार्यकर्ता है सार्वजनिक कार्यकर्ता है। आप कहते है कि आपने मेरी पुस्तकें पढी है। आप अेम० अे० तक पढे है। फिर अिस सजावटमें विलायती और देशी मिलका कपडा रेशम और रिबन वगैरा काममें लिये गये है। यह सब मेरी दृष्टिमे दुःखद है, अितना ही कहना चाहता हू।

'आपके अुदाहरण परसे म अपने समस्त साथी कार्यकर्ताओंका विचार करता हू तो शका अुठने लगती है कि जो लोग अेक दिन देशसेवकके रूपमें जनताके सेवक माने जाते थे व ही कार्यकर्ता कोअी पद या सत्ता मिलने पर किसी तरह तो फूलहार पहनाने या पहननेके लालचमें नहीं फस जायगे। म देखता हू कि आज भी म छाती ठोककर यह नही कह सकता कि मेरे कार्यकर्ताओंमें से किसीकी भी परीक्षा ली जाय तो वह सच्चा

सादगीका जीवन बितानवाला ही मिलगा कितने ही मोटर-बगले हो तो भी वह अपना ध्यय नही छोडगा। आज यह वात नही है। ठीक है आजकी अिस घटनान मुझ अधिक जाग्रत बना दिया है। अिसमें म आपका दोष नही दखता। आप तो जसे थ वसे दिखाअी दिय। परतु अिससे अीश्वर मुझ अिस बातका भान करा रहा है कि म कहा हू। पता नही अभी तकदीरमें और क्या क्या देखना लिखा है?

बापूजी अपन हृदयकी तीव्र व्यथाको धाराप्रवाह रूपमें प्रकट कर रहे थ। बचारे कायकर्ता भाअी शरमिन्दा हो गय। अुन्हे क्या पता था कि सजावटका परिणाम यह आवेगा? बापूजीने हारो और पताकाओंमें जितना धागा काममें लिया गया था अुसका गोला बनानकी सूचना की। बीस छोटी छोटी आटिया हुआ। प्राथनाके बाद रातको आटिया लेकर व भाअी आय। बापून मुझसे कहा तुमन देख लिया? अिन बीस आटियासे कितने कपडाको जोड लग सक्त ह? यह सब दखना तुम्ह सिखाना चाहता हू। तुम जहा देखो कि अमुक काम मरे स्वभावके विरुद्ध हुआ है वहा तुम्हे जाग्रत होकर पूछताछ कर लनी चाहिय। वसे निमलबाबू करते तो ह। तुम्हे अपन भीतर व्यावहारिक दृष्टि पदा करनी चाहिय। अीश्वर करगा तो वह भी हो जायगा। परन्तु तुम अितना जान लो कि अिस समय तुम्ह जिस ढगसे म शिक्षा दे रहा हू अुस ढगसे मन किसीको नहा दी है। प्रभावतीको जरूर कुछ दी थी। परन्तु अिस तरह बिलकुल अकेलीको नहा दी। आगाखा महलमें तुम्ह अस पाठ नहा मिल्त थ। वहा ता बा लाड लडाती थी न? परतु वहा भी कुछ तालीम तो मिली ही है। अुसमें य सब पाठ पूरक बन रहे ह।

रातको जब बापू लटे हुअ थ और म अुनके पर दबा रही थी तब अुहान मझस यह वात कही।

असा ही दूसरा प्रसग कहती हू जिसस मुझ पाठ मिला।

नोआखालीमें मेरा पेट बहुत दुख रहा था अिसलिअ रातको गरम पानीका सेक करनका बापूजीन कहा था। परन्तु म गरम पानी करना भूल गअी। सोने वक्त मुझ पूछा क्या सक की थी? मन अिनकार किया और पानी गरम करना रह गया वगरा बातें कहीं। बापूजीको यह अच्छा न लगा। व बोले जो आदमी अपन काममें आलस्य करे वह कभी न कभी दूसरेके

काममें भी आलस्य करेगा। तुम्हारा शरीर तुम्हारा नहीं अीश्वरका है। जैसे किसी मकान-मालिकका मकान हम किराये पर लेते हैं तो अुसे साफ रखते हैं, किसी समय मकानको नुकसान पहुंचा हो तो अुसकी मरम्मत कराते हैं और असा करनेसे ही मकानकी सुघड़ता बनी रहती है तथा रहनेवालेकी प्रतिष्ठाकी रक्षा होती है, वैसे ही हमारा शरीर अीश्वररूपी गृहस्वामीका है। अिसमें कभी कोअी टूट-फूट हो तो अुसकी मरम्मत करना अपना फर्ज समझकर अुसे अदा करना चाहिये। नहीं तो अीश्वर नाराज होगा ही। अीश्वरका फरमान आयेगा तब अिस शरीररूपी घरको हमें छोड़ना पड़ेगा। परन्तु यदि अिस शरीरका हमने संभालकर रखा होगा और अिसके द्वारा लोगोंकी सेवा की होगी तो ही अिसका जाना सार्थक होगा। तो ही अीश्वर प्रसन्न होगा। वर्ना अिस पृथ्वी पर जो असंख्य कीड़े-मकोड़े रेंगते हैं अुन्हींमें से हम भी माने जायंगे। सोना बैठना खाना पीना सब नियमित हो तो बीमार पड़नेकी नौबत ही न आये। परन्तु कभी शरीरके कलपुर्जे चलते चलते अटक जायं तो वह अीश्वररूपी महान गृहस्वामीका है, असा मान कर अुसकी सेवा करनी ही चाहिये।'

फिर दस बजे बाद गरम पानी कर देनेको कहा। अिसलिअे मुझे सोनेमें देर हो गअी।

बस तो सब कुछ नियमित ढंगसे हो रहा है। दिनभर मौन रहा, अिसलिअे वातावरण शान्त था। परन्तु मौनके बाद हम सबको समझानेमें बापूजीको बड़ा श्रम हुआ। हमारा मुकाम राजकुमारभाअीके यहां है जो कायस्थ हैं और खेती करते हैं। बस्तीमें ३०० हिंदू और १५०० मुसलमान हैं।

आजकी डायरीमें बापूजीने हस्ताक्षर करके अिस प्रकार लिखा है :

आम्रूनिया,
१८-२-४७

आज मुझे क्रोध आ गया। यह है मेरी अनासक्ति। अिससे अपने आप पर अरुचि पैदा हुअी। अहिंसाकी शायद सच्ची परीक्षा होगी, यह भी विचारणीय मालूम होता है। अीश्वरकी महान कृपा है कि वह मुझे निभा लेता है। तुम पूरी तरह जाग्रत हो जाओ। — बापू

आगूनिया,
१८-२-४७ मगलवार

रोजकी भाति प्राथनाके समय अुठ। बादमें गरम पानी और शहद लेते हुअ मरा डायरी सुनकर हस्ताक्षर किय। बापूजीने अपना जो असह्य दु ख व्यक्त किया अुस मने नही लेखा था। अुन्हाने मुझस पूछा तुम्हारा डायरीमें मन जो लिखा है वह तुमन देखा ?

मन कहा म आपको डायरी लेकर गरम पानीका गिलास लेने चली गअी थी जिसलिअ मन नही देखा। बापूजी बाले कोअी भी चीज हो यदि हमन असे दूसरेको सौपी हो और वह हमारे लिअ ही हो तो हमें फिरसे देख लेना चाहिये। तुम जानती हो कि म अक काड भी लिखता हू तो असे दुबारा पढ बिना डाकमें नहा जाने देता। मेरी यह आदत पहलेसे हा है।

मन अुनकी बात दगी। बापूजीके अुद्वेगका पार नही था।

फिर (बगालके भूतपूर्व मुख्यमंत्री) प्रफुल्लबाबूको और मरे बारेमें मरे पिताजीको पत्र लिख। प्रफुल्लबाबून बापूजीको अभय आश्रममें जानके बारेमें लिखा था। अुसक अुत्तरमें बापूजीन लिखा यदि कुमिल्ला जाअूगा तो अभय आश्रम जरूर जाअूगा। मेरी यात्रा जारी है। असा लग रहा है कि हैमचर पहुच कर मुझ थोडा आराम लेना ही पडगा।

साढे सात बजे हमन देवीपुर छोडा। नौ बजकर पाच मिनट पर हम यहा पहुच। पर धोते समय बापूजीन बगलाका पाठ समझाया। बादमें मालिश स्नानादि। भोजनमें दो खाखरे शाक और खोपरेकी थोडी छूा ली। दो ग्रेपफ्रूट लिय।

आज शाक बडा विचित्र था भिंडी पत्ती करेले और थोडीसी लौकी थी। बापूजीन सबको अकसाथ अुबाल डालनको कहा। अुसमें भिडी डाल देनस शाक खूब चिकना हो गया। और अुसे शाकमें खाते समय दूध डलवाया। मिश्रणको चम्मचस हिलान लग। यह देखकर मुझ लग रहा था कि बापूजी अिसे गलेमें कैसे अुतारेंगे ? मने हसते-हसते अुनसे अपने मनकी बात कही। बापूजी बोले अरे भूख हो तो सब कुछ गलेमें अुतर जाता है।

मरे लिअ अपन हाथस अिसी शाकमें से दो चम्मच अलग रखा और मुझ खानको कहा। (बापूजी निम्बुल अुबला हुआ शाक मिर्च मसाला

डाले बिना स्थायी रूपमें वर्षोंसे लेते रहे हैं। और वह ठीक लगता है। परन्तु असा पचमेल शाक भी, जिसमें अूपरसे दूध मिलाया गया था बापूजी पी गये।) मुझे जो शाक खानेको दिया अुसे खाना जरूरी था। लेकिन अुसे खानेमें मुझे कोअी दवा खानेसे भी ज्यादा कठिनाअी हुअी।

खाते समय 'हिन्दू' पत्रके प्रतिनिधि रंगस्वामीजीसे कुछ पत्र लिखवाये।

दोपहरको आराम लेते समय बंगलाका पाठ किया। दो बजे सुचेता बहन आअीं। खाकसार भाअी भी मिलने आये थे। अुन्होंने बापूजीसे विनती की कि "आप अिस आशयका पत्र लिखें कि अंतरिम सरकार खाकसारोंको छोड़ दे।"

बापूजी बोले, "जिस तरह जबानी बात मैं नहीं जानता। आप अपनी सारी सामग्री मेरे पास भेजें तो मैं अुस पर विचार कर सकता हूं।"

आज बापूजी कुछ ज्यादा थके हुअे लगते हैं। वह रह रह कर आंखें बन्द करते हैं। आंखों पर मिट्टीकी पट्टी रखी। हैमचर जाकर आराम लेनेवाले हैं। मुझसे कहने लगे "अब अधिक दिन कहां हैं? भले ही मेरी मृत्यु तक ... न समझे। फिर भी मुझ पर अुसके शोक या मोहकी भावनाका असर जरा भी क्या हो? परंतु मैंने तुमसे कहा न कि मेरी अनासक्ति बहुत थोड़ी है, यह मैंने परसों ही लिखा है। यदि मैं 'स्थितप्रज्ञ' हो जाअूं और अपना काम जारी रखूं तो कुछ भी हो सब मेरे लिअे अेकसा बन जाय। सुख दुख दोनों समझकर जाने। हां, अुस ओर जानेका मेरा प्रयत्न चलता है। मुझे आशा तथा दृढ़ विश्वास है कि जितने दिन अिस प्रयत्नमें लगे अुतने अिस दिशाकी सफलता प्राप्त करनेमें नहीं लगेंगे। अिसीलिअे तो मैंने ... को साहसपूर्वक छोड़नेकी अिजाजत दे दी। अिसलिअे यदि मेरे हृदयमें रामनाम अंकित हो जायगा तो मैं गुणोंमें नाचूंगा। तुम मेरे प्रत्येक कार्यमें जितनी मजबूत रहोगी अुतनी ही तुम्हारी मदद मुझे मिलेगी और अुतनी ही मेरी शक्ति बढ़ेगी। बस तुमने बहुत सीखा है।"

दोपहरके बाद बिहारसे अेक भाअी आये हैं। वे खास तौर पर रामायण सुनाने आये हैं। वे यहां तक आ गये हैं, अिसलिअे अुन्हें संतोष देनेके लिअे बापूजीने रामायण सुनी और कहा, "आप कल बिहार चले जाअिये। केवल रामायणके स्वर सुननेके लिअे आपका ठहराना मुझे अच्छा नहीं

बिरामपुर,
१९–२–'४७

आज महाशिवरात्रि है। आज पू० बाकी श्राद्धतिथि होनेके कारण मैंने बापूजीसे पूछा: पू० बाका जिस समय अवसान हुआ था अुस समय अर्थात् शामको सात पैंतीस पर हम गीतापाठ शुरू करें तो कैसा रहे? बापूजी कहने लगे: तुम्हारी अिच्छा सात पैंतीस पर गीता-पारायण करनेकी हो तो मुझे कोअी आपत्ति नहीं। आज भोजन तो नहीं किया जा सकता। मुझे कहना चाहिये कि बा न होतीं तो मैं अितना अूंचा नहीं अुठा होता। बाने मुझे खूब अच्छी तरह पहचान लिया था। और बाका परिचय मेरे सिवा दूसरा कौन अधिक दे सकता है? वह मेरे प्रति कितनी वफादार थी? और अन्तिम समय जब मैं सोच रहा था कि बा किसकी गोदमें जायगी अुस समय तुम तो थी ही। अन्तमें अुसने मुझीको बुलाया और मेरी गोदमें आखिरी सांस ली। असी थी बा। आज अिस यज्ञमें अुसे याद करके और अुसके सद्गुणोंकी स्तुति करके अुन गुणोंको हम अपनायें। यही बाका सच्चा श्राद्ध है। मेरी सेवा अुसने निर्दोष भावसे की थी। मेरे प्रत्येक कार्यमें शादी हुअी तबसे लेकर अन्त तक तन मन और धनसे बाने लगातार मेरी अतुलनीय सेवा की।

सबेरे प्रार्थनाके समय बापूजीने मुझे अुठाया तब दातुन करते-करते पू० कस्तूरबाके लिअे बापूजीने ये अुद्गार प्रकट किये।

आज कदाचित् हिन्दुस्तानमें अनेक स्थानों पर पू० बाको श्रद्धांजलि दी जायगी। परन्तु यह अंजलि बापूजीने मुझे प्रातः चार बजे ही सुनाअी। मैंने बापूजीके ही मुंहसे अितने भावनामय शब्द सुननेके लिअे अपनेको भाग्यशालिनी माना।

सबेरेकी प्रार्थना रोजकी तरह आल्लूनियामें हुअी। प्रार्थनाके बाद बापूने देवभाअीके साथ बातें कीं। बादमें गरम पानी और शहद लिया। आध घंटे बाद अनन्नासका रस लिया। कुछ पत्रों पर हस्ताक्षर किये। दस मिनट आराम किया। सात पचास पर रोजकी भांति यात्रा आरम्भ हुअी। यहां पहुंचनेमें ७२ मिनट लगे। रास्तेभर भजन-मंडलीने सुन्दर भजन गाये। अिसलिअे मेरे हिस्सेमें गानेका काम थोड़ा ही था। मैंने आज कम ही भजन गाया। रास्तेभर भजन-मंडली ही गाती रही। बादमें बापूजीके पैर

थाये। व बगलाका पाठ करते रहे, अितनेमें मैंने मालिशके लिअे तम्बू वगैरा तैयार कर लिया।

आज बापूजी खूब थक गये थे। मालिशमें काफी सोये। स्नानके बाद जाजूजी जवाहरलालजी आबिद हुसैन, कुलकर्णीजी रुक्मणीदेवी हरि सिंह धाय और अब्दुल्ला साहबको पत्र लिखवाये और हस्ताक्षर किये।

आयनायकमूजी आये हैं अिसलिअे अुनके साथ बापूने बहुत बातें कीं। साढ़े बारह बजे बापूजी आराम करनेके लिअे लेटे। मैंने पराँमें था मल्कर अपना काम किया। सूत हुल्टा करना कपड़ोंके पवन्द लगाना डायरी लिखना वगैरा। आयनायकमूजीके साथ अमलप्रभावहन और पुष्पेन्दुबाबू भी आये हैं। अमियबाबू (अमिय चक्रवर्ती) भी हैं। अिसलिअे आजका दिन भरा भरा लगता है।

अुठकर बापूजीने नारियलका पानी लिया और डाक देखी। दो बजे कातते समय आयनायकमूजीके साथ बातें कीं। बापूजी कातते-कातते बातें करते रहे। सिरके बाल बढ़ गये थे अिसलिअे मुझसे बोले मशीनसे काट डाल। मैंने बाल काटे। जिस प्रकार बापूके पास समयकी बहुत तंगी रहती है। आयनायकमूजीने साथ बापूजीने मेरे विषयमें बहुतसी बातें कीं। वे भी खुश हुअे। तीन बजे मिट्टी लेते समय भी मुन्नाकी मंडली थी। नअी तालीमके बारेमें चर्चा हुअी।

सिल्हटसे बहुत सफर आये हैं। पू० बाकी स्मारकनिधिके निमित्त बच्चोंको बांट दिये। बापूजी बोले तुम जानती हो न वा खादर प्रसन्न नहीं होती थी परन्तु मिलकर प्रसन्न होती थी।

शामको बापूने दूध और आठ खजूर लिये। बादमें प्रार्थनामें गये।

प्रार्थना-सभामें अेक यह सवाल पूछा गया कि "अमुक स्थापित स्वार्थ रखनेवाले लोग किसी हिंदू कार्यकर्ताके विरुद्ध जान-बूझकर झूठी बातें फैलायें और अुसकी निन्दा करें तो क्या किया जाय?"

बापूजी — मैं तो यह कहूँगा कि अहिंसाकी दृष्टिसे देखते हुअे मनुष्यके कार्योंसे अुसका जो परिचय मिले वही सच्चा परिचय है। सभी कामोंमें स्पष्टता हो गअी हो तो व्यर्थकी बातोंसे या अुत्तेजनासे अुसे दूर करानेका प्रयत्न नहीं पड़ना चाहिये। परन्तु कुछ अवसर जरूर भी आते हैं जब बोलकर मामलेकी हवा धूम हो जाती है और चुप्पी साधनेसे हम लगभग असत्य ठहरते हैं। अिसलिअे ठीक रास्ता यह है कि कायम साथ वाणीसे स्पष्टीकरण करनेके अवसर कौनसे होते हैं, अिसका विवेक

रखकर काम किया जाय। और असे प्रसंगों पर अच्छी भाषामें असके बारेमें अवश्य स्पष्टीकरण किया जाय।

ठीक सात पतीस पर मैंने गीता-पारायण शुरू किया। मेरे पास पू० बाका अेक फोटो था। अुसे सामने रखकर पुष्पमाला अर्पण करके मैंने प्रणाम किया और पारायण आरंभ किया। प्रार्थनामें आयनापरभुजीके साथ आओी हुआी महिलायें और दूसरे मेहमान तथा स्थानीय लोग हाजिर हुअे। मुसलमान भाओी भी थे। पारायण तो मैंने अकेले ही किया। दूसरे सब सुन रहे थे। सवा घंटा लगा। बहुत शांति और गांभीर्य था। पारायण पूरा होते ही बापूजीने मेरी बहनको लिखा

जिस दिन और जिस समय सात पतीस पर बाका देह छूटी थी। पारायणके समय नये आये हुअे अतिथि मौजूद थे। आज जिस यज्ञमें बाके अवसानका दृश्य आंखोंमें तैरने लगा। कारण मनुडा भी थी। वह तेज गतिसे गीता-पारायण कर गयी और वह भी अकेले। आगाखां महलमें भी तो हम अकेले ही थे न? जिसलिअे जब मैं छठे अध्यायके बाद लेट गया और नीन्दका अेक झोंका आ गया तब कुछ असा आभास हुआ मानो बाका सिर मेरी गोदमें रखा है। *

मैंने अुपवास रखा था। जिसलिअे प्रार्थनाके बाद फलाहार किया और दूसरा काम किया। बापूजी आज पौने ग्यारह बजे तक मेहमानोंके साथ बातें करते रहे।

यह मकान तारिणाचरणदास माझीका है। यहां १०० हिन्दू लोग आये हैं। ६००० मुसलमानोंकी आबादी है और ३५० हिन्दुओंकी।

काफकाथली
२०-२-४७

आज रातमें असह्य ठंड थी। रातके बारह बजे बापूजीने मुझे जगाया। मैंने अुन्हें आलिश किया और दबाकर गरम किया। अुनके पैर खूब ठंडे हो गये थे। झोंपड़ेमें तेज़ हवा सनसन करती बहती रहती थी। परन्तु अुसे रोकनेका कोओी अुपाय नहीं था। आजकल बापूजी असा कष्ट भोग रहे हैं।

* छठे अध्याय तक बापूजी अच्छी तरह बैठे-बैठे आंखें बंद करके सुन रहे थे। परन्तु बादमें थक जानेसे लेट गये थे।

रातको साढे बारह बजे सुहाने मुझसे कहा 'मेरे परोंके तलुअे बहुत ठंडे हो गये हैं।' मैंने देखा कि हाथ और पैर अेकदम ठंडे पड गये हैं। असा लगा कि बापूजी कांप रहे हैं। घासलेट बचानेका रातमें बापूजी लालटेन भी बुझवा देते हैं। अिसलिअे अमावस्या जैसी घोर अंधेरी रात थी। चारों ओर सन्नाटा छाया था। नारियल और सुपारीके वृक्षोंकी सांय-सांयकी आवाज बडी भयानक लग रही थी। वे ही अकेले अिसके साक्षी थे कि लोगोंमें मानवता पैदा करनेके लिअे यह तपस्वी कैसा कठोर तप कर रहा है। छप्परके छेदोंमें से घुसनेवाली हवा और ठंडको मैं रोकूं भी कैसे? अिस कोठरीमें मैं और बापूजी दो ही थे। मनमें कितने ही विचार आ गये। सोचा, साथमें गरम पानीकी थैली तो है परन्तु गरम पानी कहां किया जाय? किसीको अुठाना तो संभव ही नहीं था। बापूजीका डर भी था। जो लालटेन भी नहीं जलाने देते वे प्राअिमसके लिअे तो घासलेट देने ही क्या लगे? अिसलिअे सभी विचार व्यर्थ थे। जितना ओढनेको था सब मैंने बापूजीको ओढा दिया। सिर पर भी ओढा दिया और मेरे हाथोंमें जितना जोर था अुतना अुनका शरीर दबाया। तब कहीं आधे घंटेमें बापूजीको खूब राहत मिली और वे सो गये।

प्रार्थनाके बाद नित्यकी भांति सब कुछ हुआ। रातको आज थर्मासमें गरम पानी भरकर रखनेके लिअे थर्मास मंगानेकी अिच्छा हुअी और बहुत डरते डरते बापूजीकी स्वीकृति ली। बापूजीने कहा 'काजीरखिलमें अतिरिक्त थर्मास हो और अुन लोगोंके अुपयोगमें न आता हो तो भेज दें। नया तो खरीदा हो नहीं जा सकता। रुपया कहां है?'

आज बापूने बंगलाका ककहरा लिखनेको अेक कापीमें खाने बनाये। (हमारे यहां गुरूमें बच्चोंको बारहखडी सिखानेको जैसे खाने बनाये जाते हैं ठीक अुसी तरहके) मुझे यह देखकर बडी हंसी आअी। मैंने कहा 'आपने असी लकीरें खींची हैं मानो बालवर्गमें पढते हों।'

बापूजी कहने लगे, 'सच है। मनुष्य जब तक जिये तब तक विद्यार्थी ही है। ककहरा पक्का करने और अक्षर अच्छे बनानेका यह सुन्दर ढंग है। मुझे तो अपने शिक्षक अिसी तरह अंक और ककहरा आदि सिखाते थे। यह तरीका बहुत अच्छा है।'

बादमें रस पिया। बंगलाकी बालपोथी पढते-पढते दस मिनट सो लिये। सात पंद्रह पर अुठे। सात पचीसको हमने विरामपुर छोडा। आठ पचीस

पर हम यहां पहुंचे। यहां आनेमें पूरा अेक घंटा लग गया। रोजकी भांति यहां आकर बंगलाका पाठ किया। मालिशमें बापूजी पौन घंटा सोये। भोजनमें तीन खाखरे, शाक, दस औंस दूध और तीन संतरे लिये।

दोपहरको आराम करके अक नारियलका पानी पिया। शामको दूध और संतरेका रस मिलाकर मन लिया। दोपहरको सेवाग्राम आश्रमकी कुछ डाक आअी। वह मैंने पढ़कर सुनाओ। कताओ और मुलाकातें नियमानुसार हुआी। रातको आठ बजे रंगस्वामीजीसे पत्र लिखवाते लिखवाते झपकी आने लगी अिसलिअे सो गये। आज बापूजी कुछ अधिक थके हुअे लगते हैं क्योंकि दिनमें तीन चार बार अिसी तरह सो गये थे। पैरोंमें बिवाओी फटनेकी शिकायत कर रहे थे। आजकल यात्रामें रोजकी अपेक्षा कुछ ज्यादा चलना होता है और ठंड भी बहुत है अिसीलिअे असा हुआ होगा। अंगूठेमें फिर चीरा पड़ गया है। अिसलिअे अुसमें भी दर्द रहता है। ठंडका असर अुस पर नंगे पैरों चलना। और बापूजीके पैर तो अितने अधिक कोमल हैं कि जरा भी फटन पर चीरा पड़ जाता है। जो हो जाय सो सही। औश्वरकी क्या अिच्छा है अिसे कौन जान सकता है?

कोमलापुर
२१-२-४७

सदाकी भांति प्रार्थना। बादका सारा समय आयनायकमजीने ले लिया। मौलाना साहब और ज़ाकिर हुसैन साहबके शिक्षा-सम्बंधी विचारोंकी चर्चा की। साढ़े पांचके बाद रस पिया और थकावटके मारे लेट गये। मन पर दबाव। बापूजी ५-५५ तक सोये। फिर मृदुलाबहनको पत्र लिखवाया और सारी डाक बिड़लाजीके आदमी भरतरामजीके साथ भेजी। मुन्नालालभाओीको पत्र लिखवाना शुरू किया परन्तु पूरा न हो सका।

बहुत थकावट होनेके कारण बापूजीको बाओ दवा लेनेका सुझाव दिया। लावण्यलता बापूजी कहने लगे — मेरी दवा तो रामनाम है। मैं जब तक जिन्दा हूं यह दूसरी बात है। अिसलिअे अिस दवासे या तो मैं कभी बीमार नहीं पड़ूंगा और बीमार पड़ूंगा तो हृदयगत रामनामके बल पर चौबीस घंटेमें अच्छा हो जाअूंगा।

साढ़े सात बजे बीनावायपनी छोड़ा। सवा नौ बजे हम यहां पहुंचे। रास्तेभर आयनायकमजीसे बातें कीं। बीचमें दो जगह ठहरे थे अिसलिअे

देर हुआी। पर धोते समय बापूजीने कलकी रिपोर्ट सुधारी। मालिशमें भी यही काम किया।

बापूजीने आज भोजनमें थोडा फरवदल किया। अेक खाखरा और अेक चम्मच बकरीका घी शाकमें लिया।

बापूजीको कमजोरी और थकान होनेके कारण थोडा थोडा मक्खन निकालकर और असका घी बनाकर मने थोडीसी गुड-पपडी बनाअी थी। बनानेके बाद ही म बापूजीके पास ले गअी। मने कहा "आप गुड लेते ह गेहू लेते ह और बकरीका घी तो लिया ही जा सकता है। असलिअे पपडी बनाअी है।' मुझे डर था कि शायद न ले। परन्तु सौभाग्यसे अेक छोटीसी डली ले ली। फल नही लियें।

मुझसे बोले "तुम पपडी बनाकर लाअी, असलिअे तुम्हारा अुत्साह भग करके तुम्हे दुखी न करनेके खयालसे अिच्छा न होते हुअे भी पपडीका अेक टुकडा ले लिया। परन्तु अिससे मेरी थकान या दुबलता चली थोडे ही जायगी? वह तो रामनामकी दवासे ही मिटेगी। यह श्रद्धा तुम्हें भी अपनेमें पदा करनी चाहिये क्योंकि अिस समय मेरी तमाम बाहरी देखभाल तुम्हारे हाथोंमें है। यह पपडी तुमने अपने मनमें चिन्ता रखकर मेरे लिअे बनाअी, परन्तु मुझे तो बनाकर तुम लाअी तभी पता चला। म नही जानता कि तुम दूध लेकर मक्खन निकालती हो, क्योंकि रसोअीमें जब तुम काम करती हो तब म मान लेता हू कि खाखरे बनाती होगी या असा ही और कुछ काम करती होगी। मुझमें शक्ति आये अिस अुद्देश्यसे तुम मुझे पपडी खिलानी हो। परन्तु अितनी ही श्रद्धासे तुम रामनामकी रामबाण दवाको जानकर हृदयसे अुसका रटन करो, तो अुससे मुझे अिस पपडीकी अपेक्षा कअी गुना फायदा हो और हमारी शक्ति आजसे कअी गुनी बढ जाय।"

बापूकी रामनामकी श्रद्धा अत्यन्त प्रबल होती जा रही है।

काकासाहबको पत्र लिखा। अुसमें काफी समय लगा। निर्मलदा और देवभाअीने हिन्दी अंग्रेजी बंगला और अुर्दू डाक पढकर सुनाअी। अंग्रेजी और बंगलाका पत्रव्यवहार ज्यादातर निर्मलदा सभालते ह। देवप्रकाशभाअी और हुनरभाअी हिन्दी अुर्दू और कुछ अंग्रेजीकी डाक। मेरे हिस्सेमें आज कल डाकका काम बहुत कम हो गया है। गुजराती और कभी-कभी मराठी डाक रहती है। अलबत्ता खानगी हिन्दी-गुजराती पत्र बापूजी अधिकाश

मुझसे लिखवाते हैं और अुनकी नकल मुझे ही करनी होती है। अुनमें से अुपयोगी पत्रोंकी तारीखवार फाअिल भी रखनी पड़ती है।

शामको बाबा (सतीशचन्द्र दासगुप्ता) आये। निरंजनसिंह गिल भी अुनके साथ थे। बिहारकी रिपोर्ट आ गअी है। असा लगता है कि शायद बिहार जाना पड़े। रिपोर्ट बड़ी दुःखद है।

गिलके साथ बातें कीं। अुन्होंने सिक्ख भाअियोंका सारा काम आजसे कर्नल जीवनसिंहजीको सौंप देनेकी स्वीकृति दे दी है।

स्टनली जोन्सको भी पत्र लिखवाया। बाकीका क्रम नियमानुसार रहा। बापूजीकी तबीयत कुछ ठीक है। पैरका घाव अभी तक भरा नहीं परन्तु भर रहा है। मौसमका असर है। अिसलिअे ठीक हो जायगा।

दूसरे पत्रोंमें लिखा — "गिलके बयान परसे बिहारके बारेमें मेरा धर्म कदाचित् वहां जानेका हो जाय। यहांके मुसलमानोंका बरताव देखते हुअे यहां मेरी अहिंसाकी सच्ची परीक्षा होगी।"

ब्रिटिश प्रधानमंत्रीने भाषण दिया है। अुस परसे लगता है कि शायद अभी युद्ध बाकी है।

अिस गांवकी आबादी ६३८७ है। २३८७ हिन्दू और ४००० मुसलमान हैं।

आज बापूजीने १६ तार भेजे। साढ़े दसके बाद सो सके।

(चरप्रदेश) चरकृष्णपुर
२२-२-'४७

आज रातको २-२० होने पर बापूजीने समझ लिया कि ४-१० हो गये। मुझे अुठाया। मन भी नींदमें ही आंखें मलते हुअे बापूजीको दातुन और भजन दिया। परन्तु आंखोंमें से नींद अुड़ती ही नहीं थी। अिसलिअे मैंने घड़ीमें देखा तो अभी ढाअी ही बजे थे। बापूजीको घड़ी दिखाअी। मुझे बहुत नींद आ रही थी अुस पर यह भूल निकली। अिसलिअे बड़ा मजा आया। दोनों फिर सो गये। चार बजे सरदार जीवनसिंहजी नियमानुसार जगाने आये अुस समय जागे। दातुन करके प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद बापूजीको गरम पानी दिया। मैं फलोंका रस निकालकर लाअी अिस बीच बापूजीने बंगलाका पाठ किया। परन्तु अधूरा रहा। मुन्नन्नाके वक्त गुजराती पत्रोत्तर लिख रखा।

सात पैंतालीस पर कोमल्लापुर छोड़ा। आठ पैंतालीस पर यहां पहुंचे। रोजकी तरह बंगलाका पाठ पूरा किया जो सुबह मेरे साथ बातें करनेमें वक्त चला जानेसे अधूरा रह गया था। मैंने मालिश और स्नानकी तैयारी की जितनेमें बापूजीने पूरा लिख लिया।

भोजनमें अेक खाखरा पपडीका अेक टुकडा शाक और छह औंस दूध लिया।

भोजनके समय रेणुकाबहन रायके साथ बातें की। फिर आराम लेते वक्त मैंने पैरोंमें घी मला और बापूजीने रंगस्वामीजीसे पत्र लिखवाये — सुहरावर्दी साहबको श्रीकृष्ण सिंह (बिहारके मुख्यमंत्री) को और मौलाना साहबको। सवा से डेढ तक बापू सोये। यहां भीड बहुत है। मैं बापूजीके लिअे कुछ भी तैयार करने जाती हूं कि पीछे पीछे स्त्रियां और बच्चे आ जाते हैं। पानी बहुत गंदा होनेके कारण कपडे धोने दूर जाना पडा। दो बजे कपडे धोने गअी। बापूजीके भोजनके बरतन भी तभी साफ किये। अिस बीच बापूजीने देवप्रकाशभाअीके साथ डाकका काम निबटाया और चरखा काता। स्त्री और पुरुष कार्यकर्ताओंमें अमूल्यभाअी चक्रवर्ती आभाबहन चंपन सुधाबहन सेन और वेनरजी मिले।

मैं आअी तब ठक्करबापा और शरदेन्दुलालजी (रामकृष्ण मठके स्वामीजी) बैठे थे। स्वामीजीने मठमें आनेका निमंत्रण दिया था। बापा थके हुअे लगते थे। थोडी देर बातें करके चले गये। साढे बारह बजे बापूजीने आठ औंस दूध और अंगूर लिये। रेणुकाबहनने मुझे बडी मदद दी। स्वभावकी बहुत मिलनसार हैं।

प्रार्थना नियमानुसार हुअी। प्रार्थनामें बापूजीने फरिश्तोंकी अेक सुन्दर कहानी कही

कहा जाता है कि खुदाने यह पृथ्वी बनाअी अुस समय वह अिधर अुधर हिला करती थी। अिसलिअे खुदाने बडे बडे पहाड बना दिये। अिस पर फरिश्ते खुदासे पूछने लगे हे मालिक तेरी बनाअी हुअी वस्तुओंमें अिन पर्वतोंसे कोअी अधिक बलवान भी है? खुदाने कहा हां लोहा अिन पहाडोंको तोड सकता है, अिसलिअे वह ज्यादा ताकतवर है। फरिश्तोंने पूछा तब लोहेसे भी कोअी ज्यादा ताकतवाली चीज है? खुदाने कहा हां आग लोहेसे ज्यादा ताकतवर है क्योंकि वह लोहेको गला देती

है। फरिश्ते अुससे भी कोअी बलवान है? खुदाने कहा हां पानी है क्योंकि पानी आगको बुझा देता है। फरिश्ते कहने लगे पानीसे भी बढ़कर कुछ है? खुदा बोले हां हवा है क्योंकि हवा पानीको हिलाती है। तब फरिश्ते पूछने लगे हे खुदा हवासे भी कोअी ताकतवर है? खुदाने कहा दान है। दान देनेवाला भला आदमी अपने दायें हाथसे देकर बायें हाथसे भी गुप्त रखे तो वह सभीको जीत लेनेमें समर्थ होता है।

प्रत्येक अच्छा काम दान है। आप अपने भाअीको हंसकर बुलायें रास्ता भूले हुअेको रास्ता दिखायें प्यासेको पानी पिलायें यह सब दान है। मनुष्य जीते-जी अपने जैसे मनुष्योंके प्रति या अपने जैसे प्राणियोंके प्रति जो भलाअी करता है वही अुसकी सच्ची पूंजी है। वह मर जायगा तब लोग पूछेंगे कि यह मरनेवाला अपने पीछे क्या छोड़ गया है? परन्तु फरिश्ते पूछेंगे कि मरनेवालेने पहलेसे कितने भलाअीके काम करके यहां भेजे हैं?

अिसके बाद यह प्रश्न नमोशूद्रों (हरिजनोंकी अेक जाति) का होनेके कारण अुन लोगोंसे सवर्ण कहा मैं भविष्यवाणी कर रहा हूं कि भारत परसे ब्रिटिश हुकूमतका हमारे देशमें निश्चित रूपसे नाश हो जायगा। ब्रिटिश लोगोंकी जैसे भारतसे नामोनिशान मिट जायगा अुसी प्रकारसे यदि अस्पृश्यताको जड़से नष्ट नहीं किया गया तो हिंदू धर्म सर्वथा नष्ट हो जायगा।

समान अधिकार पर बोलते हुअे बापूजीने कहा हिंदुस्तानमें हमें दुनियाकी दूसरी प्रजाओंको आश्चर्यमें डालनेवाला स्वतंत्रताका आदर्श जीवन बिताना हो तो भंगिया डाक्टरों वकीलों शिक्षकों व्यापारियों और अन्य लोगोंको दिनभरकी प्रामाणिक मेहनतके बदलेमें समान वेतन मजदूरी या खुराक मिलनी चाहिये। अिस बारेमें मेरे मनमें जरा भी शंका नहीं है। यह हो सकता है कि भारतवासी अिस ध्येयको पूरी तरह सिद्ध न कर सकें। परन्तु यदि हमारे देशको सब तरहसे सुख-संतोषकी भूमि बनाना हो तो सबको अिस ध्येयकी ओर दृष्टि रखकर चलना होगा।

अिस प्रकार बापूजीके प्रत्येक विचारका सूत्री दर्शनको मिलता ही रहती है।

प्रार्थनाके बाद वीणाबहन बसु, बल्लाबहन लावण्यलताबहन रेणुकाबहन वगैरा स्त्री-कार्यकर्ताओंके साथ बातें कीं।

आजका हमारा मुकाम अेक नामशूद्रके घर है। घरके मालिकका नाम महानन्द वच है। अत्यन्त गरीब होने पर भी अुन्होंने प्रेमपूर्वक हमारी सुविधाओंका खयाल रखा है।

भगवान रामने भीलनीके घर पर कैसे प्रेमसे निवास किया था? अुस आतिथ्यका आनन्द लूटते समय अुन्हें अयोध्याके राजमहलोंसे भी कभी गुना अधिक आनन्द होता था। अन्तमें जूठे बेर तक किसी मनचाहे मिष्टान्नसे भी अधिक स्वादसे खाये थे। रामायणका वह चित्र आज हूबहू देखनेको मिलता है। बापूजी अिस गृहस्वामीके आतिथ्यका आनन्द बड़ी प्रसन्नतासे लूट रहे हैं।

अिस गांवकी आबादी २५०० है। अुसमें ३०० मुसलमान हैं। अिस गांवके सब लोग लौट आये हैं।

रातको बापूजीने घरवालोंसे बातें करनेके बाद अखबार सुने। बच्चोंके साथ खेले। दस बजे बिछौने पर लेटे। मैं भी नियमानुसार बापूजीके सिरमें तेल मलकर पैर दबाकर और फुटकर कामकाज निबटाकर साढ़े दसके बाद सोआी।

चरणगंगा
२३-२-'४७ रविवार

आज प्रार्थनाके बाद बापूजीने बंगलाके अक्षर पर हाथ घुमाया। २ का अक्षर सीखनेमें काफी देर लगी। शैलनभाअीसे ७ लिखवाया और अुस पर भी दस बार हाथ घुमाया। बादमें अभ्यास ७ लिखा। मुझे तो यह देखकर बहुत मजा आया। बापूजीने लड़कोंकी तरह बहुत रसपूर्वक बंगलाके अक्षर पर हाथ घुमाया।

यह मुश्किलसे पूरा हुआ कि बालपोथी पन्त-पन्त व्याकरणकी दृष्टिसे अेक शब्द बापूजीकी समझमें नहीं आया।

मुझे भी अच्छी तरह समझमें नहीं आया। 'निओ' और 'ताओ'—अिन शब्दोंमें क्या फर्क है यह जानना था। दस मिनट मैंने और बापूजीने सिरपच्ची की। अितनेमें निर्मलदा आ गये। वे भी थोड़ी देर परेशान हुअे परन्तु बादमें अुन्होंने समझाया। मुझसे कहने लगे बापूजी यह बालपोथी कितनी मुश्किलोंसे पूर्ण है? अिस प्रकार बापूजीने बालपोथीके शब्दोंमें निर्मलदा जैसे प्रोफेसरको भी कुछ क्षण तक परेशान किया।

फिर देवप्रकाशभाओके साथ बातें की। आज जरा भी आराम नहीं लिया। अुनसे बापूजीने कहा कि नअी तालीमकी दृष्टिसे ही आपको यहां काम करना है।

साढ़े सात बजे चरकृष्णपुर छोड़ा। यहां हम साढ़े आठ बजे पहुंच गये। मालिश स्नानादिसे निबटनेमें साढ़े दस बज गये। रंगस्वामीजीके साथ ब्रिटिश सरकारके वक्तव्यके सिलसिलेमें बातें कीं।

भोजनमें बापूने गेहूंका दलिया और शाक खाया। मन आधा औंस तक मक्खन निकाला था वह भी खाया। खाते खाते डाक सुनी। मैं नहाने गअी। कपड़े ज्यादा थे अिसलिअे धोनेमें देर लगी। आकर देखती हूं तो बापूजी गहरी नींदमें सो रहे हैं। अिसलिअे मैं पैरोंमें घी मला। सवा बारह बजे बापूजी जागे। मुझसे कहा, "मैं सो रहा होअूं तब भी तुम्हें पैरोंमें घी मलनेकी छूट देता हूं।" फिर जब बापूजी तीन बजे पेड़ू पर मिट्टी रखकर सोये तब मैंने पैरोंमें मालिश की। आर्यनायकमजी राजकुमारीबहन तथा मौलाना साहबके पत्र लाये थे। अुन्हें पत्र और मुझसे पत्र लिखवाये। कुछ नकल करनेका काम सौंपा।

*

पू० बा और महादेवकाकाको जिन दिनों बापूजी रोज याद करते हैं। आजकी गिनती लगभग सारी ही बातें सबके पत्रोंके अुत्तरमें बहुत स्पष्ट थी।

बापूजीकी दाढ़ी पर छोटासा मसा हो गया है जिसे नृपेनदाने घोड़ेके बालसे बांध दिया। साढ़े चार बजे बापूजीने अेक खाखरा चार बादाम और चार काजू और थोड़े मुरमुरे खाये। बादमें काता। प्रार्थनाका समय होने पर प्रार्थनामें गये।

प्रार्थनामें कुछ प्रश्न पूछे गये थे। अुनमें अेक प्रश्न बाल विवाह और विधवा विवाहके बारेमें था। अुसका अुत्तर देते हुअे बापूजीने कहा:

"अिस मामलेमें मेरी राय स्पष्ट है। यदि बाल विवाह न हो तो बाल विधवा होनेकी बात ही नहीं रह जाती। नमोशूद्रों (हरिजन वर्ग) में पुनर्विवाहका जो प्रथा है वह बिलकुल मिटनी चाहिये। मैं यह मानता हूं कि प्रत्येक व्यक्तिको जीवनमें अेक ही विवाह करना चाहिये। सिविल

मरेन का रिवाज मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। जहां हृदयकी प्रेरणा है परस्पर सम्मति है, वहां सिविल मैरेज क्या किया जाय? परन्तु जिसमें गहरा नहीं जाअूंगा। धार्मिक नियाका बात अलग है। अुसका अर्थ जीवनका नवनिर्माण हो रहा हो अुस समय अीश्वरसे प्रार्थना करनेके लिअे की गअी अेक विधि है। वह मुझे बहुत अच्छी लगती है यद्यपि अुनमें अनेक बुरे रिवाज घुस गये हैं। परन्तु जिस चर्चामें मैं अभी नहीं जाअूंगा।

'हमारी यह यात्रा हैमचरमें पूरी हो जायगी और अुसके बाद नया विभाग शुरू होगा। जितनी यात्राके जिस सुखद अंतके लिअे मैं अीश्वरका अुपकार मानता हूं। ठक्करबापा तो हरिजनोंके सेवक और पुरोहितकी तरह हैं। अुन्होंने यह जिला अपना मरजीसे पसंद किया है। अेक कहावत है कि वड़अीका मन बबूलमें। अुसी तरह ठक्करबापाने अपने-आप आपके बीचमें बसनेका काम ढूंढ लिया।

आप अपनेको हल्के या अस्पृश्य मत मानिये। आपका अुद्धार धारासभा या कोअी और संस्थायें नहीं कर सकेंगी। जिसके लिअे आपको स्वयं ही परिश्रम करना पड़ेगा। आपने मुझे यहां जो बरबादी हुअी वह बताअी। मुझे बहुत दुःख हुआ। परन्तु जिसके लिअे न तो आप रोअिये और न कायर बनिये। हिम्मत रखकर अपनी मेहनत पर पूरा भरोसा कीजिये। जो लोग अपने अुद्धारके लिअे स्वयं सच्चाअीसे मेहनत करते हैं अुन्हें अीश्वर अवश्य सहायता देता है।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने पत्र लिखे। मौन शुरू हो जानेसे सारा वातावरण शांत है।

यह घर अेक मिस्त्रीका है। जातिसे नमःशूद्र हैं। जिस गांवकी आबादी ७६६८ है जिसमें हिन्दू केवल ५० हैं। आज बापूजीको ९० तार हुअे। सवा नौ बजते बजते बापूजी बिस्तरमें लेट गये।

हैमचर
२४-२-४७

नित्यकी भांति प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद गरम पानी पीते पीते बापूजीने मेरी डायरी सुनी।

मान चालीस पर चरणादी छोड़ा। रास्तेमें मालतीदीदी (मालती देवी चौधरी) और अुनके साथ काम करनेवाली बहनें बापूजीको मिलने

जाओ। बहनान रास्तेभर मधुर कठस मगल प्रभातिया गाओ। ठक्कर बापा भी बापूजीको लेने आय। बापूजी ठक्करबापासे विनादमें कहन लग क्या आज तो आपका महमान बननवाला हू न? हम दोना बूढे मिल गय ह। दानाकी ठीक जमेगी। और खूब हस।

रास्तमें हम रामकृष्ण मिशनके आश्रममें गय। बापा और विसन भाआन सुदर सुविधाओं कर रखी थी। दरवाज पर ही बहनान आकपक चौक पूरा था। शातिनिकेतनमें शिक्षा पाओ हुआ बहनाक हाथा चौक पूरा जाय तो कमी कस रह सकती है? फिर मालतीदीदीन बापूजीके माथ पर तिलक करक अक्षत लगाय शकुन-गीत गाया और शख बजाया। जाते ही बापूजीन पर धुलवाकर जवाहरलालजीका पत्र पूरा किया। यहा कुनिया तयारी थी जिसलिअ मुझ खास तौर पर मालिश और स्नानकी तयारी नहीं करनी पडी। बापूजीक लिअ कूकरमें शाक रखकर सीधी मालिश की। अजितभाओ वगरा कायकर्ताआन भी खूब काम किया। नहाकर बापूजीन भोजनमें शाक दूध और अक सब लिया।

बापूजीक कपड धोनमें सौभाग्य माननवाले अजितभाओन आग्रहपूवक बापूजीक कपड धोय। बड-बड गुणिजन आश्रमी बापूजीके कपड धोन और साथ हुअ बरतन माजनमें जीवनका अमूल्य लाभ समझकर यह काम करत ह। धन्नन अक प्रज्युअट सुमस्कारी बहनन मज। मालतीदीदी सुझस कहन लगा जिसमें तुमस ओष्या हाती है। जिसलिअ बापूजी जितन दिन यहा रह अतन दिन तुम्ह बापूजीका हमार लायक काम हमें देना ही पडगा। यही प्रेमा ह। अपना लडकी वजबहनका दिनभर याद करक मुझ प्यारस खिलाती ह। मर लिअ याद रखकर दही जुगनी ह। जबरन दूध पिलाती ह। अुन्हान कल्पना भजन भी मुझ सिखाय। बापान अपन रसाइमें मरे लिअ खाना बनवाया था। खानमें दाल भात शाक रोटी और पापड था। बापाक लिअ विल्याअती तरहका स्याअिया भजा गया है।

मन (नाआगाल) आनक बाद अर्थात् लगभग तान महीनमें आज जिस तरह घरका भाति मन खाना खाया।

शामकर लौटन पर बापूजीका साढ बारह बज नारियलका पानी दिया। बादमें समय मन पत्र सुनाय। साढ तान बज बापूजान दो खाखरे मुरमुरे और काजू खाय। सवा चार बज मिट्टी ली। पौन पाच बज प्रायनामें गय।

यहां जो जले हुअे और लुटे हुअे मकान थे अुन्हें प्रार्थनाके बाद देखा। भयंकर दृश्य था। मकानोंकी जगह राख और जला हुआ मलबा तथा टीन वगैरा पड़े हुअे थे। सब्जीमंडीकी दुकानें भस्मीभूत हो गअी थीं। बहुत कुछ मलबा अुठा ले गये थे। फिर भी काफी पड़ा था। फिर सुरेनभाअी यहां जो रात्रिशाला चलाते हैं अुसे देखने गये।

निर्मलदाने यहां तम्बू तानकर हीं सारी व्यवस्था की है। दो घर हैं। अेकमें सब बापा रहते हैं और दूसरेमें बापूजी रहते हैं। प्रेस प्रतिनिधियोंने भी तंबू ही ताने हैं।

नौ बजे बापूजीने अखबार सुने। थोड़ा लिखा। पौने दस बजे सोनेकी तैयारी की।

यहां हमेशा रहना होगा और दूसरे सहायक हैं अिसलिअे मेरे जिम्मे तो मुख्य मुख्य काम ही करना रहता है। बापूजीका कुछ भी काम करके कृतार्थ होनेकी भक्तिपूर्ण भावना यहांके भाअी-बहनोंमें है।

हैमचर
२५-२-४७

रोजकी तरह प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद गरम पानी और "शहद" देकर मैं थोड़ी देर सो गअी। बीस मिनट बाद बापूजीको रस दिया।

साढ़े सात बजे यात्रा पर निकलनेके समय घूमने गये। आअी० अेन० अे० वाले श्री देवनाथभाअी दासके साथ छोटी छोटी बालिकाओंने बापूजीको सलामी देकर जयहिन्द किया। धाम और ठंड होनेसे मालिश थोड़ी देरसे की। साढ़े नौ बजे मालिशके लिअे गये।

भोजनमें दूध, फल, शाक और अेक केला लिया। बाबा (सतीशबाबू) आये।

दोपहरको आअी हुअी डाक मैंने पढ़कर सुनाअी। साढ़े बारह बजे बापूजीने मेरे काम करके मालतीबहन और रेणुकाबहनसे बातें कीं।

तीन बजे यहांके रिलीफ-अफसरने अेक सभा रखी थी अुसमें गये। अफसरका नाम नूरुन्नबी है। सभा अेक घंटेसे अधिक चली। चेयरमैन और दूसरे वक्ताओंने अपने भाषणोंको अितना लम्बाया कि हम लोग अूब गये। बापूजीने जो समझना था सो समझ लिया। परन्तु सभासे अुठ कर जाते तो अच्छा न लगता। अिसलिअे समयका सदुपयोग करनेके लिअे अितने शोर गुलमें भी थोड़ी नींद ले ली। सूचीमें दर्ज किया था कि बापूजीको किसके बाद

चाहना है। अुस भाअीका भाषण पूरा होनेको आया तब मैंने सोचा कि बापूजीको जगा दूं। लेकिन अितनेमें बापूजी खुद ही जाग गये। नींद पर बापूजीका असा जबरदस्त काबू है। बापूजीने अपने भाषणमें कहा

मेरे पास न तो बंगला भाषा है न बुलन्द आवाज। आपने देखा होगा कि जो भाषण हुअे वे मैंने सुने परन्तु साथ ही मैं सो भी लिया।

यहां जो कुछ कहा गया था तो हवाअी बातें हैं। अिसका विचार करना पता नहीं कि विमानमें अुडकर हम कहां जा सकेंगे। मैं नम्रतापूर्वक अितना ही कहूंगा कि जिस काम तुरन्त हाथमें लिये जा सकें वही करने चाहियें। योजनायें कागज पर धरी रहें तो अुनका कोअी अर्थ नहीं। हममें अेक बड़ी आदत यह है कि हम करते थोड़ा हैं और विज्ञापन बहुत करते हैं। अिसलिअे जैसी कोअी बड़ी योजनाओंका विचार करनेके बाद अन्तमें वे कागज पर ही रह जाती हैं। नुकसान यह होता है कि अिससे हम लोगोंका आम जनताका विश्वास खो बैठते हैं।

हम जो काम करें वह अपने दिलसे पूछकर करें। हर काममें हम अपने दिलसे पूछें मैं पाप तो नहीं कर रहा हूं? अगर दिल हां कहे तो पापका प्रायश्चित्त करना चाहिये। जैसे रास्तेमें थूकना नहीं चाहिये। थूका हो तो अपने दिलसे पूछें कि मैंने यह थूका यह पाप तो नहीं हुआ? अगर दिल कहे कि पाप हुआ तो प्रायश्चित्तके रूपमें वह सफाअी कर दें। अिससे दूसरी बार असा न करनेकी सावधानी अपने-आप आ जायगी।

दूसरे बड़ा काम जो कहूंगा अिससे राज लेनेसे हमें बड़े नम्र रहना चाहिये। हमें दुनियामें रामराज्य स्थापित करना है तो हमारे प्रत्येक काममें यह गन्ध ही नहीं आ सकता कि दूसरे क्या कहेंगे। सरास समझा जानकारी काम हमें करना हो तो हमारा अुन्नति होगा।

[illegible] बाद [illegible] तमाम [illegible] आये। आखिर बापूजीने अेक ओम गुड और दूध लिया।

[illegible] अेक [illegible] पूछा [illegible] परस्पर विवाह पर [illegible] अंसा नहीं लगता कि असा नियारी [illegible] अधिक [illegible] ?

बापू — [illegible] है कि [illegible] विवाह [illegible] करनेका [illegible] । [illegible] [illegible] पर [illegible] परन्तु

ातरसे किसी पर-पुरुषकी तरफ बुरी नजरसे देखती हो तो यह निरा ढोंग है, पाखंड है। अिसीलिअे मैं परदेका विरोधी हूं। और असे परदेसे स्वास्थ्यकी ष्टिसे तो नुकसान होता ही है। स्त्रियोंको हवा और रोशनी काफी नहीं मिलती अिसलिअे वे बीमार रहती हैं। परन्तु परदेकी जो मूल भावना है ह संयमकी है। यह संयमरूपी परदा ही सच्चा परदा है।

प्रश्न — आप लोगोंको मजदूर बनकर पेट भरनेको कहते हैं। तब यापार और शिक्षाका काम कौन करेगा? अिससे हमारी संस्कृतिका नाश ही हो जायगा?

बापूजी — यह सवाल पूछनेवाले मेरे कहनेका अर्थ भलीभांति नहीं समझे । शब्दोंके पीछे रही भावनाका अध्ययन करना चाहिये। केवल शब्दोंको नहीं कड़ रखना चाहिये। हाथीके मुंहवाले गणपतिको देखें तो वह विचित्र प्राणी ाना जायगा। परन्तु प्रतीकके रूपमें वह कल्पना मनुष्यको ऊंचा अुठाती है।

दस सिरवाला रावण अेक बेवकूफ आदमी लगता है परन्तु अुसका अर्थ यह है कि जिस मनुष्यको सारासारका भान नहीं जो मनुष्य अेक वचन पर टिका नहीं रहता क्षण क्षणमें बदला करता है और आवेशमें अिधर अुधर भटकता रहता है, वह दसों सिरवाले राक्षसके समान है। मतलब यह है कि जो अेक बात पर कायम नहीं रहता वह अेक सिरवाला नहीं है। मेरी दृष्टिमें रामायणमें बताये गये दस सिरवाले राक्षस रावणका यही अर्थ है।

दन्तकथाओंमें असे गूढ़ अर्थ भरे हैं। मजदूरकी मजदूरीमें शारीरिक श्रमका विभाग तो है ही। मेरे कहनेका अर्थ यह है कि हर प्रकारके काम करनेवाले सब लोगोंको बराबर वेतन मिले। वकील, डॉक्टर शिक्षक, भंगी — सब अपना-अपना काम तो जरूर करें, मगर अुनका वेतन समान हो। असा न हो कि अेक डाक्टरको आठ सौ रुपये मिलें और भंगीको आठ आने मिलें। यदि हम समझ लें कि दोनोंकी सेवा अुत्तम है अेकसी है तो फिर दोनोंका रहन-सहन क्या अेकसा नहीं होना चाहिये। यदि सब लोग यह सिद्धान्त स्वीकार करके जिस पर अमल करें तो राष्ट्रका ही नहीं बल्कि दुनियाका अुद्धार हो जाय और समाज-व्यवस्था सुखदायी बन जाय।

विलायतमें सच्चे भंगीका पेशा करने वाले बड़े बड़े नामांकित अिंजी-नियर और सफाई-शास्त्र निष्णात होते हैं। परन्तु हमारे यहां जब तक आलस्य और जड़ता नहीं मिटती, तब तक कुछ भी होना कठिन है।

प्रार्थनामें लौटने पर बापूजीकी नअी यात्राका जो नक्शा बाबा लाये हैं अस पर चर्चा हुअी। मैंने सामान अलग निकाला। सारा फालतू सामान बाबाको सौंप दिया।

साढ़े नौ बजे बापूजीने मेरी पूरी डायरी लेटे लेटे सुनी। मैं जो पढ़ रही थी असमें रिलीफ-अफसरका नाम नूरनबी लिखा था। अिस पर बापूजीने ध्यान दिलाया कि या तो नूरनबी साहब लिखना चाहिये या नूरुन्नबीजी या नूरनबीभाअी। लिखी हुअी भाषा दुबारा पढ़ लेना चाहिये ताकि पता चल जाय कि कहीं कोअी अनुचित अथवा असभ्य बात तो लिखनेमें नहीं आअी।

रात हो गअी थी अिसलिअे मैं जल्दी जल्दी डायरी सुना रही थी। तो भी असा सोचकर यह पंक्ति बापूने दुबारा पढ़वाअी कि कहीं सुननेमें भूल तो नहीं हो रही है और जब यह पक्का कर लिया कि मैंने केवल नूरनबी लिखा है तब यह भूल मुझे समझाअी। बापूजी असे महान गुरु हैं।

हैमचर
२६–२–४७

रोजकी भांति प्रार्थना हुअी। गीतापाठ बिसनभाअीने किया। की ओरसे अेक छोटीसी पुस्तिकाके रूपमें पत्र मिला है। वह पत्र बापूजीने प्रार्थनाके बाद मुझसे पढ़वाया। बापूजी कहने लगे अेक पथ दो काज हो जायंगे। तुम पढ़ लोगी और मैं सुन लूंगा। और तुम्हारा समझमें न आये वहां समझा भी सकूंगा।

साढ़े सात बजे घूमनेके लिअे रवाना हुअे। लौटकर स्थानीय कार्यकर्ता भाअियोंसे वार्तालाप। अम्तुस्सलाम बहन तथा कनुभाअी आये हैं। साढ़े नौ बजे मालिश। मालिशमें बापूजी आधा घंटा सोये। स्नानादिसे निवटनेमें अेक घंटा लगा। भोजनमें अेक खाखरा, शाक और आठ औंस दूध लिया। अधिकांश समय अम्तुस्सलाम बहन और कनुभाअीसे बातें करनेमें ही गया। बीचमें रिलीफ-अफसर नूरुन्नबीभाअी आ गये।

दो बजे यहांके बाजारमें रखी गअी अेक आम सभामें गये। वहांसे आकर बापूजीने मिट्टी ली। मिट्टी लेकर थोड़ा सोये। पौने चार बजसे प्रार्थनामें जाने तक ठक्करबापाके साथ बातें कीं। साढ़े चार बजे प्रार्थनामें गये। प्रार्थना-सभामें वहां

"हममें मनुष्यता हो तो हमें छोटी-छोटी बातोंके लिअे सरकार पर निर्भर नहीं रहना चाहिये। अुदाहरणार्थ कोअी रास्ता साफ रखना हो, मुझे अपना गांव प्यारा हो और गांवकी सुघड़ता अच्छी लगती हो तो मुझे स्वयं वह रास्ता साफ रखना चाहिये। जहां-तहां अनजाने भी थूकना नहीं चाहिये। कूड़ा-कर्कट अुसकी जगह पर ही डाला जाना चाहिये। असे अनेक काम सेवाके पड़े हैं। अिसमें जवाहरलालजी सरदार या जिन्ना साहबको पूछने जानेकी बात थोड़े ही हो सकती है? देहातको यदि सुखी बनाना है तो ग्राम-पंचायतें स्थापित करके शान्ति और सहकारसे अपने भले-बुरेकी जिम्मेदारी हमें संभाल लेनी चाहिये।

"जिस मनुष्यकी स्वार्थत्यागकी अिच्छा अपनी जातिसे आगे नहीं बढ़ती वह अपने-आपको और अपनी जातिको स्वार्थी बना देता है। परन्तु सच पूछा जाय तो स्वार्थत्यागकी अिच्छाका परिणाम यह होना चाहिये कि व्यक्ति अपनी जातिके लिअे सर्वस्वका त्याग कर, जिलेकी सेवाके लिअे जातिका त्याग कर, प्रान्तकी सेवाके लिअे जिलेका त्याग करे और प्रान्तसे आगे बढ़कर राष्ट्रकी सेवा करे। समुद्रके अथाह पानीसे अेक बूंद अलग हो जाती है तो वह किसी काममें नहीं आती और सूख जाती है। परन्तु जब वह बूंद महासागरका अेक अंग बनती है तब अुस पर बड़े बड़े जहाज तैरते हैं।

"सच्ची स्वतन्त्रतासे बना हुआ हिन्दुस्तान अुसका पड़ोसी राज्य अगर संकटमें आ पड़े तो अवश्य अुसको मदद देगा। अफगानिस्तान, लंका और बर्माका ही अुदाहरण लीजिये। पड़ोसीकी मदद करनेका नियम अिन तीनों पर भी लागू होगा। अिस प्रकार ये देश जिन जिन देशोंकी सहायता करेंगे वे सब हिन्दुस्तानके पड़ोसी बनेंगे। अिस तरह जैसा मैंने कहा व्यक्ति अगर समझके साथ त्याग करेगा तो वह समस्त मानव-जातिको अपनी सेवाके क्षेत्रमें अवश्य समा लेगा।"

प्रार्थनाके बाद बापूजी घूमे। शामको अेक औंस गुड़ आठ औंस दूध और फल लिये। आज बापूजीके ९० तार हुअे। घूमकर रोजकी भांति अखबार सुने। अरुणाभाअी विमनभाअी और अब्दुस्सलाम सहगलके साथ बातें कीं। मैं पैर दबा रही थी तब   की बात परसे बापूजीने मुझे अेक सैद्धान्तिक बात कही।

जब अपना दोष जैसे-तैसे हटानेका प्रयत्न करती है तब अुसकी गिनती झूठमें होती है। परन्तु सब कुछ छुए अुसीने कराया है। वह सेवाभावी है परन्तु अुसे सच झूठकी समझ नहीं है। असी हालतमें मनुष्यका कोअी भी काम चमकता नहीं। अिसीलिअे के अुपवास मेरी दृष्टिसे नहीं चमके। यह अिन अवगुणोंका निश्चित परिणाम है। मनुष्यको हमेशा स्पष्ट रहना चाहिये। अपनी भूलको सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे देखना सीखना चाहिये और दूसरेकी भूलको पहाड़ परसे देखना चाहिये। यदि यह नियम अपना लें तो हम हजारों पापोंसे बच जायं। जो अपने प्रति सच्चा हो अुसे किसका डर हो सकता है? मनुष्यको सबसे पहले अपने प्रति सच्चा बनना चाहिये

भयसे या बहुत बार किसी लाभके लोभसे या दोष छिपानेकी वृत्तिसे झूठ बोलनेके अवसर आते हैं। परन्तु जो दोष करना ही न चाहता हो अुसके लिअे छिपानेको होगा ही क्या? और जो असे मनुष्य होते हैं वे कभी कोअी भूल हो जाय तो अुसके निवारणके लिअे अपनी भूलको प्रगट कर देनेकी वीरता दिखाते हैं और अुससे मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। अिसीलिअे तो मैंने कल लिखा कि यदि कोअी दोष दिखाअी देता हो तो अुसे जाहिर कर दो। अिसका परिणाम दोनों पक्षोंके लिअे लाभदायक ही होता है। अिससे दोषका मैल धुल जाता है और हम साफ हो जाते हैं। और हमारी आत्मा हृदय और चेहरेका तेज पहले जैसा ही चमकता है।

प्रामाणिक और शुद्ध हेतुसे अपने अंतःकरणको साक्षी रखकर काम करते रहनेवालेकी प्रभु अवश्य सहायता करता है। अिसका मैं यहां अनुभव कर रहा हूं। बड़ेसे बड़े तूफान भी असे निष्ठावानका स्पर्श नहीं कर सकते। सच्चे और दृढ़ व्यक्तिका हृदय-बल कैसे भी तूफानोंके सामने कभी ढीला नहीं पड़ता। असे समय दिखनेवाली असफलता भी सफलता ही होती है। अिससे असफलता या सफलता दोनों स्थितियोंमें संसार पर आशीर्वाद ही अुतरता है। यह मैं अनुभव करता हूं अिसीलिअे कहता हूं कि प्रभु यहां मेरी मदद कर रहा है अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं है।

बिहार जानेकी बात साफ नहीं हो पाती अिसलिअे टलती रहती है। रातको मैं बापूके पास बैठी। अुन्हें कुछ पत्र पढ़कर सुनाये। कुछ पत्र सुननेके बाद वे कहने लगे कुछ बातें रूबरू मिलनेसे जितनी समझमें आती हैं अुतनी पत्रोंसे समझमें नहीं आतीं। बापूजीके साथ मैंने जो बातें आज कीं अुनके अनुभवसे यह कहता हूं। पत्र-व्यवहारसे कितनी ही गलतफहमियां बढ़

जाती हूं। आज बापूजीके साथ हुआी आध घंटेकी बातोंसे और तुम्हारे यहांके निवाससे जो कुछ प्रत्यक्ष देख रहा हूं अुस परसे मेरा मन बहुत हल्का हो गया है। बापूको कभी कभी पत्र-व्यवहारसे समझना बडा कठिन होता है।

बापाके पाससे आओी तब बापूजी सो गये थे। मैं भी तुरन्त सो गओी।

हैमचर

२७–२–४७

नियमानुसार प्रार्थना हुआी। प्रार्थनाके बाद   बात करने आओी। परन्तु बापूजीने बंगला पाठके बीचमें बातें करनेसे अिनकार कर दिया। घूमते हुओे   के साथ बातें की।   बापूजीने साफ कह दिया कि   तुम अिस समय बिलकुल बदल गओी हो और झूठ बोल रही हो। यह बात नोट कर लेनेको बापूजीने मुझसे कहा।   बापूजी पर बडी नाराज हुआी। बापूजी बोले 'अिसकी कोओी परवाह नहीं। जो सच मालूम हो वह मैं न कहूं तो कौन कहेगा? सच बात कहनेका मेरा धर्म हो जाता है।

साढ़े आठसे ग्यारह तक मालिश स्नानादिका क्रम चला। भोजनमें दूध शाक और अेक केला लिया। आज बापूजी अेक बजे सो सके। फिर अम्तुस्सलाम बहनने खादी-सम्बन्धी जो लेख लिखा था अुसे देखा। दो बजे नारियलका पानी पिया। साढे तीन बजे सुचावहन सेन आओी। अुन्होंने अपनी अहिंसाकी परेशानी बताओी तो बापूजीने सुन्दर अुत्तर दिया   रामनाम रूपी तलवार लोहेकी तलवारसे कहीं ज्यादा मजबूत है। फिर कातना। आजके ७५ तार हुओे।

साढे तीन बजकर दस मिनट पर फजलुलहक साहब आये। किसीने अुन्हें कनेरके फूलोंका हार पहनाया और फोटोग्राफरने अुन्हें खडा रखकर पहले अुनका फोटो लिया। तेज धूप और गरमी थी। अुनका शरीर बहुत मोटा था और बैठना तो बापूजीकी झोपडीमें ही था। मैं बापूजी पर पंखा झल रही थी। बापूजीने मुझे सूचना की कि अुनको भी पंखेकी हवा मिल सके असा घुमाओ। अुस मुरझाये हुओे हारके कारण निकलनेवाले पसीनेकी तरफ अितनी गंभीर बातोंमें भी बापूजीका ध्यान गया। हार अुतार देनेकी सूचना की तभी हक साहबने अुतारा।

सवा चार बजे तक मुलाकात चली। अुनके साथ प्रो० महमद अजीमुद्दीन, मुहम्मद सिराजुल अिस्लाम और नूरेजमान मियां थे। बापूजीने

खरी खरी सुनाओी। अिन लोगोंके आनन्दके बाद थोड़ मुरमुर और अेक आसके लगभग गुड़-पपड़ीका टुकड़ा लिया।

आजकी हमारी प्रार्थना दगाके निमें वरबाद हुअ अेक मन्दिरके मकानमें हुआी। आजका प्रार्थना प्रवचन वस्तुतः प्रवचनके आधार पर ही था।

मनुष्य अपने पड़ोसियोंकी और मानव-जातिकी सेवा व्यवसाय कर सकता है अिस सत्यको मैं निश्चित रूपमें मानता हूँ। परन्तु शर्त यह है कि पड़ोसीकी सेवा निजी स्वार्थ साधनेके हेतुसे न की जाय। अर्थात् सेवक जो सेवा करे अुसमें किसीसे अनुचित लाभ न अुठाये अपने सेवाकार्यमें किसीका भी शोषण न करे। असी सेवा होती देखकर लोग अवश्य अुसकी ओर आकर्षित होंगे और अुसकी छन अुन्हें जरूर लगेगी। असा हो तो वह सेवाकार्य फलते फूलते सारी दुनियाको अपने क्षेत्रमें समा लेगा। अिससे यह सिद्धान्त निकल सकता है कि दूसरोंकी बात छोड़कर अपने घरके कुटुम्बकी और सबसे नजदीक रहनेवाले पड़ोसियोंकी सेवा की जाय। स्वदेशीकी भावनाका यही अर्थ है।

मेरा मिशन तो लोगोंमें सच्ची हिम्मत पैदा करके अुन्हें बहादुर बनाना है। आप लोग यदि अपने मनमें रहनेवाले डरको निकाल डालेंगे तो आपको कोअी डरा नहीं सकेगा। मुसलमान जब देखेंगे कि आप निडर और साहसी बन गये हैं तो वे खुद आपके मित्र बन जायेंगे। सच्ची बहादुरी तलवार हाथमें लेकर सामनेवालेको मारनेकी कुशलतामें नहीं है परन्तु मानव मानवका दुश्मन किसलिअे हो सकता है यह हकीकत जाननेमें सच्ची बहादुरी है।

अुद्योगीकरण पर बापूजीने कहा "अमरीका अिस वक्त अुद्योगोंमें दुनियाका सबसे आगे बढ़ा हुआ देश माना जाता है। फिर भी अुस देशमें गरीबीका मनुष्यको भ्रष्ट करनेवाली बुरी आदतोंका और बुराअियोंका नाश नहीं हो पाया है। अिसका कारण यह है कि मनुष्यमात्रमें रहनेवाली शक्तिका अुपयोग करनेके बजाय वहाँ अपार धन कमा लेनेवाले बहुत थोड़े व्यक्तियोंके हाथोंमें सत्ता अेकत्रित हो गअी है। अुसका परिणाम यह हुआ कि अमरीकाका अुद्योगीकरण वहाँकी गरीब जनताके लिअे और संसारके शेष भागोंके लिअे भी बहुत खतरनाक हो गया है।

परन्तु हिन्दुस्तानको यदि अिससे बचना हो तो अुसे पश्चिमके देशोंमें जो कुछ अच्छे तत्त्व हों अुन्हें अपनाना होगा और आवश्यक होते हुअे भी

पश्चिमकी नाश करनेवाली आर्थिक नीतिसे दूर रहना होगा। देशके कच्चे मालका निकास करके बादमें तैयार होनेवाली चीजें हम बेहद रुपया देकर खरीदते हैं। अिसके स्थान पर भारतके ४० करोड़ लोगोंकी शक्तिको संगठित करके अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग किया जाय और व्यवस्थित रूपमें गांव गांवमें कच्चा माल बांटकर अुसका पक्का माल वहीं तैयार किया जाय तो देशका धन देशमें रहे और किसीको अैसे दंगे-फसाद करनेकी फुरसत न मिले। मेरी रायमें अिसीमें सच्चा आर्थिक नियोजन समाया हुआ है।

प्रार्थनाके बाद लगभग डेढ़ दो घंटे लगातार डाक लिखवाओ। नौ बजकर पचीस मिनटके बाद अखबार सुने। बातें करते करते आज बापूजी दस बजे सोये।

हैमचर
२८–२–४७

राजकी तरह प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद के साथ बातें की। अैसा लगता है कि की भूलसे बापूजीको दुःख हुआ है। ने बापूजीके पास जाकर अपनी भूल जाननी चाही। अिस पर बापूजीने अपने विचार प्रगट किये और कहा ने यह जानना चाहा कि अुसकी भूल कहां है। मुझे आश्चर्य हुआ। दुःख हुआ। दुःख अपने पर होना चाहिये था। मुझे सन्देह हुआ। अगर मैंने भूल की है तो अुसका प्रारम्भ अुसकी प्रेरणासे हुआ। यह सन्देह मैंने अुसके सामने रखा और दो किस्से सुनाये। और अब यह भूल लगती हो तो यह स्पष्ट दिखाओ देता है कि अिसमें का ही दोष है।'

बापूजीका हृदय जितना विशाल है कि प्रत्येक कार्यमें दूसरोंकी भूलें स्पष्ट दिखाओ देते हुओ भी वे अपनी ही भूल मानते हैं।

निर्मलदा तो यह देखकर बहुत नाराज हो गये। मुझसे कहने लगे, 'ये लोग देखते हैं कि गांधीजी अिस समय जलती हुओ भट्टीमें पड़े हैं फिर भी ये विचार क्यों नहीं करते?' मगर बादमें हंसते हंसते बोले, 'अिस बूढ़ेकी यही खूबी है कि अुसकी दृष्टिमें कोओ बात या कोओ चीज बेकार नहीं, छोटी नहीं है। अिसीलिअ वे दुनियाके अद्वितीय नेता हैं। यों तो गांधीजीके बराबर पढ़े लिखे आदमी देशमें बहुत हैं, गांधीजीसे दीखनेमें बहुत रूपवान मनुष्य भी हैं। परन्तु गांधीजीमें जो विशालताकी शक्ति है वह अनुपम है।'

अैसा लगता है कि बिहार जानेका फैसला दिनमें ही तय हो जायगा। सुधीरदा (सुधीरबाबू घोष) ने घूमने जानेसे पहले शुभेच्छाका तार किया।

बापूजीका सुबहका क्रम हमेशा वगलाका पाठ करनेका होता है। वह आज के साथ बातें करनेमें बदल गया। यह बापूजीको अच्छा नहा लगा। घूम कर लौटने पर सबसे पहले बीस मिनट तक बगला लिखी। बादमें मालिश स्नान वगैरा हुआ। दोपहरके भोजनमें शाक दूध और स्टीम किया हुआ अक सेब लिया। और सब छोड दिया। बिहारकी बातोंसे और आजके प्रसगसे बापूजी कुछ गभीर विचारोंमें डूब गये है। मुझ तो यह डर लगता है कि बापूजी कहीं अुपवासका या कोअी और कडा कदम न अुठा ल। सुशीलाबहन प और सतीशबाबू आये हैं। अुन्होंने नअी यात्राका नक्शा बताया।

कातते समय बिहारसे डा० सयद महमूद साहबके निजी मत्री मुस्तफा साहब आये। अुन्होंने बिहारकी करुण और भयकर रिपोर्ट पढकर सुनाअी। अुस रिपोर्टमें स्त्रियों पर जो अत्याचार हुआ है अुसे पढते पढते मुस्तफा साहब रो पडे। बापूजीका चेहरा गभीर था परन्तु हृदयमें जो वेदना हो रही थी अुसका प्रतिबिम्ब चेहरे पर स्पष्ट दिखाअी देता था। अिसमें काग्रेसी भी शरीक थे। खूब मारकाट हुअी। लडकियों पर हुअे अत्याचारका पार ही नहीं था।

हिन्दुओने बिहारमें ये काली करतूतें की अिससे बापूजीके हृदयमें असह्य वेदना हो रही थी। बापूजीने अेस० डी० ओ० साहबके मारफत बिहारके मुख्यमत्रीको तार किया कि मैं आ सकता हूँ या नहीं? क्योंकि ये सारी बातें वे आखों देखना चाहते थे। बापूजीकी सभ्यता भी निराली ही है। यद्यपि बिहारके मुख्यमत्री श्रीकृष्ण सिंह अुनके परम भक्त और पुराने साथी है तो भी बापूजी कहने लगे बिना अिजाजत लिये मैं बिहार नहीं जा सकता। यदि यहा आनेके लिअे सुहरावर्दी साहबकी अिजाजत लेना जरूरी था तो वहां जानेके लिअे भी वहांके मुख्यमत्रीकी अनुमति मुझे अवश्य लेनी चाहिये। जो नियम साधारण लोगों पर लागू होता है वह मुझ पर भी लागू होना चाहिये न?

मैंने कहा परन्तु हर बातमें तो वे लोग आपकी सलाह लेते हैं आपको ही पूज्य मानते हैं अपना बुजुर्ग समझते हैं।

बापूजी बोले अिससे क्या? परन्तु आज अुनके पदके कारण यह सभ्यता हमें अवश्य दिखाना चाहिये। निजी व्यवहार चाहे जैसा रखें परन्तु कानून तो सबके लिअे अेकसा ही होना है। अैसा है बापूजीका न्याय।

लगभग तीन बजे बापूजी स्थानीय कार्यकर्ताओंकी सभामें गये। वही मिट्टी ली। चार बजे नारियलका पानी पिया। आज अन्न बिल्कुल नही खाया।

प्रार्थना-सभामें यहांके नमाशूद्रोंसे बापूजीने शिक्षाके बारेमें कहा, 'आप लोगोंमें पढ़ाओके लिअे जो बेपरवाही पाओ जाती है, अुसके लिअे अूचे वर्गके हिन्दू ही कसूरवार हैं। हिंदू समाजने जान-बूझकर आपको अुठने नहीं दिया। परन्तु अब आपको खुद ही यह खयाल मिटा देना चाहिये कि आपकी जाति नीची है। तभी आप अूचे अुठेंगे।

आज दूसरी बात जो कहनी है वह बिहारके विषयमें है। मुझे समाचार मिले हैं कि बिहारके हिंदुओंने असे अत्याचार किये हैं जो त्रिपुरा और नोआखालीके अत्याचारोंको भुला देते हैं। मेरा यह खयाल था कि यहां बैठे बैठे मैं बिहारका काम कर सकूंगा। परन्तु डा० सयद महमूदके मंत्री मुस्तफा साहब अभी मेरे पास अुनका पत्र लेकर आये थे। अुनके पत्रमें लिखा है कि 'अगर आप आयेंगे तो आपकी अुपस्थितिमें यहांकी स्थिति बहुत सुधरेगी और मुसलमानोंको विश्वास हो जायगा कि आपको जितना दर्द हिंदुओंके लिअे है अुतना ही मुसलमानोंके लिअे भी है। अिसलिअे आज मैंने जल्दी तार देकर पुछवाया है। नोआखाली और त्रिपुराकी पदल यात्रा थोड़े समयके लिअे मुल्तवी करनी पड़ेगी। आप सबसे विनती करता हूं कि मेरी गैर-हाजिरीमें आप सब भाओ भाओकी तरह रहें। मैं बाहर जाअूंगा, मगर मेरा दिल तो आपके पास ही होगा।

अिसमें जरा भी शक नहीं कि अब अंग्रेज भारत छोड़कर चले जायेंगे। अब भारतवासियोंके (भारतमें रहनेवाले सभी जातियोंके लोगोंके —तमाम धर्मोंके लोगोंके) मेलजोलसे रहनेका निश्चय करनेका समय आ गया है। असा नहीं होगा तो भारत आपसकी भयंकर लड़ाओकी आफतमें फंस जायगा और हम अखंड भारतके टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे। अिससे किसीका भी लाभ नहीं होगा। संसारमें हम हंसीके पात्र न बनें, अिसका गंभीरतापूर्वक विचार करना प्रत्येक भारतीयका धर्म है। आप सब अिस पर विचार कीजिये।"

बापूजीने घूमते घूमते कहा : दोपहर तक तो त्रिपुराका कार्यक्रम तैयार हुआ था। परन्तु रातमें जैसे रामजीके राज्याभिषेककी तैयारियां हो रही थीं और सवेरे अुन्हें अेकाअेक वनमें जाना पड़ा वैसा ही मेरे संबंधमें भी हो गया है।"

घूमते समय रास्तेमें जले हुओ घर देखे। अन्दर कुछ भी नहीं बचा था। मुस्तफा साहब कहाँ शायँस कुदान क्या गाया बगरात बारेमें बापूजीने स्वयं पूछताछ की और सारी व्यवस्था कराओ। प्रार्थना प्रवचन लिखा। स्वामीजीको पत्र लिखवाये। रातको साढ़े ग्यारह बजे सोनेसे पहले बापूजीने कहा "तुम अपनी तैयारीमें रहना। सामान जमा कर रखना और अलग कर देना और याद रखकर सतीशबाबूको दे देना।"

दैमबर
१–३–४७ शनिवार

बापूजी आज पौने चार बजे अुठ गये। मालिश की। बादमें मा जगाकर अुनसे गाय बातें कीं। बापूजीने दोनोंको अपना अपना धर्म समझाते हुओ कहा "यदि मुझमें विश्वास हो तो यहाँ (नोआखालीमें) स्थिरता रखकर काम करो। फिर जड़ता नहीं आनी चाहिये मनकी सबलता भी नहीं होनी चाहिये। यदि अैसा न कर सको, मुझमें दोष पाते हो तो मेरा त्याग कर दो। मेरी काम करनेकी शक्ति अब खतम हो गयी है।"

सबेरेकी प्रार्थनाके बाद शहद और गरम पानी लिया। बादमें अन्नासका रस पिया। हुनरभाओने रजाअुरहमान अन्सारी साहबको और दूसरोंको अुर्दूमें जो पत्र लिखवाये अुन पर अुर्दूमें दस्तखत किये।

घूमते वक्त अेक अनाथाश्रम देखने गये। आते-जाते डेढ़ घंटा लगा। पौने दो बजे लौटे। मालिशमें थोड़ी देर बापूजी सो गये। अच्छा हुआ क्योंकि आज बहुत जल्दी अुठे थे। बिहारकी स्थिति बिगड़ रही है। अभी तक पटनासे कोओी समाचार नहीं आये। स्नानघरमें बापूजी बोले, "जवाब आये या न आये, तुम तैयार रहना। कल तो निकलना ही पड़ेगा।" चौबीस घंटे हो जाने पर भी बिहारसे कोओी अुत्तर नहीं मिला यह बापूजीको अच्छा नहीं लगा।

दोपहरको बापूजीके लिअे और हमारी मंडलीके लिअे रास्तेका खाना बनाया। बापूजीके लिअे खाखरे और गुड़-पपड़ी बनाओी। हमारे लिअे नारियलके तेलका मोन डालकर अलग खाखरे बनाये। दोपहरका लगभग सारा समय अिसीमें चला गया। आज भी बापूजीने शाक, दूध और फल ही लिये। बापारके साथ बातें कीं। दो बजे रामकृष्ण मिशनवाले आये थे। साढ़े तीनसे चार तक काता। बादमें मिट्टी ली।

प्राथना-सभामें जा रहे थे कि सामनेसे मृदुलाबहनको आते देखा। अनके साथ विदेशसे चार विद्यार्थी आये ह।

मृदुलाबहन पडितजीका, खानसाहबका और दिल्लीके दूसरे बहुतसे पत्र लाओ ह। वहाकी बहुतसी नओ नओ बातें भी जाननेको मिली। प्राथनाके बाद लगभग सारे समय अन्हीके साथ बातें की।

कनुभाओ अपने गाव गये। शामको बापूजीने अक केला और दूध लिया। रातको तो मुलाकाती अकके बाद अक आते ही रहे। बिमेनभाओने और मने रातको दर तक सामान बाधा। अन्होने और अजितभाओने बेहद मदद दी। निमलदा भी अपने काममें मशगूल थे। अुह तो अितना काम रहता है कि रात और दिनका फक ही नही रह जाता।

बापूजीका पौन भागका काम वे ही निवटा देते ह। रातका साढे ग्यारह तक मुलाकातियोकी भीडमें बठे रहे। अब आयेंगे प्रेम रिपोटर। म अपनी यह डायरी अुन्हीके तम्बूमें बैठकर लिख रही हू। सामान भी ज्यादातर तम्बूमें हा बाधा जिससे बापूजीको आवाज न सुनाओ दे।

अब बारह बजे हैं। सोने जाती हू।

हैमचर
२–३–४७

कल रातको बाबा (सतीशबाबू) आये थे। म और बापूजी तो हमारे कमरेमें लालटेन बुझाकर गहरी नीदमें सो गये थे। लगभग साढे बारह हुअे होगे। मैं भी थक गओी थी। मुझे सोये काओी आध घटा ही हुआ होगा परन्तु आधी रात जसा लगता था। बाबाने बापूजीकी मच्छरदानी खोलकर अुहें जगाया। दोनो बातें करते थे, अिसलिअे म अेकाअेक अुठ बठी। मुझे डर लगा कि रातका मेरा दरसे सोना बापूजीको अच्छा न लगा हो, अिसलिअे स्वय अुठकर दातुन-पानी कर लिया होगा और प्राथना भी कर ली होगी। अिसलिअे अकदम खडी हो गओी। दातुन लेने गओी तो बापूजी हसकर कहने लगे कि 'अभी समय नही हुआ। दातुनमें देर है। तुम सो जाओ।' म नीदमें थी अिसलिअे और किसी बातमें न लग कर सो गओी। बाबा कब गये अिसका मुझे पता नही। परन्तु रात तक बिहारसे कोओी समाचार नहा आये अिसलिअे कल क्या करना होगा, यह जाननेके लिअे बाबा आये थे।

रोजकी तरह प्रार्थना हुअी। बादमें बंगलाका पाठ। बापाके रसोअियको हस्ताक्षर करके दिये और अुनसे पांच रुपये लिये। प्यारेलालजीके नाम पत्र लिखा। आज दोपहरको दो बजे जाना तय हुआ। मालिश और स्नानके बाद मृदुलाबहन तथा बापाके साथ बातें कीं। बापाके साथ भोजन करते समय भी बहुत बातें कीं। भोजनमें अेक खाखरा, शाक और दूध लिया।

आज बापूजीका मन कुछ हल्का मालूम होता है क्योंकि बिहारके बारेमें कुछ तय कर सके और सबको स्पष्ट सुना सके। अिस प्रकार हृदयमें जो भरा था सो खाली कर लिया। बापूजीके दर्शन करने जानेवाले लोगोंसे सब जगह भर गयी थी। अजितभाअीकी बिहार चलनेकी बड़ी अिच्छा है। परन्तु बापूजीने यहीं रहकर काम करनेका आदेश दिया।

मन साढ़े बारह बजे सारा सामान गिनकर कर्नल जीवनसिंहजीको सौंपा। छोटे बड़े सब मिलकर बीस नग हुअे। मेरे साथ जो सामान है अुसमें से बापूजीके कागजोंका बस्ता पानीकी बोतल थूकदानी वगैरा चीजें थैलेमें ही रखी हैं। नोआखालीका टोप चरखा खानेके बरतनोंवाली बेंतकी छोटीसी पेटी अेक छोटासा बिस्तर और लाठीके सिवा बाकी सब कुछ आगे रवाना कर दिया।

[चांदपुर पहुंचनेके बाद]

जानेसे पहले मैं बापासे अिजाजत लेने गअी।

अुन्होंने मुझसे अेक पत्र लिखवाया। प्रणाम किया तो मुझे मीठा आशीर्वाद दिया "तुम बापूजीकी जिस ढंगसे सेवा कर रही हो अुससे मैं बड़ा प्रसन्न हुआ हूं। तुमने बड़ा पुण्य कार्य किया है। अीश्वर तुम्हें सुखी रखे। तुम्हारे दादा अमृतलालभाअी तो बड़े बढ़िया आदमी थे। मेरे और अुनके बीच बड़ा मीठा संबंध था। जब हम नवी बंदरमें साथ रहते थे। जयसुखलाल अुस समय बहुत छोटे थे। तुम्हारे दादा अितने पवित्र मनुष्य थे कि अुन्हें याद करके हम पावन हो सकते हैं।

बापा आंखोंसे अच्छी तरह काम नहीं कर सकते अिसलिअे मुझसे कहने लगे "समय हो तो मुझे तुमसे अेक पत्र लिखवाना है।" रवाना होनेमें दस ही मिनट बाकी थे। परन्तु जरूरी पत्र था अिसलिअे जल्दी जल्दीमें लिखवाया। अुसकी नकल मुझे दी।

फिर मैं और ठक्करबापा बापूजीके पास गये। बापा और बापूजीके मिलनका और बिदाअीका दृश्य बडा पवित्र मालूम होता था। बापाको यह कल्पना ही नहीं थी कि बापूजीको अिस प्रकार अचानक विदा देनी पडेगी। परन्तु हमारे अेक सप्ताह यहां रहनेसे बापा बहुत खुश हुअे और दोनों अेक-दूसरेके अनेक कामोंको समझ सके। अंतमें सभीको अिससे सतोष हुआ।

बापूजीने हैमचरमें ही कात लिया था। मिट्टी तयार करके साथ ले ली।

ठीक दो बजकर दस मिनट पर हम जीप गाडीमें चादपुरके लिअे रवाना हुअे। बहनोंने बापूका तिलक लगाया और शकुन किया। हमें दही-चीनी खिलाअी। हमारी जीपमें अितने आदमी थे — बापूजी मृदुलाबहन, चारुण, देवभाअी और मैं। बापूजी आध घंटा जीपमें बैठे बैठे सो लिये। रास्तेमें अेक नदी पार करनेके लिअे नावमें बैठना पडा। जीपगाडी भी पार अुतारी गअी।

यहां हम ठीक ३–४० पर पहुचे। गावोंकी शातिसे शहरकी अशातिमें आ गये। थोडा पैदल चलकर बाबू हरदयाल नागके यहा गये। यहा बापूजी अिसी घरमें आजसे बीस वर्ष पहले भी आये थे। बापूजी कहने लगे 'अब तो घरमें कुछ परिवर्तन मालूम होता है।' अपार भीड थी। भीडमें से चलकर घर तक पहुचनेमें दस मिनट लगे। आकर हाथ-मुह धोकर नारियलका पानी पिया। सरदार जीवनसिंहजी लोगोंकी भीडको काफी सभाल रहे थे चिल्ला चिल्लाकर अुन्होंने अपना गला बैठा लिया था।

मृदुलाबहन तो अपने स्वभावके अनुसार खूब मन्द करनेमें लग गअी। मुझसे बोली 'किसी भी प्रकारसे बापूजीको तकलीफ नहीं होनी चाहिये। किसी भी चीजकी जरूरत हो तो मुझे कह देना।' बापूजीने अुनसे खानसाहब और दूसरे लोगोंको पत्र लिखवाये। आखों और सिर पर मिट्टीकी पट्टी ली। यहाकी व्यवस्था सुन्दर है। आज रातको नौ बजे गोआलन्दो जानेवाले स्टीमरमें बैठना है।

नोआखालीमें लगभग पचास से अधिक गावोंमें पैदल यात्रा की। अब सवारीमें यात्रा शुरू हुअी।

बापूजी साढे चार बजे अुठे। प्रार्थनामें जानेको रवाना हुअे। मोटरमें न जाकर बापूजीने पैदल ही जाना पसन्द किया जिससे लोगोंको भी सतोष

हो। दोना तरफ वाडन किया गया था। अक तरफ मृदुलाबहनका सहारा था और दूसरी तरफ म थी। स्त्रिया अपन घराकी छत परस अच्छ अच्छ कपडे पहनकर फूल और चावलकी वर्षा कर रही थी। कही कही शखनाद हा रहा था। सारा सडक फूलासे छा गआी थी।

सभाम बहुत शोरगुल था। पहल बापूजीन रामधुन शुरू करनको कहा। अिसके बाद कुछ शाति हुआी और सारी प्रार्थना कराआी। चिल्लाचिल्लाकर शैलेनभाआीकी आवाज भी बैठ गआी था। अिसलिअ मुझे अकेले ही प्रार्थना करानी पडी। शैलेनभाआी अ० पी० आआी० के रिपोटर ह परतु सारी मडलीके सदस्य हो गय ह। बस सारे प्रस रिपोटर और हम सब कुटुम्बी जस हा गय ह। परन्तु शैलेनभाआी प्रार्थनामें बडी मदद देते ह।

प्रार्थनामें शाति रखनका अनुरोध करनके बाद बापूजीने कहा म मे भी बडी सभाआमें गया हू और वहा मन सपूण शाति पाआी है। म बगला नही बाल सकता अिसका मुझ दु ख है। परन्तु लौटूगा तब आशा रखता हू कि बगला बोल सकूगा।

चादपुर मेरे लिअ नआी जगह नही है। जब अलीभाआी और बाबू हरदयाल नाग जिन्दा थ तब म पहले पहल आया था। अक ओर यहा दुबारा आनस हर्ष होता है दूसरी ओर दु ख होता है। जब म देहातमें यात्रा कर रहा था तब लोग रो रहे थ बड दु खी थे। परन्तु रोनस कुछ नही होगा। सबको अस मागस ही जाना है। यह बाबू हरदयाल नागकी भूमि है। व जो काम कर गय अुससे प्ररणा लेकर हम वसा ही काम कर तभी हमारा जीना साथक है। म चादपुर क्या आया? मेरी यात्राके दो हिस्स पूरे हा चुक थ। तीसरा हिस्सा शुरू होनको था कि डा० सयद महमूद साहबके मत्री आय और अुन्हान मुझ बिहार जानका आदेश दिया। अिसलिअ आज वहा जा रहा हू।

जस किसी हिन्दूके मरन पर मुझ सग भाआीके मरनका दु ख हाता है वस ही किसी मुसलमानक मरन पर भी मुझ अुतना ही दु ख हाता है। हम सब अक औरवरके बालक ह। अिसलिअ म नोआखाली और त्रिपुरा जिलामें घूमा। जब तक शान्ति कायम नहा हा जायगी तब तक न तो मैं चन लूगा और न दूसराको लन दूगा। भले म अकेला ही रह जाआू ता भी चिल्लाता रहूगा।

"बिहारमें मेरी कुछ चलती है। जिसलिये आशा रखता हूं कि वहांका काम जल्दी पूरा करके यहां आ जाञूंगा। परन्तु अिस बीच आप अिकबालकी अिस कविताको सच साबित करके दिखा दीजिये — मजहब नहीं सिखाता आपसमें वैर करना। हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा।

प्रार्थनासे लौटकर बापूजीके लिये घरकी बहनोंने बकरीके दूधका जो भुंग्ग आग्रहपूर्वक बनाया था वह लिया। अिन बहनोंकी अिच्छा थी कि बापूजीके खानेकी थाली वे ले जायं। अिसलिये अेक छोटी लड़कीको मैंने तैयार करके दे दी। वही आठ औंस दूध और यह मदन ले आओ। बहनोंकी अिच्छा थी कि बापूजी अुनके बरतनोंमें खायं। बापूजीने वैसा ही किया।

बापूजी बहुत ही थक गये थे।

अचानक अेक स्पेशल स्टीमर आ पहुंचा। अिसलिये मृदुलाबहनने अुसीमें जानेका प्रबंध किया। यह बड़ा अच्छा हुआ, नहीं तो पसेंजर स्टीमरमें जाना पड़ता। अुस हालतमें बापूजीको सोनेकी सुविधा नहीं मिलती।

बापूजीका मौन शुरू हो गया। रातको आठ बजे बापूजीकी अंतिम वस्तुअें मृदुलाबहनको सौंपी। बापूजीको मच्छरोंका मरहम मलकर सारा सामान साथ मैं स्टीमर पर गअी। केबिनमें बापूजीका बिस्तर करके रातको दातुन वगैरा अुपयोगी चीजें रखीं।

बापूजी मृदुलाबहनके साथ दस बजे स्टीमर पर आये। केबिनमें थोड़ा लिखकर बनवारी जीवनसिंहजीके साथ खूब बातें कीं। बिदा करने आनेवालोंमें बनवारी और बनवारी जीवनसिंहजीके साथ करीब अस्सी महीनेका साथ होनेके कारण हम सबका कुटुम्ब जैसा प्रेम हो गया था। सब गद्‌गद हो गये। ग्यारह बजे सब गये। स्टीमर चला। साढ़े ग्यारह बजे बापू सो पाये। खूब थक गये थे। सिरमें तेल मला। पैर दबाये और प्रणाम किया। बहुत दिनों बाद बापूजीने आज खूब जोरकी धप लगाअी। चिट्ठीमें लिखा:

हैमचरमें बापा तुम पर बड़े खुश हुअे। मुझसे कह रहे थे। परन्तु सबसे बड़ी बात यह हुअी कि हफ्ताभर अुनके साथ रहनेसे मैं बापाको ज्यादा समझ सका और अुन्होंने अपनी कुछ मान्यतायें छोड़ दीं। वे तो महात्यागी हैं। अति नम्र मनुष्य हैं। तुमने देखा कि अुन्होंने अितने दिनोंमें केवल अेक ही दिन मेरा थोड़ा समय लिया। आम तौर पर वे मेरा समय लेने आते ही नहीं थे। बुलाकर असल

काम है। अुनकी जोड़का दूसरा आदमी नहीं है। भूल मालूम हो जाय तो तुरत सुधार लेते हैं। अुसमें अुन्हें देर ही नहीं लगती। तुम अुनकी कुछ सेवा कर सकी यह मुझे अच्छा लगा। अिसीलि मन तुम्हें प्रोत्साहन दिया था। तुम्हारी दो दिनकी डायरी दसवन रह गअी है। अुसे यहीं रख देना। प्रार्थनाके बाद सुबह पढ़ लूंगा।

आजकी यह डायरी स्टीमरमें साढ़े बारह बजे पूरी कर रही हूं। बापूजीके पैर दबाकर मच्छरदानी बन्द की। बत्ती और केबिन बन्द करके बाहर बैठकर अपनी दिन भरकी डायरी पूरी की। साढ़े चार बजे तककी चान्दपुरमें लिखी थी। बादकी चांदपुरसे गोआलन्दो आते हुअे स्टीमरमें पूरी की। आज बापूजीके ८८ तार हुअे।

चान्दपुरसे गोआलन्दो जानेवाले स्टीमरमें
३-३-४७

अभी-अभी दातुन-पानीसे निबटकर रोजकी भांति प्रार्थना की। बापूजीको गरम पानी और शहद दिया। मैं रस निकालने गअी अुस बीच बापूजीने बंगलाका पाठ किया और फिर अपना डाकका काम शुरू किया। बापूजी पत्र लिखनेमें अितने मशगूल थे कि मैं रस हाथमें लेकर दस मिनट खड़ी रही परन्तु अुनका ध्यान नहीं गया। आज मौन भी है। अन्तमें मैंने दो बार पुकारा और हाथमें गिलास दिया तब हंसकर पिया। फिर अपना काम शुरू कर दिया। और पत्र लिखते लिखते ही सो गये।

बापूजी लेटे हैं। मैं अपनी डायरी लिख रही हूं। रात अच्छी बीती। यात्रा शान्त है। सामने सुन्दर किनारा दिखाअी दे रहा है। सवेरेके सवा सात बजे हैं।

बापूजी साढ़े सात बजे अुठे। घूमने निकले। मैं और बापूजी डेक पर चक्कर काट रहे थे। बापूजीका मौन था। बहुत तेज चल रहे थे। थोड़ी देरमें प्रेस प्रतिनिधि जो हमारे साथ सफर कर रहे हैं शैलेनभाअी और दूसरे लोग आये। निर्मलदा भी देख गये। सामनेसे अेक स्टीमर महात्मा गांधीकी जयके नारे लगाता हुआ हमारे साथ हो गया। अेक बड़ी नदीमें अिस प्रकार दो स्टीमर चल रहे थे। हमारे स्टीमरके कप्तानने मुझसे कहा कि अुसके मुसाफिर खास तौर पर बापूजीके दर्शन करनेको ही यात्रा कर रहे हैं। बापूजीने वहां खड़े रहकर सामनेवाले स्टीमरके मुसाफिरोंको हाथ जोड़कर प्रणाम किया। सूर्यदेव अुग रहे थे और अुनकी सुनहरी

रमें सीधी बापूजीके तेजस्वी चेहरे पर पड रही थी। किनारा अत्यन्त माय था। और नदी शान्तिसे कल-कल करती हुई बह रही थी। अस वातावरणमें बापूजी सामनेवाले स्टीमरके मुसाफिराका हाथ जोडकर खडे हुए और अुन मुसाफिराने स्टीमरका जयनादसे गुजा दिया। मुसाफिराने नम्रतापूर्वक बापूजीको प्रणाम किया।

आज पर नहीं धाने थे। बापूजीने का पत्र पूरा किया जितनी रमें मैंने मालिश और स्नानकी तयारी की। दस बजे नहा-धाकर निवत्त न। बापूजाने भोजनमें शाक, अेक खाखरा और बकरीके दूधके वजाय लिया बनाकर रखा हुआ सन्देश लिया। दूध यहा नहीं मिलता। ग्यारह जे मृदुलाबहन बातें करने आयीं। मैं बापूजीके कपडे वगैरा जमाने और गान चली गयी। फिर जो सामान निकाला था अुस ठीक किया। जिसमें बेक बज गया। अेक बजे बापूजीके पट्ट पर मिट्टी रखी। पैरामें घी मला। बापूजीने आराम लेते हुअे बगला वाक्योंकी पूरी की। दो बजे अुठकर नारियलका पानी पिया।

हम ठीक अढाअी बजे गोआलन्दा पहुचे।

स्टीमर पर बहुत आदमी आये थे। बारीक रेत खूब तप रही थी और गरमी भी लग रही थी। ट्रेनमें आये तो वहा डिब्बेमें काकासाहब बठे हुअे थे। बापूजीसे मिलने आये थे। बापूजीकी बैठकका बन्दोबस्त करके हम हाथा-हाथ सामान ले आये। तीन बजे गाडी चली। बापूजी और काका-साहब बातें करने लगे। आज मौन दिन था। जिसलिअे लिखकर बातें करते थे। साढ़े चार बजे दो काजू दो बादाम और दो खाखरे खाये। बापूजीने बातें अधूरी रखी और खाकर आखामें बहुत जलन होनेके कारण मिट्टीकी पट्टी रखकर सो गये। मैं तो सामान निकालने और रखनेमें ही लगी रही।

सात बजे मौन खुला। पुराने सारे प्रेस प्रतिनिधि बापूजीसे मिलने आये। क्योंकि जिस नअी स्थितिमें नोआखालीमें जो प्रेस प्रतिनिधि बापूजीके साथ घूमा करते थे अुन्हें कदाचित् अुनके अधिकारी बापूजीके साथ अब न भेजें। प्रार्थनाके बाद सब प्रेस प्रतिनिधियोंने अतिम बार गद्गद कठसे 'वैष्णव जन तो तेने कहिये' भजन गाया। सबकी आखामें पानी भर आया। प्रार्थनाके बाद बापूजीने फिर काकासाहबके साथ बातें की। आराम किया। नौ पचास पर हम सोदपुर आये। आकर बापूजीका बिस्तर किया। वे हाथ मुह धोकर स्वस्थ हुअे सबसे मिले और लगभग साढे ग्यारहके बाद सोये।

मैं खूब थक गअी थी। अिसलिअे बापूजीके सोनेके बाद अुनके सिरमें तेल मलकर और पैर दबाकर नहाअी। सामान मिलाया। सुबहकी तैयारी की। बापूजीके लिअे दातुनकी कूची बनाअी। यह फुटकर काम निबटाकर डायरी पूरी की। थक गअी थी अिसलिअे भोजन नहीं किया। अब अेक बजनेमें दस मिनट बाकी हैं। सोने जाती हूं। निर्मलदा अभी तक जाग रहे हैं। अुनका काम तो रातको देर तक चलता रहता है।

खादी प्रतिष्ठान,
सोदपुर (कलकत्ता)
४-३-४७

रोजकी तरह प्रार्थनाके लिअे अुठे। मैं कब सोअी आदि पूछताछ करके बापूजी कहने लगे: हमने नोआखाली छोड़ तो नहीं दिया परन्तु अब यात्रायें दूसरी तरहकी होंगी। शायद काम बढ़ेगा। परन्तु जो नियम नोआखालीमें पालन किये जाते थे अुनमें फर्क नहीं पड़ना चाहिये। यह यज्ञ अब नोआखाली तक ही सीमित नहीं रहेगा। अब तो जब तक दोनों जातियोंमें पूरा भाअीचारा न पैदा हो जाय हममें मानवता न आ जाय तब तक मुझे निरंतर करना है या मरना है। अतः मेरा और तुम्हारा तप जितना शुद्ध होगा अुतना असर अिस कार्य पर अुसका अवश्य होगा। बिहारका काम नोआखालीसे ज्यादा कठिन साबित हो तो मुझे अचंभा नहीं होगा क्योंकि कभी-कभी जब अपने आदमी भूल कर बैठते हैं तब अुसे सुधारना बहुत कठिन हो जाता है। बिहारकी रिपोर्ट देखते हुअे मुझे लगता है कि नोआखालीकी अपेक्षा बिहारका मेरा काम ज्यादा मुश्किल होगा ज्यादा बढ़ जायगा। अिसलिअे तुम्हें बहुत सावधानी रखनी है। तुम अपना खाना-पीना आराम नियमानुसार घूमना सभी कुछ नोआखाली जैसा नियमित रखोगी तो ही मुझे संतोष होगा।

कल रात मैं देरसे सोअी अिसलिअे प्रातःकाल पौने चार बजे ही चेतावनी दी ताकि अिस नये परिवर्तनसे मैं अनियमित न बन जाअूं।

प्रार्थनाके बाद मेरी डायरी देखी। बापूजीको गरम पानी और शहद देकर मैं रस निकालने गअी। अिस बीच अुन्होंने अपना बंगला पाठ लिखा। आज तो वे बंगला बोलना सीख रहे थे। मैं रस लेकर आअी तो मुझसे बंगलामें पूछा तोमार नाम की? (तुम्हारा नाम क्या है?) और खूब हंसे। बापूजीको दस तक अंक लिखना अच्छी तरह आ गया है।

साढे सात बजे नित्यकी भांति घूमने गये। दूसरी बहनें लाठी' बननेवाली थी, जिसलिअे मैं घूमने नही गअी। मुझे काम भी था। परन्तु यह बापूजीको बिल्कुल अच्छा नही लगा। पर धोते समय अुलाहना दिया, 'भले तुम मेरी लाठी न बनती। लेकिन जिससे क्या? तुम्हें घूमना न छोडना चाहिये। तुम्हारा घूमना भी मेरी दूसरी सेवाका अेक भाग है। जिसलिअे आज तुम नही घूमी, जिसका मुझे दुःख है। मै खुश होअूगा यदि आज तुम मालिशसे छुट्टी ले लो और अुतनी देर घूम लो।

मैने कहा, मालिशसे छुट्टी लेना तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा।

बापूजी कहने लगे तो मै कमोड पर जाअू तब अेक बार दौड लेना। अुससे भी पूरा तो नही, कुछ संतोष हो जायगा। परन्तु बिल्कुल न घूमना तो पाप है।

मैने बापूजीके कहे अनुसार दौड लगा ली। बापूजी नियमितता पर जितना ध्यान देते हैं।

पौने नौ बजे शहीद सुहरावर्दी साहब — यहांके मुख्यमंत्री — आये। लगभग सवा दस बजे गये। जिससे मालिशमें बहुत देर हो गअी और मालिश अच्छी तरह नही हो पाअी। सुहरावर्दी साहब अपनी ही बातें करते रहे। बापूजीको बोलने ही नही देते थे। जबरदस्त आदमी है। बापूजीको भी लगा कि वे गोलमोल बातें कर रहे है, मुद्देकी बात नही करते। बापूजी कहने लगे अीश्वरने सोचा होगा वही होगा।

बारह बजे स्नान वगैरा पूरा हुआ। भोजनमें शाक, दूध और फलोंमें थोडे अंगूर लिये। और कुछ नही लिया। भोजन करते हुअे काकासाहबसे बातें की।

दर्शनार्थियोंकी अपार भीड थी। मेरा नहाना धोना ठेठ दो बजे पूरा हुआ। अढाअी बजे डा० कुलरंजन बाबू (प्राकृतिक चिकित्सक) आये। बापूजीके कानमें कुछ बहरापन-सा लगता है। अुसे मिटानेके लिअे अेक विशेष प्रकारका स्पंज करनेका तरीका अुन्होंने मुझे बताया।

फिर बापूजीने थोडे पत्र लिखे अपनी डायरी लिखी। कल रात मै देरसे सोअी थी अिस पर बापूजीने लिखा

मनुडीके बारेमें। अभी तक अुसकी बाल्यबुद्धि नही गअी। प्रौढ बननेकी बहुत जरूरत है। मुझे तो आशा है कि थोडे

ही समयमें प्रौढ़ हो जायगी। बहुत भागी है। मेरी खूब सेवा करती है। अुसमें तल्लीन हो गअी है। परन्तु खाने-पीने और सोनेका ध्यान नहीं रखती। अुसका शरीर बिगड़ता है यह मुझे सालता है। वह मुझे काफी संताप दे रही है।"

मैंने जब यह नोंध देखी तब यह सोचकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि बापूजी कितना ध्यान रखते हैं! मैंने अुनसे कहा: "अिस डायरीमें आपने मेरे विषयमें जो लिखा है वह मुझे पसन्द नहीं है। क्योंकि आपकी डायरी तो सब लोग पढ़ेंगे।"

बापूजी बोले: "अिससे क्या हो गया? हम जैसे हों वैसे ही दिखाअी दें तो ही जीवनमें आगे बढ़ सकते हैं। खानगी नामका शब्द ही तुम्हें मनसे निकाल देना चाहिये। हमने कोअी चोरी थोड़े ही की है कि खानगी रखें?" मैं चुप हो गअी।

शामको प्रार्थनासे पहले बापूने दूध और फल लिये। प्रार्थनामें जानेसे पहले मैंने सारा सामान गिनकर ट्रकोंमें हावड़ा स्टेशन पर रवाना कराया।

शामको प्रार्थनामें भारी भीड़ थी। प्रार्थना-सभामें बापूजीने समझाया कि वे बिहार क्यों जा रहे हैं और लोगोंसे भाअीचारा बढ़ानेका अनुरोध किया। प्रार्थनाके बाद दसेक मिनट घूमे।

ठीक साढ़े सात बजे हम सोदपुरसे रवाना हुअे। हावड़ा स्टेशन पर बापूजीके दर्शनोंके लिअे जो अपार भीड़ आअी थी अुसके बारेमें तो क्या लिखूं? मानव-समुद्र ही अुमड़ आया था। और फोटोग्राफरोंका तो टिड्डीदल ही निकल आया था। प्रकाशसे आंखें चौंधिया जाती थीं। परन्तु अुन लोगोंके प्रेमके कारण यह कठिनाअी सहनी ही पड़ी। अिस बीच बापूजीने अपना धंधा — हरिजन फंड अिकट्ठा करनेका — शुरू कर दिया। बापूजीके हाथमें पैसे रुपये आने दो आने चार आने और नोटोंका खासा ढेर हो गया। सब लोग बापूजीके हाथमें ही देते थे। हममें से कोअी हाथ फैलाता तो शायद ही कोअी देते थे। खूब रेजगारी गिननेको हो गअी है। कल पटनामें गिन लूंगी। अिस समय (रातके दस बजे) यह डायरी बर्दवान स्टेशन पर पूरी कर रही हूं। बापूजी सो रहे हैं। लोग निर्मलदाके समझानेसे शांतिपूर्वक बापूजीका दर्शन कर रहे हैं।
